

मैथिली

(५)

मानत राख
नसभ ओही तुष्टीकरण
र मैथिलीके आकाशमे उठयब
सागत । किछु दिन पूर्व जे मैथिलीक श
निधि मण्डल, कहाँदत, प्रधानमन्त्रिणी श्री
घोस मैथिलीक सर्वेधानिक मान्यताक बदला
न्पाक विकास सम्बन्धी सहायताक गप्प लऽ व
लीस धुरि आयल से प्रायः एहीमे कृतक
त जे प्रधानमन्त्रिणीक दुर्लभ दर्शन परि ला
। मैथिलीके एहिसँ अधिक चाहबे की क
नेक मान्यता नहि भेटलापर कोन
न जा सकैत अछि आ कोन
जा सकैत

कथा-प्रभास

प्रभास कुमार चौधरी



मैथिली अकादमी, पटना

कथा-प्रभास

(तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा)

प्रभास कुमार चौधरी



मैथिली अकादमी, पटना

प्रकाशक : मैथिली अकादमी प्रकाशन १६१

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णापुरी

पटना-८००००१

(C) मैथिली अकादमी

आवरण सज्जा : डॉ० गंगेश गुंजन

प्रथम संस्करण

दिसम्बर १९८८

प्रति—५१००

मूल्य : साधारण—१००/- टाका

सजिल—१००/- टाका

150/2

मुद्रक :

मुरलीधर प्रेस,

मुसल्लहपुर, पटना—६

प्रस्ताविकी

कथा आजुक एक सशक्त विधा थिक। बहुत हर्षक विषय जे सम्प्रति मैथिली कथा साहित्य बहुत समृद्ध भ' रहल अछि। प्रसिद्ध कथा संग्रहक प्रकाशनक शृंखलामे मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार प्रभास कुमार चौधरीक 'कथा-प्रभास' प्रकाशित करैत अकादमी अतिशय आह्लादक अनुभव करैत अछि। कथा कहवाक एक अपूर्व भंगिमा, सहज आकर्षक शिल्प, परिवेशक सहजता ओ विश्वसनीयता तथा कथ्यक प्रभावशीलताक लेल प्रभास कुमार चौधरी मैथिली कथा साहित्यमे प्रसिद्ध छथि। उपन्यास लेखनमे सेहो ई बहुत मांजल छथि।

“कथा-प्रभास”मे विगत तीन दशकक विद्वान कथाकारक अट्ठाइस गोटा प्रसिद्ध कथा संग्रहित अछि। मध्यवर्गीय समाजक यथार्थ चित्रण, सामन्ती विलासिताक जांत तर कुहाइत-पिसाइत लोकक अशेष व्यथा-कथा ओ एक अभिनव समाजक संकल्पनाक दिशा ओ दृष्टि एत' दर्शनीय अछि। आशा अछि कथा साहित्यक प्रेमी पाठक अकादमीक एहि अभिनव प्रस्तुतिक स्वागत करताह।

मैथिली अकादमी

२६-१२-१९८८

(डा० फणीन्द्र नाथ मिश्रा)

अध्यक्ष

प्रकाशिकी

मैथिलीक विशिष्ट ओ सम्मानित कथाकार श्री प्रभास कुमार चौधरीक 'कथा-प्रभास' प्रकाशित करैत अकादमी अतिशय गौरवान्वित अछि। मैथिलीक साठोत्तरी पीढ़ीक ई एक सशक्त हस्ताक्षर छथि। जहिना छठम दशकमे मैथिली कथा-यात्रामे तीन नाम—ललित, राजकमल, मायानन्द—बहुचर्चित एवं प्रतिष्ठित रहलाह, तहिना सातम दशक मे प्रभास, गुंजन, राजमोहन जीवकान्त ओ धूमकेतु मैथिली कथा पर आच्छादित रहलाह। प्रभास मैथिली कथा साहित्यक समवेत युवा ऊर्जा ओ स्फूर्ति सँ भरल एहन कथाकार छथि जे कथा के व्यापक आधार, विराट परिवेश, बहुआयामी दृष्टि, तथा विशिष्ट दृष्टि-भंगी प्रदान कयलनि अछि। अत्यंत संवेदनशील हृदय, चिंतनशील मस्तिष्क, सत्योन्मेषी दृष्टि तथा चोटगर-नोकगर व्यंग्यक वक्र-भंगिमा हिनक विशेषता छनि। शहरमे रहितो ई मोन-प्राणसँ गाममे रहैत छथि। बाल्यकालक संस्मरण ओ अतीतक बहुत रास मार्मिक अनुभूति हिनका मे तेना ने रसि-बसि गेल छनि जे कदाचित् नागर संस्कृतिक छलनामय वातावरण हिनका हठात् मिथिलाक अपन माटिपानि ओ गाम घर मे आनि दैत छनि। एक विशिष्ट मध्यवर्गीय संस्कार ओ ग्रामीण सहज परिवेश मे पलल आदर्श जीवनक मूल्यबोध हिनका कदाचित् यथास्थान मोहग्रस्त सेहो करैत रहलनि अछि। तेँ युवा रहितो हिनक कथा-शिल्प एक बयोवृद्ध प्रगल्भता देखबैत अछि। एहन बात नहि अछि जे कथाकार 'प्रभास आदर्शवादी छथि। हिनकामे वस्तुतः यथार्थ ओ आदर्शक मणिकांचन संयोग भेटैत अछि। गाम सँ नगर, नगर सँ राष्ट्र ओ राष्ट्र सँ अन्तर्राष्ट्रीयताक विराट क्षितिज हिनक समुर्वर मनोमस्तिष्ककेँ झिकझोरैत रहलनि अछि। अतएव बद्धमूल सामंती संस्कार केँ तोड़ि-फोड़ि ई बेर-बेर अपन रचनामे यथार्थ जनवादी जमीन सेहो तकैत छथि। पूर्वमे मैथिली कथा जाहि संकीर्णताक कठघरा मे मूनल-बान्हल छल सकरा ई व्यापकता ओ विविधताक उत्प्लुत भाव-भूमि पर उतारि देलनि। हिनक रचना-शिल्प मे मिथिला-क्षेत्रक सोना-माटिक सम्पूर्ण सुगन्धि भेटैत अछि। संगहि हिनक कथा नाना रूपात्मक जगत ओ जिनगीक बहुरंगी कथा कहैत अछि। हिनका मे एक अपूर्व चित्रमयता, सजीवता

(४)

मनोवैज्ञानिकता, वाह्यान्तः संघर्षक उठा-पटक देखिते बनैत अछि। ई अतीतक ओ कथा कहैत छथि जे वर्तमानक रेखाचित्र गढ़ैत भविष्यक सपना सजबैत अछि। कदाचित आजुक विभीषिका ओ विसंगति अथवा वर्ग-संघर्ष हिनका ततेक उद्वेलित कयलकनि अछि जाहि सँ क्रान्तिक कोनो दीपशिखा प्रज्वलित कयल जा सकय। दहाइत-भसियाइत सामाजिक व्यवस्था, विडम्बनामय जीवन, आजुक अनाचार ओ अभिचार सँ जकड़ल परिवेश अथवा दिग्भ्रमित साम्प्रतिक युग-चेतना अपन विशिष्ट कथाकार सँ भविष्यमे आरो अपेक्षा रखैत अछि।

कथकारक अतिरिक्त प्रभास मैथिली कथा साहित्यक एक समर्थ उपन्यासकार सेहो छथि। मैथिली उपन्यास साहित्य केँ ई पाँचटा एहन अनमोल रत्न देलनि अछि जाहि सँ हमर उपन्यास साहित्य गौरवान्वित भेल अछि। पूर्वमे अकादमी हिनक 'हमरा लग रहब ?' उपन्यास प्रकाशित क' चुकल अछि। पुनः आइ विभिन्न रचनारिकामे प्रकाशित-अप्रकाशित ओ बहु प्रशंसित अठाइस गोटा प्रतिनिधि कथाक संकलन 'कथा प्रभास' प्रकाशित करैत हमरा लोकनि अत्यन्त आनन्दोल्लास अनुभव क' रहल छी। कथा-भाषाक इन्द्रधनुषी छवि, मिथिलाक माटिपानिक समग्र सौरभ, गहन चिन्तन ओ जीवनानुभवक यथार्थ कसौटी पर गढ़ल हिनक उपयुक्त कथामे मैथिली कथा साहित्यक अपूर्व रंग-टीप दर्शनीय अछि। नव युगक सर्वाधिक लोकप्रिय कथा-विधाक दिशा ओ दृष्टि केँ देखैत ई निःसंकोच कहल जा सकैत अछि जे आधुनिक मैथिली कथा-साहित्य कोनो भाषा-साहित्यक समकक्ष ठाढ़ कयल जा सकैछ। शिल्प ओ प्रयोग, विषय ओ विस्तार, इंगित ओ अभिव्यक्ति, कथा ओ कथ्य तथा बोध ओ संवेदना—सभ दृष्टि सँ कथाकार प्रभास मैथिली कथा-यात्राक एक स्वर्णिम हस्तक्षर छथि। एहि संकलनक अनेक कथा हिन्दी, बंगला ओ गुजराती भाषा मे अनुदित ओ बहु-प्रशंसित भ' चुकल अछि।

हम आशा करैत छी जे अकादमीक कथा-मालाक एहि सुन्दर-सुरभित अभिनव पुष्पक मातृभाषानुरागी सहृदय पाठक हृदय सँ स्वागत करताह। सर्वथा सचेष्ट रहितो मुद्रण जन्य त्रुटि परिमार्जनीय थिक।

मैथिली अकादमी

२९-१२-८८

देवकान्त झा

निदेशक-सह-सचिव

लेखकीय : कोनो आहे माहे नहि

हमरा जे कहवाक अछि से अपन कथा सभमे बेर-बेर कहैत आयल छी आ कहैत रहब । हम आइयो ओहि बात के मानैत छी जे आइ सँ पच्चीस वर्ष पहिने अपन कथा संग्रह “नव घर उठयः पुरान घर खसयक” प्रकाशनक समय लिखने रही । कृतिक सम्बन्धमे कर्ताक वक्तव्यक कोन प्रयोजन ? पच्चीस वर्ष बाद ‘कथा लिखबाक क्रम मे’ शीर्षक अपन वक्तव्यमे मिथिला मिहिरमे सेहो हम यह बात दोहरौने रही जे सुगाक दाम सुगाक बोल सुनले पर लगैत छैक । कथामे दमखम रहैत छैक, हृदय के छुवाक आ मस्तिष्क के आन्दोलित करवाक सामर्थ्य रहैत छैक त’ ओ अपन लोहा मनवा क’ रहैत छैक । ओकरा कोनो झालि बजोनिहारक काज नहि पड़ैत छैक । वक्तव्यक सोंगर पर कथा ठाढ़ नहि भ’ सकैत छैक । हमरा जे कहवाक अछि ‘कथा-प्रभासक’ एक एकटा कथा बाजत, हमरा अहाँ ओकरा सन-सन हजार-लाख-करोड़ लोक दिस सँ बाजत ।

पूरा दू युगक बाद हमर दोसर कथा संग्रह ‘कथा-प्रभास’ मैथिली अकादमीक सौजन्य सँ प्रकाशित भ’ रहल अछि । हमर पहिल कथा संग्रह १९६४मे छपल । हमर पहिल मैथिली कथा “बाहर इजोतः भीतर धूँआँ” मिथिला मिहिरमे १९६१मे प्रकाशित भेल (यद्यपि ओहि सँ पहिने दू टा कथा ‘वैदेही’ मे ‘घरती कुहरि उठल’ आ ‘प्रतीक्षा’ १९५६-५७मे छपि चुकल छल आ किछु कथा सभ विद्यालय-पत्रिका सभमे सेहो) । १९६४मे प्रकाशित “नव घर उठयः पुरान घर खसय” मे हमर एगारह टा प्रारम्भिक कथा (१९६१—१९६३क बीच छपल) संग्रहित भेल ।

आइ ई सोचला पर आश्चर्य होइत अछि जे हमर पहिल कथा-संग्रहक ओतेक उत्साहवर्द्धक आ व्यापक स्वागत भेलाक बादो पच्चीस वर्ष धरि कोनो दोसर संग्रह कियैक ने प्रकाशित भेल । एहि बीच हम नियमित कथा लिखैत रहलहुँ, प्रकाशितो होइत रहल । पांच टा उपन्यासो (अभिषप्त युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी) प्रकाशित भेल मुदा दोसर

(ख)

कथा संग्रह नहि छपल । प्राय कथाक नियमित प्रकाशन होइत रहबाक कारणे कथा-संकलनक प्रकाशन दिस ध्यान नहि गेल । प्रायः प्रकाशनक समस्या के देखैत सभ बेर कथा संग्रह आ उपन्यासक प्रकाशनमे चयन करवाक बेर उपन्यासे प्रकाशन के प्राथमिकता देब’ पड़ल ।

‘कथा-प्रभास’ मे अही कारणे हमर लगभग तीन दशकक कथा लेखनक किछु बानगी प्रस्तुत अछि । ई चयन हमरा लेल कठिन काज छल । हम प्रत्येक कथामे फराक-फराक बात के, युगीन आ शाश्वत यथार्थ के फराक-फराक ढंग सँ कहवाक चेष्टा करैत आयल छी । अपन माटि पानिक रचनाक संग-संग एहन एहन कथाक रचनाक प्रयास करैत आयल छी जे सर्वदेशीय, सर्वकालिक एवं सार्वजनीन हो । कोनो कथाके छोड़ि देबाक अर्थ छल ओइ प्रवाह के खण्डित करब । मुदा एकेटा संग्रहमे अस्सी सँ अधिक कथा संकलित करब सेहो कतेको कारण सँ संभव नहि छल । तेँ मात्र अट्ठाइस टा कथा एहि संग्रहमे लेल गेल अछि ।

१९६१ सँ १९७०क बीच हम छियालीस टा कथा लिखलहुँ जाहिमे एगारह टा “नव घर उठय पुरान घर खसय”मे संकलित भेल आ चौदह टा ‘कथा-प्रभास’मे जा रहल अछि । शेष एकैस टा शीघ्र कोनो दोसर संकलनमे प्रकाशित हैत, से आशा करैत छी । १९७१ सँ १९८०क बीच हम २४ टा कथा लिखलहुँ जाहिमे सात टा कथा मात्र एहि संग्रहमे जा रहल अछि । शेष सत्रह टा कोनो दोसर संग्रहमे जा सकत, से आशा करैत छी । नवम दशकक सात टा कथा एहि संग्रहमे संकलित भेल अछि । एहि संग्रहक बहुत रास कथा हिन्दी, गुजराती आ बंगला मे अनुदित भ’ चर्चित आ प्रशंसित भेल अछि । मैथिली पाठक आ समीक्षकक स्नेह आ प्रशंसा सेहो ई रचना सभ प्राप्त क’ चुकल अछि । तेँ ई संग्रह अपने लोकनिक हाथमे दैत काल हम एक प्रकार सँ आश्वस्त छी ।

सातम दशक मैथिली साहित्यमे, विशेष क’ कथा साहित्यमे बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि । ई ओ दशक थिक जाहिमे मिथिला मिहिरक पुनर्प्रकाशन प्रारम्भ भेलाक कारणे मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ रचनाकार पुनः सक्रिय भ’ उठल छलाह आ एकटा सशक्त नव पीढीक प्रवेश भ’ रहल छल । छठम दशक मैथिली कथा साहित्यक लेल नवारम्भक युग छल आ ललितक ‘कथा’ ‘रमजानी’ सँ मैथिली कथाक वर्तमान धाराक प्रारम्भ भेल छल । ललितक संग राजकमल चौधरीक

प्रवेश भेल जिनका स्वयं ललित १९६४ मे मैथिलीक जीवित रचकार मे सर्वश्रेष्ठ मानलनि । अही पीढ़ीक अन्य सशक्त कथाकार भेलाह 'मणिपद्म, मायानन्द, सोमदेव, धीरेन्द्र, हंसराज लिलि रे, बलराम आ रामदेव झा । उगानन्द, बहेड़ शैलेन्द्र मोहन झा, योगिराज, राम किशुन झा, 'किसुन' आदि सेहो अही पीढ़ी केँ समृद्ध कयलनि । तेसर, चारिम आ पाँचम दशकक कथाकार सेहो एहि दशकमे सक्रिय भ' उठलाह आ कुमार गंगानन्द सिंह, प्रो० किरणजी हरिमोहन झा, व्यासजी नगेन्द्र कुमार, कुलानन्द नन्दन, उमानाथ झा, मनमोहन झा गोविन्द झा एवं शेखरजी अपन उत्कृष्ट रचना एहि दशकमे लिखलनि ।

सातम दशकक आरम्भक संग हमर निश्चित कथा लेखन प्रारम्भ भेल । दादा (हमर पिता) आशु कवि छलाह, हुनकर कविता पढ़ि सुनिक' आ हुनकर परिवारिक पुस्तकालय मे अनेक कवि, कथाकार, उपन्यासकारक हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला (हिन्दीमे अनुदित) रचना पढ़ि-पढ़ि हमहुँ कविता लिख' लगलहुँ । दादा हिन्दीमे कविता लिखैत छलाह, हमहुँ हिन्दीमे शुरू कयलहुँ । १९५३ मे लहेरिया-सरायक एम० एल एकेडमीमे नाम लिखौलाक तीन वर्षक बाद, दशम वर्गक विद्यार्थीक रूपमे हमर मैथिली-लेखन प्रारम्भ भेल—अपन गुरु कथाकार ललित आ कवि चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर'क सम्पर्क सँ । १९६४ धरि हिन्दी मैथिलीमे कथाक संग हिन्दीमे कवितो प्रकाशित होइत रहल । मुदा हमरा लागल जे हमरा लेल उपयुक्त विधा चुनि लेबाक बेर आबि गेल छल आ हम कथा विधा केँ बेसी उपयुक्त मानलहुँ । आइयो मानैत छी । पहिल उपन्यास अभिशप्त १९७० मे छपल आ दस सालमे पाँच टा उपन्यासो छपि गेल । कथा निरन्तर लिखैत रहलहुँ, मैथिली आ हिन्दीमे आ अन्य भारतीय भाषामे अनुवाद होइत रहल । अद्यावधि एकसयक लगभग कथा लिखल अछि । सातम दशकमे हमर लगले बाद गंगेश गुंजन अपन कथाक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक एकड़ आ भाषाक नव भंगिमाक संग विशिष्ट स्थान बनौलनि । धूमकेतु आ राजमोहन झा जे छठम दशक मे मूलतः कविता लिखि रहल छलाह, सातम दशकमे कथाकार रूपमे अपन परिचय फेरीछ कयलनि । पैंसठक बाद जीवकान्त सामर्थ्य आ वेग मे संग प्रवेश कयलनि । साकेतानन्द आ रमानन्द रेणु सेहो लिखि रहल छलाह, गौरी मिश्र आ शोफालिका वर्मा सेहो लिखि रहल छलीह । छत्रानन्द व्यंग लेखनमे सान चढ़यबाक भेड़ा केँ रहल छलाह । पाँचम छठम आ ओइ सँ पहिलुको दशकक अनेक

कथाकार अपन उत्कृष्ट रचना दे' रहल छलाह । किरणजीक अधुरमनि, हरिमोहन बाबूक पाँच पत्र, गोविन्द झाक सामाक पीती, मणिपद्मक 'गुरु-दक्षिणा' ललितक 'नवपुरान', राजकमलक 'साँझक गाछ', धूमकेतुक अगुखान, 'गुंजनक 'बन्हेज' आ 'सूप महक भाटा', रामदेव झाक 'मनुक सन्तान' बलरामक दकचल देवाल, जीवकान्तक 'सीड़क', साकेतानन्दक 'त्रिवेणीसमाहार' राजमोहन झाक 'अप्पन लोक' आ हमर बाबी, अरुणी, सूर्यास्त, दुःख आदि कथा एहि दशकमे प्रकाशित भेल जाहिसँ ललितक 'रमजानी' सँ प्रारम्भ भेल कथा-धारा समृद्ध एवं विकसित भेल आ अन्य भारतीय भाषाक कथाक समक्षता प्राप्त क' सकबाक हकदार बनल ।

मैथिली कथा लेखन वा एना कह जे सम्पूर्ण मैथिली लेखनक संग एकटा समस्याक हरदम जुड़ल छैक । पाठकीय आ समालोचकीय अतिरिक्त उदासीनता आ अतिरिक्त उदारता । यह उदासीनता आ उदारता मैथिली लेखन लेल सभ सँ पैघ खतरा छैक । मैथिलीक भाषीमे ई धारणाजे मैथिली बजैत छी त' मैथिलीमे लिखियो सकैत छी, आइयो अहिना जीवैत अछि जेना पचास वर्ष पूर्व जीवैत छल । मैथिलीमे लिखबाक लेल कोनो विशिष्ट प्रतिभा वा अध्ययनक आवश्यकता नहि, मात्र मैथिली बाजब, लिखब आयब पर्याप्त छैक, ई धारणा आइयो सम्पूर्ण मैथिल समाज केँ आक्रान्त कयने अछि । तेँ जे किछु छपि जाइत अछि, सभ साहित्यमे गना जाइत अछि । जे कयो किछुओ 'लिखिक' छपबा लैत अछि, साहित्यकारक सूचीमे आबि जाइत अछि । समालोचक (१) लोकनि ओइ सभ नाम केँ अपन उत्तेढ़ मे जोड़ि लेब अपन उत्तरदायित्व बुझैत छथि ।

सही लेखक केँ प्रशंसा आ स्वीकृतिक उपरान्तो तेँ एक तरहक अपमान आ घुटनक अनुभव होइत रहैत छैक । सूचीमे अपन संग जुड़ल नाम देखि ओकरा होइत छैक जे अइ सूची सँ बाहरे रहितहुँ त' नीक । लिखनिहारक फराक-फराक गोत्र होइत छैक आ एक्के रचनाकारक सभ रचना एक्के गोत्रक नहि होइत छैक ई मानबा लेल मैथिलीक पाठक-समीक्षक (१) आइयो प्रस्तुत नहि लगैत छथि ।

हमरा आइयो ओकर कारण वैह लगैत अछि जे हम बेर बेर कहैत आयल छी । अपन भाषाक प्रति मैथिलक हीन भावना । अपन साहित्यमे प्रकाशित दस्तु

के हमरा लोकनि स्वयम् दोसर श्रेणीक मानैत छी । मैथिलीक जे विशिष्ट वर्ग अछि, जे मंच सभ हथियौने अछि, तकरा मैथिली सँ कोनो प्रेम नहि छैक । ओ मैथिलीक मंच पर बैसिक' मैथिली लेल बजितो, हरदम अइ भावना सँ आक्रान्त रहैत अछि जे मैथिलीमे विद्यापतिक बाद किछु नहि अछि । विद्यापति पर्व मनाउ, मैथिली तैथिली पढ़िक' की हैत ? ओइमे पढ़वा लेल छैहे की ? आ जे जनसाधारण छैक से उदासीन छैक । ओकरा मैथिली अपन भाषा नहि, बाबू-भैयाक भाषा लगैत छैक । तेँ मंच पर दावा करवा लेल तीन करोड़ मैथिली भाषी मुदा पढ़वा लिखवाक लेल पाँचो सात सय मैथिली भाषी भेटब मस्किल । मैथिली ककरो भाषा नहि, ने इलिट (विशिष्ट वर्ग)क, ने मासक (जनसाधारणक) । किछु मुट्ठी भरि लेखक, जतबे लेखक ततबे पाठक । कयनो काल ओतबो पाठक नहि । लेखकोमे एक दोसरक रचना पढ़वामे अरुचि ।

आइ हमरा सन लेखक के सेहो ई बात कह' पड़ि रहल अछि जकरा पहिले कथाक प्रकाशन दिन सँ पाठक, समालोचक, पूर्ववर्ती आ समकालीन साहित्यकार सभक स्नेह आ कृपा प्राप्त भेलैक । हमर लेखक अपेक्षाक नहि, अत्यधिक कृपा आ स्नेह सँ आक्रान्त अछि । ओकरा एकटा घुटन, एकटा आक्रोशक अनुभव सभदिन होइत रहलैक अछि । बी० ए० मे पढ़ैत रही त' कथा बी० ए० कोर्स मे लागि गेल छल । आइयो मिडिल, मैट्रिक, आइ० ए०, बीए०, एम० ए० सभक कोर्स मे अपन रचनाक नाम देखैत छी । पटना विश्वविद्यालय मे हमरा पर शोध प्रबन्ध सेहो स्वीकृत भेल, आइयो लिखा रहल अछि । पाठकक स्नेहपूर्ण पत्र आइयो भैत अछि । मुदा बेर बेर इएह धारणा पुष्ट होइत अछि जे अधिकांश मैथिली भाषी लेल आइयो मैथिली लेखन वास्ते कोनो विशिष्ट प्रतिभा वा अध्ययनक नहि, मैथिली मे बाजि, लिखी लेबा मात्रक आवश्यकता छैक । सभ घन बाइस पसेरी । जेहने राजकमल तेहने

आइ अपन कथा संग्रह बारेमे किछु लिखैत काल एकटा आयोजन मोन पड़ैत छथि । राजधानीक एकटा प्रतिष्ठित संस्था एकबेर उत्साह मे एकटा मैथिली पत्रिका प्रकाशित करवाक निश्चय कयने छल । ओकर संयोजक एकटा उत्सही नवयुवक छलाह । किछु गोटेक संग हमरो आमन्त्रित कयने छलाह एकटा गोष्ठी मे जे ओइ प्रस्तावित पत्रिकाक रूपरेखा बतयवाक लेल आयोजित भेल

छलैक । गोष्ठी पैघ पैघ सुझावक संग समाप्त भेल मुदा तकर पश्चात ओ उत्साही नवयुवक एक कात ल'जा आस्ते सँ कहलनि— ई सभ त' ठीक छैक भाइ मुदा सत्ते कहू त' मैथिली तैथिली मे पढ़ लेल छैहे की जे लोक पढ़त । विद्यापति पर्व मना लेब धरि ठीक अछि मुदा पढ़वा लेल मैथिली— ? हँसी नहि लगैत अछि भाइ । की पढ़त लोक मैथिली मे...ककरा पढ़त....?

हम हुनका नहि कहि सकलियनि जे पढ़वा लेल त' बहुत रास चीज अछि । सुमन, मधुप, यात्री, किरण, आरसी आ अमर केँ पढ़ू । कुमार गंगानन्द सिंह, हरिमोहन बाबू व्यासजी, उमानाथ झा, मनमोहनजी, शेखरजी, गोविन्द झा, मणिपद्म, आ बहेड़ केँ पढ़ू । ललित; राजकमल, मायानन्द घोरेंद्र, सोमदेव, हंसराज, ललिते, रामदेव आ बलराम केँ पढ़ू । “किसुन” आ कीर्तिनारायण मिश्र केँ पढ़ू । गुंजनक, धूमकेतु, राजमोहन झा, जीवकान्त, आ सुभाष केँ पढ़ू । प्रवासी, कुलानन्द मिश्र, महाप्रकाश भीमनाथ झा, दोषी, सुकान्त सोम, हरेकृष्ण झा आ विनोद केँ पढ़ू ।

हुनका हम किछु ने कहलियनि । निश्चित बूझल छल जे पूछि बैसताह ई लोकनि के थिकाह ? की लिखने छथि ?

आइ मुदा अहाँ सभ केँ कहैत छी । अहाँ एहि संग्रहक एक्को टा कथा नहि पढ़ू मुदा जिनकर हम नाम लेलहुँ अछि, तिनकर रचना पढ़ू । हमरा सन्तोष रहत जे अहाँ लोकनि मैथिली पढ़ैत छी, नीके गोत्रक रचना पढ़ैत छी ।

कथा-संग्रह प्रकाशन हेतु मैथिली अकादमी केँ समर्पित करैत काल मोन पड़ैत अछि बाबी जकरासँ कथा सुनि सुनि क' हमर कथाकार जनमल । मोन पड़ैत छथि दादा (हमर पिता) जे हमर सम्पूर्ण लेखन सामर्थ्यक केन्द्रमे आइयो छथि । मोन पड़ैत छथि बड़का काका जिनकर अध्ययनशीलता सँ प्रभावित भ' आ जिनकर लाइब्रेरी (काका आ दादाक संयुक्त) सँ किताब पढ़ि पढ़ि हमर पढ़वा लिखवाक इच्छा बढल-पनपल । मोन पड़ैत अछि माय जे सभ दिन आ आइयो अपना सँ हटिकेँ अन्को लेल, सबहक लेल किछु सोचवाक आ करवाक प्रेरणा दैत अछि । ओकरे क्रियाकलाप आ जीवन शैली केँ देखि देखि हमर रचनाकार आ व्यक्ति दुनू कोनो पैघ बात सोचि सकवामे सक्षम भेल अछि आ आइयो होइत अछि । मोन पड़ैत छथि पत्नी जे हमर भविष्यचिन्तनविहीन जीवन प्रणालीक दबाब सभ दिन

भोगैत रहलीह आ भोगैत छथि । आ मोन पड़ैत अछि सम्पूर्ण परिवार, भाइ-बहिन, दोस्तमहिम, गाम-घर आ संसार जे घूमि फिरिक' हमर कथाक अंग बनैत रहैत अछि । खासक' मोन पड़ैत अछि दुनू बेटी बिनी आ सिमी (बन्दना आ अर्चना) जे अत्यन्त परिश्रम सँ एहि संग्रहक प्रेस कापी तैयार कयलक ।

एहि कथा संकलनक प्रकाशन हेतु हमर अकादमीक अध्यक्ष डा० फणीन्द्र नाथ ओझाक प्रति आभार प्रकट करैत छी । अकादमीक बिद्वान निदेशक आ साहित्य-सेवी बन्धुवर डा० देवकान्त झाकेँ धन्यवाद देबाक औपचारिकता करब हुनकर योगदानकेँ छोट करबाक घृष्टता हैत । मामू (डा० गंगेश गुंजन) जाहि तत्परता आ स्नेह सँ आवरण-सज्जा कयलनि अछि, तकर हुनका सँ अपेक्षे छल ।

प्रभास कुमार चौधरी

दीपावली १९८८

सातम दशकक कथा : प्रभासक

- ☐ लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल
- ☐ टूटल कसम : लभरल आखर
- ☐ सुभद्रा-हरण
- ☐ गय विढ़नी : तोहर डंक
- ☐ उपरफाँटू
- ☐ गिरगिट
- ☐ क्लान्त
- ☐ दिनचर्या
- ☐ असाध्य
- ☐ अरगनी
- ☐ सूर्यास्त
- ☐ अनचिहार अप्पन
- ☐ धमकी
- ☐ दुख

कथा-प्रभास

लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल

एकटा संकल्पक संग नरेन बाबू लिफाफ टेबुल पर सँ उठा भेलनि—
धीरेनक पत्र पढ़िये ली। आर उपाये कोन ? जखन पढ़बेक अछि, त' अखने कियैक
ने पढ़ि ली।

लिफाफ हाथ मे लैत देरी मोनक संकल्प गलि गेलनि आ एकटा विचित्र
डर पैसि गेलनि। हाथ काँप' लगलनि। थरथराइत आँगुरक बीच दबल लिफाफकेँ
ओ उनटि-पुनटि क' देखलनि, अपन पता देखलनि, पठाब'बलाक नाम देखलनि
आ फेर लिफाफ टेबुल पर राखि देलनि। लिफाफ फाड़ि क' पत्र पढ़बाक साहस
नहि भेलनि। जेना ओहि लिफाफ मे हुनक पुत्र धीरेनक पत्र नहि, कोनो विधाक्त गैस
बन्द होइ जे लिफाफ खुजैत देरी हुनकर चारु कात पसरि जयतनि, आ ओना क'
साँस बन्द भऽ जयतनि।

दू घंटा पहिने स्कूलक चपरासी लखना अजुका डाक टेबुल पर राखि गेल
छलनि। मात्र तीन टा पत्र छलैक—एक टा मे डी०इ०ओ० आफिसक इन्सपेक्शन्स
आ दोसर मे एग्जामिनेशन बोर्डक निर्देश। सभटा बात बुझा हुनू पत्र
नरेन बाबू, किरानी बाबूक इलाका लगा देलथिन आ हिदायति कयलथिन जे एकर
उत्तर समय पर चलि जाइ। मुदा नरेन बाबू जनैत छलाह जे ओकर उत्तर समय
पर नहि जयतैक। काज केँ समय पर करब वा ढंग सँ करब किरानी बाबू बीस
बरखक नौकरी मे नहि सिखने छलाह। टोकला वा डैटला पर मिमिया उठैत छलाह
—“क्या करें सर। काम ही इतना रहता है। इतना सारा काम धीर अकेला
किरानी। मैं तो कितनी बार कह चुका, अब एक किरानी से चलने का नहीं, एक
अलिस्टेन्ट चाहिए सर।” हुनकर तर्कक सामने चुप भऽ जाइत छलाह नरेन बाबू।
देहातक मामूली स्कूल मे दू-दू टा किरानी रखबाक ओकाति कहाँ ? फेर काजो कोन
बेसी छैक ? शिकायतो कयला सँ कोनो लाभ नहि छलनि—सेक्रेटरी साहब प्रसन्न
छलथिन किरानी बाबू पर।

तेसर पत्र । माने घीरेनक पत्र । मतलब हुनक जेठ बालकक पत्र । लिफाफे देखितहि नरेन बाबू बेटाक हस्तलिपि चीन्हि गेल छलाह । तैयो जेना विश्वास नहि भेलनि । पता देखलनि—नरेन्द्र नाथ झा, हेडमास्टर हाइस्कूल, मधुबन, जिला—दरभंगा । पठौनिहारक नाम देखलनि—घीरेन्द्रनाथ झा, रेलवे कालोनी, चिड़िया टाड पटना । तैयो अइ तेसर पत्र के 'खोलिक' पढ़बाक साहस नहि भ' रहल छलनि, जेना ओ लिफाफे कोनो अजेय दुर्ग हो, जकर भीतर हुनक पुत्रक पत्र बन्दी होनि, जकरा मुक्त करबाक हेतु अपन समस्त शक्ति लगाब' पड़तनि नरेन बाबू के । प्रयास ओ कयलनि अछि मुदा सभ व्यर्थ । कतेको देर दृढ़ प्रतिज्ञा भ' लिफाफे हाथ मे छेलनि अछि, मुदा लिफाफे हाथ मे अबैत देरी मोनक संकल्प बहि जाइत छनि, टूटि जाइत छनि । कागजक देवाल पर हुनकर थरथराइत आंगुर रंगैत छनि । कागजक ओ पातर देवाल नहि टूटैत छनि ।

त' की ओ पत्र नरेन बाबू नहि पढ़लनि अछि ? की ओ नहि जनैत छथि जे लिफाफेक अन्धकूप मे जे स्वर बन्दी छैक से की मँगैत छनि हुनका सँ ? ओ जनैत छथि, सभटा जनैत छथि । कागजक पातर देवाल पारदर्शक बनि जाइत छनि आ पत्रक एक-एक आखर स्पष्ट भ' उठैत छनि—चश्माक नीचाँ नुकायल हुनकर थाकल-हारल आँखि सँ किछु नहि बचैत छनि । सभटा देखि लैत छथि ओ । यद्यपि चश्माक लेन्स कमजोर छनि । आँखिक ज्योति आर धूमिल भ' गेलनि अछि, लेन्स बदल' पड़तनि । डाक्टर परुकेँ कहने रहनि मुदा डाक्टरक कहला सँ की होअय ? पाकिट कहनि तखन ने ? डाक्टर त' आरो बहुत किछु कहैत छनि—बेसी काज जुनि करू, ब्लडप्रेशर बढ़ि जायत, चीनी जुनि खाउ, परसेन्टेज पहिने सँ बेसी अछि । इनसुलिन बन्द जुनि करू, डायबटीज अछि । डायट हेल्दी लिअ' ।

नरेन बाबू किएक सुनथिन ओकर अण्ट-शण्ट गप्प ? कोना मोन रहनु इ अलाय-बलाय गप्प सभ ? सोचबा सुनबा लेल आरो विषय छनि, मोन रखबा लेल आरो गप्प छनि । हुनका मोन छनि जे दरमाहा तीन सय रुपैया छनि—प्रोभिडेण्ड फंडक रुपैया काटि कऽ । हुनका मोन छनि जे डेढ़ सौ रुपैया प्रोभिडेण्ड फंड सँ लेल गेल लोनक कटैत छनि—इन्स्टालमेंट पर । हुनका इहो मोन छनि जे तीस रुपैया लाइफ इन्स्योरेन्सक आ एक सय टाका घीरेन केँ पठयबाक छनि । बाँचि गेलनि बीस टाका । आ हुनका इहो मोन छनि जे तीन साल सँ खेत मे बज्जर पड़ैत छैक, बेसाहो लागैत छनि । हुनका इहो मोन छनि जे डाक्टर कहने

रहनि जे बेसी सोचल जुनि करू, मानसिक चिन्ता ब्लडप्रेशरक कारण होइत छैक । तैयो हुनका सोचबाक छनि जे बीस रुपैया मे महाजनक दस हजार कर्जक की हैतैक ? सुखेनक दसमाक पोथी कोना औतैक ? घीरेन आ रमेनक हेतु मास्टर कोना रहतैक ? छोटका जीतेन बड़ कमजोर भ' गेल छनि । हमेशा दुखिते रहैत छनि, ओकरो तऽ डाक्टर सँ देखयबाक छनि । मंझिली बेटा शीलाक बारहम छैक, परुका ओकरो विवाह तऽ कराबहे पड़तनि । छोटकी बलू सभ दिन फ्राक लेल कनैत रहैत छनि—कानौ ने कोना ? मात्र एक्केटा फ्राक छैक, सेहो पुरान, फाटल आ भटरंग । फेर डाक्टरक गप्प बियँक सुनथु ? चश्माक कमजोर लेन्स के कियँक देखथु ? देखबा सोचबा लेल ओहिना की नम समरया छनि । महाजनक सूद, घरक निघटल राखन....

आ घरक ध्यान अबिते रमाक ध्यान अबैत छनि नरेन बाबू केँ । हुनकर पत्नी रमा । रमा केँ देखि हुनका लगैत छनि जेना ओ कोनो मशीन छथि, जाहि मे ने कोनो संवेदना छैक, ने क्लान्ति । ने विश्राम, ने उपराग । छैक खाली काज, मात्र काज । नरेन बाबू नहि जनैत छथि जे रमाक लेल कखन दिन उगैत छनि आ कखन राति होइत छनि । भोरे आँखि खुजला पर नरेन बाबू देखैत छथि जे आंगन बहारल छैक, तुलसीक चौरा नीपल छैक, पूजाक आसन बिछाओल छैक, सराई कूड़ी माँजल, आ फूल तोड़िक' राखल छैक, आ चुलहा पजारिक', केतली मे चाहक पानि चढा रमा बैसल छथि । सात बजैत-बजैत सभ केँ जलखइ भेटि जाइत छैक आ दस बजे सभ खा पी क' स्कूल चलि जाइत अछि । मुदा रमाक काज दुपहरिया सँ पहिने कहियो खतम नहि होइत छनि । छुट्टीक दिन मे नरेन बाबू देखैत छथिन जे एक हाथ सँ जीतेन के सम्हारने रमा भोर सँ तीन बजे घरि भंसाघर मे व्यस्त रहैत छथि । खवासिनी नहि छनि, ऐंठो अपने उठब' पड़ैत छनि । सभटा करैत-घरैत दू बजे फुरसति होइत छनि, त' जल्दी-जल्दी कल पर दू लोटा जल ढारि भगवतीक पूजा पर बैसि जाइत छथि । फेर जल्दी-जल्दी दू कौर मुँह मे द' रमा भंसे घरक ओसारा पर पटिया बिछा ओघरा जाइत छथि । मुदा चारि बजे चाय सभकेँ भेटिये जाइत छनि । एक्को दिन कनेको देरी भ' जयतैक त' सुखेन आकाश माथ पर उठा छैतनि । चायक बड़ शौकीन अछि ओ । फेर साँझ सँ वैह क्रम । एक हाथ सँ जीतेन केँ पकड़ने, डिबियाक धुआयल इजोतमे रमा चुलहाक आगू मे बैसल रहैत छथि आ आंगन मे एसेसमेन्टक कापीक पहाड़क बीचसँ मूड़ी उठा नरेन

बाबू कीखन देखि लैत छथिन—“कतेक दुबेरि भ’ गेल छथि रमा । मात्र कंकालेटा बाचल छनि, एतेक खों-खों किएक करैत छथि ? मुदा अखन इ सभ गप्प नहि । अखन तेइस सय काँपी जेचबाक छनि । नरेन बाबू होमवर्क देखैत छथि, मंथली एकजामिनेशनक प्रश्न देखैत छथि आ सिम्बोल बैसा दैत छथिन । भोजन क’ आँगन मे घौकी पर पड़ल-पड़ल हुनकर अलसायल आखि देखि लैत छनि जे रमा अखनो घरि बाझले छथि । फेर आँखि झेपि जाइत छनि । राति बितला पर कीखन नीन्न टूटि गेना पर नरेन बाबू सुनैत छथि जे रमा नींद मे कुहरि रहल छथि । रमाक कुहरनाइ शतमुखी भऽ आँगनक कोना-कोना मे गनगनाय लगैत छनि आ फेर भरि राति नीन्न नहि होइत छनि नरेन बाबूकेँ, एक्को मिनटक लेल नहि ।

टनटन-टनटन.....

स्कूलक घंटी जोरसँ टनटना उठलैक । विचारक श्रृंखला टूटि गेलनि । चहमा उतारि कुर्ताक छोर सँ आखि पोछैत छथि नरेन बाबू । डेढ़ बाजि गेलैक-टिफिन । लड़की सभक कॉमन रूम मे हल्ला-गुल्ला शुरू भऽ जाइत छैक सभ दिन जकाँ आ अपन आदति मोताबिक किछु छौड़ा सभ किरानी बाबूक टेबुलक चारुकात जुमि जाइत अछि । नरेन बाबू अपन आफिसक निरीक्षण कर’ लगैत छथि । एकदम स्पेशल हॉल । एक्के टा कोठली मे आलमारी आ रैक राखि क’ तीन भाग कयल । पूबसँ आधा मे नरेन बाबूक आफिस छनि आ दोसर भाग के फेर आलमारी आ रैक राखि क’ दू भाग मे बाँटि देल गेल छैक—उत्तरबारी भाग किरानी बाबू बैसैत छथि आ दक्षिणबारीकात मे लड़की सभक कॉमन रूम छैक । अइ तीनू कोठलीक बीच बस एक आदमीक आब’ जाय जोगर रास्ता छोड़ि देल गेल छैक, आलमारी सभक बीच कनेक गैप छोड़ि क’ । मुदा किरानी बाबू अइ बाटे रहि निकलि पबैत छथि । हुनकर तीनमहला घोघि ओहि मे अक्सरहाँ फँसि जाइत छनि आ फेर तीन-तीन आदमी मिलिये क’ निकालि पबैत छनि हुनका । नव व्यवस्था लेल सेक्रेटरी केँ नहि कहि सकैत छथिन । मामूली बात पर काल्हिये कतेक पैघ अपमान क’ बैसलनि नवका सेक्रेटरी । गाम पर किछु कालक हेतु चारिटा छिट्टाक काज छलैक ।—स्कूल पर छिट्टा सभ बेकार पड़ल छलैक । नरेन बाबू लखना सँ कहलखिन जे किछु कालक हेतु चारिटा छिट्टा स्कूल पर सँ गाम पर द’ अबही, फेर ल’ अनिहें । सेक्रेटरी साहेब छिट्टा नहि जाय देलथिन । कह’ लगलथिन—ई त’ गलत बात मास्टर साहेब । अहाँ लोगनी जब स्कूलक चीज अप्पन काज मे लगैबै तखनी स्कूलक काज कोना होतइ । ई त’ ठीक नै है ।

४]

लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल

नरेन बाबूक भीतर किछु खोलि उठलनि । देहक सभटा क्षणित चेहरा पर आबि रुकि गेलनि । आब अइ सेक्रेटरी सँ ओ की बाजणु ? ओ नीक जकाँ जनैत छथि जे मैनेजिंग कमिटीक जानकार लोकनि दू क्लास पढ़ल योग्य सेक्रेटरी केँ अही निमित्त हुनका माथ पर बैसा देलथिन अछि जे ओ बात-बात पर हुनकर अपमान क’ सकनि । नहि जानि कोन-कोन पापड़ बेलि थोड़ेक रुपैया कमलक धा आइ डोनर बनल फिरैत अछि । अपने त’ नरेन बाबूक लाख विरोध कयलोपर स्कूलक पाँच हजार रुपया छुट्टी मे अपना हाथ राखि लेलकनि । कहलकनि-छुट्टी मे स्कूलक मकान बनतै । मकान त’ नहि बनल मुदा सेक्रेटरी साहेबक बेटीक विवाह भ’ गेलनि । स्कूलक रेडियो दरबज्जा पर बजैत रहलैक आ स्कूलक बुर्सी पर टाँग पसारि बरियाती सभ सिगरेटक धुँआ उड़बैत रहलाह । से सेक्रेटरी चारि टा मामूली छिट्टा लेल हुनकर अपमान क’ बैसलनि । गलत-सही सिखब’ लगलनि । नरेन बाबूक मुँह मे एकटा मुँहतोड़ जवान आबि क’ रहि गेलनि । मात्र एतबे कहलथिन—“अहाँ ठीक कहै छी सेक्रेटरी साहेब । स्कूलक चीज हमरा सभ अप्पन काज में लगाबी से त’ ठीक बात किन्नहु नहि ।” आ अखन टीचर्स क्लब मे बैसल सेक्रेटरी साहेब चाहक स्वाद लैत प्रवचन बँत हेताह “हम त’ अहाँ आरक सेवक हूँ, अहाँ आर के बेतन नखत पर मिले, स्कूल मे पढ़ाई नीमन से हो, स्कूल के तरक्की हो, सेहे त’ हम चाहैत हूँ ।” सभ मास्टर हँ मे हँ मिला रहल हेथिन दरबारी जकाँ आ सेक्रेटरी साहेब अपन कान्ह पर पड़ल जोलही गमछा केँ बेर-बेर गर्ब सँ झटकारि रहल हेताह ।

स्कूलक तरक्कीक हेतु सेक्रेटरी साहेब वस्तुतः बड़ मेहनति कयलनि अछि । दू क्लास पढ़ल ई शिक्षित सेक्रेटरी क्लास-क्लास मे घुमि क’ पूछैत छथिन जे फल्लौ मास्टर की सभ पढ़ौलखि आ केहन पढ़ौलनि ? यदि लड़का सभ कहलकनि जे ठीक पढ़ौलनि तखन, त’ जान बचलनि मुदा यदि कहलकनि जे नीक नहि पढ़ौलनि त’ फेर ओइ मास्टरक हालत खराब । झट बर्खास्त करबाक प्रस्ताव । शीतल बाबूक मामला मे त’ हुनकर मोस्तेदी देखबा जोगर छलनि । कोनो भुसकौल विद्यार्थी कहि देलकनि सेक्रेटरी साहेब केँ जे शीतल बाबू ज्योग्राफी ठीक स’ नहि पढ़बैत छथि, आ सेक्रेटरी साहेब भीड़ि गेलाह हुनका डिप्रेड करबा पर । शीतल बाबू असिस्टेंट हेडमास्टर छथि । बेचारे बीस वर्ष भरि बाहर हेडमास्टरि कयलनि, फेर गामक स्कूल जानि असिस्टेंट हेडमास्टर भ’ चल

लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल

[५]

धयलाह। चालीस वर्षक शिक्षक जीवन मे कखनो कोनो शिकायति नहि भेलनि। सभ हुनकर पढ़ाईक प्रशंसक रहलनि, मुदा आइ कोनो भुसकोल विद्यार्थी जे भरिसके कोनो विषय मे पास हो, कहि देलकनि जे हुनका पढ़ब' नहि अवैत छनि, त' दूष महक माछी भ' गेलाह। शिक्षकक पढ़ाईक निर्णायक एकटा जाहिल विद्यार्थी सँ बढ़ियाँ आर भँये के सकैत अछि? नरेन बाबू आइ गेलाह—शीतल बाबू के डिग्रेड नहि होब' देलथिन। ओ जनैत छथि जे सेक्रेटरी साहेब केँ मोन मे की छनि। मुदा ई त' अन्याय थीक, पक्षपात थीक।

“चाह, मालिक।”

चिहुँ कि क' मूढ़ी उठोलनि नरेन बाबू। लखना चाह लेने ठाढ़ छलनि। चाहक चुस्की लैत देरी मोन मे कने स्फूर्ति भरि गेलनि। किछु हो, लखना चाह बड़ सुन्दर बनबैत अछि—लिकर स्ट्रॉंग, सोल्युशन हाई, स्वाद विलक्षण। नरेन बाबू जल्दी-जल्दी चुस्की लेब' लगलाह। झट कप खाली भ' गेलनि। तखने नरेन बाबू के लगलनि जे हुनको जीवन अही प्याली सन छनि। क्षण भरि पहिने एहि प्याली मे सभ किछु छलैक, उष्णता आ उफान। आब किछु नहि छैक, खाली पड़ल अछि—पूर्णतः रिक्त। तहिना नरेन बाबूक जीवन मे काल्हि सभ किछु छलनि, आइ किछु नहि छनि—बिल्कुल खाली प्याली जकाँ। काल्हि आ आइ मे कतेक अन्तर छैक!

सत्ते, काल्हि आ आइ मे बड़ अन्तर छैक। लगैत छैक जेना काल्हि आ आइक अन्तराल सय बरखक होइ, हजार बरखक होइ, ततेक पैघ शून्य होइ दूनूक बीच जकरा कहना पाटल नहि जा सकय। अखन तीनिये बरख त' भेलैक अछि आ तीनिये बरखमे सभ किछु बदलि गेलैक। घरती बदलि गेलैक, आकाश बदलि गेलैक। तीन बरख पहिने नरेन बाबूक जीवनमे सभ किछु छलनि—उमंग, आशा आ रंगबिरंगी स्वप्न। आ ओ स्वप्न निराधार त' नहि सजौने छलाह नरेन बाबू? धीरेन छले तेहन जे ओकरा पर आस लगाओल जाय, स्वप्न सजाओल जाय। अपरके स्कालरशिप परीक्षा मे जिला मे प्रथम आयल छल। फेर अपने स्कूल मे नाम लिखा देलथिन नरेन बाबू छठमा क्लास मे। मुदा नरेन बाबू बेसी दिन नहि राखि सकलथिन ओकरा अइ स्कूल मे। धीरेन मे एकटा बड़ खराब आदति छैक। ओकरा गलत बात सहले नहि जाइ छैक। मन्नू बाबू 'अग्रसर' माने तैयारी आ आतपत्र' माने उपर पढ़ौलथिन आ धीरेन भीड़ि गेलनि हुनका सँ। नरेन बाबू धर्मसंकट मे

पड़लाह। धीरेन के दण्ड दितथिन त' ओकर स्वाभिमान केँ चोट लगितैक आ यदि छोड़ि दितथिन त' लोक कहितनि—अपन बेटा छलनि, तेँ छोड़ि देलथिन। लोक निन्दा सँ डर' पड़लनि। धीरेन केँ दण्ड देलथिन। बेंत सँ पिटलथिन ओकरा—जिनगी मे पहिल आ अन्तिम बेर। आ तहिया सँ हुनकर जीवन एकटा नव मोड़ लेलकनि। धीरेन ज़िद पर अड़ि गेल—“हम नहि पढ़ब एहि स्कूल मे जत' हमरा खाली एहि वास्ते पीटल गेल जे हम हेडमास्टरक बेटा छी।” सभ बुझा क' हारि गेल मुदा धीरेन टस्स सँ मस्स नहि भेल। लाचार नरेन बाबू लहेरियासरायक एकटा नीक स्कूल मे नाम लिखबा देलथिन। बंगाली टोला मे अप्पन डेरा छलैक, उपर सँ पचास टाका नगदो देब' लगलथिन।

धीरेनक माँग बढ़िते गेलैक, बढ़िते गेलैक, अस्सी.....सय-सवा सय-डेढ़-सय। आ ओही अनुपात मे तरह-तरहक गप्पो उड़' लगलैक—धीरेन त' किताब छूबितो नहि छैक—राति-राति भरि निपत्ता रहैत छैक—खाली सिनेमाक चक्कर लगबै छैक। आर त' आर, छोड़ी सभक चस्का सेहो लागि गेलैक अछि। दिन-राति बंगाली छोड़ी सभक पाछाँ बौआयल फिरैत छैक। सुनलियैक अछि जे पानि जकाँ रुपया बहबै छैक ओकरा सभ पर। नरेन बाबू सभ अचटबैत गेलाह। एक कान सँ सुनि दोसर कान सँ बहार करैत रहलाह। हुनका विश्वास छलनि अपन रक्त पर। धीरेन हुनकर विश्वास केँ धोखा नै देलकनि। फर्स्ट डिवीजन सँ मैट्रिक पास कयलक, नीक नम्बरक संग। नरेन बाबूक मोन नाच' लगलनि, सपना सत्य होइत लगलनि। रुपैया बेसी खर्च भेलनि त' भेलनि, रुपैया त' हाथक मैल छैक। धीरेन बायलोजी ल' क' पटना साइन्स कालेज मे प्रवेश कयलक।

फेर सभटा उनटि-पुनटि गेलैक। डायबेटीज आ ब्लडप्रेसर तेना ने पकड़लकनि जे छः मास बिछौने सँ नहि उठि सकलाह। सभटा जमा पूँजी खतम भ' गेलनि। ऊपर सँ कर्जो। तखन जीवनक सभसँ पैघ आघात। धीरेन आइ० एस० सीक परीक्षा छोड़ि देलकनि, साइन्स नहि पढ़त। नरेन बाबूक स्वप्न टूटि गेलनि। बेटा केँ डाक्टर बनयबाक सपना। कर्जक बोझ उपर सँ लदैत गेलनि। बड़की बेटी लीलाक विवाह आ द्विरागमन—कर्ज पाँच हजार रुपया। सुरेनक उपनयन—कर्ज दू हजार रुपया। मायक श्राद्ध—कर्ज पाँच हजार रुपया। कर्जक दलदल मे फँसि नरेन बाबू दुइये बरख मे बूढ़ भ' गेलाह—चेहरा पर झुर्री लटकि गेलनि।

भाग्य भास जगा जगा तोड़ैत रहलनि, उठा-उठा पटकैत रहलनि। आसक क्षीण किरण—धीरेन आइ० ए० कयलकनि, फस्ट डिवीजन भेटलैक। ओनसं ल' बी० ए० मे एडमिशन लेलैक। कर्जक बोझ सँ दबल नरेन बाबूक जिनगी भिसियाइत रहलनि—बस एक आस पर। धीरेन आइ० ए० ए० वम्पीट करत। मुदा धीरेन बेइमान बहार भेलनि। ठीक परीक्षे बेरमे दुःखित पड़ि गेलनि। नरेन बाबू ई धक्का नहि सहि सकलाह। मोन टूटि गेलनि। आब...आब...

आ छुट्टी बिता पटना जाइत काल धीरेन कहने छलनि—हम जनैत छी बाबूजी, हमरे कारण ई घर उजड़ि गेल। अहाँक जिनगी फोंक भ' गेल, मायक देह गलि गेलैक। हम जनैत छी, हम अपन भाइ-बहीनक दुश्मन छी। हमरे कारण ओकर सभक समुचित भरण-पोषण नहि भ' रहल छैक। ने अपेक्षित अन्न वस्त्र भेटैत छैक, ने उचित शिक्षा। मुदा आब अहाँ चिन्ता नहि करू। हमरा जेना हैत, अपन व्यवस्था स्वयं करब। अहाँ मुखेन आ बीरेन के देखियौक, माय के देखियौक, अपन इन्तजाम हम क' लेब, जेना हैत।

आ महीना बितलैक नहि कि धीरेनक पत्र टेबुल पर पड़ल छनि। नरेन बाबू जनैत छथि जे धीरेन की लिखने हेतनि। एक बेटा एक बाप सँ दाम मँगने हेतैक ओइ रंग-बिरंगी स्वप्नक, जे बाप ओकरा आसपर देखने छलैक। एक बेटा एक बाप सँ मूल्य मँगने हेतैक ओइ आसक, ओइ उम्मीदक, जे बाप, बेटा पर लगैत छलैक आ जकर एक-एक किस्त ओ बाइस साल सँ चुकबैत रहल अछि—मरिखपि क'। मुदा आब छाती मे दम नहि रहलनि। आब.....

टन...टनटन...टनटन।

घंटी फेर टनटुना उठलैक। नरेन बाबू सिमसिमायल आँखिये देवाल पर हाँगल चार्ट दिस तकलनि—फाइडे फिफ्थ पीरियड, क्लास टेंथ, एलीमेन्ट्री फिजिओलोजी आ हाइजीन। चौक आ डस्टर ल' ठाढ़ भेलाह। तखने लिफाफ पर दृष्टि गेलनि। एक क्षण देखैत रहलाह। फेर लिफाफा उठा क' पाकिटमे रखैत सोचलनि—अइ पीरियडक बाद अबसे पढ़ि लेबैक।

एक झुण्ड छोड़ा सभ हल्ला मचबैत बरण्डा पर दौड़ि गेल।

बकहूबर १९६२

लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल

टूटल कलम : लभरल भाखर

आइ अहाँक कथा अवसे लिखि दितहुँ ममता। विश्वास कर, आइ संकल्पपूर्वक अहाँक कथा लिख' बैसल रही। मुदा एकटा अपरिचित स्त्री बीच मे टपकि बाघा ठाढ़ क' देलक। विश्वास कर ममता, ओ स्त्री एकदम अपरिचित छल। कमसँ कम आइ सँ पहिने ओकरा कहिओ देखने नहि छलियैक। प्रायः देखियो क' अनठा देने छलियैक।

अहाँ कहब, ई एकटा बहाना थिक—गढ़ल गप्प। हमर कथा नहि लिख' चाहैत छी, नहि लिखू। अइ मिथ्या बहानाक कोन काज? एकटा अपरिचित स्त्री हमर कथा लिखब निषेध क' देलक आ अहाँ झट द' मानि गेलियैक! बहुत खूब! बेसीत छी, ओकर बड़ जोर छैक अहाँ पर!

अहाँकेँ अघलाह नहि लागय त' हम कहि दी ममता जे ओकर सत्ते बड़ जोर छक! अधिकारपूर्वक कहि गेल, “आइ अहाँ ममताक कथा नहि लिखि सकैत छी! लिखबाक अछि त' हमर कथा लिखू।” हम ओकर आदेश टारि नहि सकलियैक ममता।

किछुये काल पहिने आयलि छल। बाहर प्राणहीन नीरबता छलैक। उदास राति अन्हरियाक आलिगन मे बेसुध पड़ल छल। दिन भरि थकनीक बाद हवा मे एकटा चुप्पी छलैक—आपरेषनक पूर्व रोगीक विकल चुप्पी सन! एहन उदास आ मुन्न रातिमे अहाँ मोन-पड़ि जाइत छी आ कुरूप-कटाह अन्हरिया अहाँक स्मृतिक किरण सँ जगमगा क' उज्ज्वल, प्रोज्ज्वल आ भावुक बनि जाइत अछि।

आइयो अन्हरिया रातिकेँ अहाँक स्मृतिक रोशनीसँ उद्भासित कयने बैसल छलहुँ कि अपन देल वचन मोन पड़ल। अहाँक कथा लिखबाक वचन। झट कागज कागज कलम ल' बैसि गेलहुँ।

तखने ओ अपरिचित स्त्री टपकि पड़ल। हम ओकर बात पर्यन्त सुनबा लेल तैयार नहि छलियैक। तामसेँ मिजाज धोर भ' गेल छल।

टूटल कलम : लभरल भाखर

हमर अनिच्छाक उपरान्तो ओ अपन कथा कहैत गेलि । हम मिथ्या नहि बाजब ममता, ओकर कथा सुनि अहाँक कथा लिखबाक संकल्प कखन बिसरि गेल से अपनो पता नहि लागल । जोर नहियो दैत, तैयो ओकरे कथा पहिने लिखितियैक । ओकर कथा मे किछु तेहेने असरि छलैक ।

नहि ममता, ओइ स्त्रीक सम्बन्ध मे अहाँ अलट-बिलट नहि सोचि सकैत छी । ओकरासँ ईर्ष्याक क' अहाँ बादमे पछतायब, अहाँक माथ लाजे भुकि जायत ; नहि जानि, अहाँ लोकनि एतेक शक्ती कियैक होइत छी, अपन प्रेम तक पर विश्वास नहि क' सकैत छी ।

नहि क' सकैत छी त' जुनि कर । मुदा हमर अनुरोध अछि जे ओइ स्त्रीक प्रति अपन मोन मे कोनो दुष्प्रतिभा नहि लाउ । बहुत छोट भ' जायब अहाँ ।

आ अहाँ ककरो समझ छोटबनी, ई हम बर्दास्त नहि क' सकैत छी, सोचियो नहि सकैत छी । अहाँ बहुत उँच छी—हमर भावनोंसँ ऊँच ! दृष्टिक सामर्थ्यसँ ऊँच । हम अहाँक प्रेम पोलहुँ अछि, तकर स्मरणमात्रसँ गवित भ' उठैत छी हम ! ते' हमर अनुरोध अछि जे सभ किछु सुनबासँ पूर्व किछु अलट-बिलट सोचि हमर विश्वास, हमर प्रेमकेँ अपमानित नहि कर ।

आइ अहाँक गप्प सभ बेर-बेर मोन पढ़ि रहल अछि—एक-एक क' कतेको गप्प ! अहाँक ओ गप्प सभ जे अइ सुन्न जिनगीक एकमात्र पूँजी अछि, जकरा बेर-बेर गनि क', दोहरा क' सन्तोष नहि होइत अछि जेना कोनो कंजूस अपन जमा पूँजी बेर-बेर गनियो क' नहि थकैत अछि । प्रायः ओकरा आशा रहैत छैक जे बेर-बेर गनलासँ, भ' सकैत अछि, जे जमा मे किछु वृद्धि भ' जाय ।

हम लिखैत छलहुँ आ अहाँ चुपचाप बैसलि देखैत रहैत छलहुँ । कोखन लिखल अंश उठा क' पढ़' लगैत छलहुँ । एक दिन नहि जानि की फुरल जे अहाँ हमरा हृत्थसँ कलम छीनि ओकरा नीक जकाँ देखैत कह' लगलहुँ—“जनैत छी प्रभास । प्रत्येक स्त्री एकटा कलम होइत अछि । रोशनाइ नहि रहए, कलम बेकार आ अकार्यक भ' जाइत अछि । तहिना स्त्रीक जीवन विरथक भ' जाइत छैक, जखन ओकर जीवनके ककरो उदार प्रेमक अजस्र स्रोत नहि रहैत छैक ।” अहाँक कथनक गूढ़ अर्थ बहुत बादमे स्पष्ट भेल छल ।

हमर एकटा बड़ खराब आदति छल । हम रोशनाइ घर पर रखबाक आ अपनैसँ कलम भरबाक संझटिसँ पड़ाइत रही । रोशनाइ घटि जाय त' कोनो परिचित दोकान पर सेम्पुलक शीशीसँ भरवा लौ वा कोनो दोस्तक घर जा' कलम थमा दियैक जे रोशनाइ भरि दे । अहाँ जनैत छी, हम कंजूसीक नीयतिसँ ई हरगिज नहि करैत छलहुँ, हमर अभ्यासे बिगड़ल छल ।

एक दिन अहाँ पारकर क्विकक बड़का शीशी लेने अयलहुँ आ टेबुल पर राखि कह' लगलहुँ—“आइसँ अइ रोशनाइक सिवा दोसर कोनो रोशनाइ अपन कलममे भरी त' रोशनाइ नहि, हमर शोणित भरी । जखन जे भेटि जाइत अछि, दारि दैत छियैक ! निर्दयी ! अहाँ कलमक व्यथा कियैक नहि बुनैत छियैक । कनेक देखियोक जे बेर-बेर रोशनाइ बदलासँ एकर आखर केहन भटरंग भ' गेलैक अछि । एतेक अनाचार कयला पर आर कतेक दिन लिखि सकब एकरासँ ।”

हम अहाँक बात मानि लेलहुँ ममता । आइ धरि मानैत आबि रहल छी । मुदा कोखन सोचैत छी जे हमर पुरना अभ्यास कतेक सुन्दर छल । सुन्दर अइ लेल जे हमर वैह अभ्यास अहाँकेँ हमरा निकट आनि देलक । मोन अछि ओ राति जहिया पहिल बेर डेराइत-डेराइत अहाँसँ किछु मँगने रही ।

राति प्रात दिश डेग उठौने छल । तैयो अन्हार ततेक गाढ़ रहैक जेना घोरल कारी अमौट । मोन करय त' चम्मच मे उठा परसि जाइ । अहाँ अपन कोठलीमे परीक्षाक तैयारीमे जागल रही । हमर आ अहाँक कोठलीक बीचक सड़क पर म्युनिगपैल्टीक लाइट ओइ दिन दसे बजे भिझा गेल रहैक आ सड़क पर गरदनि उठौने ठाढ़ बिजलीक उजरा खम्भा अन्हारमे तेहन लागय जेना कारी कपार पर उजरा चाननक लम्बा ठोप ।

अहाँक कंजूस मामा बिजलीक लाइव नहि लेने छल । अहाँ लैम्पक रोशनीमे टेबुल पर झुकलि किछु पढ़ि रहल छलहुँ । पीयर रोशनीक लचकैत बाँहि खिड़कीसँ बाहर नमरि दूर तक पसरल अन्हारकेँ छूबि रहल छलैक । अहाँक थाकल अलसायल आकृतिकेँ देखि भ्रम होइत छल जे लैम्पक रोशनी नारी आकृतिमे टेबुल पर झुकल बैसल अछि !

हम असर्मजसमे पड़ल रही ! कतेको बेर सोचलहुँ जे अहाँक खिड़की लग जा माँगि ली ! मुदा प्रत्येक बेर कोनो अज्ञात भय आ संकोचसँ उठल डेग जमीनमे सटि जाय !

एकटा अपूर्ण कथा पूरा करवाक छल ! बीचहिमे रोशनाइ घटि गेल छल । बड़ मस्किलमे पड़ल रही । ओतेक राति क' ककरो उठा क' रोशनाइ मंगवाक अर्थ छल गारि आपके नोट देब आ बिबा कथा सम्पूर्ण कयने सुतबाक चेष्टा करवाक अर्थ छल बिना परीक्षामे सम्मिलित भेने अखबारमे प्रकाशित परीक्षाफलमे अपन नाम ताकब ।

खाली अहीटा अपन कोठलीमे जागलि परीक्षाक तैयारीमे व्यस्त रही । कतेको बेर सोचलहुँ जे हज' कोन, अहींसँ माँगि लैत छी । मुदा साहस जबाब द' जाय !

तखन अइ कोठलीमे अयला मात्र दुइये मास भेल छल ! दू मासमे ककरो सम्बन्धमे जतेक जानल जा सकैत छैक, ओइसँ बहुत अविक हम अहाँक विषयमे जानि गेल छलहुँ । तकर ई अर्थ कयमपि नहि जे हम नारीक सम्बन्धमे विशेष जिज्ञासु छी । अहाँ नीक जकाँ जनैत छी । अहाँ छलहुँ तेहने जकर विषयमे उत्सुकता हो; किछु जनवाक इच्छा जागय ।

गृहपति प्रधानत मुखर्जीक भगिनी ! नाम ममता चटर्जी । म-म ता तीन अक्षर, एक मात्रा । चटर्जी—उच्चकुलशीलक द्योतक । बी० ए०क छात्रा । रंग खूब साफ नहि मुदा ओइमे एकटा तेहन चमक जेहन स्वच्छ धौअल आकाशक होइत छैक । चेहराक पानि ततेक तेज जेना पानि भरल मेघ आव बरसल, आव बरसल । आँखि तेहन जे डुबला पर पतो नहि लागय आ नारीत्व ततेक जे जकरे नजरि पड़ैक सँह बन्हा जाय ।

बहुतोक मुँहसँ सुनि क' बुझने रही जे अहाँक बाप कलकत्तामे डेढ़ सौ रुपया महीना पबैत छथि आ अहाँक माय प्रत्येक साल परिवारमे एक आदमीक खर्चा बढ़ा दैत छथि । बहिन-बहिनोइक सहायता करवाक प्रबल इच्छा ओ अहाँक पढ़ाइक वास्ते अहाँक मामा अहाँकेँ अपना लग राखि लेने छल ।

सस्ते, ओ अहाँकेँ बड़ मानैत छल । अहाँक सुविधाक ओकरा बड़ ध्यान रहैक । भोरे अन्हारे उठि जखन अहाँ ओकर स्थूलकाय पत्नी आ आधा दर्जन चायापुताक हेतु नौ बजेसँ पहिने जलखइ आ भोजन दुनूक व्यवस्था क' दियैक, साढ़े नौ बजे कालेजक बस पकड़वाक छुट्टी अहाँकेँ अवस्से द' दैत छल । जाघरि अहाँ कालेजसँ नहि घुरियैक, ओकर समस्त परिवार अहाँक प्रतीक्षा करय । बस कनियो

अबेर सँ पहुँचैक त' अहाँक मामा अ-देसासँ बेर-बेर सड़क दिस ताकय । अहाँकेँ देखैत देरी मभक चेहरा पर अपूर्ण सन्तोष आ निश्चिन्तताक भाव पसरि जाइ । कोपी-किताब-राखि अहाँ तुरन्त मनसा घग्मे जुटि जाइ । मुदा दस बजैत-बजैत अहाँक दयालु मामा अवस्से फुरसति द' दियै । सभ खा-पी क' चैन भ' जाय । अहाँकेँ भोरमे समय कम भेटय, तेँ ऐ'ठ बरतन बासन रातियेमे माँजि ली । तखन अहाँ किताब ल' परीक्षाक तैयारीमे बैसि जाइ । कौखन-कौखन भोरकवा उगि जाय मुदा अहाँ बैसले रहि जाइ । थाकल, कलान्त मुदा दूढ़ संकल्प । हम सोचि सोचिक' आश्चर्यचकित रहि जाइ जे अहाँ सुतैत कखन रही, विश्राम कखन करैत रही । जतेक अहाँक बारेमे सुनने रही, जानि पौने रही, ओतबे अहाँ पर श्रद्धा भ' गेल छल ।

तैयो ओतेक राति क' अहाँसँ रोशनाइ मंगवाक साहस नहि होइत छल । अपन बिगड़ल अभ्यास पर तामस भेल मुदा ताहिसँ कोनो काज कहाँ बनल ? विवशता हमरा अहाँक खिड़की लग ठाढ़ क' देलक । “सुनू ।” हम रुकि रुकि क' बाजल रही । अहाँ चिहुँकि क' मूड़ी उठोलहुँ । किछु क्षण चकित भेल तकैत रहलहुँ आ फेर उठि क' खिड़कीक समीप अयलहुँ ।

“एक पेन रोशनाइ द' सकब अहाँ ?” हम अपन बात डेराइत-डेराइत कहलहुँ । हमरा हाथसँ कलम ल' क' रोशनाइ भरि देलहुँ अहाँ ! कलम वापस लैत काल हम औपचारिकता निर्वाह करैत बजलहुँ—“धन्यवाद ।”

अहाँ किछु नहि बजलहुँ । मुदा घुरैत काल आँखि दोसर तरफ रहलो पर हमरा लागल जे खिड़की पर ठाढ़ि अहाँ हमरे दिस ताकि रहल छी । भरिसक हमर भ्रम रहल हो । आइ घरि ई बात हम अहाँसँ पुछियो नहि सकलहुँ अछि ।

तहियासँ जखन रोशनाइ सठि जाय, हम अहाँक खिड़की लग जा कलम थमा दी । अहाँ कहियो किछु नहि बाजी । चुपचाप कलम भरि क' घुरा दी ।

एक दिन अहाँ बड़ कटाह गप्प बाजि उठलहुँ । कलम भरि क' दैत कहलहुँ—“आब इ बहाना बड़ पुरान भ' गेल । कोनो नव ताकि लिय' ।”

अहाँक बात पर तिलमिला उठल छलहुँ हम । अहाँ हमर नीयति पर सन्देह करैत छी, से जनितहि मोनक समस्त संचित श्रद्धा नहि जानि कत' लुप्त भ' गेल । मोनमे एकटा तीक्ष्ण कटुता भरि गेल—“अपनाकेँ की बुझैत अछि ?”

अहाँक कोठली दिस खुज'वला खिड़की हम बन्द क' देलियैक जाहिरी
अहाँ पर नजरि नहि पड़य । मुदा दिमागसँ अहाँक ध्यान नहि हटि सकल । घण्टो
कोठलीमे अहाँक बात सोचैत रही ।

तखने एक राति अपत्याशित घटना घटल । हम लाइट मिझा क' अन्हारमे
पड़ल रही । नींद हमरासँ किछु रुसि जकाँ गेल रहय । अन्हारमे घण्टो बिछौन
पर पड़ल रही मुदा आँखि नहि लागय । जेना पपनीमे किछु अँटक गेल
रहय जे ओकरा खस' नहि दैक ।

अन्हारमे पड़ल हम नहि जानि की सोचैत रही कि भक द' कोठलीक
लाइट जरि उठल । अकचका क' उठलहुँ । जे किछु देखलहुँ ताहि पर
विश्वास नहि भेल । कोठलीक बीचोबीच अहाँ ठाढ़ि रही ।

अहाँक बात सुनि देहमे आगि लागि गेल छल । व्यंग्य करैत अहाँ बाजलि
रही —“एना खिड़की बन्द क' घरमे नुकयलासँ मोनक चोर नहि नुका सकब ।
अहाँ व्यर्थ अपना पर अन्याय क' रहल छी ।

क्रोधे समस्त ज्ञान आ विवेक लुप्त भ' गेल छल । पागल जकाँ चिचिया
उठल रही—“हम अहाँ लेल मरि रहल छी, एकाएक एतेक पैघ भ्रम अहाँ केँ
कोना भ' गेल ? की बुझैत छी अपना केँ अहाँ ?”

हमर उत्तेजना देखि अहाँ सकपका गेल रही । किछु क्षण स्तब्ध ठाढ़ि
रहलाक बाद शान्त मुदा भर्त्सनाक स्वरमे कहने रही—“एतेक पैघ भ्रम हमरा
कहियो नहि भेल अछि । एतेक राति क' हम अहाँक कोठलीमे एकसरि आयलि
छी । एना चिचियाक' अहाँ मोहल्लावला सभकेँ जगाक' देखब' चाहैत छियैक जे
ई चरित्रहीन स्त्री राति क' एकसरि अहाँसँ प्रेमक भीख माँग' आयलि अछि ।”

हम लाजे गड़ि गेल रही । किछु क्षण कोठलीमे मौन रहल । हम नहि
सोचि सकलहुँ जे की बाजो । अहूँ प्रायः अही स्थितिमे रही । अहाँ जयबाक हेतु
दरबज्जा दिस बढ़लहुँ । तँयो हमर बकार नहि फूटल ।

दरबज्जा लग आबि बिना हमरा दिस तकने अहाँ बाजलि रही—“ओइ
दिन हम कने हँसीक' देलहुँ, से एतेक ला गे गेल अहाँकेँ । मुदा आइ, रातिक'
एकसरि हम कोन विश्वास पर अहाँक कोठलीमे आयलि छी, से अहाँकेँ नहि सुझैत
अछि । अहाँ आन्हर छी ।

अन्हार फाटि गेल आ हम दोड़ि' अहाँक बाट छेकि लेने रही—“नहि
जाउ ममता । स्वीकार करैत छी, हम अपन मोनसँ लड़ि रहल छलहुँ !”

अहाँक संग-संग दुनियाक सभटा खुशी आ सभटा सुन्दरता हमर कोठलीमे
घुरि आयल छल । सागल जेना हमरालोकनि बहुत दिन सँ छपना केँ नुकीने रही
आ आब सभटा प्रगट भ' गेलापर एकदम खुजि गेल रही । कतहु कोनो संशय
नहि, कोनो पार्थक्य नहि । ततेक निकटता जे कोनो दूरी नहि, ततेक विश्वास जे
किछुओ अदेय नहि ।

हम लिखैत छलहुँ, अहाँ चुपचाप बंसलि देखैत छलहुँ । लिखल अंश
पढ़ैत छलहुँ, अपन पसिन्द आ आलोचना सुनबैत छलहुँ । कौनन जबदस्ती
अपन पसिन्दक' कोनो चीज लिखा लैत छलहुँ ।

हम थाकि क' बिछौनपर पड़ि रही आ अहाँ झुकि क' हमर केशमे आँगुर
फेरैत, हमर माथ, मुँह आ सम्पूर्ण देह पर स्नेह भीजल हाथ फेरैत फुसफुसाक'
गप्प करैत जाइ । बहुत रास गप्प—अप्पव गप्प, अप्पन लोकक गप्प, दुनियाक गप्प,
दुनियाक लोक गप्प । ओइ दिन हमरा ई डर नहि भेल जे हमर एतेक सुख संसारकेँ
देखल नहि जयतैक !

अहाँ बी० ए० कयलहुँ । हम बधाइ देलहुँ, मधुर बँटलहुँ । मुदा हमर
ई सुख स्थायी नहि भ' सकल । एक राति अहाँ अयलहुँ त' हमरा चीन्हाव
कठिन भ' गेल । चीन्हाव घण्टामे लाल गुलाब पीअर कनैल बनि गेल छल ।

अहाँ विदा माँग' आयल रही ! भोरे अहाँकेँ कलकत्ता जयबाक छल ।
ओत' अहाँक विवाह ठीक भ' गेल छल । हम बहुत किछु कह' चाहैत रही, मुदा
अहाँ नहि कह' देलहुँ । अपनो किछु नहि बजलहुँ । चुपचाप अवसन्न बंसलि
रही बड़ी काल धरि । जाइत काल कहने रही—“कलम सूक होइत अछि
प्रभास । ओ अपन पसिन्दक अस्मिव्यक्ति नहि क' सकैत अछि । संसार जबदस्ती
ओइमे अनिच्छित रोशनाइ भरि देलकैक अछि । ओकर आखर भटरंग भ'
जयतैक । कियैक त' ओ अतीत अवशेष नहि मेढा सकत ।

अहाँक अनुपस्थितिमे सभ किछु कटाह आ असह्य बनि गेल छल । राति
अन्हारमे सिसकैत रहय आ दिन इजोतमे ओघाइत । हम बताह जकाँ राति
बितला पर अन्हारमे आँखि फाड़ि-फाड़ि क' अहाँक कोठली दिस ताकल करी
जाहिमे अहाँक मामा किरायादार राखि लेने छल ।

दू वर्षक सुदीर्घ अवधिक उपरान्त एक दिन कलकत्ता मे अहाँ सँ भेट भेल छल । एकटा किताबक प्रकाशनक सम्बन्धमे कलकत्ता गेल रही । अहाँके देखिक' हमरा चिन्हबामे भ्रम होम' लागल छल ! भरिसके कोनो पूर्व परिचित अहाँके ओइ रूपमे चीन्हि सकैत । दुइये वर्षमे अहाँ कतेक बदलि गेल रही ।

अहाँ आफिस सँ डेरा जाइत रही । अहाँ नौकरी करैत छी, पति नहि, माय बापक संग रहैत छी, से जानि बड़ आश्चर्य एवं उत्सुकता भेल छल । अहाँ टारि देने रही — 'सभ क्यो त' अहीं सन नहि अछि प्रभास, जे पुरने कलम घसैत रह्य । पसिन्द बदल'मे कतेक समय लगैत छैक । नव माडेल मोटि गेल, पुरानके फेकि देलहुँ वा बेचि देलहुँ — इएह त' संसारक नियम छैक ।'

अहाँ आग्रह नहि कयने रही, तँयो हम अहाँक घर तक गेल रही । दू कोठलीक ओ मकान अहाँक भाइ बहीनक गर्दम — गोल सँ कोनो चिड़ियाघर जकाँ लगैत छल । अहाँक बाप खाली चौकी पर बेसल बीड़ी पीबि रहल छलाह वा अहाँक माय परिवारक संख्या वृद्धिक एकटा नव इश्तहार बाँटि रहल छलीह ।

अहाँ सभ सँ परिचय करीलहुँ । माय-बाप, गुली, बुली, खोखन, तपन..... अहाँक बाप-माय दू चारिटा औपचारिक प्रश्नो पुछलनि मुदा हुनका लोकनिक शंकाप्रस्त दृष्टि हमरा सँ नुकायल नहि रहल । अहाँक माय-बापकेँ डर छलनि जे हम कहीं अहाँकेँ ल' ने उड़ी । (छलनि की नहि ?)

हम जल्दिये अगुता गेल रही । साँस औनाय लागल छल । प्रायः अहाँ अही लेल चलबाक आग्रह नहि कयने रही ।

अहाँ विदा कर' किछु दूर तक आयलि रही । बाट मे हम अपन प्रस्ताव रखलहुँ । अहाँ तेना पुचकारि देलहुँ हमरा जेना हम कोनो अबोध शिशु होइ । हमर हाथ अपन मुट्ठी मे दबा कहने रही — 'नहि प्रभास ! आब ई सम्भव नहि । कलम बेकार भ' चुकल अछि । आब अहमे ओकर इच्छित रोशनाइयो पढ़ैतै, तँयो सुन्दर आखर नहि बनि सकतैक आ अहाँक आँगुर दबकल रोशनाइक दाग सँ भरि जायत ।'

ओही दिन हम घुरि अयलहुँ । विदा होइत काल अहाँ कहने रही — 'हमर कथा अवसस लिखब, प्रभास ! खाली नाम बदलि देबैक । नहि हो, सत्ते लिखि देबैक ।' हम वचन देने रही ।

आ आइ एतेक दिनक बाद अपन देल वचन पूरा कर' लगलहुँ, त' एकटा अपरिचित स्त्री बीचमे टपकि पड़लि । ऊपर सँ तमाशा ई जे हम ओकरा पर रुष्टो नहि भ' सकैत छियैक ।

अहाँ जनैत छी, ओ अबैत देरी, की कहलक ? कह' लागलि — 'अहाँ ममताक कथा लिखि रहल छी ! अहाँ भूखें छी ।'

त्रिगड़ि क' हम कोनो कठोर बात कह' लगलियैक मुदा बोल नहि फूटल ।

'अहाँ हमरा नहि चीन्हि रहल छी ?' ओ कह' लागलि — 'अहाँ सन कायर भाबुक सदिखन देरी सँ चीन्हैत अछि हमरा । हम एकटा स्त्री छी जे संकड़ो बर्ष धरि सात समुद्र पार कारागृहमे बन्द छलहुँ । हमर भक्त लोकनि हमरा ओइ कारागृह सँ छोड़ौलनि, मुक्ति देलनि । अपन रक्त सँ हमर पैर घोलनि । आबो नहि चीन्हि सकलहुँ हमरा ?'

हमरा चुप्प देखि ओ फेर बाजलि — 'आब प्रायः अहाँ चीन्हि रहल छी हमरा । यदि चीन्हि सकलहुँ अछि, त' बिलम्ब जुनि करू । चलू, बोत' चलि क' हमर कथा लिखू, जत' अहाँक हजारो भाइ अपन रक्त सँ हमर कथा लिखि रहल छथि । तन्नैत की छी, हम खाली एकटा स्त्री नहि, माय छी — अहाँ सभक माय । आइ फेर एकटा निर्लज्ज आक्रमणकारी अहाँक मायकेँ बन्दिनी बनाब' चाहैत अछि, अहाँ ओकर रक्षा नहि करबै ? निर्लज्ज पढ़ोसीक बर्बर आक्रमणक प्रतिकार नहि करबै ?'

ई कहि ओ स्त्री जाय लागलि । किछु दूर जा' क' घुरिक' हमरा लग आवि हमर माथ पर, ममत्व भीजल हाथ फेरैत बाजलि — 'ममता के लिखि दियोक जे हम अहाँकेँ ओकर कथा नहि लिख' देलहुँ । ओ रुष्ट नहि हैत, अभिमान करत । हम ओकरो माय छियैक ।

ओ स्त्री चलि गेलि आ हम अहाँकेँ पत्र लिख' बैसि गेलहुँ ।

हम हिमगिरीक उतुंग शिखर पर कथा लिखब, अहाँ घर-घर कथा लिखू । स्नेहक गर्म ताग सँ कथा बुनू । हमर संग दिअ' ममता ।

पपनी भरिया रहल अछि । आब विदा लेत छी । भोरे उठिक' रिक्रूटिंग आफिस जयबाक अछि । ●

सुभद्रा-हरण

ओ फेर सासुरसँ पड़ा अयलैक ! दोसर बेर !

ओकर नाम छलैक सुभद्रा । विश्वास करू, हम अपना दिससँ बिगाड़िक' नहि कहि रहल छी । सभ ओकरा सुभदरे कहैत छैक, सुभद्रा नहि । आर तँ आर, सरकारी कर्मचारी जखन जनगणना कर' अयलैक, तँ ओही सरकारी बहीमे यँह लिखलकै—ग्राम—गोखुला, नाम सुभद्रा, पेशर.....

संयोगक बात जे ओकर भाइयो नाम किसुनमा छक । पकिया रंग, श्रीकृष्णोर्ष बीस । मुदा हाथमे बँसुरी आ सुदर्शन चक्र नहि रहैत छैक । रहैत छैक हर आ कोदारि । हरबाह अछि हमर ।

बापकेँ सभ वसुदेवा कहैत छलैक आ मायक नाम की छलैक से ककरो नहि बूझल छैक । नव छलि तँ सभ वसुदेवा-बहु कहैत छलैक आ धीया-पुता भेलैक तँ सभ कह' लगलैक—किसुनमा माय । एकाध बेर दुसटोलीक कोनो-कोनो बुढ़याकेँ सीसोवाली कहैत सेहो सुनने छलियँक । मुदा सासुरमे ओकर नाम क्यो नहि जनैत छैक । प्रायः वसुदेवो नहि जनैत छलैक ।

सुभद्रा पांचे बरखक छलि तखने एक दिन माय-बाप दुनू बोखार लेन घुरलैक बाघसँ । भरि डाँड़ पानिमे कटनी कयने छलैक दुनू । बोखार की भेलैक, टुनकी लागि गेलैक । क्षणमे छनाक भ' गेलैक । दुनू साफ एक्के दिन । पाँच बरखक सुभद्रा टूगरि भ' गेल ।

किसुनमा सोलहमे पयर देन छल । हाड़-काट बेस मजगूत । बापक जगह भेटि गेलैक—हरबाही । ओकर तँ सोलहमे बरख छलैक, बापक दुलारू छल तँ कोनो काज, अपन जीवैत वसुदेवा नहि कर' देलकैक । नहि तँ ओकरा टोलमे होश सम्हारैत देरी हाथमे भट्ठा आ कागत कलमक बदला खुरपी, कचिया हाँसु, कोदारि, हर आ महींसक पगहा थम्हा देल जाइत छैक ।

से बापक दुलारूआ किसुनमा गराक उत्तरी उत्तरैत देरी हरबाही शुरू कयलैक—अपन पुरखाक धंधा, पांच पुस्त हमरे घरमे हरबाही करैत आबि रहल छलैक । बापक बसीयतमे ओकरो लेल सँह छलैक आ छलैक पांच बरखक एकटा टूगरि बहीन—सुभद्रा ।

तकर बाद कतेको बरख धरि दुसटोलीक सड़कक घूरा मे मात्र एकटा चारि हाथ घघरी पहिरने ओंधराइत लेरही-पोटही करितुट्ठी छौंड़ीपर ध्यान देबाक फुरसति ककरो नहि छलैक । रहबो कोना करतैक ? दुसटोलीक ओहि सड़कपर सैकड़ो मानव-सन्तान (?) चारि हाथक घघरी वा पँट पहिरने वा पूर्णतः दिगम्बर बनल ओंधराइत रहैत छैक । नंग-घड़ंग, विकृत आ बिनाबोन—देशक नबीन पीढ़ी, भविष्यक आशा ! ककरा एतेक फाजिल समय छैक जे एहि सभपर ध्यान दैत चल्य ?

एक दिन चारि हाथक घघरी नमरिक' दसहत्थी ननगिलाटक साड़ीमे वदलि गेलैक आ कारी देहक जमुनिया चामक भीतरसँ एकटा नव आभा फटि पड़लैक—कारी धानक खोंइचा फाड़ि के बहरायबला उजरा चाउरक दाना जकाँ—पुष्ट आ सुगन्धित ।

—आ तहियासँ दुसटोलीक सड़कक बाटे जायबलाकेँ तरह-तरहक सुगन्ध भेट' लगलैक । बाघमे फूटल नवका धानक सुगन्ध, गाछमे फड़ल नव टिकुलाक सुगन्ध । एकर सुगन्ध, ओकर सुगन्ध ।

मतलब ई जे एकदिन दुसटोलीक धूरा भरल सड़कपर जेना कोनो मोगलक हाथसँ अतरक बकसा खासि पड़लैक आ तहियासँ ओहि सड़कमे, ओहि धूरा मे कतेको तरहक सुगन्ध बसि गेलैक । सभकेँ सभ तरहक गन्ध लगलैक, मुदा ई बात निर्विवाद जे ओहि बाटे जाइत काल सभ क्यो नाकक पूरा फलका-फलका किछु सूँघ' लाग्य आ फेर एकटा मादक सुगन्धमे मातल ओकर डेग एम्हर-ओम्हर पड़' लगैक । भुतिया जाइक । मुदा ककरो पता नहि चलैक जे ओहि सुगन्धक स्रोत, ओकर उद्गम-स्थल कोन छैक ।

बभनटोलीक बादल चौधरीक (हमरे देयादीक) बेटा बिजली चौधरी एहि रहस्यक पर्दा उठाब'मे बिजलीक चुमको देखीलनि । दस दिनक हेतु शहरसँ छुट्टीमे

गाम अयसाह आ गमक पावि सुँघैत-सुँघैत दुसटोलीक ओहि सङ्कप पर आबि गेलाह जत' पहुँचि लोकक डेग एम्हर-ओम्हर पड़' लगैत छलैक । भुतिया जाइत छलैक । बिजली चौधरी माहिर छलाह । आखिर शहरक कालेजमे पाँच बरखसँ एक्के क्लासमे घोड़ी घास तँ नहि छिलैत छलाह । टोहियबैत-टोहियबैत एकटा दसहत्थी ननगिलाटक साड़ीक छोर पकड़ि अपन सफलतापर आह्लादित होइत मोनेमोन छड़िपि उठलाह— “यँह लेलियनि !”

दोसरे अण ननगिलाटक साड़ी फरसँ हाथसँ उड़ि गेलनि आ एकटा मांसल हाथक समधानल चाट बिजली चौधरी के सङ्कक धूरामे सुता देलकनि । बेचारे धूरामे ओधरायल फेर किछु सूँघ' लगलाह । कोनो सुगन्ध नहि भेटलनि । भेटलनि — अपमानक दौक आ..... झोकाड़ा । हँसी उड़बैत, गालपर उखड़ल पाँचो आङ्कुर—ननगिलाटक दसहत्थी साड़ीबालीक पाँचो आङ्कुर ।

बिजली चौधरी नवसिखुआ नहि, पहुँचल महात्मा आ अखड़ियल निर्लज्ज छलाह । एहि तरहक कतेकी अनुभव हुनका अपन बाइस सालक रोमानी जिनगीमे छलनि । हुनका नोक जर्का ज्ञात छलनि जे कोन बात प्रचार करबाक थिक आ कोन झापन देबाक ।

हुनकर अनुयायी मुदा एतेक चहटगर आ मनोरंजक समाचार पेटमे पचा नहि सकलाह । संगपुरन छलथिन लोभमे, मुदा सफलता नहि भेटलनि तँ एक टा अनायास प्राप्त सुखसँ किएक वंचित रहितथि ? बिजली चौधरीक शानदार सफलताक इशतहार घरे-घरे बँटबासँ किएक चुकितथि ? पार्टनरशिप मे ई शर्त तँ कतहु नहि छलनि ।

खा बिजली चौधरी प्राते गामसँ तेना निपत्ता भेलाह जेना शुद्धक समयमें गाय-महींसक दूध ।

बिजली चौधरीक आविष्कारक कथा घर-घर पसरि गेलनि । तकर ई अर्थ नहि जे लोकक जिज्ञासा वा कछमछी शान्त भ' गेलैक । मुदा तकर बाद ककरो साहस नहि भेलैक जे दसहत्थी ननगिलाटक दिस हाथ बढ़ावय । मोने-मोन गुड़-चाउर फाँकय से दोसर बात ।

भोरे जखन सुभद्रा अपन भीजीक (किसुनमाक बहु) संग हमर आङन दीप' आ चिपरी पाथ' आबय तँ पोखरिक भीड़ पर बिरडो उठि जाय । हमर घर पोखरिक पछबरिया भीड़पर अछि । जखने ओहि भीड़पर बाटे सुभद्रा चलथि कि शेष तीनू भीड़सँ “ये आकाशवाणी पटना राँची है” जर्का समवेत स्वर ललकाराउठय “द' रहल अछि बाबू पच्छिमसँ टाँच' :”

जा घरि ओ आङनमे रहय फस्ट ईयरक विद्यार्थी हमर पीसियौत भाइ किताब तकबाक बहाने पाँच-सात बेर आङन जाय । हमर दोस्त लोकनि हमरा आङनमें बाहर जाइत देखि हमर पुछारी करैत माय जन आङनमे पहुँचि जाथि आ फेर मायक संग अपनैतीक तेहन गप्प लाघि देखि जे घण्टा भरि में पहिने खतम नहि होनि । अनसीया बुते दालि अधिक काल लागि जानि आ तरकारी अनोन, खाहे बिखनोन भ' जानि । महीसक चरबाह माँड़ लेबाक, पनपियाइ लेबाक वा जारनि देबाक पुछारीक बहाने आङनमे जुटल रहय । आ आङन बहारैत काल, चिपरी पाथैत काल दलकैत ओकर अंगक संग दर्शक लोकनिक मोन दलकैत रहनि, दरकैत रहनि ।

दुपहरियामे खयला पीलाक बाद जखन ओ दुसटोलीक भिड़ले आमक गाछीमे कोनो झमटगर गाछक नीचा मोटगर दूबिपर अपन सगतुरिया सभक संग ओधरा जाय तँ गामक सभटा चरबाह अपन-अपन मालके बाधमे छोड़ि गाछीमे जुटि जाय । कतेक मालिको लोकनि अपन-अपन चरबाहक ताकमे बोअइत ओहि गाछीमे जुमि जाथि आ फेर झमटगर गाछक छाँह तर दस मिनट वा आधो घण्टा बैसबाक लोभ हुनका संवरण नहि होनि ।

आ साँझखन जखन ओ गोलापर सौदा-बारी कर' जाय, गोलापर सभक पवनी जेना कयो बंशीमें बझा ऊपर टानि दैक । अनेरो लोककेँ उकासी आ छोक आब' लगैक । बगलेमे डाक्टर साहेबक डिस्पेन्सरी रहैक, तैयो ओम्हर कयी नहि जाय ।

आषाढ़ मासमे जखन दुसटोलीक गाछीक छिट्टा भरि करिया बम्बइ माथपर उठा ओ चलथि, तँ लोक अनायास ओहि सालक करिया बम्बइक फरीक प्रशंसा कर' लागय—केहन पैघ-पैघ आ केहन सुपिण्ड । आ अगहन मास जखन-

जखन हमर जिरतिया ओकर बोझ उठव' जाइ, तँ बोझ पकड़' लेल उठल ओकर हाथक संगहि मोनो उपर उठि जाइ आ जखन ओ खसैक तँ जानि ने कत' कत' लसकि जाइक ।

एक दिन मुदा एकटा विषादपूर्ण समाचार सुनि सभक प्राण जे उपर अँटकलैक से अँटकले रहि गेलैक । समाचार ततेक जल्दी आ ततेक शीघ्रतासँ पसरलैक जेतेक जल्दी कोनो नेताक मरबाक समाचार आकाशवाणी पर्यन्त न ह प्रसारित क' सकैत अछि । सुभदराक घरवला बिदागरी कराब' आयल छलैक । समाचार बड़ सोझ मुदा कतेक भयंकर ।

सुभदराक लगन कहिया भेलैक तकरो पुछार' करबाक होश लोककेँ ओही दिन भेलैक । बाप-मायक मृत्युक दुइये बरख बाद लगन क' देने छलैक किसुनमा । मुदा तहिया ककरा काज छलैक एकर खोज-खबरि लेबाक ?

खोईचा फाड़ि जखन धानक भीतरसँ पुष्ट आ सुगन्धित चाउर बहरयलैक त' नवान्तक सुगन्ध उड़ैत-उड़ैत सुभदराक सासुरो पहुँचलैक । पाँचे कोसपर त' छलैक सासुर । घरवला मोकापर अपन अधिकार माड़' पहुँचि गेलैक ।

सुभदरा चल गेलि । जाइत काल ओकर वरोकेँ देखलियैक । खूब कठमस्त —चाकर आ भुट्ट । चमचम करैत तेलगर कारी रंग ।

आ किछु दिन बाद सुभदराक चर्चा मे सुस्ती आव' लगलैक । लोक नव-सुगन्धक ताकमे लागि गेल । खाली कहियो-कहियो कोनो पुरान रसिक कोनो सबका छोड़ाकेँ अपन अनेरेक पैघत्व देखबैत कहैक—एकटा रह्य सुभदरा । आहा हा...हा...।

तू बरख ससरि गेलैक । कोन बाटे, कोन रस्ते, कयो बुझलकैक ?

तखन एक दिन भोरे निन्न टुटलापर आँखि मीड़ैत देखैत छी जे आङनमे अप्पन भोजीक संग सुभदरा ठाढ़ि अछि । हमरा जागल देखलक तँ लग आवि बाजलि—परनाम मालिक ।

“की गय, कहिया अयलै तो ?”

“परसुभिकये अयलियैक मालिक ।”

“जखन रहबे ने किछु दिन ?”

“आब तँ हिये रहबै हम ।

“से की ? घरवलासँ झगड़ा भेलौक अछि ।

“न : ।”

“तखन ? तोहर घरवला आब अही गाममे बसतौक की ? ककर पट्टी मे ?”

“ककरो पट्टी नै । हम अगपरिये रहबै, भैया जौरे ।”

“से किएक ?”

“ओही नस्ती ।”

हम किछु धार पूछ' चाहैत छलियैक, मुदा नजरि पड़ल जे माय कान पाथि हमरे सभक गप्प सुनि रहल अछि । भौजी सेहो मनसाधरमे हाथ बारने टकटकी लगौने छथि ।.....

साँझ मे टहल' बाहर भेलहुँ तँ बहनोइक संग किसुनमा बाट छेकि लेलक । कह' लागल “हिनका तँ अहाँ चिन्हैत छियनिमालिक । हमर नेमान छथि । तनी अहाँ सुभदराकेँ समझा दियोक मालिक, जे हिनका जौरे चल जयतनि । हमर तँ कुच्छो सुनिते ने हय.....।

जा हम किछु बाजी, सुभदराक घरवला गिड़गिड़ाय लागल—“हम गोड़ घरै छी मालिक । ओकरा तनी बुझा दियोक । कोन कसूर हो गेल हमरा से, से नहि जानि । इमर त' बाते नहि सुनै हय । केहुनस्ती जाय लेल तैयार नहि होइ हय । आब अहीकेँ आसरा हय मालिक ।”

दोसर दिन सुभदरा भेटलि तँ टोकलियैक—“ई कोन नाटक कयने छे गय ? जाइत कियैक नहि छही अपन घरवलाक संग ?”

सुभदरा किछु नहि बाजलि । मूढ़ी उठा एक बेर तकलक आ फेर मूढ़ी गौंति लेलक । मौन ।

हम फेर टंकलियेक—“बजैत किएक ने छै गय ? आखिर की भैलीक अछि तोरा ? कमौआ वर छीक । जान दैत छीक तोरापर । काहिये हमरा भागू तेना कान’ लागल जे की कहियौक । किएक ने जयबहिक तो ? कोन तकलीफ छीक तोरा ?

“तकलीफ” सुभदरा बाजलि । “हमरा आरक तकलीक अहाँ बुझबै मालिक ? जकरा अहाँ कमौआ कहैत छियैक तकरा घर पर एक्को धूर जमीन नहि हइ । दस हाथक खोपड़ी हइ एकटा । चारि सेर बोनि रोज कमाइ हय, मुदा घर लबैत हय दुइये सेर । दू सेर पसिनियाँके द’ अबै हय । ओइ दू सेरमे जे होइ हय, बनाक’ दैत छियैक त’ सभटा अपने भकोसि जाइत हय । कहियो ने पुछै हय जे तोरो खातिर कुच्छो बचली कि नहि । हम कहबै जे हमहूँ बोनि करब, त’ आँखि लाल क’ लेत—“खबरदार जे अँगना से बाहर पयर देले । छौंड़ासभसे आँखि लड़ाबैके मोन, त’ बोनि करती । बुट्टी-बुट्टी काटि देबो जे एक्को बेरी बाहर तकले ।” हम चुप्प हो जाइत छी मालिक । मुदा खाली पेट काज कोना चली मालिक ? उपरसँ ताड़ीक निसाँमे हमर देहके कुच्छो ने बुझै हय । कखनेयो कहबै, त’ गारी देब’ लागत ।—सोचि-सोचि हम चुप्प हो जाइत रहली । मुदा खाली पेट कतना दिन सहिती । हमहूँ आदमिये हूँ । हभरो देहे हय । देहे नहि सकै हय त’ हम की करबै मालिक । बोलू, अहीं बोलू मालिक । तँयो चल जाउ हम । अहीं फँसला कल ।”

की कहियौक, किछु फुरबै नहि कयल । मुदा किछु कहवाक चाही तेँ कहने छलियैक—“मुदा एना छोड़ियो देलासँ तँ काज नहि चलतीक । तोहर मर्द छीक, तो बुझबहिक, मना करहिक । एना भागि बड़यलासँ की होयतीक ?”

“हम ओकरा मना करबै मालिक ? ओकर कानब-कलपन पर नहि जाउ, ओकरा अहाँ नहि चिन्हैत छियै । ओ एक्केटा बात बुझैत छैक—जे हम ओकर आऊनवाली छियैक—ओकर मौजक चीज । ओ आर कुच्छो ने बुझै हय । अ ओकरा मना कयलासे, बुझीलासे की मिलै है, से अहाँ देखबै मालिक । हे लू, देखि लू ।”

ओ घूमि क’ पीठ उधारि दैत अछि । देह पर ब्लाउज नहि छैक । ललाओन कारी पीठ पर कतेको टटका-टटका चेन्ह छैक जे आँ शूरक’ पकाओल मड्डुआ रोटीक पपड़ी बयो नोचि लेने होइक ।

हमरा जुप देखि ओ फेरि बाजलि—‘अइसने दाग सौंसे देह हय मालिक । जहाँ कहीं-कहीं देखब ?”

हमरा आर किछु बजवाक साहस नहि भेल । दोसर दिन सुनलियैक जे ओकर घरबला निराश भूरि गेलैक ।

सुभदरा फेरसँ गाममे जचिक विषय बनि गेल । सासुर जयबाक ओकर अस्वीकृतिसँ कतेको मोनमे नव-नव आशा, नव-नव सुरसुरी उपजल छलैक । आ सुभदरा गाममे तेना रह’ लागलि जेना गाम छोड़ि कहियो गेलै नहि हो ।

दुसटोलीक घूरा भरल सड़कपर फेर एकटा नवका सुगन्ध पसरलैक—शूर क’ पकाओल मड्डुआ रोटीक सुगन्ध ।

ई गन्ध मुदा जल्दिये उड़ि गेलैक । किसुनमा सगाइ करा देलकैक सुभदराक । वर खूब सुखी छलैक । खाली अवस्था बेसी रहैक । सुभदरोसँ पैघ-पैघ बेटा-बेटो रहैक ।

दुसटोली फेर उदास भ’ गेलैक । सुगन्ध उड़ि गेलैक आ रहि गेलैक खाली घुट्टी घरि जमल घूरा आ लहसुन-पियाज आ ताड़ीक दुर्गन्ध ।

मुदा सुभदरा फेर पड़ा अयलैक । दोसर बेर । आब ओतहु नहि जयतैक । किसुनमा बुझा क’ हारि गेलैक । कथी लेल टस्ससँ मस्स होयतैक । किसुनमा बिबध भ’ फे’ हमरा अयलैक ।

साँझखन जानि बूझि क’ किसुनमाक घर लगदने जाइत रही । साँझ पसरल जाइत रहैक आ अन्हरिया चतरल अबैत रहैक । उद्देश्यक सिद्धि भेल । सुभदरा बाढ़रेमे ठाढ़ि छलि । देखिते बाजलि—“परनाम मालिक ।”

हम सड़कपर चलिते रहलहुँ । ओहो पाछाँ-पाछाँ चललि । किछु दूर बाबि कने रुच्छ स्वरमे कहलियैक—“की गय, ई तेँ नदिया दब सिखने छै तो” । तीमब-चिखनीक हालति भ’ गेलौक अछि तोहर । एक ठाम मोन नहि थिर रहैत छीक । दू-टा छोड़लै, आब तेसर चाहियौक की ? किसुनमा तंग भेल जाइत छीक तोहर एहि चालिसँ ।” फेर कने नरम होइत कहलियैक—आखिर तौही सोच, एना भागि-भागि जयबहिक सासुरसँ तँ कतेक बेर सगाइ कयल जयतीक तोहर । ओ

मास, बरखदिन पर भागि अबैत छही ! आखिर वियाह कोनो धीया पुताक खेल त' रहि छैक.....

—सत्ते मालिक ! हमरा आर क वियाह की हय—धीया-पुताक खेल ! एगो छोड़ली दोसर क' लेली ! ओकरो से मोन भरि गेल त' तेसर क' लेली ! कोनो लाज धाख त' हय नहि, छूटि खेलाइत छी ।

ओकर स्वरक आद्रता पर किछु आर नरम होइत कहलियैक—से एतेक जखन बुझैत छहिक, तखन एना कियैक करैत छै ? एकठाम तकलीफ छलौक, गुजर नहि भेलौक, दोसर ठाम क' देलकौ भाइ । आब ओत' कोन तकलीफ छी”

—‘तकलीफ त' कोनो ने हय मालिक आ बड़का गो हय । बुढ़बा मानितो बड़ हय ! मुदा ओकरा जुआन-जुआन बेटा सभ हइ ! ओ सभ हमरा माय नै बुझै हय ! अपनी पाप रहै हय मोन मे । आर त' कोनो दुख नै हय । अहीं बोलू मालिक, मोनकेकोना मना लू हम—बाप-बेटा दूनूक जौरे' हमकोनो जबाब नाहै द' सकलियैक । किछु बाजले नहि गेल । चुपचाप चलैत रहलहुँ ।

एकाएक लागल जे बड़दूर चल आयल छी । अन्हरिया एकदम गाढ़ भ' गेल रहैक । सुभदरा नहि जानि कोन सोचमे भुतिआयलि छलि ।

टोकैत कहलियैक—“आब घूरि जो तो” । लोक देखत त' अनेरो बात गढ़ि लेत, बदनाम करत ।”

हमरा भेल जे अन्हारमे हमरा टकटकी लगा क' ताकि रहल अहि । नहि जानि केहन स्वरमे बाजि उठलि—“एहन भाग हमर कहाँसे मालिक !”

आ लगभग दौड़त चल गेलि ।

तकर बाद कतेको दिनक बाद ओ एक दिन हमर कोठलीमे आयलि—राति क' चुपचाप । हम कने सशंकित होइत पुछलियैक—“की छी गय ? एतेक राति क' ?”

—हमरा पच्चीस गो रुपैया चाही मालिक । सुभदरा बाजलि ।

“पच्चीस टा रुपैया की करवें तो ? एकाएक एहन कोन काज पड़ि गेलौक अछि ?”

“आइ राति हम जा रहल छी मालिक । गोपालपुरक दुखनी बुढ़िया सिल्लीगुरी जाइत हय । ओत' कोयला बिछैत हय, गोइठा-चिपड़ी पाथै हय आ चारि पांच रुपैया रोज कमाइ हय । ओ बुढ़िया हँके कमा लै हय, त' हमरा बुते किएक ने होत ? हमहू ओकरा जौरे आइ राति चलि जायब मालिक ।

“किसुनमासँ पुछलहिक ?”

“नहि मालिक । आब ककरो नहि पुछबैक । आब हियाँ नहि रहब हम । गामक लोक गीड़' चाहै हय । भौजी सभ दिन गारी दै हय । ओकरा दू गो धीया-पुता हइ । पांच आदमीक आश्रम हइ आ असगरे सैयाक कमाइ । खर्चो नहि जुटै हइ । से भौजीक मोन डोलल जाइत हइ । भैया नहि रहै हय, तखनी घरमे बदमाश सभकेँ बजबै हय, हँसी-ठट्ठा करै हय । हमर देह जरि जाइ हय मालिक । भौजीकेँ अप्पन देह झोकड़ि गेलै, से भौजी हमरा बेचे चाहैत हय । हियाँ रहब त बिका जायब हम । हमरा जाय दू मालिक ।”

“मुदा एकटा बुढ़ियाक संग सिल्लीगुरी जयबै, तँ ओत' के बचौतीक ? ओहि ठाम की सभटा साधुए लोक रहैत छैक ? एहि ठाम भाइ-भौजाइ छौक, हमरालोकनि छियौक, ओत' के देखतौक ?”

—जकरा बयो नहि हइ, तकरा के बेखं हइ मालिक ? सेहे देखतैक हमरो । आन किछुओ करतैक, सहि जयबै हम, मुदा अप्पन लोक जखन गारी दै हय, बदनाम करै हय, त' सहले ने जाइ हय । हमरा पच्चीस गो रुपैया दू मालिक । हम नहि रहब ऐ गाममे :

हम पचास टा रुपैया बहार क' देलियैक । ओ पच्चीससँ बेसी लैते नहि छलि । हमहीं जोर द' क' द' देलियैक जे परदेसमे काज देतौक ।”

रुपैया खूटमे बन्हैत ओ बाजलि—“अखनी हम राखि लैत छी मालिक । मुदा कमाके सभटा रुपैया भेज देब हम । अहाँकेँ लेवैके होत । न' नै सुनब हम ।”

हम हँसी-हँसीमे कहलियैक—“यदि रुपैया घुरेयबैक छौक तँ एकटा काज करिहै । कमाक' धूरिहै तँ एकटा चीज लेने अबिहै हमरा लेल ।”

सुभदरा मुँह ताक' लागलि—'प्रश्न सूचक-आँखि गड़ाक' ।

“कमाक' जखन घुरिहे' तँ पचास रुपैयामे एकटा कनिया लेने अबिहे' हमरा लेल ।” ओ हँस' लागलि—“रुपैयासे कनिया मिलै हई मालिक ? कोन बाजारमे बिकाइ हई ?”

“हँसी नहि करैत छियौक गय । घुरिहे' तँ लेने अबिहे' । ओत' भेटैत छैक ।”

—केहन कनिया खेबइ मालिक ? ओ हमरे पुछलक ।

“खूब कारी तोरे सन । झुर क' तरल तरकारी, आ सोन्हर क' पकाओल जरल कारी रोटी सन मुदा ओहने सुगन्धित, स्वादिष्ट ।”

अन्हारमे हमरा भ्रम भेल जे ओकर आँखिमे पानि छलैक ।

प्रात भेने भरि गाम खबरि पसरि गेलैक सुभदरा ककरो संग पड़ा गेल जतेक मुँह ततेक बात ।

..... कयो कहैक जे ततमासँ साँठ घाट छलैक आ कयो कहलकैक जे फल्लाँ गामक गुधरबासँ । ककरो कहब रहैक जे लागि-भांगि चारि पाँच बरखक रहैक आ ककरो धारणा रहैक जे टटका-टटकी रोमान्स रहैक ।

हम सभटा सुनैत मोनमे सोचैत रही जे सुभदरा चल गेलि । किछु दिन बाद ओकर बदनामीक चर्चा बन्द भ' जयतैक । प्रायः ना भो बिसरि जयतैक लोक । तखन जेना बाबी, नानी धीया-पूताके' खिस्सा कहैत छैक तहिना कयो-कयो, कहियो-कहियो चर्चा करतैक—एकटा रह्य सुभदरा'

मई १९६३

गय बिदनी ! तोहर डंक

आब कोन उपाय करब ? भेलहु' नीक जकाँ देखार ।

कोन पाप लागल छल से नहि जानि । झट द' गच्छि लेलियनि । लागल, जेना एहिसँ बेशी सोझ कोनो काजे नहि छैक—जाड़क एहि कनकनीमे नौ बजे घरि तुरातर दुबकलो रहबासँ सोझ । मुदा घुसड़ि गेल सभटा कबिलती । तखनेसँ छटपटी लागल अछि । कोम्हरो कोनो बाट नहि, कोनो इजोत नहि । एकदम अन्हार गुञ्ज—तरेगणक भुकभुकी पर्यन्त नदारत । हथोड़िया दैत-दैत थाकि गेलहुँ, मुदा कतहुँ किछु अभरिते नहि अछि । आब तँ इच्छा होइत अछि जे 'हरदी बाजि दी ।

कतेक लाजक गप्प होयत ? कोनो कहि सकबनि अपना मुँहे जे हमरा बुते नहि भ' सकल अहाँक आदेशक पालन । कोना फूटत कण्ठसँ बोल ? कण्ठमे काँट नहि अँटकि जायत ? ठोर एक दोसरसँ पृथक होयबासँ विद्रोह नहि करत ? रहि-रहि क' एकटा मूर्ति सामने अबैत अछि आ असफल प्रयासक आहत स्वामिमान मोलमे एकटा हीन भावना उत्पन्न करैत अछि ।

“देखू, काल्ह एगारह बजेसँ पहिने ! मोन रहत ने ?”

चलबा काल आदेश भेटल छल आ हम घड़घड़ा क' सीढ़ी उत्तरि गेल छलहुँ—ई कोन भारी बात ? काल्ह एगारह बजेसँ पहिने किएक, कही तँ अखने, अही ठाम । अपन शक्तिक मिथ्या दंभपर तेना अकड़ल रही जे सीढ़ीपर ओघरात-ओघराइत बाँचल रही ।

सड़कपर जाड़क सुकुमार रौद प्रतीक्षामे छल । देखिते लपकल । बन्द कोठलीक, सँद वातावरणमे ठिठुरल मोन गरमीसँ भरि गेल—एक-एक तहमे, नीक जकाँ । पाँचपर सूतल गुलाबी रौदक गरमाहटिसँ डेग आगू ससरल—छोट-छोट नापल डेग । आँखि चारुकात बीआइत रहल, निरुद्देश्य । नहि-निरुद्देश्य कहब

ठीक वहि होयत : बीनी खास उद्देश्य नहियो रहलापर ओहि दृष्टिमे किछु छलैक—प्रायः कोनो नवीन आकर्षण वा उद्देश्यक अन्वेषण । एकदम अस्थिर दृष्टि—एकक बाद दोसरपर अटकैत, नचैत ।

एक ठाम बीआइत दृष्टि अटक गेल—डेड स्टोप । काफी भीड़, धक्कम-धुक्की आ उत्तेजना छलैक । जिज्ञासा भेल । मुदा भीड़ ठेलि क' घटनास्टल धरि पहुँचब नितान्त असम्भव । मुड़ीपर-मुड़ी बजैत, देहपर देह लटकल । सभ कयो हुलकि-हुलकि क' देखबा लेल व्यग्र, हड़बड़ायल । जिज्ञासा छान तोड़' लागल ।

एकटा भाइ साहेब भीड़सँ बहरयलाह—अपस्यांत, औनायल, अस्त-व्यस्त, मुहा जोशसँ भरल, चारुकात सगर्व निहारैत । वीर महारथीक स्वागतार्थ हमरा लोकनि दूरेसँ हुलकी देनिहार पाँच-दस व्यक्ति झट द' जुटलहुँ—“की बात थिकैक ? केहन भीड़ थीक ई ? किएक लोक मुड़ियारी देन अछि ?”

महारथी कोनो सफल फिल्मक डाइरेक्टर जकाँ ससपेन्स रखैत बजलाह—“कतेक लाजक गप्प थिक ई जे हमरा लोकनिक देशमे जयचन्द आ मीरजाफरक सन्तान अखन धरि स्वतन्त्र बीआइत अछि, स्वाधीन देशकेँ कलंकित करैत अछि । ई देशद्रोही सभ समस्त देशक प्रयासपर पनि फेर' चाहैत अछि ।”

“आखिर बात की थिकैक ?” हमरा लोकनि केँ आव घैर्य राखब कठिन भ' गेल ।

महारथी सत्यक उद्घाटन करैत बजलाह—“अखने' कनेक काल पहिने चारिटा हवाजहाज गेलैक अछि, से तँ अहाँ सभ देखने होयबैक । एहिठाम सभ कहैत छलैक जे एहि जहाज सभमे देशक जवान जा रहल छैक सीमाक रक्षा हेतु, चीनी सभकेँ खेहारि क' भारतीय सोमासँ बाहर करवा लेल । मुदा ई देशद्रोही लुचव द' बाजि उडल—‘सभ जा रहल अछि अपटी खेतमे प्राण गँमाव' ।’ ततेक ने थुराइ भेलनि अछि वाउकेँ जे मास भरि होश नहि होयतनि । एहन-एहन देशद्रोहीकेँ एहने दण्ड भेटबाक चाही ।’ मोनछड़पि उठल—यैह ! यैह !

ई उल्लास मुदा स्थायी नहि भ' सकल । एहि सँ काज चल'वाला नहि । कोनो सशक्त वस्तु चाही—अंग-अंगमे नवीन स्फूर्ति, नवीन साहसक संचार कर' वाला । कोनो आतंककारी सृजन—शत्रुकेँ भय-प्रकम्पित करबामे समर्थ ! आ

भौनक प्रसन्नता तेना बिला गेल जेना सिरेमाक पर्दापर कास्टिंगक मेंही आखर नीक जकाँ देखबासँ पूर्बे विलीन भ' जाइत छैक ।

डेग भागू ससरल । महकलसँ चारि-पाँच सय गज ।

दोसर स्टोप—किछु बेसी भीड़, किछु बेसी उत्तेजना । उत्तेजित जनता एकटा चीनी डेन्टिस्टक दोकानपर आक्रमण करवा लेल उद्यत । विचारवान लोक सभ स्थिति सम्हारि लेलनि । चीनीक दोकान आ परिवार बिरापद रहलैक ।

मोन फेर छड़पि उठल—यैह ! यैह !

भारतीय संस्कृतिक अनमोल नमूना । बर्बर चीनीक मुँहपर भिजाबोल जूता । वालोंग आ बोमडिलामे चीनी बर्बरताक शिकार भारतीय जनताक प्रति-शोध—अभयदान ।

न : अहूँसँ काज नाहे चलत । किछु आर सशक्त, किछु आर प्राणवान वस्तु चाही । दुश्मनोक संग मनुष्यता-पूर्ण व्यवहार राखब, शरणागतकेँ अभय-दान देब, भारतक प्राचीन सिद्धान्त रहलैक अछि । भारत निवासी चीनी जनताक प्रति भारतीय जनताक मनुष्यतापूर्ण मैत्री-भावमे कोनो नवीनता नहि ।

मोन फेर उदास भ' गेल । आब टटका-टटकी चीज कहाँसँ आनू ? जकरे हाथ लगबैत छी, सैह सेकेण्ड हैण्ड । एहि बेर बेइज्जत भँये क' रहब ।

“बाबू, पालिश ।”

आवाज परिचित लागल । देखलियैक त' देखिते रहि गेलहुँ । सामने किशोर ठाढ़ छल—हाथमे पालिशक डिबिया आ ब्रश लेने । आश्चर्यसँ बाजि उठल रही—तो ?

किशोर बाजल छल—“देख भाइ, हमरा घरसँ पढ़बाक खर्च नहि भेटैत अछि । स्कालरशिपक पैसासँ कहुना गुजर करैत छी । पुरशा कोषमे दाब देबाक उत्कट अभिलाषा छल, मुदा हाथ खाली । बिचारलहुँ जे एक सप्ताह धरि बूट पालिश करी आ सभटा कमाइ सुरक्षा-कोषमे द' दियैक । निकाल एक्की आ चमकाले मुँह अपन जूताक ।”

मोन फेर छड़पि उठल—यैह ! यैह !

भय बिदनी ! तोहर डंक

जागरणक अद्भुत दृष्टान्त । जनताक जंगल भावनाक अपूर्व उदाहरण ।
'नेहरू सरकार जबरदस्ती दान लेती है' प्रोपगेंडा कयनिहार रेडियोपेकिंगक
मुँदतोड़ जवाब । जननी जन्मभूमि एवं स्वाधीनताक रक्षाक हेतु सर्वस्व अर्पण
करबा लेल उद्यत भारतीय जनताक प्रतिनिधि एकटा गरीब छात्र ।

न : अहूँसँ काज चल'वला नहि । मोन कह' लागल—ई त' डाकुमेन्टरी भ'
गेल । अहाँक एतेक चीप वस्तुक आशा नहि छल—वेरी डिसएप्वाटिंग ।

एक मोन होइत अछि जे घुरिक' कहि अबियनि जे हमरा बुनै नहि भ'
सकल आदेशक पालन । फेर विचारैत छी जे हरदी बजबा' सँ पूर्व एक बेर डेरा
जा क' प्रयास करी । निश्चिन्त भ' क' बैसलासँ भ' सकैत अछि, किछु फुरि जाय,
किछु झलकि जाय ।

जल्दी-जल्दी राजेन्द्र नगर दिस लपकैत छी, अपन फ्लैट पहुँचबाक हेतु ।
रास्तामे सामग्रीक हेतु किछु सत्य घटनाकेँ टोहियबैत छी—एकटा अस्सी बरखक
बुढ़िया जवानक हेतु अपन आँखि दान क' देलकैक । एकटा नव कनियाँ अपन
सोहागक चूड़ी उतारिक' प्रवान मंत्रीक रक्षा-कोषमे द' देलकैक । एकटा आठ
बरखक बच्चा जलखैक पैसासँ बचाक' सुरक्षा कोषमे दान देलकक । एकटा भिखमंगा
अपन भरिदिनक कमाइनः, बात बन'वला नहि, असंभव ।

अपन ब्लौक आवि जाइत अछि—बाइस नम्बर । पूरापूरी बेयालीस सीढ़ी
चढ़िक' अपन फ्लैटक सामने पहुँचैत छी—तेसर हप्तापर, एक सय बहत्तर नम्बर ।
गेटक ताला खोलिते देखैत छी—पोस्टमैनक खयाओल एकटा लिफाफ नीचा फर्शपर
कानि रहल अछि ।

लिफाफ उठाक' देख' चाहैत छी जे कत'सँ आयल अछि । मुदा प्रेषकक
नाम नदारद । पताक आखर देखि चौंकि जाइत छी । अक्षर सभ चिन्हार लगैत
अछि । ककर.....ककर... मोन पाड़' चाहैत छी । किछु क्षण अव्यष्ट, झलफल-
झलफल आ फेर सभ किछु स्पष्ट भ' जाइत अछि ।

हाथक उज्जर वर्गिकार लिफाफ कारी आयताकार स्लेटमे बदलि जाइत
अछि, जाहिपर झुकल एकटा दस बरखक छौंड़ी लिखैत छैक—गोरा-पलटन ।
लिखब समाप्त भेलापर स्लेट घुमाक' बगलमे एक्के हाथपर बैसल छौंड़ाकेँ देखबैत
छैक । छौंड़ा अपन स्लेटपर किछ लिखि छौंड़ी दिस घुमा दैत छैक । छौंड़ी पढ़ैत

अछि—बिढ़नी ! दुनूक ठोरपर दाबल-दाबल हँसी माने संधिक घोषणा ! अखने
कनेक काल पहिने दुनूमे खूब झगड़ा भेल रहैक । खिसियाक' छौंड़ा धुमधुमा
देलकै छौंड़ीक पीठ नीक जकाँ आ छौंड़ी नछोरिक' देहकेँ शोणिते-शोणिताम क'
देलकै । फेर दुनू मुँह फुलाक' बैसि रहल कनेकाल । मुदा दुनूमे ककरो चैन
नहि, निब्रहता नहि । स्लेटपर लिखि एक दोसरक नामकरण कयलक आ सुलह
भ' गेलैक । मुदा तहियासँ दुनू एक दोसरकेँ ओही नामसँ सम्बोधित कर'
लगलैक । छौंड़ी कहैक—'गोरा—गोरा पलटन जको निर्मम आ अत्याचारी । आ
छौंड़ा कहैक 'बिढ़नी', डंक मार'वाली, डकिनियाँ ।

...आ स्पष्ट रूपसँ एहि महान सत्यक ज्ञान होइत अछि जे मनुष्य
बिसरि खाहे सभ किछु जाय, भेटा किछु नहि सकैत अछि । जा घरि अन्तःकरण
मोजूद छैक, स्मृतिक एकोटा क्षण भेटाओल नहि जा सकैत छैक । जिनगीमे
एहनो भावुक क्षण बेर-बेर अबैत छैक जहियाँ एकटा मापूली आघातसँ अतीतक
दबल बिसरल स्मृति जगजियार भ' जाइत छैक, एक-एक क्षण, एक-एक
पल !

एक टा दृश्य उभरैत अछि—बागमतीक कातमे टूटल-ढनमनायल कृष्ण-मन्दिर,
खण्डहर जकाँ । मन्दिरक पश्चिम मे एकटा छोट-छोत शिव मन्दिर आ पुवारी कात
बड़क एकटा पुरान झमटगर चतरन गाछ । दक्षिणमे कलकल करैत बागमती ।
जेठक दुनहरियाक जरैत रौदमे पानिक कछेर मे एक टा जोड़ा बालुक घर बनयबामे
व्यस्त अछि । भोजल बालुक भीतक घर । छौंड़ा बनल अछि राज आ छौंड़ी रेजा ।
छौंड़ी दौड़ि-दौड़िक' सामग्री जुटबैत छैक आ छौंड़ा कारीगर जकाँ नापि-जोखि
क' घरक निर्माण करबामे व्यस्त अछि । दुनूक माथमे बालु भरल छैक आ कारी-
कारी केशमे लटकल बालुक कण इजीतमे तेना चमकैत छैक जेना अन्हरियामे
तारा ।

घर बनिक' तैयार होइत छैक । छौंड़ा लगमे ठेढ़निया देने बैसलि छौंड़ीकेँ
आर लग घीचि कहैत छैक—देख गय बिढ़नी, तैयार भ' भेलौ घर । कोनो गढ़बड़ी
रहि गेल होउ, तँ एखने बाज, दुरुस्त क' दैत छियोक ! ओना पाछाँ कह' लगबे
जे केहन घरवाला कयलहुँ, जकरा घरो बनयबाक लूरि नहि छैक । देख, कुल चारि
टा कोठली देलियैक अछि—भड़ार, भंसाघर, गोठुल्ला आ एकटा सुतक कोठली
हमर-तोहर । ठीक छी ने ?

छोड़ी किछु काल गालपर हाथ राखि विचारैत रहल आ फेर कोनो बुद्धिवा
जकां गम्भीरतापूर्वक बाजलि—“चारिये टा कोठलीसँ काज नहि चलतौक । कमसँ
कम दू टा कोठली आर चाहियैक !”

“से किएक ?”

“ते तँ कहैत छियौक जे तोँ गोरा पलटन छेँ—अकिलक तँ छूतियो नहि
छौक । कोना जिनगी कटत तोरा संग से नहि जानि ? एतबो नहि बूझैत छहीक
जे धीयापुता भेलापर चारिये टा कोठलीमे कोना गुजर हेतौक । कमसँ कम दू
टा कोठली आर चाहियैक—एक टा बेटी-जमायक लेल आ दोसर बेटा-
पुतीहुक लेल ।”

“जा, हमरा तँ तकर ध्याने नहि रहल । सत्ते, तोँ बड़ बुधियारि छेँ गय
बिड़नी । तोँ चला लेबेँ हमर गृहस्थी नीक जकाँ । बाज, कय टा बेटा लेल कोठली
बना दियौक ?”

“धुत.....”

दृश्य बदलैत अछि ।

जेठक दुपहरिया नहि, भादवक अन्हरिया राति । टिपिर-टिपिर पानि ।
रहि-रहिक' ठनका । बिजुलत्ता । अन्धकार भरल रातुक हाहाकार भरल प्रहर ।
ओही बागमतीक कातमे, पानिक कछेरमे । नहि, ऊपर बड़क चतरस गालक नीचा
दबकल दू टा बिहल प्राणी, सशक्त, आन्दोलित ।

किशोरी कहैत छैक—देख गोरा, हमरालोकनि एकटा घर बनौने रही,
स्वप्न देखने रही ! सुखद स्वप्नक निशामे हमरा ज्ञाने नहि रहल जे तोँ छेँ
एकटा उच्चकुलक जानि पाँजिवला कुलीन ब्रह्मणक दुलरुआ आ हम छी भनसियाक,
एकटा क्षुद्र बाभनक अभागलि बेटी ! समाज हमरा नहि रह' देत तोरा संग
ओहि स्वप्नमहलमे । नहि स्वीकारत कुलवधूक रूपमे । हमरा बिसरि गेल, सुधिये
नहि रहल जे बालुक भीत दहि जाइत छैक, स्थायी नहि होइत छैक । इहो नहि
मोन रहल जे धीयापुताक खेल यौवनक आश्रय, जीवनक सम्बल नहि भ'
सकैत जैक ।

“से नहि कह सोना । ई धीयापुताक खेल नहि, जीवन-मरणक प्रश्न छैक :

३४]

गय बिड़नी ! तोहर डंक

बाल्यावस्थामे पड़ल स्नेहक गेँठ जकरा नयो खोलि नहि सकैत अछि, तोड़ि नहि
सकैत अछि । ककर मजाल छैक जे हमर बालुक घर द्वाइत, हाथ-पयर तोड़िक'
राखि देबैक ।”

सोना बिहुँसलि—पानि भरल मेघ जकाँ, बरस' लेल आतुर, फाट' लेल
उद्यत ।

“देख गोरा, अपन पलटनी नहि देखा तोँ ! ककरा-ककरासँ लड़बेँ,
ककर-ककर हाथ तोड़ि बहिक ? सभ दुश्मने भ' जयतौक ! आ फेर लोकक हाथ
तोड़ियो क' की भेटतौक ? बालुक घर तँ दहिने छैक, दहबे हेतु बनैत छैक । ओकरा
कतेक दिन बचयबहिक तोँ ?”

“तकर माने ई जे तोँ स्वयं ओहि घरमे रह'सँ हिचकैत छेँ । तोरा ओ घर
पसिन्न नहि छौक । झूठ नहि बाज सोना, कहि दे जे तोरा बालुक घर नहि
चाहियौक । चाहियौक महल, आराम, सुख जकरा लेल तोँ बिका रहलि छेँ;
तोहर बाप बेचि रहल छौ तोरा । कहि दे जे महलक स्वप्न तोरा मोनसँ सभ टा
पुरान स्मृति घो-पो छे देलकौ । तोँ खाली अपने सँ ई गप्प कहि दे सोना, फेर
तोरे सप्यत खा क' कहैत छियौक, बाट नहि रोकबौक तोहर ।”

“ई तोँ कहि रहल छेँ गोरा ? कोना बाजि सकलै ई गप्प ती ? एक बेर
हमरा दिस ताकिक' ई गप्प बाज तँ । बाज, चुप्प किएक भ' गेलें.....?”

कोनो जबाब नहि, प्राणहीन निस्तब्धतामे टूटल हृदयक सिसुकी, रोम-रोमके'
सिहरबैत ।

सोना विकल भ' बाजि उठलि—“देख, एना नहि कान । हमरो कमजोर
नहि बना । सभ टा संकल्प भासि जायत हमर । तोँ तँ खाली नामे लेल गोरा
पलटन छेँ, मोन त' तोहर मँगियोसँ बेसी कमजोर छौक । एक टा पाथर हम
छी, आँखिमे नेरो नहि अबत अछि । सुन्न भ' गेल होइ जेना । हमरा लेल नहि
कान तोँ !.....हम नहि छी एतेक स्नेह करबा जोगर

प्रत्युत्तरमे सिसुकीक स्वर आर तीव्र, सम्पूर्ण अस्थिपंजरके' झरझरबैत !

“देख, चलबा काल एना नहि कर । जायवलाके' लोक हँसिक' बिदा करैत
छैक । तोहूँ एक बेर हँसिक' कहि दे —“बिड़नी,” नहि तँ अन्तिम अभिलाषा अतृप्ते
रहि जायत हमर” ।

गय बिड़नी ! तोहर डंक

[३५]

“नहि सोचा, नहि” उमड़ते प्रन्दनके रोबबाक अरपल प्रयासमे टूटल-छिड़ियायल स्वर ।

“आइ तोहर डकिनिया बिड़नी जा रहल छोक गोरा ! सभ दिन तोरा कनबिते रहलियोक, द’ किछु नहि सकलियौ । जाइतो-जाइतो एक टा डंक देने जाइत छियौक ! तोरा सप्पत छोक एहि डंकक, एहि पीड़ाक, अन्तिम अनुरोध मानि ले हमर ! हँसिक’ कहि दे एक बेर । नहि कहबें तो ? बेस, जे हमर भरल मुँह देखय.....से.....”

“बिड़नी... !”

दृश्य फेर परिवर्तित होइत अछि ।

बीच आंङनमे पटियापर चारु कात मोट-मोट किताब पसारने एक टा नवयुवक बैसल अछि । एक टा नवयुवती आंङनमे आबि पयर छूबि प्रणाम करैत छैक । चकित, विस्मित नवयुवक तर्किते रहि जाइत अछि, अपलक ।

“एना की तर्कैत छै ? हम छी—बिड़नी ! एतबे दिनमे बिसरि गेलै की ?”

नवयुवक आँखि मूनि लैत अछि । नहि, नहि तो हमर सोना नहि भ’ सकैत छै ! हमर सोना तँ सीथमे सिन्दूर भरि, हाथमे लहठी पहिरि पालकीपर चढ़ल छल ! तोहर सीथ घोअल छोक, हाथ मुन्न.....न: तो हमर सोना नहि छै, किन्नहु नहि.....!

...आ आइ लिफाफ हाथमे लेने थरथरा रहल छी । पत्र भेटबाक आनन्दक सुखद सिहरन अछि वा अतीतक दुखद स्मृतिक कम्पन, से कहब कठिन । मुदा आब बड़ी काल भ’ गेल । पहिने पत्र पढ़ि ली ।

लिफाफ फाड़ि क’ चिट्ठी निकालैत छी । सादा कागजपर लिखल आखर सभ लिफाफक अन्हरिया कोठलीसँ बाहर भ’ प्रकाशमे चमचमा उठैत अछि ।

“गोरा,

लिफाफ देखिये क’ तो बूझि गेल हेबे—बिड़नी फेर कोनो डंक मारत । आशंका तोहर ठीके छोक, मुदा एहि बिड़नीक डंकक पीड़ा तो नकारि सकबें ततेक साहस तोरामे नहि छोक, हमरा नीक जकाँ बूझल अछि ।

पयरमे लागल पाँखिक बले समयक मेघ धरतीपर कौखन प्रचण्ड धाह आ कौखन सुशीतल छाहरि बनबैत उड़ैत रहैत अछि आ पिसाइत रहैत अछि विवश,

असहाय प्राणी । बालुक घरमे गृहस्थी बसयबाक सपना देख’ वाली एक दिन कनियाँ बनैत अछि । मुदा ने ओ घर, ने ओ वर । अपरिचितक संग ओ फेरसँ नव घर बनब’ चाहैत अछि । देवालो ठढ़ होइत छैक । मुदा अकस्मात् एकटा प्रचण्ड अन्हड़ ओहि देवालके भूमिसात क’ दैत छैक । नवकनियाँ बिधवा बनि जाइत अछि ।

आ गोरा, पलटन जकाँ मोचण्ड, जिद्दी खोड़ा बढिक’ भावुक युवक बनैत अछि—सशक्त कथाकार । ओकर कथा पढ़ि-पढ़िक’ एकटा अभागलिके गौरव होइत छैक जे कहियो ई कथाकार ओकर बालसंगी छलैक, ओकर सभ किछु छलैक । अभागलिक अर्थहीन जीवनक एकमात्र अलम्ब, एकमात्र आकर्षण बनि जाइत छैक—संगी कथाकारक रचना । ओहिमे हरदम अपनाकेँ पबैत अछि, अपन नेनपन आ नेनपनक संगीकेँ पबैत अछि ।

देशपर संकट अबैत छैक—चीनक विश्वासघातपूर्ण आक्रमण । जनतामे जागरणक लहर पसरैत छैक । कण-कण स्वाधीनताक रक्षाक हेतु तत्पर होइत अछि । कलम तरुआरि बनैत अछि । ओ अभागलि यज्ञस्वी कथाकार लोकनिक कथा पढ़ैत अछि । बालसंगीक कथा पढ़ैत-पढ़ैत कथा पढ़बाक चाट लागि गेल छैक । सभ कथाकार लोकनि एक्के सुर अलापैत छथि—देशकेँ बलिदान चाहिएक । आइ आवश्यकता छैक घोअल सीथ आ सुन्न हाथक, उज्जर साड़ी आ आभूषणहीन शरीरक ।

ओकरा बड़ आश्चर्य होइत छैक । ओकर धारण छैक जे आवश्यकता छैक, सिन्दूरसँ भरल सीथ आ लहठीसँ सजल हाथक जे अपन प्रियतमकेँ, अपन स्वामीकेँ हँसि-हँसिक’ समर-क्षेत्रमे पठा सकय, एहि विश्वासक संग जे ओकर हाथक चूड़ीमे बज्रक शक्ति छैक आ सीथक सिन्दूरमे अमरत्व ।

मुदा अभागलिक अपन सीथ पोछल छैक, हाथ चूड़ीक स्पर्श बिसरि गेलैक । आइ ककरा पठाबौ रण क्षेत्रमे ? सघवा रहैत तँ हँसि-हँसिक’ आरती उतारि स्वामीकेँ हिमगिरिक अभियानपर पठबैत ।

अपन बालसंगी मोन पढ़ैत छैक ओकरा । संसार खाहे जकर नाम ओकर सीथ मे भरि देने होइक, मुदा स्वेच्छासँ जकर नाम माँग मे सजौने छल, से तँ ओकर बालसंगिये टा छैक—ओकर अप्पन गोरा । ओकर नारीत्वक लाज,

सिन्दूरक मर्यादा वैह टा बचा सकैत छैक । बालुक भीत तोड़'बलाक हाथ-पयर तोड़' लेल उद्यत गोरा हिमालयक शाश्वत भीत तोड़बाक प्रयास कयनिहारक अंग-अंग नहि तोड़ि देतैक ।

की रे गोरा, केहन लगलौक डकिनियाँक ई डंक । एहि टीस मे एक टा उल्लास, एक टा आनन्द छैक कि नहि ? सत्त सत्त बाज ।

तँ आब शीघ्र प्रस्थान कर । हम भारती ल' मंगल गीत गबैत छियोक—

जुग-जुग जियथु, बसथु लाख कोस.....

हरदम तोरे

(लोक खाहे जकर कहय) बिढ़नी

गौरवसँ छाती फूल जाइत अछि । अपन सोनाक हृदयक विशालता पर ओकर मर्यादित निष्पाप समर्पण आ गौरवपूर्ण आमन्त्रण पर । अन्तर्मन बाजि उठैत अछि—तोहर आह्वान निष्फल नहि जयतौक सोना । तो' हमरा उचित मार्ग देखौले' अछि—ओ मार्ग जे याइ प्रत्येक भारतवासी के' हाक द' रहल छैक । ई तोहर आह्वान नहि थिकीक सोना, जननी जन्मभूमिक आह्वान छैक, भारत-माताक आह्वान थिकनि ।

हम काल्ह कहि देबनि सम्पादकजी के' जे हमरा बुत्ते नहि पार लागत वर्त्तमान संकटकालीन स्थिति पर कथा लिखब । हम जा रहल छी एकटा अमर कथा लिखबाक हेतु, हिमगिरिक उत्तंग शिखर पर, अपन रक्तसँ, सोनाक सोभाग्य सिन्दूरक लालीसँ ।

की गय बिढ़नी, आब कह । ●

४ अगस्त १९६३

उपरफांटू

गामक द छनबिया सिमान पर दिसम्बरक सर्द साँझ ठिठुरल रातिक प्रतीक्षामे सहमल ठाढ़ छलैक । असमानी तुराई तर दिनभरि निश्चिन्त फोंफ काट'वला तरेगन सभ घरतीपर हुलक' लागल छलैक । ओकर निर्लज्ज आँखि क कामातुर दृष्टिसँ बचबाक हेतु नग्न घरती अन्हार ओढ़बा लेल अकुला रहल छल ।

चन्दर डेग झाड़ने गाम लाँचि गेल । अपन गाम नहि, मामा गाम । पहिने बभनटोली, तखन घमुखटोली, फेर शिव-मन्दिर आ अन्तमे गामक सिमानपर बहैत बागमती नदी जत' पहुँचि चन्दरक डेग अनिश्चित मनस्थितिक गुनिधुनिमे पड़ि छोट होइत क्रमशः थमकि जकाँ गेलैक, जेना कोनो भगैत-दौड़ैत मशीनक ब्रेक क्रमे-क्रमे कसा गेल होइक ।

चन्दर सोचमे पाँड़ि गेल । धार पार जयबाक दू टा रस्ता छलैक । पहिल रस्ता शिव मन्दिरवला घाट बाटे छलैक । भरि भदबारि ओहि घाटपर नाव चलैत छैक, मुदा पानि डाँड़सँ नीचा अबिते घटबार नाव डुबा दैत छलैक । ओहिबेर पानि पहिनेसँ घटि कऽ पाँजर लागे गेल रहैक आ घटबार नाव डुबा देने छलैक । पानिक धार तेज नहि छलैक, कपड़ा समेटि लोक सुगमतासँ पार क' जाइत छल । पार आब' जायबला कौखन हँसी-हँसामे आ कौखन खौंझा क' कहि बैसैत छलैक—
ऐ नदियाके यैह बेवहार, खोलू घरिया उतरू पार ।

पार जयबाक दोसर रस्ता रेलवे पुल बाटे छलैक । मस्किलसँ एक मीलक फेर पड़ैत छलैक, मुदा आब' जायबलाके' ओतबे फेर अलसा दैत छलैक । गामक पछबरिया सिमानपर दने सोझे दक्षिण गेलापर रस्तामे रेलवे पुल पड़ैत छलैक । ओहि बाटे आयब-जायब ककरो सहज भावें स्वीकार नहि छलैक । विवशता रहैक जे आर बाज । ना घरे नाव रहैक नावार आ नाव नहि रहला पर पानि हेलिक'

घार पार करब जनसाधारणक अभ्यास बनि गेल छलैक । पुल पर बाटे जयबाक विवशता मात्र तखने होइक जखन घाटपर नाव नहि रहैक आ पानि डाँड़सँ ऊपर होइक ।

चन्दर शिव-मन्दिरक सामनेक मोटका आड़ि पर ठाढ़ भऽ गेल । पानिक कछेरमे जयबाक साहस नहि भेलैक । पानि सरकि गेल रहैक, कपड़ो भिजबाक डर नहि रहैक । तँयो चन्दर ओहि पसरैत अन्हारमे आँखि फाड़ने नदीक पाँजरमे सटकल पानिक सतह निहारैत रहल—भयभीत, संश्रुत, ओहि शिशु जकाँ जे मायक हाथमे पानिक लोटा देखिते हाथ पयर फेक' लगैत अछि जेना देह पर पानि खसलैक तँ गलिये जायत ।

बड़ जनमारा जाड़ छलैक, अंग-अंग कनकनबैत । शीतलहरी दाबल पयरें अन्हरिया चादर ओढ़ने घरतीकेँ अन्हार उघाड़िन् उघाड़ि क' छूबि रहल छलैक आ शीतलहरीक सदैव हेमाल स्पर्शसँ घरतीक अस्थिपंजर कनकना रहल छलैक । आ चन्दर ओहि कनकनीमे एकटा छोट हाफपैन्ट आ हाफ शर्ट पहिरने खाली पयरे ओससँ डूबल घरती पर ठाढ़ थरथर काँपि रहल छल । कसिक' दाँतपर दाँत बैसा लेने छल, तँयो दाँत कटकटा उठैत छलैक । दुनू हाथ रगड़िकऽ गर्म करबाक बेकार चेष्टा सेहो जारी रखने छल । पैन्ट-कमीज बर्फ भऽ गेल रहैक आ उधरल टाँड सुन्न भेल जा रहल छलैक । ओहि छोटका हाफ पैन्ट मे चन्दर अपनाकेँ नग्न अनुभव करैत छल । ठेहुनसँ एक बीत ऊपर उठल पैन्टसँ निकलैत अपन जवान भ' रहल लम्बा-लम्बा टाड ओकरा बड़ बीभत्स आ हास्यास्पद लगैत छलैक । बड़ लाज होइक । होइक जे कतहु नुका रही । तँयो सदखन ओकरे पहिरने रह' पड़ैत छलैक आ एकटा पराजित विद्रोह मोमने भ्रमकिक' शान्त भ' जाइत छैक । ओ पैन्ट पहिरलापर ओकरा लगीक जेना ओ आदमी नहि, उपजल खेतमे उपद्रवी जानवरकेँ डरयबाक हेतु गाड़ल बाँसक मनुख छल, जकरा फाटल-चीटल छोट सन कपड़ासँ झाँपि देल गेल छलैक । आदमी नहि आदमीक नकल, एकटा बीभत्स अनुकृति ।

अन्हार शीतलहरीक स्पर्शसँ कंपित रहल आ थरथराइत, दलकैत राति ससरैत रहलैक ।

चन्दर किछु स्थिर नहि क' सकल । ओहि जनमारा सदीमे पानिमे पयर देबाक साहस नहि होइक आ पुल पर बाटे घुमिक' जयबाक विचार पयर भरिया देक । कीखन सोचय—कपड़ा उठा पानिमे पैसेत छी, गोली मारी जाइकेँ, गलि

थोड़े जायब । आ कीखन सोचय—एक भील कतेक होइत छक । पुलपर बाटे चल जाइत छी । अनेरो जाड़ ठाड़मे पानि किएक हेलू ?' एहि गुनधुनिमे घण्टो ओहि मोटका घूरपर ठाढ़ चन्दर शीत चटैत रहल । ने डेग आगू बढ़लैक, ने नीचा ससरलैक ।

समय छिछलैत गेलैक । दिन भरि स्विमिंग किरणक मोलायम पाँखि पर उड़' वाली घरती सिकुड़ल-सिमटल थरथराइत रइल ।

खाली पयर ठाढ़ भेल तरवा बहीर भऽ गेलैक । खाली पयर चलबाक अभ्यास छलैक, मुदा ओहि कनकनीमे सभटा अभ्यास झूठ आ अंग-अंग सुन्न भेल जाइत रहैक । खूजल कानपर सदैव लहरि अपन जोरगरी देखा रहल छलैक आ चन्दरक नाक भदवारिक मेघ जकाँ चुबैत जा रहल छलैक । चन्दर डेरा गेल । भेलैक, जेना कनियो देरी हेतैक तँ जमीनसँ सटि जायत । डेग उठबे नहि करतक । जमिक' बर्फ भ' जायत ।

पानिमे हेलबाक बिचार स्थगित कर' पड़लैक । पुलक रस्ता घयलक । लम्बा-लम्बा डेग नैपैत दुनू हाथसँ कनपटी, कान आ मुँह रगड़ैत रहल, मुदा गर्म हवाक बदला अंग-अंग सुन्न भेल गेलैक ।

रस्तामे श्मशान पड़ैत छलैक । श्मशान मे बुढ़बा पीपर मुँह उठौने गुमसुम ठाढ़ छलैक । ओकर तीनू सुखायल डारि शून्यमे एकटा विचित्र सन नक्शा बनबैत छलैक । लोक अन्हारमे ओकरा देखिक डेरा जाइत छल । लगैत छलैक जेना पीपड़ पर तीनटा विशाल दैत्याकृति ठाढ़ होइक । अन्हारो रहलापर पूर्वाभ्यासक कारणे चन्दर तीनू डारि केँ स्पष्ट देखलक ।

श्मशानक दोसर पीपड़ पर किछु कड़कड़ा उठलैक । चन्दर कनेको भयभीत नहि भेल । ओकरा सुनल छलैक जे ओहि पीपड़ पर घोड़करैत राति भरि कड़कड़ाइत रहैत छैक । मुदा आश्चर्य भेलैक । जाड़ ठार मे साँप-कीड़ा अपन बीयरि भऽ लैत अछि, तखन ओ घोड़रैत किएक कड़कड़ाइत छलैक ।

बीच श्मशान मे आबि देह सिहरि उठलैक । चन्दर डरबुक नहि छल । मुदा भूत प्रेतक अस्तित्व मे ओकर अखण्ड बिश्वास छलैक । अपन गाम मे कतेको ओझा गुणीकेँ भूतप्रेत झाड़ैत देखने छल । भूत-प्रेतक अस्तित्वक संग-संग ओकर भलमनसाहतियो पर चन्दरक अटूट आस्था छलैक । भूत-प्रेत अनेरो तंग नहि

करत छक—चन्दर सदखन बाजय। भूत-प्रेतक भलमनसाहति पर विश्वास रहबाक कारणे चन्दर राति-विशति ठम कुठाम चल जाइत छल। मुदा तैयो ओकर देह सहिरि गेलैक। एना आरो कतेक बेर भेल रहैक। चन्दर अपन अभ्यास वश ठोर पटपटाक' गायत्री पाठ कर' लागल। आँखि बन्द भ' गेलैक मुदा डेग आगू बढ़िते गेलैक।

इमशानक दोसर छोर पर आवि चन्दर आँखि खोलि तकलक। सन्न रहि गेल। किछुये दूर पर तीनटा चुड़ैल ठाढ़ि छलैक। अन्हार मे ओकर उज्जर सपेस नूआ तेना चमकैत रहैक जेना पाठशाला मे ब्लैक-बोर्ड पर खड़ीक चेन्ह। तीनू किदन सभ भनभनाइत रहैक जाहि मे नाकक ध्वनि स्पष्ट रहैक। डरे फेर आँखि मूने लेलक। गायत्री पाठ शुरू कयलक। डेग आगू रखैत ओकरा भेलैक जेना सामने ठाढ़ मृत्युक मुँह मे बढल जा रहल छल।

लगीच अयला पर स्वर किछु परिचित सन लगलैक। आँखि खोलि देखिते चन्दर चीन्हि गेलैक जे तीनू घनुकटोलीक मोगी छलैक जे निकासक हेतु ओम्हर आयल छलैक। निकासक सुविधा नहि रहबाक कारणे ओ सभ निकासक हेतु धारक कात आवि जाइत छल, भोरे करिन फूटबासँ पहिने आ रातिक' अन्हार पसरलाक बाद।

डर कम भेलैक तँ चन्दरकेँ हँसी लागि गेलैक। जीबैत मोगीकेँ चुड़ैल बना देलकै ओ? कतेक डेरा गेल छल? अपन कमजोरी पर लाजो भेलैक।

पुल पार करैत चन्दर देखलक, सिगनल भ' गेल रहैक। गाड़ी जे घड़ी ने पहुँचलैक। पयरक गति बढ़बैत पाकिटमे दुबकल पड़ल थोड़ेक सन रेजकीकेँ टोहियोलक। मात्र सैंतालीस नवका पैसा। पूरा टिकटक दाम एक रुपैया। आधा टिकट पचास नवका पैसा। ताहूमे तीन नवका पैसा कम। आधा टिकट पर टी० टी० टोकहो लागल छलैक। कहीं पकड़ियो ने लैक। चन्दर चिन्ता मे पड़ि गेल—कोना गाम पहुँचत? लगलैक, जेना लाइनक बीच आ कात मे बिछाओल पाथर उड़ि-उड़ि क' तड़ातड़ ओकर देह पर बरसि रहल छैक। चन्दर त्रिवश निरुपाय माथक केश नीच' लागल। डेग थकमका गेलैक।

गुमती पर अवैत-अवैत ट्रेन हड़हड़ाइत स्टेशन पर आवि गेलैक। दोड़ि क' ट्रेन पकड़बाक चेष्टा नहि कयलक। बिनु टिकट जयबाक साहस कहाँसँ अनैत?

मात्रिकसँ विदा होइत दोबारा सप्पत खाइत संकल्प कयने छल जे घुरि क' ओत' नहि आओत। भले केहनो दुदिन आवि जाय। कोनो दोसर ठेकान रहितैक तँ राति बिता भोरे विदा होइत। पयरे दस कोससँ कम नहि पड़ितैक। भरि राति चलैत रहत, तँ भोरे गाम पहुँचि सकत। दोसर कोनो रस्तो नहि छलैक। चन्दर गुमतीसँ नीचा उतरि टेढ़-मेढ़ एकपेरिया बाटे बाधे-बाध गामक रस्ता घयलक।

अन्हारमे पयर बेर-बेर पिछड़ि जाइक। खस' लागय। मुदा अपन निश्चय पर अड़ल रहल। घुरि क' मात्रिक नहि जायत। रातिक अन्हार, कीड़ा-मकोड़ा वा भूत-प्रेत—कथुक भय चन्दरक संकल्प नहि तोड़िसकलैक। निभंय आगू बढ़ैत गेल। ओकरा विश्वास छलैक जे प्राणनाशक जन्तुओ फालतू जानकेँ चिन्हैत छैक आ ओहि पर अपन शक्तिक अपव्यय नहि करैत छैक।

“एक बेर जाइये पड़तौक चन्दर। दोसर कोनो रस्ता नहि छैक। हम सभ ठाम हाथ पसारि थाकि गेलियोक।” माय एना बजलैक, जेना जनैत होइक जे चन्दरक मोनकेँ ठेस लगतैक।

चन्दर छटपटा उठल आ मायक डबडबायल आँखि देखि मोन भेलैक जे वुनू आँखिसँ बहैत ममता अपन आँजुर मे भरि बुन्द-बुन्द क' पीबि जाय।

“तो' चिन्ता नहि कर माय, हम जयबो' आइये चल जयबो'।” चन्दर बाझल कण्ठसँ बाजल आ पपनीक तर मे बलबलाइत अश्रुकेँ मायक दृष्टिसँ बचयबाक हेतु शीघ्रतापूर्वक दलानभे चल आयल, जेना कोनो बरिसबा लेल आतुर मेघ धरती पर झुकैत-झुकैत हबाक झोका पर दूर फेका गेल हो।

माय बड़ी काल घरि ओम्हरे तकैत रहलैक जेम्हर चन्दर कसाइक हाथसँ छूटल बकरा जकाँ पड़ा गेल छलैक आ ओ तेना स्तब्ध ठाढ़ि छलैक जेना कोनो माय अपन अबोध रूग्ण शिशुकेँ दवाइक घोछा मे जहर पिघा देने होइक। अपन बेटाक भलाइये सोचि ओ जयबाक बात कहने छलैक। ई जनैत जे ओकरा दुख हेतैक। किएक तँ ओकर धारणा छलैक जे ई दुख सहि लेला पर ओ जिनगी भरि दुखक कँटाह झाड़मे ओझरा क' शोणिते-शोणितामँ हँबासँ बाँचि जयतैक। ओ जनैत छल, चन्दर ओकर बात नहि टारतैक, तेँ जयबाक गप्प कहने छलैक। मुदा कहि देला पर ओकर आकृति पर उगल दर्दक छटपटाइत रेखा देखि ओकरा लगलैक, जेना अपने हाथे अपन पुत्रक घेंट दबा मारि देने हो।

“माफ क’ दिहै, अपन निरूपाय मायके माफ क’ दिहै” चन्दर ।
अभागलिक ममताक कोनो मोल नहि । भगवान तोहर मायक मोन मे जतेक
ममता, ओकर छाती मे जतेक दूध देलकै, तकर आधो यदि सामर्थ्य दितैक ।”
माय एकसरि ठाढ़ बड़बड़ा उठलैक । ठोरबड़ी काल धरि कैपैत रहलैक ।
आँखि बून्य में पथरायल जकाँ अँटकि गेलैक । लगैक, जेना कोनो निष्प्राण
प्रस्तर-प्रतिमाक ठोर थरथर काँपि रहल होइक ।

पश्चिमी आकाश पर सूर्य तपेदिकक चिर रोगी जकाँ अखिरी साँस गनि
रहल छल आ किछु-किछु झलकैत लाली तेहन लगैत छलैक, जेना मुक्तिक
सम्भावना मात्रसँ चिर रोगीक आकृति पर प्रसन्न हँसी पसरि गेल होइक ।

चन्दर सप्पत खयने छल.....मामा गाम नहि जायब । ई जनैत जे
सप्पत राखब मस्किल छलैक । ओकर दुनू जेठ भाइ मात्रिकेक अन्नसँ पोसायल
छलैक आ ओ स्वयं बरखी बिता आयल छल । गाम मे बँचल-खुचल जमीनसँ
मायके निर्वाह कठिन छलैक । ऊपरसँ मस्किल ई जे जेठ भाइ मात्रिक मे
बरखी बिता पाँचम वर्गसँ आगू नहि बढ़ि सकलैक । नहि जानि केहन मोह भ’
गेलैक । पाँच बरख एक्के बलास मे बिता मायक कप्पार पर आबि बैसलैक ।
दोसर भाइ तेजगर रहैक, मैट्रिक पास कयलकै, मुदा दुखिया मायक दुख दूर
करबाक बदला ओकर भुजबी-भुजबी भेल करेज मे एकटा आर काँट भोकैत
अशान्ति रोगक फेर मे पड़ि गाम आबि बैसलैक ।

बाँचि गेलैक चन्दर—आसक अन्तिम किरण । अन्हरिया रातिक एकाकी
तारा ।

मायक दूध छुटलैक, त’ गामो छूटि गेलैक । मात्रिक मे अनिमग्नित पाहुन
जकाँ उपस्थित भेल चन्दरक स्वागतार्थ क्यो नहि बहरयलैक । ने क्यो स्नेह-
पूर्वक नाम पुछलकै आ ने कोरा मे उठा दुलारसँ चुम्मा लेलकै । खाली
बुढ़िया नानी अपन उजड़ल-बिलटल छातीसँ सटा बड़ी काल धरि हुचकैत
रहलैक ।

चन्दरक नाना चारि कोसक राजा छलै । नाना नहि रहलैक । राजा
नहि रहलैक, मुदा तैयो कोनो वस्तुक अभाव नहि छलैक । पैघ मकान, पैघ

पाँया, पैघ दरबज्जा, पैघ आङन, पैघ अश्रम, पैघ-पैघ लोक आ एतेक रास
पैघ-पैघ वस्तुक बीच एकसर दुबकल छोट-छीन चन्दर ।

भोरसँ दुपहरिया धरि आ साँझसँ निस्तब्ध राति धरि चन्दर चारूकात
अपस्यात दौड़ैत रहय । सम्पूर्ण परिवार ओकरे आस पर रहैक, चन्दर ई ला,
चन्दर ओ ला, चन्दर एत’ जो, चन्दर ओत’ जो । बिना चन्दरक ककरो निबहुता
नहि छलैक ।

—“चन्दर फूल तोड़ि ला ।” भोरे आँखि मलैत नानी कहैक ।

—“चन्दर कने ओइ पार सँ हमर दवाइ आनि दे ।” किरिन फूटैत
बड़का मामा कहथिन ।

“चन्दर कने खेतपर चल लो ।” छोटका मामा कहथिन ।

“चन्दर, कने भगवानक पूजा क’ ले ।” थाकल-ठेढ़िआयल चन्दरकेँ मामो
कहि बैसथिन ।

आ सूर्य माथ परसँ उतर’ लगैक तँ नानी छाती पीटि-पीटि क’ चिकर’
लगीक—“रक्षसवाकँ भूखो-षियास नहि लगैत छैक । हजारो बेर कहलियैक
जे पहिने पानि पीबि ले, तखन मर जत’ मरबाक होउ । मुदा हमर के सुनैत
अछि ?”

नानी थारो परसि सामने राखि दैक । भरि पेट अन्नक संग-संग नानीक
दुलार, चन्दर तृप्त भ’ जाय ।

खाइत-खाइत एक बाजि जाइक आ तकर बाद स्कूल जयबाक हेतु ने पयर
मे शक्ति बचैक ने मोनमे इच्छा । मोन करैक जे कतहु आँखि भूनि पसरि जाय ।
सभ दिन देरीसँ जयबाक लेल मास्टर डँटैत छलैक । किताब नहि रहलाक कारणे
कतेको बेर बेत लागि चुकल छलैक । चन्दर कतेको बेर बाजल, मुदा आङनमे क्यो
कान नहि देलकै । डाँट सुन’ आ मारि खाय लेल स्कूल जायब चन्दरकेँ नहि
रूचैत छलैक । अनठा दैत छल । बस, सभटा दोष ओकरेपर आबि जाइत छलैक ।
ककरो पुछनापर घर भरिक लोक एक स्वरसँ बाजि उठैत छलैक—“ओकर माथमे
तँ गोबर भरल छैक, पढ़त की खाक’ ? आ ऊपरसँ स्कूल जयबाक नामपर बोखार
सेहो लगैत छैक ।”

तयो चन्दर स्तुष्ट छल । भरि दिन खटलापर भरि पेट अन्न भेटब ओकरा लेल सौभाग्य छलैक । बेसीक ओकरा आकांक्षा नहि छलैक । मात्र कौखन अपन ममियौत भाइ-बहिनकेँ नीक खाइत, नीक पहिरैत देखि मोनमे किछु कचकि उठैक । कौखन संगहि भोजन कर' बैसलापर अपन आ ओकरा सभक थारीक फर्क देखि इच्छा होइ जे थारी छीनिक' खा लेअय, मुदा मुँहमे भरि आयल लेर चाटि क' रहि जाय ।

दिन बितलैक ।

राति ससरलैक ।

आ कतेको बरख बीति गेलैक ।

मामाक परिवार विशाल भ' गेलनि । आमदनी घटैत गेलनि आ खर्च नमरैत रहलनि । रहन-सहनक स्तर उठैत गेलनि आ फलस्वरूप अन्न बाँट' आ लुटाब' बला घरमे बेसाहो लाग' लगलनि ।

नानी प्रायः यह दिन देखवा लेल अटकल छलैक । सभ किछु देखि-सुनि बिदा भ' गेलि - चन्दरक एक मात्र स्नेहाश्रयकेँ उजाड़ैत ।

ओकर किया कर्मसँ फुरसति भेटभनि तँ मामा लोकनि दोसर चिन्तामे लगलाह । सम्पत्ति आ घर घटारी बाँटि लेलनि । मुदा एकटा पैघ समस्या सामने आबि गेलनि—चन्दरक समस्या !

“आब चन्दरक कोन व्यवस्था हेतैक ।” बड़का मामा पुछलथिन !

“ओ तँ रहबे करत ! आर कत जायत ?” छोटका मामा कहलथिन !

“मुदा ओकर खर्च ?” वड़का मामाक प्रश्न छलनि !

“दुनू गोटे उठा लेबैक । गोसबरामे रहत ।” छोटका मामाक समाधान छलनि ।

चन्दर गोसबारामे रहि गेल । दुनू मामाक काज देखनि आ भोजन एक मास बड़का मामा देखनि आ एक मास छोटका मामा ।

मुदा एहि व्यवस्थामे असुविधा बढि गेलैक । काज सेहो बढि गेलैक । ऊपरसँ भरिपेट भोजनमे कटौती होब' लगलैक । बाजय तँ ओकर पेटक तुलना कोहा आ बोरासँ होब' लगलैक । भरि-भरि दिनक खटनी, आधा पेट भोजन । चन्दरक मोन टूट' लगलैक ।

आ एकदिन तेहन घटना भ' गेलैक जे मात्रिकमे टिकब अपमानजनक बूझि पड़लैक ।

ओहि दिन थारी सामने अयलैक तँ परसन आधो पेटक हेतु यथेष्ट नहि छलैक । आरो परसन मडलकै तँ ओकरासँ छोट ओकर ममियौत भाइ दीपक तुल्लुआ लेलकै, पेटाह कहि बैसलैक ।

“तौं बीचमे नहि बाज । तोरासँ नहि मडलियौक अछि ।” चन्दर ओकरा रोकलकै ।

—किएक नहि बाजब हम ? हमरे खा क' हमरे पर रोआब ? पेटू नहिन । भरि बटुक भात खा गेलहिक, आब की हाथी-घोड़ा खयबे ?

“चुप रह दीपक ! तोहर मुँह नहि लगैत छियौक हम ?”

“तोरा सन एरू-गेरूकेँ मुँह लगबिते के अछि ? बैसल-बैसल अन्न गोड़ैत छेँ । ‘बड़ आनिबला छेँ, तँ अपन घरक रस्ता किएक ने लैत छेँ ?’ दीपक चुनौती देलकै ।

तामसे आँखि तोरा गेलैक । जबर्दस्ती रोकल तामस नोर बनि टधरि गेलैक । अपन विवशता, दारिद्र्य आ दुर्भाग्यपर पहिलबेर मोन भरि कानल चन्दर जेना कोनो बाल विधवा अपन वैधव्यक कतेको बरख बिता सजान भेलापर अपन दुर्भाग्यपर कानि उठैत अछि ।

आ कनैत-कनैत चन्दर संकल्प कयलक जे मात्रिकमे नहि रहत । भूखेँ मरि जायत, कष्ट सहत, मुदा घुरिक' मामा गाम ता' धरि नहि आओत जा धरि पढ़ि-लिखि कोनो योग्य नहि बनि जायत ।

ओही दिन गाम चलि आयल चन्दर । मामा-मामी लोकनि किछु उदास छलथिन । मुदा ओ उदासी वियोगक दुःखक परिचायक नहि छलनि । ओहिमे मात्र एकटा चिन्ता छलैक जे चन्दरक अभावमे एतेक पैघ गृहस्थीमे टहल-टिकोरा के करत । चन्दर अपन महत्त्व चीन्हि गेल छल ।

घुरिक' मात्रिक नहि गेल चन्दर । मोनो ने छलैक जे मामा गाम गेना कतेक वर्ष भेलैक ।

आ माय फेर ओत' जयबाक बात कहि बैसलैक । चन्दर नीक जर्का अनुभव कयलक जे दोसर कोनो रस्ता नहि छलैक । मात्रिक छोड़ि देलापर दिन राति

अथक परिश्रम करैत चन्दर अपन पढ़ाई जारी रखने छल— पूर्ण उत्साह एवं मनी
योगक संग । मैट्रिकमे आबि गेल छल । बोर्डक फीस देबाक छलैक । माय सभठाम
हाथ पसारि निराश भ' गेलैक । 'नता'त निरुपाय नहि भेने ओ चन्दरकेँ जयबाक
कथा नहि कहितैक । ओ चन्दरकेँ नीक जकाँ चिन्हैत छलैक ।

“हम जायब, अबस्से जायब....” चन्दर निश्चय कयलक ।

× × ×

“बड़कीटा भ' गेलें चन्दर ।” प्रणाम करवा लेल झुकल चन्दरकेँ ध्यानसँ
देखैत बड़का मामा कहलथिन ।

“आब त' विवाह कराब' पड़त तोहरा” मामी हँसी कयलथिन ।

“हमरा सभकेँ विसरिये गेलहुँ चन्दर । घुरैक' पुछारियो घरि ने कयलहुँ
कहियो ।” बड़का मामाक पुतोहु, चन्दरक भौजी उलहन देलथिन ।

चन्दर दबि गेल, छोट भ' गेल । एक्के संग अपनत्व आ स्नेह भरल एतेक
बात चन्दर कहियो नहि सुनने छल । स्नेहक भूखल चन्दर कान'-कान' सन भ'
उठल—गदगद, भावातिरेकसँ विह्वल ।

साँझ खन पहुँचल छल । राति कोना बितौलक चन्दर नहि बुझि सकल ।
मात्रिकमे ओतेक स्वादिष्ट भोजन ओतेक आग्रहसँ कहियो ने खयने छल, सुतबा
लेल ओतबा नीक विछाओन कहियो ने भेटल छलैक । भरि राति टाड पसारने
सूतल रहल ।

राति बितलैक ।

दिन उगलैक ।

—“चन्दर कने ओहि पारसँ हमर दवाइ ल' आ ।” बड़का मामा अपन
कोठलीसँ वाजि उठलथिन ।

“चन्दर, कने खेतपर चलि जो, धनकटनी छैक ।” छोटका मामा दंतमति
करैत कहलथिन ।

“चन्दर कने पूजा क' दियहिक ।” भनसाघरसँ मामी बाजि उठलीह ।

“चन्दर कने बच्चाकेँ घूमा अबियौक ।” अपन दू बरखक बेटीकेँ कोरामे
देत भौजी कहलथिन ।

४८]

उपरफांटू

चन्दरकेँ लगलैक, जेना राति सपना देखने छल । ओ त' वँह चन्दर छल जे
अपन चीन्हल-जानल मामा गाममे घर-बाहर अपस्यांत दौड़ि रहल छल ।

सप्ताह बीति गेलैक । मुदा चन्दर अपन अयबाक उद्देश्य प्रकट नहि क'
सकल । आठम दिन अपन जयबाक चर्चा चलौलक । सभक मुँह एक्के बात
बहरयलैक—“तोँ एतहि रहि जो चन्दर । हमरा लोकनिकेँ एकटा आदमी चाहबो
करी, दौड़-धूप करवा लेल । फेर तोँ तँ अपन लोक छेँ । गोसबरेमे रहबे । कोनो
तकलीफ नहि हेतौक ।”

चन्दरक मुँहमे कोनो कट'ह गप्प आबिक' रहि गेलैक । अपनाकेँ संयत
रखैत सभकेँ नम्रता पूर्वक एतबे कहलकै—“बहुत दिन देखना भ' गेल छल, ते'
मोन ओना गेल जे सभकेँ देखि आबी । सभसँ भेट भ' गेल, आब आज्ञा भेटय ।”
आ शीघ्रतापूर्वक सभकेँ प्रणाम क' आङनसँ बाहर आबि गेल ।

पहिने बभनटोली, तखन धनुखटोली, फेर शिव मन्दिर आ अन्तमे गामक
सिमानपर बहैत बागमती ! चन्दर बढ़िते चल गेल ।

गुमतीसँ उतरि एकपोरिया घयलक आ बाघे-बाघ गामक रस्ता पकड़लक ।

दूर घरि पसरल अन्हारमे डूबल खेतमे एकटा सर्द चुप्पी व्याप्त छलैक ।
चन्दरक अस्तित्व ओहि अंधकारमे घुसैत क्रमशः विलीन भ' गेलैक ।

अन्हार जमकल रहलैक । ●

फरवरी १९६४

उपरफांटू

[४९]

गिरगिट

घोखोसँ कहियो ई नहि सोचि लिहें जे हम तोरा बिना मरल जाइत छियौक ! एखन तोरा दोस्तीक लेहाज नहि छौक, तखन हमरे कोन फिकिर अछि ? दू बरख बीति गेल, ने कोनो चिट्ठी, ने कोनो समाद ! तेना निपत्ता छें जेना अंगरेजिया छोड़ीक सीधसँ सेनुरक रेख, तकलो पर भेटब मस्किल ! निपत्ता छें, त' रहल कर । ताहिसँ हमरा की ? तोरा की बुझाइत छौक जे हम तोरा ताक' लेल जमीन आसमान छानि मारबौक ? कहियो अयनामे अपन चेहरा देखने छें ? नहि देखने छें, तँ आब देखि ले ! भ्रम मेठा जयतौक ! सार, बँमान !

तोहर घालि हम नाँक जकाँ चीन्हि गेल छियौक । भेटबे त' तेना जेना कहियो फराके नहि भेल रहें, जेना दुधमे पानि, फराक-फराक अस्तित्वे ने रहि जाय जेना । वियोगक विस्तारकेँ अपन मस्त हँसीसँ पाटि देबें आ सभटा मान-उपरागकेँ चुम्बन-आलिगनक बाढ़िमे बहा देबें । जाइत काल गरा जोड़ि क' कनबें आ हपतामे दू टा चिट्ठी लिखबाक सप्पत खयबें । तोहर मस्त हँसी तोहर चल गेलाक बादो हमर चारूकात छिड़ियाइत रहत, एहन भ्रम बेर-बेर हैत जे तो' कतहुँ लगे मे छें, हमर अत्यन्त समीप । ओ मस्तीक हँसी क्रमशः घसैत-घसैत धीण होइत, बिला जायत आ तखन जहिया हमरा इहो मोन नहि रहत जे तो' जीबैत छें कि मरि गेलें तेना घमक जयबें जेना हियालयक चोटी पर चीनीक बम, सर्वथा अप्रत्याशित ! अगन कसरती बाँहिक लपेटमे छटपटाइत हमर साँसक चिन्तासँ निश्चिन्त घण्टो अपन करेजमे सटने बेर-बेर कहबें—“पहिने भरिमोन छातीसँ लगाब' दे, तखन कोनो बात + मुग बीति गेल तोरा देखना ।” फेर कने दूर हटि ध्यानसँ हमरा देखैत मुसकिया उठबें ! तोहर मोहक मोछक कोन पसरिक' नाम भ' जयतौक आ हमरा फेरसँ अपन आलिगनमे समेटैत कोनो फिल्मी नायक जकाँ बाजि उठबें—“तोहर रंग तँ दिन-दिन सिनुरिये भेल जाइत छौक ।”

हमर दबाक' राखल क्रोध भड़कि उठत । तोरा जोरसँ शटकैत कहबौक—“चल हट, सार ! एखन तोहर प्रेम उमड़ि रहल छौक ! एतेक दिनसँ कहाँ मरि गेल छलें ?” तो' ओहिना मुसकियाइत रहबें, विश्वासपूर्वक, सहज भावसँ जेना हमर क्रोधक क्षणिकतापर अतिशय बिश्वास रहौक । ओही बम्बइथा स्टाइलमे कहबें—“बिगड़लापर तोहर मुँह आर लला जाइत छौक, विश्वास नहि होउ, तँ अयना देखा दियौक !”

भीतरसँ हमडैत हँसीकेँ बड़ मस्किलसँ जाँति हम क्रोधित मुद्राकेँ कायम रखबाक प्रयास करबौक, मुदा तो' नहि मानबे ! हँसाइये क' छोड़बें ।

“देख, पहिने हमर एकटा बात सुन । बहुत दिन धरि बदरीमे नुकायल रहलाक बाद जे चान बहराइत छैक से केहन लगैत छैक ? अनमन तोरे सन । कहीं हमर नजरि ने लागि जाउ ! रहलौ चिट्ठी नहि लिखबाक उपराग, से विश्वास कर, सभ दिन तोरा चिट्ठी लिब' बैसैत छलियौक मुदा लिखि नहि होइत छल । कलम उठबिते लगैत छल, जेना कान' लागब । इच्छा होइत छल जे उड़ि क' तोरा लग चल आबौ । सुन, एकटा बात कर ! आ, हम तो' मिलि क' भगवानसँ प्रार्थना करी जे दू टा प्रेमीकेँ उड़ि क' एक दोसरक लग जयबाक हेतु पाँखि सेहो देल करथिन । दुनिया भरिक लेला-मजनु हमरा तोरा आशीर्वादक बोझसँ दाबि देत ।”

हम भभाक' हँसि देबौक, जेना बान्हल पानि बाट भेटलपर हठात' बह' लगैत अछि । बड़ी काल धरि हहरैत रहत ओ हँसी । आ अन्तमे अपन पाकिटसँ एकटा फोटो बहार क' हमर तरहत्थी पर रखैत कोनो नवकनियाँ जकाँ लजाइत बाजि उठबें—ले, अपन भौजीकेँ देख..... ।

ई पट्टी ककरो आनकेँ पढ़बियहिक सार ! हम तोहर बुट्टी-बुट्टीकेँ बिन्हैत छियौक । बाज, ई फोटो सभ कोन स्टूडियोक अलबमसँ चोराक' अनैत छें ! फुटानीक हद क' देलें तोह ! प्रेमक झूठ-फूस खिस्सो सुनयबाक लेल हमहीं भेटैत छियौक । चोरा नहिन ।

क्यो कहैत छल जे बनारस गेल छें । बनारस जो कि बाराबंकी, हमर बलायसँ । मर, जत' मरबाक होउ ।

काज ! काज !! काज ! जेना तो एक्का लेखोरेटरी असिस्टेंट नहि, आणविक शक्तिक नवीनतम परीक्षणमे व्यस्त रूस आ अमेरिकाक कोनो व्यस्ततम वैज्ञानिक रहै जकरो इहो पता नहि रहैत छैक जे ओकर आदिकार सृष्टिक केहन-केहन विध्वंस करैत छैक । चल, मानि लैत छियौक जे कम काज कयलासँ जीवन शक्ति क्षीण होइत छैक । मुदा इहो जानिये ले बाउ, जे अधिक काज कयलासँ मृत्यु समयसँ पहिने घराजोड़ी देब' लगैत छैक । मरबै तँ मो' पड़तीक जे कोनो अपन लोक बुधियारीवला बात कहने छल !

अजुका लेल एतबे काफी छौक ! निलंज तँ तो पुरान छै । मुदा कोनो मात्रमे जरूर लाज बाँचल हेतौक ।

आब एकटा सत्त बात पुनि ले—सवा सोड़ह आना ।

जखन कखनो एकान्तमे बैसि अतंतक परछाँहीकेँ छुबाव करपल प्रयास करैत छी, परछाँही हाटक' दूर, बहुत दूर पड़ाइत बिला जाइत अछि । हमर पसरल बाँहि ललचिक' रहि जाइत अछि, बान्हि नहि पबैत अछि ओकरा ! परछाँहीक मीनार, नाम, ततेक नाम भ' जाइत अछि जे ओकर स्पर्श असम्भव भ' जाइत अछि । चुपचाप अवश-विवश बैसल पसरैत-समटैत अतीतक परछाँही देखि कोनो बीतल क्षणक स्मृतिसँ अपन मोनकेँ परतारि लैत छी ।

आ अतीतक अन्हार बाटपर छिड़ियायल जाहि कोनो बीतल क्षणकेँ टोहियबैत छी, ओहि प्रत्येक क्षणमे तो जीबैत छै, हँसैत छै, टहाका लगबैत छै । ओहि क्षणमे तोहर मस्त टहाकाक अतिरिक्त किछु नहि रहैत छैक । एहन लगैत अछि जेना हमर व्यतीत तोरे हँसीमे बन्दी बनल हो !

तोरा हेतौक जे दस टा गारि सुनौलाक बाद ई लुच्चा लमनचूस देखाक' परतारि रहल अछि ! मुदा विश्वास कर, हम सत्त बात वहि रहल छियौक, एक्को मिरिया फूसि नहि । जखन कखनो अवकाशक क्षण हाथ अबैत अछि, अतीतक स्मृतिमे तोरा ताकि भरि मोन गप्प क' लैत छी !

हम जनैत छी जे हमर एहि बातपर तोरा विश्वास नहि हेतौक ! सोचबै जे दिनभरि कालेजमे क्लास कयलाक बाद जहाँ-तहाँ बौयबाक अतिरिक्त

काजे कोन अछि ? आब तोरा कोना कहियौक जे परिस्थिति कतेक बदलि गेलैक ! तोरा अपन दितचर्या सुनयबौक त' विश्वास नहि हेतौक ? सोचबै, सार गप्प हाँकि रहल अछि । मुदा ई कनियो झूठ नहि छैक जे अन्हारे उठि, नहा-धोक' तैयार होइत छी जे भोरमे अपन किताब देखलाक बाद आठ बजेसँ दस बजे धरि ट्यूशन क' सकी, मात्र तीस रुपैयाक हेतु ! साढ़े दससँ चारि बजे धरि एम० ए०क क्लास करैत छी । फेर साँझमे दू टा ट्यूशन ! एकटा पाँचसँ सात आ दोसर सातसँ नौ बजे धरि, मात्र तीस आ चालीस रुपैयाक हेतु । एहि सय रुपैयामे मास भरिक खर्च चलव' पड़ैत अछि । घरसँ रुपैया नहि अबैत अछि ! भोरसँ राति दस बजे खटलाक बाद भरि राति निश्चित सुतैत छी—सपनाक निन्न नहि, मुर्दाक निन्न ! प्रत्येक राति आ प्रातमे आंतबे फर्क होइत अछि, जतबा एकटा मृत्यु आ पुनर्जन्ममे ! रातुक मुर्दा भोर होइत मशीनक बान्हल गतिसँ काज शुरू क' दैत अछि, ओहि सूर्यक संग जे राति भरि सुस्ता क' भोरे अपन यात्रापर बहुरा जाइत अछि ।

तो फेर हँसबे जे भाजि रहल अछि । स्कूलमे जकरा घरसँ दू-दू सय रुपया मास खर्च अबैत छलैक से एम० ए०मे आबिक' सय रुपैयाक हेतु छी घंटा ट्यूशन कियैक करत ?

यैह भाग्यक क्रूर परिहास अछि आइ पहिल बेर तोरा एकटा सत्त बात कहि बैत छियौक जे तोहर एहि नवाब दोस्तक बाप एकटा गरीब आदमी छैक, औसत हिन्दुस्तानी जकाँ रोटी कमयबाक हेतु दिन राति खट'वला बुद्धिजवी । तोहर इ भाग्यहीन दोस्त सौभाग्यसँ ओह बापक सभसँ पैघ बेटा छैक जे ओकरा राजकुमार जकाँ पोसलकै, प्रायः एहि आसपर जे ओकर बेटा एकदिन असली राजकुमार बनतैक आ ओ एकटा राजा बेटाक भाग्यशाली बाप बनबाक गौरव प्राप्त करत । मुदा तोहर दोस्त किछु नहि बनि सकलौक—एकटा आदर्शवादी भीरु नवयुवक, हवाक झोंका पर उड़ैत सुखायल पात ।

आ ई जुआनी हमरा पर वड़ अन्याय कयलक अछि । थोड़ेक वास्तविकतासँ परिचय करा देलक अछि, कल्पनाक आकाशसँ यथार्थक मरुभूमिमे उतारि देलक अछि । किछु-किछु सञ्ज्ञान भेल जाइत छी । आ ई ज्ञान दिनसँ ओकर मस्ती आ राति सँ स्वप्नक निन्न छीनि लेने अछि । आब 'देन क' कर्तव्यक बान्हल मशीनी गति आ राति क' मुर्दा निन्न । तै कहलियौक जे जखन कखनो अवकाशक क्षण हाथ

अबैत अछि, अतीतक अन्हार बाटपर छिड़िआयल कोनो सुखद क्षणकेँ बीछि तोरासँ भरि मोन बतिया लैत छी । तोहर ई काल्पनिको सम्पर्क मोनमे एकटा नव उत्साह भरि दैत अछि । तो तँ जनैत छेँ, हम पक्का भीरू छी ।

तोरा ओ दिन मोन छौक जहिया हम डरे थरथर कँपैत तोहर डेरापर गेल रहियौक ? यद्यपि देहदशमे तोरासँ दुनो छलियौक आ ताकतियो तोरासँ कम नहि छल । कियैक तँ हमरा सुनल छल जे तोहर घुस्सामे वड़ शक्ति छौक । कड़ासँ कड़ा वस्तु एक चाँटमे दू फाँक । हमरा डर छल जे कही तोँ हमर वपार दू फाँक ने क' दे ? कियैक तँ हेड मास्टर लग हम तोरा पर नालिश कयने छलियौक आ हेडमास्टर तोरा खूब छड़िपटौने छलौक ।

हम गामक स्कूलसँ नव नव आयल रही । तोरासँ एकबेर मामूली गप्प भेल छल । हम शहरूआ तौर तरीकामेँ अपरिचित रही, देहाती भुच्चर । एकदिन रमेश हमरा सामनेँ तोरा कहलकौक — “अरी सरवा रणेन, तोँ हमर किताब नहि अनले ?” हमरा इ बात बड़ अघलाह लागल छल । रमेश तोरा सार कहलकौक, एतेक भारी बात, बहिनक गारि । मुदा तोँ चुप्प रहि गेलें । हमरा भेल जे प्रायः तोँ ओकर बात नहि सुनलहिक । कहलियौक — “तोँ नहि सुनलहिक रणेन ? रमेश तोरा बहिन लगा क' गारि पढ़लकौ ।

हम अपन बात समाप्तो ने कयने रही कि तोहर वसरती हाथक जवर्दस्त घुस्सा भुँहपर लागल छल आ हम जमीनपर चितंग पसारि गेल रही । लागल जेना सभटा दाँत झड़ि गेल । आँखिक आगाँ अन्हार घुप्प ।

हम कनैत कनैत हेडमास्टर लग गेल रही आ नालिश कयने छलियौक । सफाइमे तोँ विचित्र बात कहने छलहिक । कम सँ कम ओहिदिन हमरा ओ बात विचित्र लागल छल । तोँ कहलहिक जे — “सार कहव कोनो गारि नहि छेक । मुदा बहिनक नाम लगा हम तोरा गारि देने छलियौक ।” जकरे लेल चोरी कयलहुँ सँद कहलक चोरा ।

हेडमास्टर साहब किछु नहि सुनलथुन । खूब थुराइ भेलौक तोहर, मुदा ओतेक मारि खाइयो क' तोहर चेहरापर कण्टक कोनो अभिव्यक्ति नहि जागल छलौक । हम आतंकित भ' गेल रही ।

लः कासभ हमरा डेरीलक जे हमर जयपन्थी आवि गेल । तोँ हमर ओठाँ कम सँ कम अवस्से तोड़ि देवें जाहिसँ हम जिनगी गरिक हेतु बेकार भ' जायव, पढ़ि लिखि नहि सकब । हम गाम आपस जयबाक बात सोच' लागल रही ।

अही बीच एक दिन छुट्टी भेलापर तोँ कहि बैसलें — “बल, हमर डेरा चल ।”

हम डरे थरथरा गेलहुँ । अपन ओठाँकेँ संशंकित भावेँ मुट्ठी बान्हि नुका लेलहुँ । लागल जेना आब पढ़ाइ-लिखाइ छूटल । मुदा तोँ कहने छलें — “तोँ त' बड़ नीक लड़का छेँ । मिला हाथ, हमर तोहर दोस्ती पक्का ।” मैथिली नीक बाजि लैत छलें तोँ ।

हम डेराइत-डेराइल हाथ बढ़ीने छलियौक जे कतहु आङुर ने मचोरे दे । मुदा बड़ आत्मीयता आ उत्साह सँ हाथ मिलौने छलें । तोहर डेरा जायमे तँयो डर लागल छल । तोँ हँसि क' बजलें — डेरी नहि, आब नहि पिटबौक ।

हम तोहर घर गेलियौक । एकटा बड़का हातामे पैघ सन पीरा मकान उदास ठाढ़ छल । बाहर सँ लगैत छलैक जेनाबरखोसँ खाली पड़ल होइ — उजाड़ । देवाल पर कतेको बरख सँ पोचारा नहि कराओल गेल छलैक, कतेको ठाम कारी दाग पड़ि गेल छलैक । हाता बड़ पैघ, मुदा जंगल-झाड़ आ पंघ-पैघ घास उगल । पयरे लगातार चलबाक कारणेँ मुख्य द्वार सँ मकान धरि रस्ता बनि गेल रहैक । पयरेक रगड़िसँ घास उड़ि गेल रहैक आ नीचाँक चिकनी माँटि झलकैत छलैक ।

हम दरबज्जा पर लजायल ठाढ़ रही । तोँ दौड़िक' भीतर गेलें । तोहर डूनु जेठ बहिन बाहर अयलीक आ हमर हाथ पकड़ि भीतर घीचैत कहलक — बायरे कँनो दाँड़िए आछो ! भीतोरे एसो ।

भीतर जा क' चुपचाप एकटा कुर्सी पर सिकुड़ि क' बैसि गेल रही । भीतर एकटा वृद्धा बैसल छलीह — तोहर माय । साठिक लगभग बयस । सभटा केश उज्जर आ आँखि पर पातर फ्रेमक चश्मा । तोँ सभ सँ परिचय करौलें — आमार माँ मेज दी, छोट दी “आ फेर हुनका लोकनि केँ कहलहुन” — आमार नतुन बन्धु, प्रोकाश ।

तोहर डेरा सँ बहराइत काल हम ने खाली तोहर पक्का दोस्त बनि गेल

रहियौक, अपितु ओइ अगभुआर शहर मे हमरा एकटा ममता भरल माय आ दू टा स्नेहमयी बहिन भेटि गेल छल। पहिलेबेर तोहर घर गेलापर लागल, जेना पहिनो बेर-बेर एत' अबैत रहल होइ, घर चिन्हार अछि.....।

पहिले दिन तोरा वारेमे सभ किछु जानि लेने रही। तो अपन बाप आ भाइ सभकेँ ख गेल छलें। बाप शहरक नामी वकील छलथुन। जनमिने हुनका तो सार्वजनिक कण्ठमें मुक्त क' देलहुन। फेर छबो भाइकेँ बिदा कयलहुन—एक-एक क'। छबो भाइका पैघ बहिन बांचलि छलौक। बड़की बहिन सासुरमे छलौक, आ छोटकीक सेहो बेवाह भ' गेल छलैक। मंझिली बहिन कुमारि छलौक, पचीस बरखक। हमरा सन देहातिक लेल ई बात बड़ विचित्र लागल रहए जे पचीस बरखक बड़की बहिन कुमारि छलैक आ छोटकीक विवाह भ' गेल रहैक। ओहि दिन हमरा नहि जात छल जे भाइ-काल्हि विवाहक हेतु कुमारि कन्याकेँ प्रदर्शनीमे बैस' पड़ैत छल। हो जाय नहि छल जे मंझिलीक कारी चामसँ छोटकीक गोर चाम बाजी जीति ले रहेक। ओ प्रदर्शनीमे चुनि लेल गेल छल—हमर गमार बुद्धिमे इहो नहि नहिहा सकल.....।

तोहर माय हमरा इहो कहि देने छलीह जे कोना तोहर बापक कमाइपर तोहर कमाइ निति मौज करैत रहलौक आ कोना हुनकर बाद आँखि फोरि लेलौक। दू टा कन्या कलकत्तामे नौकरी करैत छलौक आ परिवारक संग ओतहि रहैत छलौक। मकानमे खालो तोहर सभसँ छोट विधवा काकी रहैत छलथुन। तोहर हुनका हुनकर आ हुनकर दुनू बेटाक खर्च-बर्चक हेतु रुपया पठबैत छलथिन। मुदा तोरालोकनिसँ कोनो मतलब नहि छलनि। मकानक चौथाइ हिस्सा मे तोरालोकनिसँ ओकिन जकाँ रहैत छलें। ओ सभ बात सुनिक' हमर आँखि तोरा गेल छल जकरा नुकयवाक हेतु हम, जयवाक हेतु उठिक' ठाढ़ भ' गेल रही। विदा होइत कलकत्ता कयलियनि तँ तोहर माय हमर माथपर स्नेहसँ हाथ फेरैत कहलनि—“बाबे ? किन्तु मोने राखो। तोमाके रोज आसते हवे.....।”

वचन देने छलियनि आ बाटमे बेर-बेर दोहरबैत अपन डेरा घुरल रही—
“मेज दी — छोट दी.....माँ.....छोट दी... ..मेज दी.....माँ.....।”

...तकर बाद प्रत्येक प्रात लोक सभ हमरा दूनुकेँ एक संग जगैत देखलक। प्रत्येक दिन स्कूल हमर तोहर हंगामा आ ओतानी देखलक। प्रत्येक साँझमे शहरक सड़क सभ हमर दूनु-गोटेक पैरक ध्वनि संग-संग सुनलक। प्रत्येक राति एक दोसर

सँ चिपटल सूतल हमरा लोकनिकेँ अपन कोरामे समेटि दुलार कयलक। संगतुरिया सभ हमर तोहर दोस्तीपर जरि मरल आ बुढ़बासभ अनेरे टीका टिप्पणी कयलक। तोरा हम अपन गाम सेहो ल' गेलियौक। हमर माय अपन देहाती स्वभावक

कारणे तोरा सामने आब'सँ लजाइत रहय। हमरा लोकनि खाय बैसलहुँ त' ओ केबाड़क फाँकसँ देखैत रहय। तो चुप्पे-चाप लग जा पयर पकड़ि कहलहिक—
“अपन बेटाकेँ आशीर्वाद नहि देबैक माँ ?”

आ हम छोट भ' गेल रही—एक दम बाओन। सभदिन तोहर माँकेँ नमस्कार करैत छलियनि; मुदा पयर कहियो नहि छूने रहियनि। हमर मायक पयर छूबि तो हमरा बाओन बना देलें।

गामसँ घुरलापर रातिमे संग-संग सूतल दुनू गोटे मायक गप्प मोन पाड़िक' हँसि रहल रही कि तँहर माय लग आबि फुसफुसा क' बाजलि छलीह—“एकटू आस्ते बोलो बाबा।”

हम अचकचा क' चुप भ' गेल रही। तो फुसफुसा क' बाजल रहें—
“ओहि कातमे हमर काकी रहैत अछि—नम्बरी खुराफाती। हमरा लोकनिकेँ बदनाम करबाक ठीके लेने छथि। जे क्यो एहि डेरामे अबैत अछि, सभपर सी. आइ. डी. जकाँ नजरि रखैत छथि। बहिन सभक संग झूठ-फूस खिस्सा बना लोककेँ कहैत फिरैत छथिन। आब तोरोपर नजरि पड़ि गेलनि अछि। हमरालोकनि बहि किछ बजैत छी, तेँ माथ चढ़ल जाइत छथि। हमर दोस्तकेँ आथब जायब अघलाह लगैत छनि, मुदा अपने घण्टो नीलूदाकेँ बैसौने रहतीह। फूसियोकेँ भगतिन बनलि रहैत छथि।

तो तामसे लाल भ' गेल रहें आ हम लाजे गड़ि गेल रही। हमरा गेला-अथलासँ कोनो दिन एहन बात उठतैक, तकर कल्पनो नहि छल। कमसँ कम हुनका अवस्थाक फर्क तँ देखबाक छलनि।

दू-चारि दिन तोरा ओत' जायसँ कनछी कटैत रहलहुँ। मुदा मानैत के अछि ? पकड़ि क' ल' अनलें आ माय लग नालिश कयलें—“परकसवा कसल छीक माँ।”

माय पुछलनि—“केनो बाबा। मायेर ऊपर कीसेर राग ?”

“नहि मां, रुसब कि एक ? सोचलहुं जे हमरा अयलासँ अहाँ लोकनिक बदनामी होइत अछि ते नहि ए आयब ठीक ।”

“सुनलें मां । सार हमरा लोकनिक उपकार कर’ चलल अछि, बदनामीसँ बचाब चाहैत अछि । अरे डर करूँ छैक एहि बदनामीक ? जेना अबैत छलें, आयल कर, नहि तँ हड़ो-गुहूँ तोड़ि देबौक ।”

हम फेर ओहिना आव’ जाय लागल रही । खाली तोहर बहिन सभसँ बड़ लाज लागय । काकीक लगाओल आरोप किछहु नहि बिसरय ।

एक दिन तोहर डेरा अयलहुँ तँ तो मायक संग अस्पताल गेल रहय, खाली मंझिली दीदी डेरामे रहयि । छोटका दीदी सेहो सासुर चल गेल छलीह । मंझिली दीदीक हम बड़ इज्जति करैत छलियनि । मुदा लाजे हुनकासँ पड़ाइत रही । हुनका एकसरिये डेरामे देखि हम घुर’ लागल रही ।

“कहाँ जाइत छें, रणेन अबिते हेतौक । बैसि जो । आ कि हमरा लग बैस’मे डर लगैत छीक ? मंझिली दीदी सेहो नीक मैथिली नीक जकाँ बजैत छलीह ।

“नै दीदी, अहाँसँ कोन डर ?” हम हुनका लग बैसि गेल रही । मुदा भीतरे भीतर डेरा जरूर गेल रही ।

मंझिली दीदी मुसकिया उठलीह । पीड़ासँ सानल मुसकी । हमर हाथ पकड़ि बजलीह — झूठ नहि बाज । तो ठीके डेरा गेल छें ? देख, तोहर हाथ थर-थर काँपि रहल छीक । डेरयबे कोना नहि । मौगी जाति होइते तेहने भयंकर अछि — आदमखोर । मौगी अपन सन्तानोके चिबा जाइत अछि । तो हमरा सामने कतेक बच्चा छें, रणेनोसँ छोट । तँयो काकी अपवाद लगवैत छथि । मौगीक कोनो ठेकान नहि । अपन चेहरा क्यो नहि देखत । खाली अनकर दोष निहारैत चलत । कह तँ, कहाँ तो आ कहाँ हम...?

मंझिली दीदीक मुट्ठीमे हमर हाथ कसा गेल । उत्तेजनासँ हाँफ’ लगलीह । हाथ गर्म तब जकाँ लहकि उठलनि आ आँखिमे कोनो चिनगी चमकि उठलनि । कने काल बाद मुट्ठीक पकड़ि ढील भ’ गेलनि । मुँह फेरि लेलनि, भरिसक बहैत नोरके नुकयबाक हेतु । सदै भ’ गेल हुनकर हाथ बड़ी काल धरि हमर जाँघपर पड़ल रहल ।

तो मायक संग घुरैत पुछलें—“कखन अयले ?”

“बस आविये रहल छी ।”

तो जल्दीमे छलें । हाथ धिचैत कहलें—“आ’ हमरा संग चल ।”

तोरा संग अस्पताल गेल रही—मौगी वाडंमे । एकटा बेडपर तोहर काकी आँखि मुमने पड़ लि रहथुन । एकदम उज्जरि, जेना देहक सभटा शोणित बहि गेल होनि । आँखिक नीचा कारी खाधि, एकदम घसल-घसल ।

“की भेलनि अछि ?” हम तोरासँ पुछने छलियौक । लगमे ठाढ़ि नर्स ठिठिया उठलि छलि । बड़ तामस भेल । एहिमे हँसबाक कोन गप्प भेलैक ? तो जरैत आँखिये नसके तकलहिक । ओ सिटपिटा क’ चुप भ’ गेलि ।

“तो नहि बुझबहिक । आ, चल ।”

तो हमरा बाहर ल’ अनलें । सत्ते हम किछु नहि बुझलियौक । मुदा ओहि दिन सभटा बूझि गेलियेक जहिया तोहर काकीके स्वस्थ भ’ डेरामे घुरि अयलाक दू मास बाद नीलूदाके हुनकर कोठलीमे जाइत देखि तो दाँत पीसिक’ बाजल रहय “हम कोनो दिन एहि सारके जानसँ मारि देबैक ।”

मैट्रिकक परीक्षा लगीच आवि गेल रहय । दुनू गोटे भरि-भरि राति जागि क’ तैयारी कयलहुँ । कोसँ पछुआ गेल छल । सभटा काँपी किताब पसरल छोड़ि भोर होइत होइत दुनू गोटे सूति रही । दिन चढ़लापर हमरा झिक्झोरैत तो उठा दैत छलें—री चण्ठ । हमर छातीपरसँ अपन पहलमानी जाँघ हटा । हमर साँस रुकल जाइत अछि :

तोहर साँस कहियो ने रुकलौक, मुदा हमर गरामे फँसरी लागि गेल छल । गुण्डासभ जान लेबाक घमकी देने छल । हम डरे’ अधमरु भ’ गेल रही आ तो तामसे घताह—“बस, एहि साहसपर प्रेम कर’ चलल छलें” । हजार बेर कहलियौक जे ओकर ध्यान छोड़ि दे । ओ हरामजादी तोरा जोग नहि छीक । मुदा के सुनैत अछि ? बीआ रोमान्स कर’ चलल छलाह । ले रोमान्सक स्वाद । लैलाक भाइ सभ छूरा लेने घूमि रहल छीक, एकाध नहि दर्जनक दर्जन । शहर भरिक भाइ । ओस्ताद मजनूक नाम ल’ क’ शहीद भ’ जो बीआ ।”

हम खाली कनिते रही आ तो किछुओ उठा नहि रखलें । गुण्डा सभक

प्रत्येक चालि के बेकार करैत अपन आश्रय मे सुरक्षित रखलें। मुदा मैट्रिक पास कयला पर हम गुण्डा सभक डरें शहर छोड़ि पटना चल आयल रही। विदा होइत काल प्लेटफार्म पर छातीसँ लगा बाजल छेलें—आखिर ओ हरामजादी तोरा...हमरा सँ छीनिये लेलक' हम प्रतिवाद करैत कहलियौक—“ओकरा गारि पढ़ला सँ कोन लाभ ? एहि मे ओकर’ तो फेर बमकि उठल छले—“फेर वैह मजनू बला बात। ई बात हमरा कहियो ने बिारत जे ओकरे कारण सँ तो ई शहर छोड़ि क’ जा रहल छै”। हमरा छोड़ि क’ जा रहल छै।

एम्हर हम कालेज मे एडमिशन लेलहुँ आ ओम्हर तो मेडिकल कालेज मे नोकरी घयलें—आर्टिस्ट कम लेबोरेटरी असिस्टेन्टक। कहियो तोहर चिरचिरी पाड़ब देखि क’ हम हँसि दैत छलियौक। की पता छल जे ओहि चिरचिरीक बलें जीविका भेटि जयतौक।

दूर भ’ गेला पर पत्रक कम आरम्भ भेल छल। प्रत्येक हफ्ता चिट्ठी भेटय, लिखी। कनेको देरी भेला पर रूसी, मान करी।

साल भरिक बाद भेट भेल छल। तोही पटना आयल छलें। मैझिली दीदीक विवाह भ’ रहल छलनि ओहि मास। तो उत्तरदायित्व सँ मुक्त भ’ रहल छलें। विवाह मे बजीने छलें।

हम नहि जा सकल रही। अपन शुभकामना पठा देने रहियौक मुदा साल भरि बाद ओहिठाम पहुँचल रही। खूब नीक समय कटल। कतेको पुरान गप्प, कतेको नवका चाशनी। आ अन्त मे टेबुल पर राखल अपन फ्रेम मे जड़ल फोटोके हाथ मे उठा ओकरा खोलि पाछाँ सँ एकटा फोटो बहार क’ हाथ मे दैत नवकनियाँ जकाँ लजाइत कहलें—ले अपन, भौजी के देख।

एकटा सुन्दर कन्याक फोटो। पन्द्रह सोलहक वयस। लजायल। अर्ध-विकसित। सिकुड़लि सिमटलि। हम तोरा बघाइ देने छलियौक।

साल भरि बाद फेर गेल रही। तो घर सँ निपत्ता रहय, माय एकसरि बैसलि, उदास दृष्टिये बाट निहारैत छलथुन। हमरा देखिते प्रसन्न भ’ उठलि छलीह। बड़ी काल गप्प भेल। ओ अप्पन निस्संगताक बात कहलनि।

तोहर अयला पर हम मायक दुखक गप्प चलीने छलियौक। तो फेर अपन फोटो उठा ओकर पाछाँ सँ फोटो बहार क’ हाथ मे दैत कहलें—ओकरो इन्तजाम भ’ गेल छैक। ले, देख।

फोटो कोनो दोसर छोड़ीक छलैक। पहिलकीक नहि। पुछला पर बजल—ओकर गप्प नहि कर। ओकर घरवला सभ बड़ स्वार्थी छैक। हम चीज वस्तु दैत छलियौक ते स्वागत करैत छल। विवाहक गप्प कयलियौक त’ भड़कि गेल। अबनो हमरा सँ प्रेम करैत अछि। मुदा ओकर लोक सभ नहि मानतैक। तो ओकर गप्प छोड़। अपन नवकी भौजी के देख। केहन छौक ?

हम नीक जकाँ फोटो देखलियौक। भरल पूरल देहवाली युवती, चंचल नचैत आँखि, देहमे अनाकर्षक उभार आ वक्रता। हमरा नहि पसिन्द भेल छल। तँयो खूब तारीफ कयने छलियौक।

साल भरिक बाद फेर भेंट भेला पर एकटा दोसर छोड़ीक फोटो दैत कहलें—काजल फलटं छलि। मुदा झरना पर हमरा पक्का विश्वास अछि। ले देख।” हम फोटो बिना देखने घुरा देने छलियौक। देखबाक इच्छे नहि भेल छल। जानि गेल छलियौक जे ब्रिस्सा अबन आरो चलतैक, फोटो अबन आरो बदलतैक। तोरा सन सय रुपया कमाय वला किरानी आ लेबोरेटरी असिस्टेन्ट अपन फोटोक पाछाँ नुका क’ फोटो राखि सकैत अछि, मुदा ओकरा अधिकारपूर्वक अपन फोटोक संग जोड़िक’ टेबुलपर नहि राखि सकैत अछि। इ फोटो अबन आरो बदलतैक, आरो...

आ दू साल सँ फेर निपत्ता छै। मे कोनो चिट्ठी, ने समाद ? ने भेंट-घाँट। एक बेर दू घण्टाक लेल तोहर डेरा पर गेल रही। माय सँ पता लागल जे तो कोनो आनन्दमार्गी स्वामीजीक फेरा मे छै। घूमि ले बौआ। मोन के परतार’ लेल इहो रस्ता बेजाय नहि। मुदा कहियो भेटलै त’ तेहन मरम्मत करबौक जे स्वामीजीक नाम बिसरि जयतौक। चिट्ठी लिख’ मे हाथ टुटैत छौक ?

गर्मीक छुट्टी मे भेंट कर’ अयवौक। स्वामीजीक चक्कर छोड़ि हमरा संग घूम’ पड़तौक। नहि तँ हमर तामस बड़ खराब अछि, तोरा बुझले छौक।

आ खबरदार जे एहि बेर फोटो देखा क’ कहलें जे ले, अपन भौजी के देख। हमर बात मान आ ई कुचालि छोड़ि दे। गिरगिट जकाँ रंग नहि बदल। नहि तँ यदि एहिना स्टुडियोक अलबम सँ फोटो चोरा क’ गप्प हँकैत रहलें तँ एकदिन बड़का हबेली जा क’ रहबे। आ तखन पुलिस डण्टा ल’ क’ कहतौक—ले, अपन बाप के देख। ●

वलान्त

आँखि खुजला पर राम अपना केँ कोठलीमे एकसर पौलक !

ओ सबेरे कहियो नहि उठैत अछि ! दिन चढ़लापर रेडियो सिलोनक एनाउन्सरक चिकरैत स्वर, धीयापूताक चनचनी, भनसाघरक खटपट आ गन्हाइत “चाल” क घोंघाउज ओकरा जगा दैत छैक । एकटा खौंझायल तिवतता मोनभे लेने ओ आँखि खोलिक’ खाली कोठली मे भरि रहल कोलाहल केँ देख’ चाहैत अछि । जेना ओहि कोलाहलमे जुटल भिन्न-भिन्न स्वरक अस्तित्व केँ चीन्ह’ चाहैत हो ! सभटा स्वर आँखिक बाटे मोनमे पैस’ लगैत छैक । घबरा क’ आँखि फेर मूनि लैत अछि । गेरूआ मे मुँह गाड़ने पेटक बलें पड़ल-पड़ल प्रत्येक दिन प्रातःकाल पहिल गप्प मोन पड़ैत छैक—विश्रामक राति गेल आ काजक दिन शुरू होब’बला अछि—बड़कीटा अकछल कटाह सन दिन । पपनी पर जोर द’ क’ फेर सँ आँखि केँ नीक जकाँ बन्द कर’ चाहैत अछि । प्रायः एहि व्यर्थ आसपर जे आँखि फेर लागि जाय आ राति फेर घुरि आवय !

आँखि जुजला पर सभ दिन जकाँ कोठलीमे भरि रहल कोलाहलकेँ देख’ लागल । ओहि कोलाहल मे जुटल भिन्न-भिन्न स्वरक अस्तित्व केँ चीन्ह’ चाहलक आ ओकरा आँखि बाटे भीतर घेसैत देखि भय सँ आँखि मूनि लेलक । मुदा ओ कोलाहल नीक जकाँ भीतर पैसि गेल छलैक । रेडियो सिलोन सँ सलीमक अनारकली चिचिया रहल छलैक—“जब प्यार किया तो डरना क्या ?” आब ओकरा केँ वृद्धबितैक जे बिछाओन पर पेटकुनियाँ देने पड़ल क्षुद्र प्राणी मामूली सम्पादक छल, शहंशाह अकबर नहि । बेकार ठोंठ फाड़ला सँ को लाभ ? बगलक कोठलीमे धीया-पूता सभ कोनो वस्तुक हेतु आपसमें छीना-झपटी करैत गर्द मचौने छल । ओहि गर्दम-गोलमे जुटल प्रत्येक स्वर केँ ओ नीक जकाँ चिन्हैत छलैक, फराक-फराक सँ ! ओहि चारू अबोध स्वरक ओ स्वयं निर्माता छल ! इच्छा भेलैक जे एक बेर अपनो जोर सँ

चिचिया उठय जाहि सँ ओहि स्वरक नीचाँमे अनागवलीक निर्भय बोधना आ धीया-पूताक चनचनी दबा-पिसा क’ चूर भ’ जाइ ! मुदा एना नहि क’ सकल । भनसा घरसँ बर्तन टनटनयबाक आ कड़छु-पिटबाक स्वर लगातार सुनीताक उपस्थितिक एलान क’ रहल छलैक । ओ नीक जकाँ अनुभव कयलक जे विश्रामक राति बीति चुकल छलैक आ काजक दिन शुरू भ’ रहल छलैक । आरामक लोभमे पड़ल रहब नितान्त मूर्खता हेतैक ।

चिचिआइत-चिचिआइत अनारकलीक ठोंठ बैसि गेलैक आ ओकर निर्भय प्रेमक समर्थक कोनो अलबेला ‘मोहब्बत जिन्दाबाद’क नारा लगाब’ लागल ! ओकरा तेहन क्रोध भेलैक जे उठि क’ कान ऐँठिक’ द्व-चारि थापड़ लगा दियैक । मुदा ओ ओहिना पेटकुनियाँ देने पड़ल रहल । एहि अकछल वातावरण सँ ओ समझौता क’ चुकल छल । समझौता करबाक हेतु विवश छल ! पत्नी छलैक, चारिटा सन्तान छलैक, मुदा ओ एकसर छल । चारू कात जिनगीक चहल-पहल आ गति छलैक, मुदा ओ एकसर छल । ओहि कोलाहलपूर्ण एकसरपन सँ ओ अगुताइ छल, कतहुँ भागि जयबाक मोन होइत छलैक । मुदा विवश छल पयरमे जिज्जिर बान्हल छलैक । समझौताक हेतु विवश छल । किएक तँ जीवनी एकटा विवशते छलैक । ओकर कारण कहब सम्भव नहि छलैक । किएक तँ विवशता विवशता थिक ! ओकर कारणो विवशते हेतैक ।

ओकर जिनगी ओही विवश समझौता पर टिकल छलैक । प्रत्येक वस्तुसँ समझौता, प्रत्येक लोक सँ समझौता, अपन मोन सँ समझौता । पड़ाय चाहैत छल, मुदा पड़ा नहि पबैत छल । किएक तँ तोड़’ नहि चाहैत छल । ओ चाहैत छल जे घरक चार पर सँ एकटा खढ़ जकाँ उड़ि जाय । मुदा ओकरा लगैत छलैक, जेना ओ घरक खढ़ नहि, बरेड़ी छल । भले ओकरा सम्पूर्ण घरक बोझक नीचाँ दबिये क’ कियैक नहि रहे’ पड़ैक । यह ओकर समझौता छलैक—विवश समझौता !

कौखन दिन भरिक श्रमसँ थाकल ठेहियायल बिछाओन पर मुदा जकाँ पड़ि रहैत अछि । तखन ओकरो मोन होइत छैक जे मनपसिन्द चीज सुनी ! कोनो नीक स्टेशन लगाकऽ पड़ि रहैत अछि आ आँखि मूनि लैत अछि । कोनो शास्त्रीय गीत गबैत-गबैत बंद गुलाम-अली खाँ मौगियाही स्वरमे “ओ बसन्ती पवन पागल” गाबऽ लगैत छथिन आ आँखि खोलि देखैत अछि जे सार महाशय मोस्तैदीक संग रेडियो

पर झुकल छथि । कौखन सितार बजबैत-बजवैत रविशंकर थाकि क' नकि आइत स्वरमे "रुक जा ओ जानेवाली रुक जा" गाब' लगैत छथि आ सुनीताक एहि कार्य पर ओ चाहियोक' किछु नहि बाजि पवैत अछि । आ कौखन बी० बी० सी० सँ शेख चिल्लीक पाठशालाक घटा सुनि बमकि क' गरज' चाहैत अछि तँ रेडियो लग जुटल चारु सन्तानक उल्लास देखि मुँहमे ताला लागि जाइत छैक । एहि स्थिति सँ समझौता-निर्वाहक ओ चेष्टा क' रहल अछि—प्राण-प्राण सँ ।

एकाएक ओकरा किछु जाड़ जकाँ लगलैक । राति मेघ जोरगर फसाद कयने छलैक आ बूँद लगातार बरिसल छलैक । तैयो पंखा राति भरि कोठलीमे नचैत रहलैक । रातुक भीजल हवा प्रायः बहिये रहल छलैक ! उठि क' स्विच आफ क' देलकै ।

लटकल पंखा घरघराइत ठाढ़ भ' गेलैक । पंखाक तीनू ब्लेड केँ ओ बड़ी कालधरि देखैत रहल । ओकरा लगलैक, जेना ओहो पंखे सन छल जकर तीनू ब्लेड केँ पेँच सँ जोड़िक' नचा देल गेल छलैक आ नचैत काल तेहन लगैत छलैक जेना एकटा पंखा नाचि रहल होइ, ब्लेडक पृथक् अस्तित्व जेना रहबे नहि करैक । मुदा वास्तविकता ई छैक जे पंखाक प्रत्येक ब्लेड एकसरूआ छल, नितान्त एकसरूआ, पेँच सँ जोड़ल । ओकर सह-अस्तित्व मात्र धोखा छलैक ।

पंखा निर्जीव अछि, ओकर ब्लेड निर्जीव छैक, ओ यांत्रिक जोड़पर राति भरि नाचि सकैत अछि ! मुदा राम त' जीवित मनुक्ख अछि एखन मुर्दा नहि भेल अछि ! ओ कोना यांत्रिक बल पर जिनगी भरि नचैत रहय ! ओकरो देखिक सभकेँ भ्रम होइत छैक जे ओ सभक संग जुटल अछि, फराक ओकर कोनो अस्तित्व नहि छैक । एकसरे वैहटा जनैत छल जे ओहो पंखा जकाँ पेँच पर जोड़ल सभक संग नाचि रहल छल—बिलकुल एकसरूआ । जिनगी गतिक नाम छैक आ गतिमे नचैत ब्लेडक पृथक् अस्तित्व देखब सम्भव नहि छैक । गति रुकले पर ओकर दूरी देखल जा सकैत छैक ।

केवाड़ीक भिड़कल पल्ला केँ ठेलि' सुनीता हुलकी देलकै आ रामकेँ बिछाओन पर बैसल देखि फेर सँ केवाड़ बन्द करैत चल गेलैक । राम ओकरा हुलकी द' क' जाइत देखलकै ओ बुझि गेलैक जे कनियेँ कालक बाद चाहक पियाली हाथमे

लेने ओ फेर ओतैक । पियाली राम केँ द' क' बड़ी काल धरि चुपचाप टाढ़ि रहतैक आ राम डरेँ एक्को बेर मूड़ी उठाक' नहि देखतैक जे कहीं भोरे-भोरे कोनो तगादा नहि क' बैसय—बच्चा सभक स्कूलक फीस, मकानक किराया, दूधबलाक हिसाब आ.....

कौखन ओकरा लगैत छैक, जेना सुनीता सम्पूर्ण रूपेँ ओकर भैयो क' ओकर नहि छैक । ओकर पत्नी छैक, ओकर चारु सन्तानक जननी छैक, ओकर गृहस्थी ओकरे बलपर टिकल छैक, मुदा तैयो ओ ओकर नहि छैक । ओकर इच्छा सुनीता कौखन नहि बुझैत छैक । मोनो राख' लेल ओकर आग्रह नहि मानैत छैक ! दिन-राति गृहस्थीक जंजाल मूड़ीपर लदने अपस्यांत भेल रहैत छैक । कौखन दू-चारि पलक हेतु लग आबि बैसिते छैक तँ ओकर आकृति पर जमल क्लान्ति आ व्यग्रता देखि राम केँ किछु कहि नहि होइत छैक ! कहियो कहि दैत छैक तँ बादमे अपन कमजोरी पर तामस होइत छैक ! ओकरा लगैत छैक, जेना ओकर आग्रह टारिक' सुनीता जानि-बुझिक' ओकर मोन तोड़ैत छैक । कहियो ओकरा बुझबाक चेष्टा नहि करैत छैक, काजक लाथेँ टारैत छैक । पहिने जखन धीया-पूता नहि भेल छलैक, सिनेमा आ स'खक कोनो आन प्रस्ताव केँ पैसाक तंगीक बहाने टारि दैत छलैक । आब जखन पैसाक कोनो तेहन तंगी नहि छैक, ओकर प्रस्ताव केँ धीया-पूताक बहाने टारि दैत छैक । वास्तविकता यैह छैक जे सुनीता ओकरा टारैत छैक । कम सँ कम राम यैह सोचैत छल ! ओकरा ई सिकाइत छलैक जे ओकरा क्यो नहि बुझैत छैक ! ओकर अपने दु सभसँ ऊपर छलैक ! अनका बारे मे ओकरा फुरसतिये नहि छलैक ।

ओकरा लगैत छैक, जेना ओ तेहन खेत अछि जाहिमे बीयाक धान खसाओल जाइत छैक आ फेर सभटा बीया उखाड़ि क' दोसर खेतमे रोपि देल जाइत छैक ! तहिना सभ ओकरा सँ किछु लेबहि चाहैत छैक, देबाक क्यो नहि सोचैत छैक ! ओकर कमाइ ओकर सम्बन्धक गैठ छैक जेना ।

ओकर स्वभाव तेहन भेल जाइत छैक जे धीया-पूताक स्नेहमे सेहो ओकरा स्वाथेक गंध भेट' लागल छलैक । मुँहमे मुँह सटा जखन कोनो सन्तान किछु मांगि बैसैत छलैक, ओकरा लगैत छलैक जेना घूस देल जा रहल होइ, माडक पूतिक हेतु । सभ सोचैत छलैक जे हाड़-मांसक इच्छा ओकरा नहि छैक । ओ मात्र एकटा माध्यम छल—आवश्यकताक पूतिक ! एक निर्जीव यंत्र जकाँ, यांत्रिक-विधिसँ बिना कोनों

प्रतिदानक अपेक्षा रखते सभके विछु देत रहेक, सभ वयो ओकरा सँ एतबे आस रखैत छलैक ।

माध्यम बनबा सँ ओकरा कहाँ आपत्ति छलैक । बापकेँ पैतृक भूमिसँ स्नेह छनि, डीह नहि छोड़ताह ! हुनकर आवश्यकता समयपर जुटा दैत छनि । भतीजा-भतीजीक भक्षण-पोषण आ भविष्यक चिन्ताक भार वैह सगहारैत अछि ! पत्नी आ चारु सन्तानक प्रत्येक सुख-सुविधाक ध्यान ओकरे रहैत छैक ! सर-सम्बन्धीक दावा बेर-कुबेर मानिये लैत छनि ! एतबो पर ओकरा ई अधिकार नहि छैक जे हुनको सभसँ किछु आस राखय ? कम सँ कम अपनत्व आ स्नेहक जोर तँ रहैक । मुदा ओकरा लगत छैक, जेना प्रत्येक सम्बन्धक न्यो ओकर दान पर टिकल छैक ! ओ देब' सँ असमर्थ भ' जायत, तँ प्रायः सम्बन्धो टूटि जयतैक ।

चाहक पियाली लेने सुनीता कोठली मे अयलैक । राम चुपचाप चाह पीब' लागल । सुनीता गुमसुम ठाढ़ि छलैक । किछु बाज' चाहियैक तेँ सुनीता बाजलि—आइ सबेरे उठि गेलहुँ ।

राम टेबुल पर राखल घड़ी दिस तकैत बाजल—सबेर कहाँ ? नौ बाजि गेल । दस बजे आफिसक लेल बिदा होयब ।

सुनीता मुसकिया उठलैक—रवि दिन कोन आफिस जयबाक अछि ?

राम आराम सँ पसरि गेल । सुनीता खाली पियाली उठा चल गेलैक ।

पड़ल-पड़ल राम सोच' लागल, किछुये काल बाद प्रीतम औतैक, नवीन पीढ़ीक कथाकार ! बड़ी काल धरि अपनैती देखौलाक बाद अन्तमे पाकिट सँ एकटा पुलिन्दा बाहर करैत कहतैक “ऐ बेर तेहन चीज आने ची जे देखिक' फड़कि उठब ।” आ पुलिन्दा जबरदस्ती हाथमे ठुसैत कहतैक—“तँ अगिला हफ्ताक आस करू ? आश्वासन पाबि कोनो आवश्यक कार्यक बहाना बना बिदा भ' जयतैक ! तखन जमुना औतैक, अपन नवीनतम उपन्यासक दूटा प्रति लेने किछु काल भूमिका बन्हालाक बाद मतलब पर ओतैक—“यदि अपने अपन पत्रमे एकर एकटा सुन्दर समालोचना छापि दी, तँ आभारी रहब ।” ग्र्याम सरकुलेशन डिपार्टमेंटमे नौकरीक सिफारिश स' क' ओतैक आ मोहन जाइत-जाइत किछु टाका पेंच मडतैक । आब' जायवलाक ई क्रम राति बितला पर टुटतैक आ दिन भरिक स्वार्थ पूर्ण गप्प सभ सँ थाकल—अकछल राम निश्चये शान्ति पाओत ! प्रत्येक रवि केँ यह क्रम दोहराओल जाइत छलैक आ राम चाहियो क' एकरा नहि तोड़ि पबैत छल !

ओकर दृष्टि अपन छोटसन शेल्फमे कौंचल किताब पर गेलैक ! लगलैक जेना ओहि शेल्फक प्रत्येक किताब पर ओकर जिनगीक अर्थ लिखल छैक । प्रत्येक किताब पहिल पृष्ठ पर लिखल छैक—समालोचनार्थ ! ओकरा लग बिना मतलब के क्यो नहि अबैत छैक ! ई किताब सभ ओकरा समर्पित नहि कयल गेल छलैक । काज लेबाक हेतु अपनत्व अड़मे ठकबाक प्रयास कयल गेल छलैक ।

राम उठि क' ठाढ़ भ' गेल ! खुट्टी पर टाडल कमीज पहिरैत सोचलक जे आइ स्वार्थपूर्ण वातावरणसँ दूर रहत । मैदानमे बोआयत, निरुद्देश्य घूमत, मुदा कोठलीक औनाइत वातावरण सँ दूर रहत ! पयरमे जुत्ता पहिरि बाहर आबि गेल ।

भोरे-भोरे बहराइत देखि सुनीता केँ आश्चर्य भेलैक ! रास्ता रोकि पुछलकै—भोरे-भोर कहाँ बिदा भेलहुँ ?

“बेकार पड़ल छलहुँ ! सोचलहुँ, दोकानसँ अहाँक समाने आनि दी ।” राम झूठ बाजल !

“सामान तँ पहिले हफ्ता आनि देने रही ! आइ तँ दस तारीख छैक ।

“है, हँ, मोन पड़ल । लाउ, झोरी दिअ' ! तरकारी हाट सँ ल' अनैत छी ।

—तरकारीवाली भोरे आयलि छलि । सभ चीज कीनि लेने छी ।”

कनेकाल राम चुपचाप ठाढ़ रहल ! कोनो बहाना नहि फुरलैक ! फेर बिना किछु वजने बिदा भ' गेल ।

“—कहाँ चललहुँ ?” सुनीता टोकलकै । “—बस, कने घूमि-फिरि अबैत छी ।”

“—पहिने अयनामे अपन चेहरा देखि लिय' । सूति क' उठलहुँ आ बाहर बिदा भ' गेलहुँ । एना कोनो आदमी घुमैत अछि ?

राम बमकि उठल—हँ, हँ जे मोन मे आबय कहि लिअ', हम आदमी नहि, बड़द छी, बोझा ऊघ' बला गदहा छी । बस ।

सुनीता नहि बूझि सकलि जे एकाएक ओ कोन अनर्गल बात बाजि गेल । दुःखसँ आँखि नोरा गेलैक, भीतर मे किछु उमड़' लगलैक । मुदा राम किछु नहि देखलकै । तामसे हनहनाइत बहरा गेल !

सड़क पर रातुक बरखाक असरि छलैक—कादो-कादो भेल ! कादो मे लेड़ाइत—पयजामाक मोहरीक बिना कोनो चिन्ता कयने आगू बढ़ैत गेल ! गुमती सभ दिन जकाँ बन्द छलैक ! बाट खुजबाक प्रतीक्षामे रिक्सा मोटर आ ताँगाक

लाइन लागल छलैक । ओकरदार रास्ता सँ निकलि राम लाइनक बीचमे आबि गेल । बहुत रास लाइन एक दोसरक समानान्तर बिछाओल छलैक — दूर-दूर धरि पसरल । ओकरा भेलैक, जेना ओहो लाइन जकाँ पसरल अछि, दूर धरि, प्रत्येक व्यक्तिक समानान्तर ! सम्बन्धक सुखायल काठक पटरी ठाम-ठाम एहि समानान्तर लाइन केँ जोड़ने छैक ! मुदा वास्तविकता यह छैक जे प्रत्येक लाइन समानान्तर पसरल अछि एक दोसर सँ सदा सर्वदाक लेल दूर ! बगल सँ देखनिहार केँ भ्रम होइत छैक जे एकैटा लाइन बिछाओल छैक ! लाइनक बीच मे ठाढ़ भ' ठीक-ठीक देखल जा सकैत छैक जे बहुत रास लाइन समानान्तर बिछाओल छैक । दूर पर ई लाइन सभ मिलैत सन देख' मे अबैत छैक मुदा ओत' पहुँचला पर इहो मिलन धोखा प्रमाणित भ' जाइत छैक ।

राम लाइन पार क' प्लेटफार्म पर आबि गेल ! लगले एकटा गाड़ी आयल छलैक । बेस चहल-पहल रहैक !

एकाएक ओकर मोनमे एकटा विचार अयलैक ! इच्छा भेलैक जे गाड़ी पर चढ़ि कतहु बिदा भ' जाइ ! सभ झंझट सँ चैन ! ई विचार तेहन बेगसँ अयलैक जे बिना किछु विचारने ओ एकटा डिब्बा दिस लपकल ।

तखने चारिटा हाथ ओकर रास्ता रोकि लेलकै ! बाधा पाबि किछु बाज' चाहलक, मुदा सामने पसरल चारू तरह्थी जेना ओकर मुँह पर बैसि गेलैक । फाटल मेहकैत पैंट आ हाफ शर्ट पहिरने ठाढ़ दू टा शिशुक हाथ ओकर सामने पसरल छलैक । ओहि दुनू शिशुक चेहरा ओ ध्यान सँ देखलकैक ।

“—नहि ।” ओकर मोनमे क्यो जोर सँ चिचिया उठलैक, जेना कोनो डेराओन चेहरा सामने आबि गेल होइ । दुनू शिशुक तरह्थी पर ओ एक-एकटा चौअन्नी राखि देलकै आ दुनू शिशुक आँखिमे क्षण भरिक हेतु जिनगीक हेरायल चमकी घुरैत देखलकै । दोसर-दोसर मुसाफिरक सामने हाथ पसारैत दुनू शिशुकें बड़ी काल धरि ओ देखैत रहलैक ।

ककरो हाथ सँ छूटि क' शीशाक गिलास तड़ द' प्लेटफार्म पर खसलैक । रामक पयर लग शीशाक छोट-छोट कुन्नी छिड़िया गेलैक आ ओकरा लगलैक, जेना पपनी तर बन्द तोरक चमकैत कुन्नी जमीन पर छिड़िया गेल होइ !

गाड़ी जखन प्लेटफार्म छोड़ि रहल छलैक, राम कदोआह सड़कपर भारी डेगे डेरा दिस घुरि रहल छल, बोलाहलपूर्ण एकसरपन मे !

मई १९६४

—बलान्त

दिनचर्या

कन्टीनक देवाल काँप' लगैत छैक, अपस्यात दीड़ैत बैरा सभ खसैत-खसैत बँचैत अछि, सधल हाथसँ कोर छूटि जाइत छैक आ अभ्यस्त आङुरसँ दबल चम्मच काँटा छिटकि क' टनटना उठैत छैक—एक बेर नहि, दू बेर नहि, अमेक बेर, बेर बेर ।

उत्तर दिस गंगाक पसरल विस्तार आ सुदूर दोसर कछेरमे पतियानीसँ ठाढ़ गाछक स्याह हरियरी झलकैत छैक आ बीच गंगा मे उगल दीयारि पर जकरा सभ “ग्राइलैण्ड आफ रोमान्स” कहैत छैक, बालुक रजत-कण चमचमा उठैत छैक जखन ओकरा सूर्यक स्वर्णिम किरणक स्पर्श भेटैत छैक । सुनैत छियैक जे साँझक झलफल मे अनेको छोट-छोट नाव पर युनिभरसिटीक कतेको युगल जोड़ी लहरिक हिलकोर पर झुलैत एहि दीयारि पर अबैत अछि आ एकर निर्जन उदासीकेँ अपन मधुर सम्भावण आ प्रसन्न क्रीड़ा सँ सजीव बना दैत अछि । इमानदारीक गप्प, हम अपमे कहियो ने देखलियैक अछि । मुदा एतेक लोक अनेरो किएक बजतैक ?

घंटी बजैत अछि । पीरियड शुरू होइत अछि आ खतम सेहो भ' जाइत अछि । मुदा हमरा लोकनि अपनमे मस्त, फिकर नाँट, परवा इल्ले ।

गप्प आ ठह्हाका । ठह्हाका आ गप्प । हमरा लोकनि मस्त हँसीक अभद्र ध्वनि आ उच्च अट्टहासक प्रतिक्रियासँ अनभिज्ञ नहि रहैत छी । मुदा एकटा बलघकेल उच्छ्वलता प्रदर्शित करबामे नहि जानि कोन आन्तरिक सुख भेटैत अछि । जेना बाजी लागल रहैत अछि, ककर ठह्हाका कतेक दूर जायत, ककर स्वर कतेक उच्च हैत । एकटा अतिरिक्त उत्साहक निष्प्रयोजन आ अभद्र मुदा सप्रयास अभिव्यक्ति ।

सभ दिन सबेरे नौ बजे एक टा पातर सन एक्सरसाइज कौपी ल' क' युनिभरसिटी दिस निदा होइत छी । मुदा अशोक राजपथ पर आबि डेग दरभंगा हाउसक बदला मेडिकल कालेजक कैटीन दिस बढ़ि जाइत अछि—अनायास ।

आ ओत' कैंटीनक कोनबला टेबुल पर चण्डाल चौखड़ी पहिनेसँ जूटल रहैत छैक। हमहुँ एकटा कुर्सी घीचि बेसि जाइत छी आ चारूकातसँ "हेलो राइटर, हेलो पोयट, हेलो डार्लिंग" क स्नेह सिंचित सम्बोधन छिड़िया जाइत अछि। अन्तरसँ फूटल सम्बोधन, कतहु कोनो कृत्रिमता वा अभिनय नहि। आ छूटल क्लास आ ट्यूटोरियलक ध्यान तखन अबैत अछि जखन कैंटीनक देवाल घड़ी दिस दृष्टि जाइत अछि—छोटका सुइ पाँच आ बड़का बारह पर। मात्र एतबे सन्तोष रहैत अछि जे यरबा सभ प्रोक्सी अवस्ते कयने हैत—रीयल फ्रेंड्स जिन्दाबाद।

चौखड़ीक सदस्य संख्या कहबाक हेतु हमरा अपनो फेरसँ गन' पड़ैत। कैंटीनक कोनबला टेबुल पर जकरा चारूकातसँ घेरिक' दस आदमी आसानीसँ बेसि सकैत अछि, साधारणतया दोसर लाइन लगाब' पड़ैत अछि। परमानेंट मेम्बर कहियो गैर हाजिर नहि होइत छथि मुदा कोखन मस्तीक हेतु नवका रंगरूट सभ सेहो जुटि जाइत छथि।

दोस्तक बीच पहिल नाम निश्चय राजेशक लेबैक—राजेश शर्मा, पिण्डश्याम रंग, पैघ-पैघ किछु बजैत सन आँखि आ सुन्दर रोबियल मोंछ। कद ६ फीट १ इंच। पछिला छः बरखमे हमरालोकनि कोना एतेक समीप आवि गेल छी, से कहब हमरा लेल असंभव। राजेश एकटा नामी डाक्टरक बेटा अछि, हमरा सँ कतेक गुना बेसी हैसियत बला। मुदा ओकरा सँ आ ओकरा परिवार सँ जे आत्मीयता आ स्नेह हमरा भेटल अछि, ओ कहियो नहि बिसरत। जखन कोनो आवश्यकता पड़ि गेल अछि, ओकरा सँ सहायता लेब' मे कनियो संकुचित नहि भेल छी—केहनो आवश्यकताक हेतु। दोसर नाम प्रमोदक अबैत छैक। ओ लम्बाइमे राजेशसँ बड़ छोट अछि मुदा रंग खूब साफ छैक। सुदर्शन अछि, धनिक बापक एकमात्र पुत्र। विचार मे पूर्ण प्रीति रहितो व्यवहार मे बाल-बुद्धि देखायब ओकरा पसिन्न छैक। पहिले भेंट मे ककरो प्रभावित करबाक क्षमता ओकरा मे छैक। रंजम लम्बाइ मे राजेशो सँ पैघ अछि। क्रिकेटक बेस शौकीन, सिनेमाक प्रेमी। (हमरा लोकनि कचकचब' लेल कोखन ओकरा "ग्रेगरी पेक" सेहो कहि दैत छियैक।) मोंछ रखबाक मे बड़ यत्नशील अछि आ ओकरा कारी आ चमकदार वनयबाक हेतु ओहि मे "फिक्सो" लगबैत अछि। दीपक एकटा रईस बापक रईस बेटा अछि जकर चेहरा मे मैदा आ सिन्दूरक मिश्रण छैक आ केश मे स्वर्णिम चमक।

अंग्रेजी आ हिन्दीक डायलग बड़ स्टाइल सँ बजैत अछि हरदम, सभक संग, पूर्ण नाटकीय ढंग सँ। हरीशक बाप आइ० ए० एस० छैक। ओकर प्रारम्भिक शिक्षा कनवेंट मे भेल छैक। नीक कपड़ा सीटिक' पहिरबाक शौकीन अछि आ गप्प-सप्प मे कन्वेन्टक वातावरणक असरि ओखन छैक। अशोक केँ हमरालोकनि "पटीदी" कहैत छिएत। दिन भरि मे पचास सिगरेट फूकि देब ओकरा लेल सहज बात छैक। राजू आ मुन्तू लम्बाइ सँ मारि खा गेल अछि, नहि तँ चुस्ती आ मस्ती मे ककरो सँ उनैस नहि। जीवन राजनीति सँ दिलवशी रखैत अछि आ घंटो कोनो राजनैतिक विषय पर वाद-विवाद करब ओकर होबी छैक।

फराक-फराक नाम जनयबा सँ नीक हैत जे एकट्ठे कहि दी जे नाम आ रूपरंगक अन्तरे भ' सकैत अछि मुदा भीतर सँ हमरालोकनि एक्के रंग छी। जिनगीक बड़ सहज भाव सँ लेत छियैक जेना कैंटीनमे बैसल-बैसल दिन मे पचीस का चाय पीबि लेब' वा दर्जनों सिगरेट फूकि देब। एहि सँ बेसी नहि।

हमरालोकनि जुटैत छी आ गप्प शुरू भ' जाइत अछि—प्रत्येक क्षेत्रक गप्प, प्रत्येक विषयक गप्प, लोकल, नेशनल आ इन्टरनेशनल। (नेहरू मृत्यु, लालबहादुर शास्त्रीक पद ग्रहण, अब्दुल्लाक स्थिति, जयप्रकाशक डिसएप्यारिटेन्स, कामराजक जादू आ चीन आ पाकिस्तानक खुरापात सँ ल' क' दिलीप कुमारक एक्टिंग, मीना कुमारीक संभावित डाइभोर्स, कृष्णनक निराशाजनक फार्म आ भारतीय टेनिसक भविष्य, केनिया भारतक हाकी संघर्ष, आस्ट्रेलियाक दुर्बल टेनिस टीम आ डेविस कप मैच, विश्व विजेता कैसियस क्लेक गर्वोक्ति धरि।) आ सभसँ अन्त मे बिहारक राजनीतिक उथल-पुथल। मिनिस्ट्रीरीयलिस्ट आ डिसिडेन्टक लेटेस्ट न्यूज। जातीयता आ गुलबन्दी, युनिभरसिटीक राजनीतिक स्थिति आ जातीयता—किछुओ नहि बचैत अछि। सभटा चाँगि जाइत छी।

बीच बीच मे मस्ती'क हेतु ककरो बोर करब शुरू क' दैत छियैक—टिपिकल अपन गोष्ठीक बोलीमे—की रे बाबू! हम तोहर बाप केँ लिखैत छियौ जे बेटा बरबाद हो गेलौ (लौंडिया सभ केँ फेर मे।)

—अरे बाबू, हमर बाप तोरा से बेसी चालाक छी। ओ तँ हमर चादी ठीक क' देलकौ!

—अरे कहाँ रे बाबू!

—हो एक गो ! इहें भगध महिला कालेज मे पढ़े हो ।

—अरे कर छे रे बाबू ! तर जेबे, बड़ा टय्यर हो !” आ फेर ठहाका ।
ठहाका आ मस्ती । मस्ती आ ठहाका । आर किछु नहि ।

मुदा ककरा सोचल छलैक जे एक दिन इ ठहाका मलिन पड़ि जयतैक आ मस्ती पर एकटा उदास दुश्चिन्ता जमि जयतैक ।

ओहि दिन कैन्टीन दिस जाइत रही तँ रस्ता मे प्रमोद भेटि गेल ।
उदास आ चिन्तित । संगे घाट पर घीचि ल’ गेल ।

—की बात छैक प्रमोद ! एना चिन्तित किएक छै ? हम पुछलियैक ।

प्रमोद बड़ उदास स्वरमे बाजल—की कहियोक भाइ ! एहिबेर बिना बेइज्जत भेने उपाय नाहि अछि । इन्टरमीडियट मे सभकेँ आग रहैक जे एनाटोमीमे आनर्स आनत । मुदा हम सभकेँ निराश कयलियैक । फस्ट एम. बी. बी. एस.मे तँ पैथोलोजीमे गुडकैत-गुडकैत बचलहुँ । आब फाइनल आबि रहल अछि ! पासो करब कि नहि, तकरो चिन्ता भ’ गेल अछि । कहीं रिजल्ट खराब भेल तँ लोककेँ कोना मुँह देखबैक ? की कहियोक भाइ, तेहन ने ग्रुपमे पड़ि गेल छी...।

प्रमोद उदास स्वरमे बजने जा रहल छल आ हम गंगाक पसरल विस्तारमे भुतिआयल सोचैत रही जे आइसँ छौ वर्ष पूर्व हम डाक्टर बनबाक सपना देखैत पटना आयल रही । डाक्टरीक स्वप्न पाछाँ छूटि गेल आ रहि गेल अछि खाली डाक्टरी पढ़बला किछु पुरना दोस्त । आइ. एस. सी.मे साइन्स छोड़ि देने रही, तहिया लाजे माथ कोना झुकि गेल रह्य ? आ एम. एक इस्तहान फेर माथपर अछि । पढ़ाइक यह हाल । माथ ऊँच रहत तँ कोना ?

प्रमोद ओहि दिन बड़ व्यस्त बुझाइत रह्य । घंटी बजैत देरी क्लासमे दोड़ल । हम फेर कैन्टीन दिस बिदा भेलहुँ । कैन्टीनमे हमरा लोकनिक टेबुल आइ खाली छल । खाली रंजव एकसरे बैसल छल—शान्त आ उदास ।

—आइ ई सनाटा केहन ? हम बेसैत पुछलियैक ।

—बैस, सभ अबिते हेतौक । सभक लेक्चर घटि रहल छैक । सेन्ट-अप हैब मोस्किल । किरानीक फेरामे गेल अछि सभ ।

—तो नहि गेलें ? तोहर लेक्चर कम्प्लोट छीक ?

—लेक्चर कम्प्लिट भेलासँ की हैत ? परीक्षामे लिखबैक की ? इन्टरमीडिएट आ फस्ट एम. बी. बी. एस.मे सप्लीमेन्टरीसँ घुसकलहुँ । एहि बेर साल बूढ़ि जायत तेहने लगैत अछि । पढ़ाइ, खेल सभ चौपट । स्कूलमे क्रिकेट नीक खेलाइत रही । मुदा एहिठाम प्रैक्टिसक हेतु फुरसतिये नहि । की करू, तेहब ने ग्रुपमे पड़ि गेल छी...।

एक क्षणक हेतु हमरा भेल जे रंजन हमरापर आरोप लगा रहल अछि । हमहीं अपन कालेज छोड़ि अड्डा मारैत छियैक, क्लास छोड़बैत छियैक । मुदा ओकर चेहरापर कोनो तेहन भाव नहि छलैक । आश्वस्त भेलहुँ ।

साँझवन राजेशक ड्रइंगरूममे बैसल-बैसल दिनभरिक घटनापर विचार करैत रहलहुँ—काल्हिसँ दिनचर्या बदलबाक, पढ़ाइक लेल सचेष्ट होबाक । मोने-मोने नीक जकाँ बुझैत जे दिनचर्या नहि बदलत, पढ़ाइक बँह हाल रहतैक ।

बीचमे टेलीफोनक घंटी टनटना उठलैक । राजेश लपकल आ हमरा ठोरपर मुस्की आबि गेल । ओहि टेलीफोनक इतिहास हमरा लोकनिक दोस्ती जकाँ छी साल पुरान छैक आ हमर मुस्कीक इतिहास ओकरे संग जुटल अछि । राजेश फुस-फुसाक’ उल्लासपूर्वक गप्प करैत अछि । अपन अभ्यासवश दोसर पार्टीकेँ हमर उपस्थितिक ज्ञान करा हमरापर उपकारक बोझ लदैत अछि । हम कोनो अखवार उठा लैत छौ । अनेरो पढ़लो समाचारकेँ फेर पढ़ैत छी—बड़ी काल घरि ।

टेलीफोन राखि राजेश पुछलक—बेसी बोर तँ नहि भेलें ?

—नहि, नहि, बोर कियैक हैब । हमरा तँ आनन्द आयल । बहुत दिन पहिने एकटा कथा पढ़ने रही “डेमोक्रेटिक लव”, आब हमरो एकटा कथा लिख’ पड़त—“टेलीफोनिक लव ।”

राजेश भरिमोन हँसल आ हम ओकर हँसैत आकृतिमे एकटा दोसर आकर्षक आकृतिक हँसी ताक’ लगलहुँ ।

राति बितलापर होटलसँ भोजन क’ राजेन्द्र नगर फ्लैट दिस बिदा होइत छी । फ्रैटक सीढ़ीपर अन्हार छल । टोइया-टापर दैत अपन नम्बरक सामने ऊपरका तल्लापर पहुँचि दरवज्जा खटखाबा’ लगलहुँ । किछु काल बाद मकान-मालिक ओंथायल स्वरे’ किछु बड़बड़ाइत दरवज्जा खोललनि । हम झट द’ अपन कोठलीमे पैसि गेलहुँ, एहि डरे जे कहीं कह’ लागथि ने जे आइ कियैक देरी भ’ गेल ।

अन्हारेमे जूता खोलि बिछीनपर पड़ि रहलहुँ। दिन भरिक घटना अन्हारेमे जगजियार होइत सामने पसरि गेल।

गोठिमे असन्तोष पसरि गेल अछि। एक दोसरपर लौछना। अपराधबोध सँ सभ ग्रस्त। पाठ्यक्रम सम्बन्धी अज्ञानता आ परिणामक कल्पना क' सभ डरा जाइत अछि। दोस्तीमे, बरखी पुरान दोस्तीमे दरार पड़ि रहल अछि।

मुदा ई भय निरर्थक थिक? आबो सम्हारलासँ सभटा ठीक भ जायत। अभ्यास छूटि गेलासँ आगूमे पसरल सभटा पाठ अनचीन्हार लगैत अछि। हमरा लोकनिमे अविश्वास जन्म ल' रहल अछि। एकरा मार' पड़त। कमजोरी हमरा लोकनिक चिन्तनक दिशामे अछि। मस्ती आ उल्लासक संग जिनगी बितबैत कर्तव्यक पालन नहि भ सकैत छैक? बरखी अपन कर्तव्यमे पड़्यबाक कारणेँ एकटा अपराध-बोध जकाँ जकड़ि लेने अछि। एकरा झटक क' दूर फेक' पड़न।

सोचैत-सोचैत एकटा वृद्ध चेहरा सामने आबि गेल परास्त, निरन्तर संघर्षरत, झोखड़ल। ओकर संग एकटा नारी चेहरा— दिन राति छटैत, रूग्ण मुदा कार्यरत। चारूकात किछु अबोध चेहरा, छोट-छोट, सभ आशा भरल दृष्टिसँ हमरे दिस तर्कैत। चारूकात हँसैत लोक ठहाका दैत, अपमान करैत। मुदा सभ किछु सहैत हुनका लोकनिक दृष्टिमे एकटा आस, एकटा विश्वास।

हमरा लागल जेना काँटिक बिछीनपर सूतल होइ। छटपटा उठलहुँ। ओही छटपटी मे नहि जानि कवन आँखि झपि गेल।

पुब रेया खिड़कीसँ सूर्यक पहिल किरण आबि जगैलक। प्रात भ' गेल। नव दिन शुरू भेल।

नहि, नव नहि। पुरने दिन फेर घुरि आयल अछि।

जुलाई १९६४

असौध

एना कहियो नहि भेल रहैक—आश्चर्य !

भोरे सँ ओहि बाटे क्यो नहि गेलैक जाहि बाटे भोर सँ निसबद्ध राति धरि आब' जाय बलाक लाइन लागल रहैत छलैक ! बिना ओहि बाटे गेने ने क्यो गाम सँ बाहर जा सकैत छल, ने भीनर आबि सकैत छल ! मुदा ओहि दिन जेना सभ घर सँ नहि बहरयबाक सप्पत खयने बैसल छल। उदास निस्तब्धतामे ठाम-ठाम सँ मुड़ल ओ बाट तेहन लागि रहल छलैक जेना कोनो वियोगिनी ककरो तलाशमे अस्थायीत बौआ रहल हो।

एना पहिने त' कहियो नहि भेल रहैक।

जनवरीक धोअल-पोछल आकाश सामने उधरल पड़ल छलैक जाहि पर बरसातिक कदोआह मेघक कतहु नामो-निशान धरि नहि छलैक ! कदोआह बौआइत मेघ केँ जेना क्यो लठिया क' भगा देने रहैक ! मायक हाथे धोअल-पोछल चिलका जकाँ स्वच्छ आकाश आ जाड़क मोलायम सोनपंखी सूर्य किरण ! मुदा सभ किछु सहमल, उदास-उदास ! कोनो भयावह शांति। वातावरणक ताजगी केँ उदासीक झपसी झपने छलैक जेना ! आश्चर्य !

ओना गामक पुरना रौनक नहि रहलैक आब ! लोक सभ नोकरीहारा भ' गेलैक ! छुट्टीमे कहियो कोनो साल सभकेँ जुटला सँ गामक हेरायल रौनक घुरि अबैत छैक। नहि तँ सौंसे गाम खाली आ सुन्न ! गाममे खाली वृद्ध, स्त्रीगण आ धीया-पुताक अतिरिक्त वैह लोकनि रहैत छथि जिनकर नोकरी गामक पंचायत, खादी भण्डार आ स्कूलक छनि वा जे लोकनि अशिक्षित रहबाक कारणेँ गाममे अपन पुस्तैनी जमीन जोति-कोड़ि गुजर करैत छथि। गामक पुरना बाबति आब नहि रहलैक जहिया सैकड़ो पढ़ल-लिखल बेकार घरक अन्नक बिध्वंस करैत दिन राति ताश शतरंजक अड्डा मारैत छलाह, नोकरी करब अपन शानक खिलाफ बुझैत छलाह ! वैह शानबला सभ गनल-गुथल नोटक हेतु फाइलक गर्दी मारैत छथि ! समय-समयक बात !

वीरेन बाबू केँ लागि रहल छलनि जेना गामक खालीपन बढ़ि गेल होइ, जेना सौंसे गाम समशानक स्तब्धता ओढ़ि लेने होअय ! भोर सँ एक्कोटा चेहरा नहि अभरल छलनि ! नहि जानि कहाँ मरि गेल सभ !

जेना-जेना समय बीति रहल छलैक, वीरेन बाबूक छटपटी सेहो बढ़ि रहल छलनि ! बाहर दलानमे चटकुची बिछा जाइक रौदमे बैसल छलाह । सभ दिना अभ्यास छलनि ! पातर सन छड़ी देवाल सँ लागल ठाढ़ छलनि आ अपने बिना खोलक मैल गेरूआ पर ओड़ल बैसल छलाह । चेहराक हड्डी पातर चमड़ाक अवरोध हटा हुलकी देब' चाहैत छलनि आ हफ्तोक बिन बनाओल दाढ़ी ओकरा झपबाँक असफल चेष्टाभे लागल छल । नोसिदानी एक कात ओंघरायल आ नाकक दुनू पूड़ामे नोसिक तह जमल ! चारू कात किताब सभ छिड़िआयल-बालजकक ड्रौल स्टोरीज बाल्मीकि रामायण, महाभारतक शांतिपर्व आ गीता जाहि पर राखल रुद्राक्ष फेर सँ गरामे झुलबाक हेतु ललकि रहल छलनि ! वीरेन बाबू एहि सभ वस्तुक अस्तित्व सँ असम्पृक्त व्यग्रतापूर्वक बाट निहारि रहल छलाह—अग्रीब छटपटीक स्थितिमे ।

दलानक ठीक सामने बड़का पोखरी छलैक जाहि मे हरियर सेंवार आ करमीक पूर्ण जनघट छलैक । पोखरि मे पानियो छलैक वा नहि से सहजे बुझब मोस्किल ! चारू कात सेवार आ करमीक हरियरी पसरल छलैक जेना ओ कोनो पोखरि नहि, निचला जमीनक चौखुट टुकड़ा छलैक जाहि पर हरियर सेंवार आ करमी चतरल छलैक । मच्छड़ मौका देखि अपन डेरा खसा लेने छल आ सड़ैत सेंवारक दुर्गन्धि चारूकात पसर' लागल छलैक ! गामक उत्साही नवयुवक सभ कतेको बेर ओहि पोखरिक जीर्णोद्धारक प्रयास कयने छल ! मुदा गामक अनुभवी जाठि सभ नव वयसक अज्ञानता केँ सफल नहि होब' देने छलैक ! हुनका लोकनिक केँ विश्वास छलनि जे इलाकाक बी० डी० ओ० ओहि पोखरिक जीर्णोद्धारक हेतु अवस्से सरकारी अनुदान दैतैक ! व्यर्थ श्रमदान कियैक कयल जाय ?

बेचारा पोखरि मुदा सरकारी अनुदानक प्रतीक्षा करैत-करैत सेंवार करमीक तरमे ओना क' दम तोड़ि रहल छल आ सड़ल सेंवारक दुर्गन्ध चारूकात पसरि क' अनुदानक काज सहज बना रहल छलैक ! वीरेन बाबू कतेको बेर सोचने छलाह जे दलानक बैसकी छोड़ि देताह, बड़ गन्ध अबैत छलैक ! मुदा अभ्यासवश ओ खास क' जाइमे रौदक लोभमे आबि बैसैत छलाह । रहले ने जाइ छलनि !

मुदा ओहि दिन एना लागि रहल छलनि जेना दलान मे नहि उजाड़मे बैसल छलाह जन' चारूकात भयावह स्तब्धता व्याप्त छलैक ! पोखरिक चारू भीड़ पर सँ रस्ता अबैत छलैक आ पुबरिया दक्षिणवरिया कोन पर सभटा रस्ता मिलिक' एकटा मुख्य बाटमे वदलि जाइत छलैक आ वैंह बाट गाम सँ बाहर निकलि हाट दिस जाइत छलैक ! हरदम-बाट पर चुट्टी जकाँ लोकक पतियानी लागल रहैत छलैक ! मुदा ओहि दिन क्यो नहि अभरलनि ! आश्चर्य !

वीरेन बाबूक दृष्टि थाकि क' किछु कालक हेतु बगलक दलानमे चल गेलनि । दलान मुन्न छलैक ! उदास ! ओही मुन्न दलानमे कहियो गामक एकटा व्यक्तित्व बैसैत छलैक । महेश बाबू, वीरेन बाबूक बाल-सखा । लंगोटिया दोस्ती छलनि, जान दैत छलाह एक-दोसर पर ! महेश बाबू डील-डीलमे वीरेन बाबू सँ दस गुना बेसी छलाह आ हरदम हँसैत-हँसवैत रहैत छलाह ! वीरेन बाबू खौलाब' लेल कहथिन—घोम याने मोटकू ! आ महेश बाबू जबाब देथिन—अचोरहरण माने जकरा चोरयबाक मोन चोरो केँ नहि होइ ! महेश बाबूक अभावमे वीरेन बाबूक एकाकी जीवनक एकमात्र आत्मीय सम्पर्क सेहो टूटि गेलनि ।

वीरेन बाबूक आँखि नोरा गेलनि । भरल आँखिसँ मुन्न दलान आ दलानक सामने पसरल बड़का मैदानकेँ देखैत रहलाह ! ओही मैदानमे भालसरीक विशाल गाछ छलैक जाहिपर नहि जानि कत' कत' सँ रंग-विरंगक चिड़ै आबि बास करैत छल । गामक लोक भालसरीक फूलक माला गँथैत छल आ बच्चा सभ भालसरीक फलक खसबाक आस मे दिन भरि ओकर छायामे बौआइत रहैत छल । ततेक विशाल गाछ छलैक जे ओकर मथनी दू-चारि कोस फराके सँ झलकैत छलैक । गामक कोनो व्यक्ति जखन कोनो नवान्तुक पाहुनक संग स्टेशनपर उतरैत छलाह, तँ ओतहि सँ भालसरी गाछक मथनी देखा कहैत छलथिन—वैंह देखू हमर गाम । आ पाहुन दू माइलक रस्ता कोना पयरे नांघि जाइत छलाह से हुनका बुझाइते नहि छलनि ! आ गाममे प्रवेश करैत देरी हुनका गामक दू टा महान व्यक्तित्व सँ साक्षात्कार होइत छलनि—महेश बाबूक भव्य व्यक्तित्व आ भालसरीक विशाल गाछ ! जे एकबेर देखथि बेर-बेर देखबाक लोभ भ' जानि !

गामक ई दुनू महान व्यक्तित्व एक्के संग द्विदा भ' गेलैक ! पट्टीदार सभक ध्यान बरखोसँ मोसबरियामे पड़ल मैदान पर गेलनि आ झट ओकरा टुकड़ी-टुकड़ी क' आपस मे बाँटि लेलनि । गाछ बेचि लेलनि आ टाका बाँटि लेलनि ! चारि भास धरि व्यापारी ओहि विशाल गाछक जड़ि, धड़ आ डारि-पात केँ लादिक' ल' जाइत

रहल ! ओही दर्ष महेश बाबू सेहो दिवा भ' रेलाह ! राम श्रीहीन भ' गेल ।
आब रंग-बिरंगक चिड़ै नहि अवैत छलैक, घर-घर सँ भालसरीक फूलक सुगन्धि
नहि पसरैत छलैक, धीया-पुता सभ भरि दिन भालसरीक फूलक लोभमे नहि
बौआइत छल, एकटा मस्त हँसीक ध्वनि सौंसे गाममे पसरल नहि रहैत छलैक ।
भालसरी तर बौआइत प्रत्येक धीया-पुताक गाल ऐँठि आब क्यो नहि कहैत छलै—
आ, नानीक सगाइ देखबियौक ।”

वीरेन बाबू जखन ओहि दलान दिस देखैत छलाह, बाल-संगीक स्मृति कचोटैत
छलनि आ लगैत छलनि जेना ओहि सुन्न दलान मे बैसल क्यो खोजा रहल छनि—
अचोहरण ।

आ अपन अस्तित्वक यथार्थता आ निस्संगताक इतिहास आर स्पष्ट भ' क'
टीसैत छलनि ! निताइ भाइ कहैत छलथिन—बुझलह वीरेन ! हमरा लोकनि
भेलहुँ कोल्हु मे पेड़ल कुसियार, रस पाछू खसल, अपने सिट्ठी जकाँ आगू भागल
जा रहल छी ! बस आब सुखायल सिट्ठीमे चिनगी पड़बाक विलम्ब अछि । सभटा
समाप्त भ' जायत ।” निताइ भाइ सेहो नहि रहलाह मुदा हुनकर स्मृति
वीरेन बाबू केँ सदिखन होइत छलनि ।

वीरेन बाबू दलान सँ हटा अपन दृष्टि फेर बाटपर लगा देलनि ! कोनो
अज्ञात रिक्ताता भीतर-बाहर भरि गेल रहनि ! एना सतत होइत छलनि ! भीतरक
शून्यता केँ बाहरक चीजसँ भर' चाहैत छलाह, मुदा शून्यता आर बढ़ि जाइत छलनि !
बाहर भीतर सभ खाली !

नहि जानि कियैक ओहि दिन कक्को एक्को बेर नहि बहरायल छलथिन ।
कोनो आर दिन रहितनि तँ हुनकर खड़ाक खटर-पटर कतेको बेर सुनवा मे
आयल रहितनि । आ आङनमे बी भ' गेल छलैक । कात्ति केहन चहल-पहल रहैक
भरि घरमे धूमस-मचल छलैक ! वीरेन बाबूक जेठका भातिज शहर सँ गाम आयल
छलनि ! ओकरा घेरि धीयापुता सभ गर्द मचौने छल ! घरमे उल्लास पसरल
छलैक !

ओही गर्दम गोलमे वीरेन बाबूक आँखि खुजि गेलनि । दू दिन सँ मोन बड़
अस्वस्थ छलनि ! भरि राति नीन्न नहि भेल छलनि । भोरे आबि क' कनेक आँखि
झपल छलनि । दू-दिन सँ देहक पोर-पोरमे दर्द छलनि । लगैत छलनि जेना बोखार

होनि, थर्मामीटरमे सन्तानवें सँ ऊपर उठिते नहि दलनि । खाली फितरे-भीतर
बोखारक ज्वाला हरदम बुझाइत छलनि ! ततेक कमजोरी जे बिछौनो सँ उठबाक
मोन नहि होइत छलनि, मुदा भोरे-भोर हल्ला-गुल्ला सुनि उठिक' बाहर आबि गेल
छलाह ! भातिज प्रणाम कयने छलनि आ वीरेन बाबू फुसफुसाक' आशीर्वाद देने
छलथिन । प्रणाम क' भातिज अपन चीज-वस्तु सरिआब' लागल छल आ वीरेन बाबू
झुपचाप ठाढ़ छलाह । राम नव विवाह बरने छल, बहुत रास चीज अनने छल ।
प्रणाम करबाक बाद तेना व्यस्त भऽ गेल जे ओकरा बिसरि गेलैक जे लग मे काका
ठाढ़ छलथिन ।

“—कोनो छट्टी छैक ? वीरेन बाबू तेना पुछलथिन जेना गप्पक क्रम जोड़'
चाहैत होथि ।

“जी नहि, ओहिना दू-चारि दिन लेल चल अयलहुँ ।” रामक जबाब छलैक
आ ओ पूर्ववत् अपन वस्तु निकालि सैति रहल छल । गप्पक क्रम फेर छुटि गेलैक ।
वीरेन बाबू सोचैत छलाह जे आब की पुछियैक ?

“—कोनो मैगजीन अनलह अछि ? वीरेन बाबू फेर पुछलथिन ।

—हँ-हँ बहुत रास अछि । “राम कहलकनि आ बहुत रास पत्र-पत्रिका
सूटकेस सँ बहार क' देलकनि । पत्रिका लैत काल वीरेन बाबू अपन हाथ रामक
हाथ सँ छुआ देलथिन । मुदा ओ ध्यान नहि देलकनि ।

“—हमर हाथ गरम नहि अछि” । वीरेन बाबू असली बात पर अयलाह

—जी नहि तँ, मोन खराब अछि की ? पुछबा लेल राम पूछि लेलकनि मुदा
ओ अपन काज मे पूर्ववत् लागल छल । ओकर प्रश्न महज औपचारिक छलैक ।

मुदा एतबे सँ वीरेन बाबू उत्साहित भ' उठलाह—दू दिन सँ बड़ विकल
छी । कमजोरी सँ उठलो नहि जा रहल अछि ।

—टेम्परेचर लेने रही ?

—टेम्परेचर ल' क' की हैत ? ओत' सन्तानवें सँ ऊपर घुसकिते नहि
अछि । मुदा नाड़ी मे वेग अछि ! लैह, देखि लैह ।” वीरेन बाबू अपन हाथ बढ़ा
देलथिन । मुदा राम अपन काज मे लागल रहल । माथ झुकौनहि, मात्र एतबे बाजल
ककरो पठा क' ओहि पार सँ दवाई मडवा लिय' ।” रामक स्वर मे एहन किछु
नहि छलैक जाहिसँ आत्मीयतापूर्ण आशंकाक आभास भेटनि ।

राम गाम में घुम' निकलि गेल आ वीरेन बाबू ओतहि ठाढ़ रहि गेलाह । डाक्टर मडा क' की हैतनि ? पुरान जीर्ण रोगी छलाह, डाक्टर रोगक तहमे जाइते नहि छलनि, बाहरी सिमटम देखैत छलनि, भितरिया तकलीफ क्यो नहि बुझैत छलनि ! पेरेन्ट दवाई आ टेबलेट ! पुराना जमानाक वैद्यक बाते दोसर छलैक । नाड़ी हाथमे अयलैक कि रोगीक सभ हाल बूझि गेलैक । पछिला बेर छः मास दरभंगोक नामी डाक्टर सँ इलाज करबौलनि मुदा ओकरो वैह रटल रटाओल बात—कोई दूबुल नहीं हैं ! टेम्परेचर नहीं हैं, महज कमजोरी है ! टानिक खाइये ।” आब एहि नवका जमानाक डाक्टर सभकेँ के बुझाबय जे खाली बोखारे रोग केँ लक्षण नहि होइत छैक ? टौनिके खयला सँ कमजोरी नहि दूर भ' जाइत छैक ! रोगक जड़ि हटब' पड़ैत छैक, तखन दवाई असरि करैत छैक । मुदा क्यो नहि सुनलकनि । घुरि अयलाह ! पछिला तीस बरखमे भरिसक्के एहन कोनो साल भेल हैतनि जाहिमे बाहर जा क' नीक डाक्टर सँ इलाज नहि करौने हेताह । मुदा डाक्टर सभ हुनका नीरोग प्रमाणित करबाक ठीका लेने छनि जेना ! रोगकेँ मनक भ्रम कहैत छलनि । हृद भ' गेल ।

ताहूँसँ दुखक बात ई छलनि जे अपन परिवारोक लोक डाक्टरक संग देब' लागल छलनि । बीमारीकेँ मोनक भ्रम बुझैत छलनि ! जाधरि परिवारक एहि भ्रमक इलाज नहि हेतैक, वीरेन बाबूक इलाज के करतनि ?

वीरेन बाबू ई सभ सोचैत बड़ी काल धरि ठाढ़ रहलाह ! फेर भारी डेगे बाहर दलानमे अयलाह ! कका पहिने सँ बैसल अखबार उनटि रहल छलथिन ! ई अखबार अवस्से तीन दिन पुरान हेतैक ! ककाक अभ्यासे सँह छनि । नव पुरान जे भेटि जाइत छनि एहिपारसँ ओहि पार धाड़िग जाइत छथि समय काटबाक एकटा बहाना ।

‘केहन मन छह वीरेन ? कका बड़ सिनेह सँ पुछलथिन । स्वरक आत्मीयता वीरेन बाबू केँ छुलकनि । एकदम छोट बच्चा जकाँ बाजि उठलाह—मोन ठीक नै अछि कका ! भरि राति नीत्र नहि भेल, बड़ विकल छलहुँ !

—‘तेँ त' कहैत छिय' जे एहि रोगक चिन्ता छोड़ि दैह । दुखित ओ पड़य जकरा क्यो देखनिहार होइ, सेवा कयनिहार होइ । तोहर काकियो केँ बेर-बेर सँह कहैत छियनि जे दुखित पड़ैत अछि भाग्यशाली लोक जकर बीमारीमे अपस्यांत दौड़निहार अनेको लोक रहैत छैक । अहाँ केँ के देखत ? पुतहु बाहर रहैत छथि । हम भेलहुँ बूढ़ लोथ । असगरि छी अहाँ ? के देखत अहाँकेँ ? तखन बीमारीक मोह कियैक ?

हम त' तोरो कहैत छियह वीरेन, एहि रोगक मोह छोड़ि दैह । जीवाक एतेक मोह कियैक ! एकटा बेटा छह—नीक कमाइत खाइत छह । बेटी सासुर गेलह । पोता-पोती सेहो देखलह । ‘कनिया’ अपन चिन्ता सँ पहिने मुक्त क' गेल छथुन । आब के रोकैत छह तोरा । आब जीवाक मोह होइते किएक छह ?

कका एके साँस मे बाजि गेलथिन । बजैत-वजैत उत्तेजित भ' उठलथिन ! मुदा वीरेन बाबू जनैत छलाह जे ओहि उत्तेजना मे क्रोध नहि, विवशता छलैक, अपन अनुभवक अभिव्यक्ति छलैक । दुनू गोटेकेँ एके रंगक उपेक्षा आ निस्संगता घेरने छलनि । वीरेन बाबू बजलाह—मोह नहि कका, जीवाक कनियो मोह नहि ! गलि-गलि क', साँड़-साँड़ क' मरबाक भय ! प्राग एके बेर कहाँ छुटैत अछि ? ई पीड़ा, ई रोग—बस एकरे भय ! मोह कथुक नहि...किन्नहु नहि ।

वीरेन बाबू फेर उठि क' आँगन मे आबि गेलाह ! छोट भाइ अपन धीया-पुताक संग बैसल रहथिन । वीरेन बाबू लग जा बैसि गेलाह । अपन हाथ आगू बढ़बैत कहलथिन—कनेक नाड़ी देखह त' नरेन, किछु वेग बुझाइत अछि ।

नरेन बाबू नाड़ी देखबैत बजलाह—नहि त' “नाड़ी त' खूब पुष्ट अछि ।” आ फेर वच्चा सभक संग खेलाय लगलाह । वीरेन बाबू उठि क' बेटाक कोठली दिस अयलाह ! बेटा गामेक हाइ स्कूल मे मास्टरी करैत छथिन । स्कूलक समय भ' गेल रहैक, जयबाक हेतु अपन साइकिल झाड़ि-पोछि रहल छलाह ! वीरेन बाबू कहलथिन—छुट्टीक बाद कने डाक्टर केँ बजौने अबियहक ।

बेटा कोनो जबाब नहि देलथिन ! किछु काल ठाढ़ रहि वीरेन बाबू आँगनसँ बहरा गेलाह !

रस्ता पर गामक बूढ़ किसान गणेश जा रहल छल । वीरेन बाबू ओकरे रोकि क' नाड़ी देख' कहलथिन । नाड़ी टोहियबैत ओ बाजल—कनेक वेग त' बुझाइत अछि ।

वीरेन बाबू प्रसन्न भ' उठलाह । बस, यैह सभ हिनकर रोग बुझैत छनि । नाड़ी देखब आसान बात छैक ? बड़का-बड़का चूकि जाइत छथि । तेँ वीरेन बाबू गणेश आ ओकर सन-सन आर अनपढ़ मुदा गुणी किसान मजदूरक बड़ सम्मान करैत छलथिन, वैद्यराज कहि बजबैत छलथिन । जखन जे भेटि जानि ओकर हाथ मे अपन नाड़ी थम्हा दैत छलथिन । ओहो सभ मोनक बात सुना दैत छलनि ।

गणेशक बात से बीरेन बाबू आश्वस्त भेलाह । अपन नहि बुझलकनि, डाक्टर नहि चिन्हलकनि मुदा क्यो त' चिन्हलकनि हुनकर रोग ।

मुदा ओहि राति नीछ रहि भेलनि । बेर-बेर लगलनि जेना सिरमा मे क्यो ठाढ़ होनि । बीरेन बाबू चिन्हलकनि । भरिसक तीस वर्ष भ' गेलैक । निस्संगताक इतिहास भरिसक ताबू से पुरान छलनि । लगलनि जेना सिरमामे ठाढ़ ओ छाया किछु बाजि रहल छलनि, फुसफुस रहल छलनि । कनबो कयलनि । बड़ी काल धरि सिरमा मे ठाढ़ कबैत रहलनि । भरिसक सभटा भ्रमे छलनि ! रोमी मनक भ्रम...के ज्ञान ?

आ सबेरे से बटकुषी स्थान पर रौद दिस बिछा बीरेन बाबू अपन बंधाराज सभक प्रतीक्षा क' रहल छलाह । मुदा पता नहि, आइ कहाँ मरि गेल छलनि सभ ? आर त' आर, आइ कक्को नहि बहरेलथिन एक्को बेर । आश्चर्य । भयावह सन सुभ बाट पर दृष्टि अनेरो बीआ रहल छलनि । रौद माथ पर आबि गेल छलैक, तैयो रौद नीक लागि रहल छलनि—जाड़क कोमल रौद ।

थाकि क' बीरेन बाबू आँखि मूनि लेलनि । सोच' लगलाह—“नहि आयल क्यो त' नहि आबह । ताहि से हमरा की ? सत्ते कहैत छैक, बेर पर तुच्छ चीज सेहो अनमोल भ' जाइत छैक । आब नहि करबैक ककरो प्रतीक्षा, नहि कहबैक अपन रोगी मोनक हाल । कोन फायदा ? सभ हमर बीमारी के' मोनक भ्रमे बुझैत अछि । कोन ठेकान इहो सभ सँह बुझैत हो, मोन रखबा लेल हमरा परतारि रहल हो । आब नहि कहबैक —ककरो नहि कहबइ ।

—“काका चलू ने; थारी परसल अछि ।”

बीरेन बाबूक आँखि खूजि गेलनि आठ वर्षक भातिज श्याम खयबा लेल बनब' आयल छलनि, उठि बैसलाह । श्याम के' आर लग बजौलथिन । अपन हाथ ओकर मुट्ठी मे दबबैत कहलथिन—“कनेक देखू त' बाउ, नाड़ी मे वेग त' नहि अछि ।

आ आठ वर्षक श्याम मुट्ठी मे दबल नाड़ीक धुकधुकी गनबाक बदला टुकुर-टुकुर अपन काकाक मुँह देखि रहल छल ।

अगस्त १९१४

कसाय

भरगनी

आइनमे किछु खसबाक स्वर अबैत अछि आ हम दीड़ि क' भीतर पहुँचैत छी । भरगनी टूटि क' खसल छैक आ आइनक कदोआह माटि मे छिड़िआयल बिछाओन आ भीजल कपड़ाक ढेरी लग माय चिन्तित सन ठाढ़ अछि । कात-महक दूनू खम्भा ओहिना ठाढ़ छैक । मुदा दुनू खम्भाक कान्ह पर राखल बाँसक टुकड़ा बीचेसे टूटि क' दूनू कात झुकि गेल छैक ।

हमरा हँसी लागि जाइत अछि—नीक भेलैक । आब कमसे कम कपार तँ नहि फूटत । हमर बस चलैत तँ कहिया ने उखाड़ि क' फेंकि देने रहितथिँक । मुदा माय हरदम बीचमे आबि जाइत छल । हमर किछु सुनिते रहि छल ।

रहि जानि, कतेक बेर अन्हारमे एहि भरगनीसे ढेहा लेने हूँ ? नहि जानि कतेक बेर कपार सोनितायल हैत, आ पैघ सन टेटर उगि आयल हैत, मुदा जहिया कहियो भरगनीके उखाड़ि क' फेंक' चाहलथिँक, माय सभ बेर टोकि दैलक—देखि क' चलब सीखह । ई वेचारा तँ अपन जगह पर ठाढ़ अछि, अनेरो तोरासे ढेहा लेब' नहि अबैत छह । अपने देखि क' चलबह नहि आ सभटा तामस निरपराध भरगनी पर ।” मायक एहि तर्कक आगाँ हम विवश भ' जाइत छलहुँ ।

आइनक नक्शा कतेक युगसे नहि बदललैक अछि । जहियासे ज्ञान-प्राण भेल अछि, एहिमे कोबो हेर-फेर नहि भेलैक अछि । चारूकात ईटाक मकान आ सभक ऊपर मे टीन पाटल । वर्गाकार आइनक बीच मे एकटा आयताकार मड़बा, छोट मुदा सजल-सजाओल, सुन्दर । बाबो कहैत छल जे पहिने ई मड़बा आर सुन्दर छलैक । १९१४स आतंककारी भूकम्पमे पुरान दुमहला-तीनमहला कोठा सभक संग ई मड़बो बहलबा गेलैक । दुमहला-तीन महलाक जगह पर पुरान ईटा जोड़ि क' टीन पाटि देल गेलैक आ बिछाब काय मड़बाक एकटा छोट मुदा सुन्दर संस्करण सेहो जेना-जेना बनिये गेलैक ।

एहि मड़बाक पुबारी कात मे कनेक उत्तर दबि क' ई अरगनी ठाढ़ अछि । भोर दस बजे धरि जे रौद एत' पहुँचैत छैक से साँझ धरि रहैत छैक । दिन भरि अरगनी पर हमर छोट भाइ-बहानक मूतसँ भीजल कपड़ा सभ सुखाइत रहैत अछि ।

ई अरगनी बयस मे हमरासँ जेठे हैत । छोट छलहुँ, तँ ई हमरा बड़ पसिन्न छल । स्नान कयलाक बाद भीजल पण्ट कूदि-कूदि क' एहि अरगनी पर फेकब अपूर्ब सुख दैत छल । आहि दिन एकर ऊँचाइ हमरा लेल एवरेस्टसँ कम नहि छल ।

मुदा जहियासँ ई हमर कान्ह धरि आवि गेल अछि, हमरा फूटलो आँखिये नहि सोहाइत अछि । अन्हार मे बेर-बेर हमरासँ ढूँहा लैत रहैत अछि । मायक लेहाज नहि रहैत तँ कहिया ने उखाड़ि क' फेंकि देने रहित्यैक ।

आइ यार अपने चित्त भ' गेलाह । हमरा हाथे एकटा हत्या होइत-होइत बाँचि गेल । आव नहि बरदाश्त होइत हमरा । उखाड़ि क' फेंकि ए दित्यैक ।

मायो हृद करैत अछि । हमरा हँसैत ठाढ़ देखि टोकैत अछि—
“ठाढ़ भेल ठिठिआइत की छह ? बिलसवाकेँ कहक, एकटा नव बाँस आनत ।”

—“जाय दही माय, आङनक बीच मे ई अरगनी हमरा नीक नहि लगैत अछि ।” हम अपन मनक बात कहैत छियैक ।

माय किछु काल हमर मुँह देखैत अछि, जेना कोनो सोचमे पड़ल हो । फेर उदास मुदा, तित्त स्वर मे बाँजि उठैत अछि—“खाली नहि नीक लगलासँ काज नहि चलतह । कोनो इन्तजाम तँ चाहबे करी, नहि त' काल्हिसँ कपड़ा कत' सुखायत ।

हम निरुत्तर भ' जाइत छी । माय बिलसवाकेँ सोर पाड़' लगैत छैक । हम चुपचाप बाहर चल अबैत छी ।

आइ सात दिनुका बाद रौद उगलैक अछि । झड़ी लागल छलैक, दिन-राति टिप-टिप । कोखन झहर-झहर । दिन-रातिक फर्क मेटा गेल छलैक । आइ सभ किछु साफ छैक—बदलल आ घोल-पोछल । कतहु-कतहु मेघक एकाध

टिपकर बीआ रहल छैक, मुदा विःशक्त । रौद प्रखर भ' रहल छैक मुदा तँयो नीक लागि रहल छैक ।

दिन-राति घरमे गोजल लोकसभ बाहर रौदमे बैसल अछि । हमहु अपन बरण्डासँ नीचा उतरैत छी ।

वाट एकदम कदोआह । चारूकात पानि ओहिना जमकल छैक । जमकल पानि आ पिच-पिच कादोकेँ लेंघैत आगू बढ़ैत छी । बरखाक बाद एना खाली पयर घास पर भीजल माटि पर चलब नीक लगैत अछि । अपन नेनपन मोन पढ़ैत अछि ।

आ नेनपन संग मोन पढ़ैत अछि भोलू आ भण्टू—अपन लंगोटिया दोस्त । बिचारैत छी, ओकरे घरसँ भ' आवी । बहुत दिन भ' गेल ।

भोलूक माय भनसाधरमे भेटैत छथि । प्रणाम करैत छियनि । चीन्हि क' प्रसन्न होइत कहैत छथि—“घन्न भाग । तोहर तँ आव दर्शनो दुर्लभ भ' गेल । पैघ लोक भ' गेल छै ।”

—“नहि काकी । से गप्प नहि । गाम आयब तँ बिबा अहाँ लोकनिसँ भेट कयने कोना जायब ? आइ-काल्हि अबिते कम छी । भोलू कोना अछि, कत' अछि ?

काकी उपराग दैत कहैत छथि—“दोस्त छौक तोहर आ खबरि हमरा पुछैत छै ! तो तँ ओकरो बिट्ठी नहि लिखैत छही । आइ-काल्हि झरिया मे अछि, ओतहि “मनीजर” भ' गेल अछि ।

—“मुनि क' खुशी भेल काकी । ओ चोरा त' हमरा खबरियो नहि देलक । अहाँ ओकर पता दिय' हमरा, हम दू-चारि दर्जन गारि लीखि क' पठा दैत छियैक ।

काकी हँस' लगैत छथि । हमहु हँसैत छी आ हँसैत-हँसैत सोचैत छी जे आर की बाजू । काकी हमरा टोकैत छथि—“आइ-काल्हि तो' की करैत छै ?

—“किछु नहि काकी ।”

—“तोहर पढ़ाइ त' खतम भ' गेलीक ?”

—“है काकी ।”

—“तबन आव की करैत छे ?”

—“काज तबैत छी काकी ।”

—“आ ओ जे हाकिमबला इम्तिहान देलहिक, तकर की भेलोक ?”

—“एखन ओइमे देरी छैक काकी । एक्के बेरे नहि होइत छैक । कय-कय बेर इम्तिहान देब’ पड़ैत छैक ।”

—“पास भेलापर की बनबे ?”

—“हमर एहन भाग कहाँ काकी, जे पास करैत अछि, सोझे एस.डी.ओ. बनि जाइत अछि ।”

—“एस. डी. ओ. के कतेक दरमाहा भेटैत छैक ।” काकी बड़ उत्सुक भ’ उठैत छथि । हम मोनक बात बुझैत छियनि । हँसी लगैत अछि मोने-मोन ।

—“इंजीनियरसँ कम्मे भेटैत छैक काकी । फेर अपन भोलू तँ माईनिम इंजीनियर अछि । ओकरा रुपैयाक कोन कमी ।

काकी प्रसन्न भ’ जाइत छथि । आवबस्त । हम उठि क’ ठाढ़ होइत छी ।

—“आब चलैत छी काकी ।”

—“कनेक थम्ह, ओना कोना जाय देबोक । किछु पनपियाइ.....।”

“नहि काकी, एखन नहि, फेर कखनो.....।”

बाहर आवि किछु काल बाटपर इतस्ततः करैत ठाढ़ रहैत छी । फेर अनायास मण्टूक घर दिस विदा होइत छी । मण्टूक माय नहाक’ कपड़ा पसारि रहल छथि । झुकि क’ प्रणाम करैत छियनि ।

—“अरे तो छे, कखन अयले ?”

—“आइ सात दिन भेल काकी । बरखा द्वारे कतहु बहरायब मस्किल भ’ गेल छल । मण्टू कोना अछि ?

—“ओ तँ एखन आसनसोलमे अछि । अतहि एक टा “मैन” मे नौकरी लागि गेल छैक । एखन अढ़ाय सय रुपया दैत छैक ।

—“तबन मधुर खुआउ काकी ।”

हम प्रसन्नतापूर्वक कहैत छियनि । मण्टू माईनिगक डिप्लोमा कोर्स कयलक अछि आ भोलू डिग्री कोर्स । एही साल । आ चट दुनूके नौकरियो लागि गेलैक ।

सत्ते कहैत छैक गाममे लोक, आइ-काल्हि जे ‘सेन्स’ नहि पढ़लक, से पास पढ़लक । नहि तँ एम. ए. पास क’ क’ एना बेकार किएक बैसल रहितहुँ, हम सोचैत छी ।

—“की मधुर मडाउ ? कोन एहन मनीजर भ’ गेल अछि ।” काकीक स्वर उदास छनि । हम हुनकर व्यथा बुझैत छियनि ।

—“मैनेजर नहि भेल तँ भ’ जायत । ई कोन मस्किल छैक ।”

—“सत्ते कहैत छे ?”

—“झूठ किएक बाजब काकी ।”

—मुदा भोलूक माय कहैत छलीह जे मण्टू ‘मनीजर’ नहि भ’ सकैत अछि, ओ छोट पढ़ाई पढ़ने अछि आ भोलू बड़का पढ़ाई पढ़लक अछि ।” हमरा हँसी लागि जाइत अछे, चेष्टा पूर्वक रोक्कैत छी ।

—“नहि काकी । भोलू मण्टू दुनू बड़का पढ़ाई पढ़लक अछि—साइन्स । छोटका पढ़ाई तँ हम पढ़लहुँ अछि । एकटा परीक्षा हेतक तकर बाद भोलू जर्का मण्टूओ मैनेजर भ’ जायत ।”

—“तोरा मुँहमे अमृत” काकी गदगद होइत बजैत छथि । किछुकास दुनू गोटे चुप रहैत छी गुमगुम । फेर काकी टोक्कैत छथि—“तोहर हाकिम बला इम्तिहान कहिया हेतोक ?

—“हाकिम कपारसँ बनैत अछि काकी, आ हमरा कपारमे त’ बौअयसी लिखल अछि ।”

—“एना जुनि बाज । बौअयतीक तोहर दुस्मन । तोँ अवस्से हाकिम बनबे । मण्टूक बाबू तोहर बड़ तारीफ करैत छथुन, सदच्छन । कहैत छथिन जे एहन विद्यार्थी देखबे नहि कयलहुँ जिवगीमे । तोँ सभ दिन फस्ट करैत छले, मण्टू सेकिण्ड आ भोलू थर्ड । तोँ सेन्स छोड़ि देले तेँ कनेक गड़बड़ा गेलोक ।

तखने हमर छोट बहीन हमरा तक्कैत ओत’ पहुँचि जाइत अछि । सँसि गाम बोआ आयल अछि हमरा तक्कैत-तक्कैत । दादा (बाबूजी) बजौने छथि । हम चुपचाप ओकरा संग विदा होइत छी । काकी फेर अयबाक आग्रह करैत छथि ।

हमर चरबाह बिलसंबा तीन-चारिटा चरबाहक संग बबानपर बैसल अछि । हम आगू बढैत छी ।

“ई मालिक की करै हइ आब” पाछाँसँ एकटा स्वर अबैत अछि ।

“पढ़ै हइ” बिलसवाक स्वर हम चिन्हैत छियैक ।

“बूढ़ हो गेलै आ अभी ले पढ़िते हइ” दोसर स्वरमे आश्चर्य छैक ।

हम आगाँ बढ़ि जाइत छी । स्वर पछुआ जाइत अछि । एकटा दोसर स्वर कानमे पढ़ैत अछि । माय आ दादामे कोनो बातपर बहस भ’ रहल छनि जकर स्वर बाहर धरि आबि रहल छैक । हमरा देखिते देरी माय बाजि उठैत अछि—“आब तौही फैसला करह ।”

“की भेलोक अछि माय ।” हमरा किछु नहि बुझाइत अछि । माय कागज कलम हमरा हाथमे दैत कहैत अछि “लिखह ।”

बहुत रास सामान सभ, ओकर मात्रा आ मूल्य माय लिखबैत अछि, हम लिखैत जाइत छी ।

बढ़का फिरिस्त तैयार भ’ जाइत अछि ।

—“आब तौही कह’ जे महीना भरिक हेतु एहिमे कोन वस्तु बेसी छैक ।” माय पुछैत अछि ।

हम फेर एक बेर फिरिस्त पढ़ैत छी—ई तँ बड़ कम छोक माय ।’

—“आब एकर दाम जोड़ह” माय हमर बात जेना नहि सुनेत अछि ।

हम मूल्यक टोटल करैत छी—“दू सय भेलोक ।”

—“आब कनेक अपन बापके” बुझाबह । हम डेढ़ सय मङ्कैत छियनि तँ कहैत छथि जे आर कम करू । एहिसँ कममे कोना चलतैक, तौही कह’ ?

हम दादा दिस तकैत छी । ओ हमरा नहि देखि रहल छथि, ओ ककरो नहि देखि रहल छथि । दृष्टि देवालपर अटकल छनि । कहैत छथि—“चलत से तँ हम नहि कहैत छी कहै छी जे चलाब’ पड़त ।

कनेक काल चुप्प रहि हमरासँ कहैत छथि—मायक फिरिस्त तँ लिखि चुकलह, आब कनेक हमरो फेरिस्त लिखि देह ।

हम फेर कलम उठा लैत छी । दादा लिखबैत छथि ।

दरमाहासँ आमदनी—३५० रुपैया ।

पिछला कजकि किस्त कटौती—२००) रुपया

सुनील (हमर बहनोइक) पढ़ाई—६०) रुपया

लाइफ इन्स्योरेंस प्रीमियम—४०) रुपया

रमेश (हमर छोट भाइक) पढ़ाई—५०) रुपया

हम हाथ रोकि लैत छी—“आब तँ एक्को पाइ ने बाँचल ।”

“सैह तँ हमहूँ कहैत छियनि तोहर मायके” जे एक्को पाइ नहि बँचैत अछि तँ हम कहाँसँ दिय’ ।” दादा कहैत छथि ।

“तँ फेर हम की करू । सभक मुँह सीबि दियैक । जवाब दिअ’ ।” हमरा रुगैत अछि जे ई सवाल माय हमरेसँ क’ रहल अछि—मात्र हमरेटासँ ।

हम ओकरा दिस तकैत छी । ओ दोसर दिस ताकि रहल अछि । हम दादा दिस तकैत छी, ओ पूबंत देवाल दिस ताकि रहल छथि ।

हम किछु बाज’ चाहैत छी । की बाज’ चाहैत छी, नहि बुझाइत अछि । किछु बाजले नहि जाइत अछि ।

सभ चुप्प अछि । ई स्थिति हमरा असह्य लगैत अछि । हम उठि क’ आङनमे चल अबैत छी ।

अरगनी फेर बना देल गेलैक अछि । दुनू पुरना खम्भा पर नव बाँसक एकटा टुकड़ा राखि देल गेल छैक । हम बड़ी काल धरि ओकरा देखैत ठाढ़ रहैत छी । माय पाछाँमे आबि क’ ठाढ़ि होइत अछि—“चलह, परसि दिय’ !

हम भनसा घरक ओसारा पर पीढ़ी पर बैसि जाइत छी । माय थारी परसि क’ आगाँमे दैत अछि ।

झाड़त-झाड़त हम ओहिना ओसारा पर बैसल रमेशकेँ टोकैत छियैक—“स्कूल नहि गेलहिक आइ ?

—“किताब नहि अछि, गुरुजी मारैत छथि ।”

—“आ दिनेश तौ । तौ कियैक ने गेलहिक ?”

—“हमर स्लेट फूटि गेल । माय दोसर नहि मँगा दैत अछि ।”

हम माय दिस तकैत छी । ओ मुह घुमा लैत अछि ।

भयसेवरक ओसारापर हमर सभसँ छोटकी बहीन नछटे खेला रहल अछि । ओकरे लग ओकरासँ पैघ बहीन पुरान-फाटल सायाक कपड़ोक सीयल फाक पहिरने बैसल अछि । ओकरासँ पैघ दुनू बहीन कलपर अपन भोजीक संग कपड़ा खींच रहल अछि ।

हम हाथ-मुँह ओ क' अपन कोठलीमे बिछाओन पर पड़ि रहैत छी । बड़ यकनी बुझाईत अछि, आँखि झलफला रहल अछि ।

“सूति रहलहुँ ?” नहि जानि कतेक कालक बाद ज्योति हमरा हिलबैत छथि । हुनकर कपड़ासँ हरदि आ बनी-मेरबाइक गन्ध आबि रहल छलनि । आँचरसँ कण्ठ लगक पसेना पोछैत ठाढ़ि छथि । हम चुपचाप हुनकर आँखिक नीचांमे स्याह रेखाके देखैत छी ।

“की सोचैत छी ?” ओ टोकैत छथि । “किछु नहि । सोचैत छी के आइ राति चल जाइ ।” हम करोट फेरि लैत छी ।

“कोनो खबरि आयल अछि की ?”

ज्योतिक स्वर मे आकुल उत्कण्ठा छनि ।

“एखन तँ कतहुँसँ किछु खबरि नहि आयल अछि । मुदा गाम मे बैसल रहलासँ की हैत ?”

ज्योति चुप भ' जाइत छथि । हम खिड़कीसँ बाहर आङन दिस तकैत छी ।

एकाएक ज्योति हमर पीठ पर छिड़िया जाइत छथि जेना टूटि गेलि होथि ।

एकदम हारल, पराजित, याचना भरल स्वर मे बजैत छथि—

—“हमरा कहिया ल' चलब ?”

हम कोनो जवाब नहि दैत छियनि ।

ओहिना पड़ल-पड़ल खिड़कीसँ आङनमे ठाढ़ अरगनीके देखैत छी जाहि पर आइ बाँसक नव टुकड़ा राखि देल गेल छैक आ ओहि पर बहुत रास कपड़ा घुसा रहल छैक । ●

फरवरी, १९६५

सूर्यास्त

परेष बाबू पड़ल पड़ल अलवार उनट' लगलाह । अखबार तीन दिन पुरान छननि, आ दि इण्डियन नेशन सँ प्रिन्टेड एण्ड पब्लिश बाई—... तक अनेक आवृत्ति पहिनहि क' चुकल छलाह ! अखबार हाथमे लेने किछु तारतम्य मे रहलाह जे कहाँ सँ शुरू करी ! फेर शुरुआत आवृत्ति शुरू कयलनि ।

भोजनक उपरान्त विश्राम करबाक अम्यास सभ दिन छलनि । जहिया ओकालति करैत छलाह तहियो । दूटा मोट-मोट गेरुआ दुनू जाँघ तर आ एकटा पैघ मसलंग सिरमा मे । मोट गद्दा पर अलस भाव सँ पड़ल अढ़ाई मोनक विशाल मुदा वृद्ध शरीर । प्राचीन मिस्रक कोसो वृद्धफेरो सन आकृति आ आकृति पर ओहने कान्ति आ रोब ।

सुन्न दुपहरिया मे बैशाखक तीक्ष्ण रोद चारुकात आधिपत्य जमीने छल । अपेक्षाकृत कने नीच कोठाक छत तबि गेल छलैक आ पसेना सँ परेष बाबू तरब-तर भेल जा रहल छलाह । पड़ले पड़ल कने क्रुद्ध होइत बजलाह—“रे रमचरना ! सूति रहले की ? डोरी बाँच जोर सँ ।”

पतिक क्रुद्ध स्वर सुनि दोसर चौकी पर पड़ल महामाया दाइक हाथ मे अनवरत चलैत बिथवि रुकि गेलनि । पड़लि-पड़लि भर्त्सनाक स्वर मे बजलीह—“बूढ़ वयस अहूँ के मति-भ्रम भेल जाइत अछि । रमचरना पन्द्रह बरख पहिने अहाँक नौकरी छोड़लक, सेहो की हमरे मोन पाइय पड़त ।”

परेष बाबू पत्नीक भर्त्सना पर कने सकपका गेलाह । फेर एकटा शुष्क हँसी ठोर पर आबि गेलनि—गत गौरवक अवसाद भरल हँसी । रमचरना हुनकर खास खास छलनि, चौबीस घंटाक ड्यूटी । चालीस वर्ष धरि संगे रहलनि । आब संगहि बयो नहि छलनि, रमचरना नहि रहलनि, पुरना चीज सभ एक एक क' छोड़ि गेल छलनि ।

स्मृति शेष छलनि । कोठाक छत सँ अखनो तीन हाथ लम्बा झालरि-दार पंखा लटकल छलैक जकर डोरी टुगर जकाँ सिमेंट पर ओंधरायल छलैक ।

अखनो कतेको दिन बिछीन पर पड़ितहि लगैत छलनि जेना डोरी धयने रमचरना ओंघा रहल होनि आ टोकि दैत छलथिन—“रामचरना, सूति रहलैं रौ?” मुदा रमचरनाक “बहि सरकार”क बदला मे कान मे पड़ैत छलनि पत्नीक उपहासपूर्ण भर्त्सना आ सकपका क’ चुप भ’ जाइत छलाह ।

सभ दिन जकाँ आइयो परेश बाबू पत्नीकेँ कोनो उत्तर नहि देलथिन । हाथ बढ़ा डोरी घीचि लेलनि आ घीचैत रहलाह । पसेना सँ भीजल देह पर पंखाक हवा बड़ सुखद लगलनि । मुदा मोनमे जेना एकटा अवसाद आ रिक्तता भरि गेलनि । बामा हाथमे दबल अखबार फरफराइत रहलनि ।

कौखन परेश बाबू अपनो मट्टी मे दबल अखबार जकाँ फरफरा उठैत छथि—मुक्तिक हेतु व्याकुल । अइ संसार आ सांसारिक बंधन सँ मुक्ति । आब कोनो मोह नहि, कतहु कोनो गाँठ नहि । सभ अपन अपन बंधन सँ मुक्त क’ देने छनि । जिनगीक कगार पर ठाढ़ परेश बाबू एकसर मुक्तिक प्रतीक्षा क’ रहल छथि । मुदा समयक अन्तराल जेना बढ़िते जा रहल होनि । आ सभ किछु असह्य लाग’ लगैत छलनि । जेना रमीक खेलमे मात्र एकटा पत्ता लेल कतेको कालसँ रुकल होथि आ रुकले रहि जाइत होथि, बाजी हारि जाइत होथि ।

वस्तुतः बाजी हारि गेल छथि परेश बाबू ! जिनगीक कगार पर ठाढ़ मुक्तिक प्रतीक्षामे बाजी हारि गेल छथि । यदि ओ मुक्ति दस बरख पहिने भेटितनि तँ जीति जैतथि । एकदम भरल बाजी ! एकदम भरल घर । एक एकटा बंधन मजगूत । एक-एकटा तन्तु सटल । फुट प्वायन्ट्स ।

आब सभ किछु टूटि गेल छनि । लगाओल ट्रेल, लगाओल सीक्वेन्स, सभटा बेकार भ’ गेल छनि । परेश बाबू हारि गेल छथि—ए मोस्ट अनएक्सपेक्टेड डिफीट ।

मुक्तिक बाट मुदा भेटैत छनि । आंगनक मुँहथरि पर ठाढ़ ललन इशारा द’ रहल छनि । परेश बाबूक ठोर पर हंसी आबि जाइत छनि । हाथसँ इशारा करैत छथिन जे तो’ चल, हम अबैत छी ।

ललन आश्वस्त भेल चल जाइत अछि । परेश बाबू व्यस्त भ’ उठैत छथि । सभसँ पहिने पत्नीक बिछीन पर दृष्टिपात करैत स्थिर कर’ चाहैत छथि जे ओ सूतलि छथि वा जागलि । हुनका निद्रित ब्रश्चि आश्वस्त होइत छथि, अखबार

केँ नीक जकाँ मोड़ि बामा काँख तर लैत छथि आ दहिना हाथमे अपन मोट छड़ी उठा जमीन पर टेकैत छथि । चौकी तर राखल खड़ाम पहिरि लैत छथि । उठबा मे कष्ट होइत छनि, जमीन परसँ उठ’मे आरो वेशी । ठेहुनक जोड़ पकड़ि लेने छनि । आस्ते-आस्ते उठिक’ ठाढ़ होइत छथि । तखन कोनो कष्ट नहि । छिहत्तरि बरखक देह अखनो सॉटल छनि आ आँखिक रोशनी अखनो तीक्ष्ण । डेग आगू बढ़बैत छथि ।

विशाल शरीरक बोझसँ दबल खड़ाम सीमटी पर खटखटा उठैत छनि । ओंघाइत महामाया दाइ उठि बैसैत छथि आ आग्नेय दृष्टिसँ पति दिस तकैत छथि । परेश बाबू चुपचाप डेग आगू बढ़ीने जाइत छथि ।

महामाया दाइ पाछाँसँ गरजि उठैत छथि “लाज नहि अछि अहाँक कोनो गत्र मे । काल्हिये सप्पत खयलहुँ अछि जे फेर सींग तोड़िक पड़रू मे नहि मिझरायब मुदा आइ फेर वंह चालि । हम एकसरि सुन्न आंगनमे किलौल करैत रहु आ ई घीया-पुता संग चौन करैत रहताह । सीख ने देखू, बुढ़िया घोड़ी लाल लगाम ।”

सभटा सुनैत परेश बाबू निर्विकार भाव सँ खड़ाम खटखटबैत आंगन सँ बाहर भ’ जाइत छथि ! तखन महामाया दाइक गर्जना क्रन्दन मे बदलि जाइत छनि आ ओइ दग्ध दुपहरियाक सुन्न घर आंगनमे अडुरिया कटैत रहैत छनि ।

X X X X X

—नो ट्रस्ट्स ।

—टू स्पेड्स ।

—थ्री हाट्स ।

—फोर क्लब्स ।

—फोर स्पेड्स ।

—डबल ! परेश बाबूक बिड रहि जाइत छनि । ललन डमी बनैत अछि ।

परेश बाबूक ताश देखैत छनि—“नो ट्रस्ट्सक अगेन्स्ट अहाँ कौल कोना ओपेन क’ देलियैक बाबा ? अहाँ के त’ एक्को ट्रिक सहि अछि । आ फेर फोर सेहो बाजि देलियैक ।” ललन कने रुष्ट होइत कहैत छनि । लगातार हारि रहल छल ।

—“तीं सपोर्ट कियै कैलह ?”

—“हमरा त’ अड़ाइ टा ट्रिक अछि । अहाँ सभ बेर अहिना कौल द’ दैत छियैक बाबा ।” ललन उलहन जकाँ दैत छनि ।

परेश बाबू ओकर व्यथा बुझैत छथिन । ओ स्कूलिया छौड़ा अछि । जीत' लेल खेलाइत अछि, बार कथुक लेल नहि । ओकर दूटा संगतुरिया छौड़ा जकरा ओ अपघा सँ कमजोर खेलाड़ी बुझैत छलैक से जीति रहल छलैक, सँह ओकरा अखरि रहल छलैक । ओ परेश बाबूक परमानेन्ट पार्टनर छल । परेश बाबू सभ दिन हारैत छलाह मुदा बिह सभसँ हाइयेस्ट दैत छलथिन ।

अहू बेर ओवर कौल छलनि ! पाँच हाथ डाउन भेलाह ! ललनक मुँह अटक गेलैक ।

परेश बाबू ओकरा आश्वासन दैत कहलथिन—मुँह नहि लटकाउ पार्टनर । अहाँ नेना छी, जीत' सँ प्रसन्न होइत छी । मुदा हम त' हारि-जीत लेल नहि खेलाइत छी ।”

बाबाक अन्तिम वाक्यक अर्थ स्कूलिया छौड़ा सभकेँ नहि लगैत छैक । टुकुर टुकुर परेश बाबूक मुँह ताक' लगैत अछि ।

परेश बाबू ताश बाँट' लगैत छथि आ ताश उठबितहि अति प्रसन्न होइत बजैत छथि—“टू नो ट्रम्प्स ।”

ललनक कौड़ फेर घड़क' लगैत छैक ।

+ + + + +

फलफल अन्हार घरि ताशक अड़्डा जमल रहैत छैक । जखन ताश सूझ' के फल्ट होम' लगैत छैक, तखन परेश बाबू उठैत छथि ।

उठैत छथि आ अङ्गना दिस बिदा होइत छथि ! आंगनक मुँहयारि ललन आबि किछु मोन पड़ैत छनि । फेर घुरैत छथि । बगले में हाइ स्कूलक हेडमास्टरक घर छनि । परेश बाबूक भातिज ! दालान मे कुर्सी पर बैसैत परेश बाबू काँख तर सँ अखबार बहार क' दैत कहैत छथिन—“ई अखबार राखह । कस्तुका देह । अजुका त' स्कूल पर हेतह ? कोबो खास स्यूज ?

—“वहि काका ! कोनो नहि !”

अखबार ल'क' परेश बाबू फेर आंगन दिस बिदा होइत छथि । नीक जकाँ अन्हार भ' गेल छैक । अन्हार मे पैर थरथराइत छनि । मुदा आंगन पहुँचि जाइत छथि । ओसारा पर लालटेन बारिक' राखल छनि । इजोतमे परेश बाबू ओसारा पर चढ़ैत छथि । अपन चौकी पर महामाया दाइ गुमसुम बैसल छथि । ओतेक टा आंगन आ ओहन पंघ पंघ घरक बीच एकसरि । परेश बाबू ब्रिचि भ' उठैत छथि ।

महामाया दाइक मुद्रा तनल छनि । तामसे फटवा लेल मोन बैसल छथि ।

खवासिन सान्ने चल गेलनि । रातिक' नीक जकाँ सुझैत नहि छनि तेँ सान्ने भानस क' लैत छथि । खवासिनक छुइल कोना खयतीह ?

परेश बाबू चुपचाप अपन बिछौन पर बैसैत छथि आ हाथ बढ़ा कालटेन छठा सिरमामे खिड़की पर राखि पड़ि रहैत छथि । अखबार खोलिक' आँखि आग' पसारि लैत छथि ।

किछु क्षण मोन । संक्षिप्ता रातिक निस्तब्धता—“खायब ? परसि दिय ? एकटा प्रश्न !

—“जे विचार हो” ।

सभ दिन एकटा उत्तर ।

भोजनक उपरान्त परेश बाबू फेर अखबार पसारि लैत छथि । महामाया दाइ भोजनक उपरान्त अपन बिछौन पर पड़ि बिअनि हौक' लगैत छथि ।

फेर एकटा चुप्पी, असह्य मोन ।

महामाया दाइ कुहर' लगैत छथि, पहिने कने आस्ते सँ, फेर जोर-जोर सँ । परेश बाबू अखबार सँ आँखि नहि उठबैत छथि ।

कुहरब बन्द बन्द भ' जाइत छनि ! फेर मोन —किछु काल !

—“बहीर भ' गेल छी ?” पत्नी अप्रत्याशित प्रश्न पर परेश बाबू चौंकि क' अखबार सँ दृष्टि हटबैत छथि ।

—“आइ सात दिन सँ हम मरि रहल छी । सभ राति बोझार होइत अछि, बंद सँ माथ-कपार फटैत अछि आ अहाँ अखबार पसारने निश्चिन्त पड़ल रहू !

—“उपाय ?” परेश बाबू जेना प्रश्न करैत छथिन ।

—“हमरा बरदनि दबाक पारि दिय” महामाया दाइ लोहछिक' बजैत छथि ।

—“नीक त' पंहु होइत ।” परेश बाबू बुदबुदाइत छथि ।

महामाया दाइ मुनि लैत छथिन । तिलमिलाक उठि बैसैत छथि । माल पर नौर टवरि जाइत छनि ।

“आब कियैक ने कहव से । आब हम छी कथी जोगरक । पचपन वर्ष धरि मुदा अहीं लेल घिसरी कटैत रहलहुँ अछि सदिखन । दाइ हमरा घेंट दबाक मारि दिय । मुदा अपन की हैत ? के देत कांचो पाकल राखिहक आगाँ मे ? कोना कटत दिन ?

—‘ते’ त’ कहैत छी जे चुपचाप पड़ल रहू, जे होइत अछि चुपचाप सहैत रहू । माथमे दर्द होइत अछि, बोखार अछि मुदा हम की करू ? अइ अन्हार मे जाउ डाक्टर लग ? नौकर बैसल अछि जकरा दौड़बिचौक इम्हर-ओम्हर ! बेटा-बेटी नाति पोता अछि लग मे जे सेवा-सुश्रुषा करत ! माथ दबाओत, तरबा मालिश करत ? तखन की करू हम ? तै कहैत छी जे नीक होइत जे घेंट दबा अहूँ के मारि दितहुँ आ अपनो फाँसी लगा लितहुँ । बस, सब झंझट चैन !

परेश बाबूक विशाल शरीर थर-थर कांप’ लगैत छनि । क्रोध, उत्तेजना वा विवशता, नहि जानि कथीसँ ? महामाया दाइ आहत आ विदीर्ण भ’ क’ अपन बिछौन पर पड़ि रहैत छथि । आगू एक शब्द नहि बजैत छथि । परेश बाबूक थरथर कँपैत देह क्रमशः स्थिर भ’ जाइत छनि ? फेर अखबार पढ़’ लगैत छथि ।

महामाया दाइक पतिक संग बिताओल अनेको वर्ष मोन पड़ैत छनि । सुख ऐश्वर्य आ प्रेमसँ भीजल जीवनक पचास टा वर्ष । परेश बाबू सभ किछु देने छलथिन हुनका—सुख, सन्तति आ सिंगघ प्रेम ।

आइ पाँच वर्ष सँ सभ किछु विला गेल छलनि जेना । सन्तति, सुख आ पतिकप्रेम, सभटा हेरा गेल जलनि । सभ किछु रहियो क’ किछु नाहै छलनि । भीतर-बाहर सभ सुन्न ।

पैघ आंगन ! आंगनक चारुकात पक्का मकान ! पैघ कोठली, पैघ केबाड़ पैघ खिड़की । सुन्दर सज्जित ! कतेको वर्ष सँ मुदा झोल लटकल सभ पर । सभ मे ताला दन्द । मात्र एकटा कोठली आ भंभा घर खूजल । ककरो कुंजियो नहि छलनि महामाया दाइक संग । पुतोहु लोकनि कुंजी संगहि रखैत छलथिन । दू-बरख सँ नहि अबैत जाइत छथि ते’ ओ कोठली सभ ओहिना बन्द रहैत छनि ।

सूर्यास्त

जेठ बेटा पहिने फराक भेलनि ! ओ महामाया दाइ सँ छुट छलनि जे ओ छोट बेटाके’ बेशी मानैत छलीह ! माय भ’ क’ दू रंग व्यवहार ! हसिक बेटा फराक भ’ गेलनि ! आंगन मे पोता पोती खेलाइत रहैत छलनि आ महामाया दाइके’ नहि बुझाइत छलनि जे बेटा फराक छनि !

एकटा बेटी छलनि । कम्मे वयस मे विधवा भ’ गेलनि ! एकटा नतिनी सेहो छलनि ! बेटी-नतिनी सभ दिन महामाया दाइक संग रहलनि !

नौकर-चाकर भनसीया आ जिरतिया ! भरि दिन आंगन मे हूलि मचल रहैत छलनि ! महामाया राजरानी छलीह ।

फेर सभटा बिलाय लगलनि ! जर जमीन, कर-कचहरी, नौकर-भनसीया सभटा बिलाइत गेलनि । तैयो महामाया दाइ सुखी छलीह ! भरल घर छलनि ! पोता-पोती आंगन मे खेलाइत छलनि । छोट पुतोहु सेहो अथलनि । सुन्नरि, पैघ घरक । हुनको धीया-पुता भेलनि । फेर छोटको बेटा फराक भ’ गेलनि । महामाया दाइ ककरो दोष नहि देलथिन । आंगन मे पोता पोती खेलाइत रहलनि । कहियो कोनो दुख कष्ट नहि भेलनि । सभ दिन भरल पुरल रहलीह ।

भरल घर खाली होम’ लगलैक । नतिनीक विवाह करौलनि आ नतिनीक संग बेटीयो चल जाइत रहलनि ।

आ जर जमीन घटलैक त’ बैसल दाइ मे असुविधा होम’ लगलैक । हुनू बेटा नौकरी कर’ लगलनि । आंगन सुन्न भ’ गेलैक । हुनू बेटा अपन-अपन परिवार संग कयलक । बूढ़ा-बूढ़ी, कोनो परिवारक नहि छल । ओकरा क्यो नहि पुछलकैक । सुन्न घर आंगन मे हुनू पड़ल रहल, पाँच वर्ष सँ पड़ल अछि ! जिनगीक कगार पर ठाढ़ दू टा बूढ़-एकसरें आ अवश ।

× × × × ×

एक बेर महामाया दाइ जगलीह ।

राति बहुत बीति गेल छलैक मुदा परेश बाबू अखबार पसारल जागल छलाह । पसरल अखबारक अक्षर सभ अदृश्य छलनि । आँखिक आँगा झलफला रहल छलनि—गत जीवनक कतेको गौरवमय दिन । भविष्यक कल्पना सँ आतंकित भ’ उठल छलाह आ आँखिक नीन्व पड़ा गेल छलनि ।

सूर्यास्त]

[२७]

महामाया दाइ पतिक मोनक अस्थिरता बुझलनि । बड़ स्निग्ध भ' उठलीह ।—“नीन्न नहि होइत अछि ।” पत्नीक स्निग्ध स्वर पर परेश बाबू चौंकाह । ई स्वर आव कतेक अनचिन्हार भ' गेल छनि ।

“बस आव भ' गेल ।” बखवार मोड़िक' सिरमा तर रखैत परेश बाबू कहैत छथिन ।

—बड़ गर्मी छेक ! बिबनि हौंकि दिअ ?” महामाया दाइ उठबा लेल उद्यत होइत छथि !

“नहि, नहि अहाँ पड़ल रहू । अहाँक मोन खराप अछि । सवेरे सूति रहू ।” । खिड़की पर सँ लालटेन उठा ओकर टेमी कम क' क' ओकरा चौकी तर रखैत परेश बाबू कहैत छथिन ।

घुप्प अन्हार मे हुनू गोटे बड़ो काल घरि जगैत छथि । मोन मुदा स्निग्ध अतीत मे भोतिआयल ।

X X X X

एक बेर परेश बाबू अगलाह ।

प्रात हेबा मे बेशी विलम्ब नहि छलैक । भोरक ठण्डा हवा रातुक उष्णता के बण्ट करैत सिहिक रहल छल । मुदा परेश बाबूक मोन भारी छलनि । अपन चौकी पर महामाया दाइ कुहरि रहन छलीह—अनवरत ।

आइ कतेको दिन सँ ठीक अही बेर मे परेश बाबूक नीन्न टूटि जाइत छनि आ सभ दिन नीन्न टूटला पर पत्नीक कुहरनाइ कान मे पड़ैत छनि ।

आ मोन तड़फड़ा क' रहि जाइत छनि । मोन होइत छनि जे कहना उठथि आ लग मे बैसि माथा दबा देथिन । मुदा अपनो देह जकड़ल सन लगैत छनि । अवश भाव सँ पड़ल रहैत छथि आ पत्नीक कुहरनाइ सहसमुखी भ' कान मे गोंगिआय लगैत छनि ।

आ फेर नीन्न नहि होइत छनि परेश बाबू के ।

X X X X

फेर महामाया दाइ अगलीह ।

चारूकात रौद पसरि गेल छलैक । परेश बाबू मुँह हाथ वो क' अपन बिछौन पर बैसल पत्नीक उठबाक प्रतीक्षा क' रहल छलाह ।

खवासिन आबि गेल छलनि । बत्तन-बासन माजि क' भंसे घर मे चूल्हा चक्कीक इन्तजाम मे लागल छलनि ।

महामाया दाइ बिछौन सँ उठबाक चेष्टा कयलनि । मुदा असफल रहलीह । लगलनि जेना अंग अंग अशक्त भ' गेल होनि । आँखि मे धाही छलनि आ देहक गीरह कनकना रहल छलनि । विवश पड़लि रहलीह आ गाल पर घोर टघर' लगलनि । रोकबाक चेष्टा कयलो पर दाबल हिचकी स्पष्ट भ' उठलनि ।

परेश बाबू भोरे-भोर पत्नी के एना कनैत देखि चिन्तित भेलाह—“की भेल ? एना कनैत कियँक छी ?

महामाया दाइ अश्रुपूर्ण दृष्टि सँ पति के देखलनि आ फेर आँखि मूनि बजलीह—“आइ त' उठबो सँ असमर्थ भ' गेलहुँ । काँचो असिद्ध के देत रान्हि क' ? साँझे राति खयने छलहुँ ।”

—“अहाँ अनेरो चिन्ता नहि करू । हम आइ असिद्धे किछु खा लेब । खवासिनी के कहि दैत छियैक, इन्तजाम क' देत” परेश बाबू उठि क' पत्नीक बिछौन लग अयला । माथ पर हाथ देलथिन । माथ जरि रहल छलनि धाह सँ । महामाया दाइ आँखि मुनने पड़लि रहलीह । पतिक स्पर्श नीक लागि रहल छलनि ।

—“अहाँ लेल बाली दूधक इन्तजाम करबा दैत छी ।” परेश बाबू कहलथिन ।

“नहि, हम महि खायब बाली दूध ।” महामाया दाइ बच्चा जकाँ मूड़ी झटलनि । परेश बाबू के हँसी सगलनि । पचास पचपन बरख पहिला बात मोन पड़लनि । तहियो बाली खयबाक नाम पर एहिवा महामाया दाइ मूड़ी झाट' लगैत छलीह ।

मुदा हँसी तत्क्षण बिला गेलनि । मोन पड़लनि जे कोना एक्को दिन बोखार लगला पर फलक ढेरी लगा दैत छलथिन—अंगूर बेदाना आ समतोला । महामाया दाइ मात्र फलक रस पीबैत छलीह । एकटा खवासिनी तरबा रगड़ैत छलनि आ दोसर माथ ।

आइ ज्वर सँ दाब शरीर लेने महामाया दाइ एकसरि बिछौन पर पड़लि छलीह आ अगमे परेश बाबू असहाय ठाढ़ छलाह । बाली दूध नहि अबतीह ? तखन उपाय !

परेश बाबू घुरि क' अपन चौकी पर बैसि रहलाह ।

X

X

X

X

परेश बाबू पैर दबने ओसारा पर चढ़लाह । आध घंटा लेल सोचने छलाह मुदा तीन घंटा सँ ऊपर लागि गेल छलनि । बैसलाह त' फेर उठिये नहि भेलनि ।

ललन जखन आंगनक मुहथरि लगसँ इशारा कयने छलनि त' ओकरा हाथक इशारा सँ घुरा देने छलथिन । महामाया दाइ ज्वर मे बेसुध पड़लि छलीह आ परेश बाबू मसलंग पर पड़ल चुपचाप सुन्न घर आंगन मे पसरल रौद के देखि रहल छलाह ।

ललन के घुरा देलाक बाद मोन आगू-पाछू कर' लगलनि । भोर सँ बैसल-बैसल अकछि गेल छलाह । आध घण्टा लेल भ' अबैत छी, अखन त' आंखि लागल छनि । लगले घुरि आयब, बुझबो नहि करतीह ।

आ आध घंटा लेल उठला त' सांझ भ' गेलनि । परेश बाबू चोर जकाँ दाबल पयरे ओसारा पर चढ़लाह ।

खवासिन नहि आयल छलनि । महामाया दाइ ओहिना बेसुध पड़लि छलीह । परेश बाबू लाश्वस्त भेलाह ।

आकाश पर कारी मेघ जुटि रहल छलैक, बिहाड़िक लक्षण बुझा रहल छलैक । पश्चिमी आकाश पर डुबैत सूर्य मेघाच्छन्न भेल जा रहल छल ।

अकस्मात् एकटा सिसकी परेश बाबूक कानमे पड़लनि । महामाया दाइ कानि रहलि छलीह । सम्पूर्ण देह क्रन्दन के रोकबक चेष्टा मे काँपि रहल छलनि । अस्फुट स्वर मे बाजि रहल छलीह—“एक गिलास पानियो देनिहार नहि अछि घर मे क्यो । आब अइ अभागली के उठा लिअ’ भगवान ।

आ परेश बाबू के लगलनि जेना आकाश पर मड़राइत सभटा कारी मेघ हुनकर मोन के झाँपि देने होनि । कोनो प्रचण्ड बिहाड़िक आशंका सँ थरथरा उठलाह आ आकाश पर मेघ मे डुबैत सूर्य के देखि बुदबुदा उठलाह—इ सतसेट नुइ बी हारीबुल ।

नवम्बर १९६५

५३०१]

[अर्थात्

अनचिन्हार अप्पन

ओहि दिन स्टीमर पर अनायास तरुणसँ भेट भ' गेलैक ।

दरभंगा—पहलेजा घाट पैसेन्जर कनेके काल पहिने पहलेजाघाटक बलुआह माटि पर ससरैत ठाढ़ भेल छलैक । गाढ़ी आ जहाज सभ दिन जकाँ खचाखच यात्रीसँ लदल छलैक । जूनक सूर्य उगिते घघक' लागल छल । जहाज खजबा मे बेसी बिलम्ब नहि छलैक, तँयो कतेको यात्री गंगा स्नानक पुण्य हथियबा मे तत्परता देखा रहल छलाह—ओहि पार मगह मे कोना नहुयताह ? गंगा स्नानक पुण्य मे रुचि नहि रखनिहार यात्री जहाजक कलक पानिक छिटका मारि-मारि चेहरासँ रात्रि जागरणक चेन्ह मेटा रहल छलाह । किछु यात्री अलस भावे कुर्सी आ बेंच सभ पर पसरल भोरक जलहवाक थपकी पर झपकी ल' रहल छलाह ।

स्टीमरक टी-स्टाल पर सभ दिन जकाँ ठेलमठेल मचल छलैक । मस्किलसँ एक प्याला चाह ल' भीड़क घक्का सँ अपनाके नचबैत प्रकाश जहाजक कात मे, रेलिंगसँ भिड़ले ठाढ़ भ' गेल । चाह पिबैत ओ ओहिना एम्हर-ओम्हर तर्कैत रहल । लगेमे, दहिनाकात, एकटा नव जोड़ा रेलिंग पर झुकल चाहक चुस्की लैत पसरल फूल गंगाक हिलकोर निहारि रहल छल । ओ ओम्हरसँ दृष्टि हटा लेब' चाहलक । तखने ओहो एम्हर तकसकैक आ दुनू एक दोसरके चोन्हि गेलैक । ओ तरुण रहैक ।

दुनू लपकि क' भरि पाँज घयलक एक दोसरके ! दुनूक हाथक प्याला खसैत-खसैत बँचलैक । बड़ी काल धरि दुनू लपटल रहल ।

—“तो तँ बड़ मोटा गेल छैरौ ! डाइटिंग' कर !” ओहिना लपटल तरुण कहलकै ।

प्रकाश किछु नहि बाजल । खाली मुसकियाइत रहल ।

—“बहुत दिन पर भेट भेल नै री ? पाँच बरख भेल हेतैक ?”

तरुण ओहिना लपटल फेर बाजल ।

—“हूँ, पाँच वर्ष पहिने कनेकालक हेतु मेडिकल कालेज—हस्पिटल मे भेट भेल छल । तो अपन बाबूक डेथ सर्टिफिकेटक हेतु आयल छल पटना । मुदा नीक जकाँ गप्प भेला त आठ वर्षसँ ऊपर भ गेल ।” कनेक हटैत प्रकाश बाजल ।

दुनूक हाथक प्याला मे बाँचल-खुचल चाय सेरा क’ पानि भ’ गेल रहैक । अवशिष्टके गंगा मे फेकि दुनू गोटे प्याला काउन्टर पर राखि देलकै । प्रकाश पैसा देब’ लगलैक त तरुण बाँहि पकड़ि धीचि लेलकैक “पैसा द’ देलकै गीता !”

—“के गीता ?” प्रकाश अकस्मात्काल ।

—“आ ने, परिचय करा दैत छियोक ।”

रेलिंग पर झुकलि ठाढ़ि नवयुवती लग आवि तरुण बाजल—“तोरा दुनू गोटेके आपसमे परिचय करा दियोक । ई थिकीह गीता चटर्जी आ गीता, यह प्रकाश थिक, जकर हम बरोबरि चर्चा करैत छलियोक ।

गीता परिचित भावसँ हाथ जोड़ि मुसकिया उठलैक । प्रकाशो नमस्कार कयलकैक ।

गीता सत्रह—अठारह वर्षक पिण्डश्याम सन छोड़ी छलैक । चश्माक भीतरसँ चमकैत ओकर दुनू पैघ-पैघ आँखि बड़ सुन्दर हेतैक—प्रकाश अन्दाज कयलक । पातर ठोरपर मुसकी नीक लागि रहल छलैक । गीता सुन्नरि नहियो होइत, आकर्षक छलि—प्रकाशके मोने-मोन स्वीकार कर’ पड़लैक ।

तीनू रेलिंग पर झुकल-झुकल, अपन आकृति पर जलहवाक स्पर्श अनुभव करैत गप्प करैत रहल । गीता बजैत कम छलैक, मुदा हरदम मुसकियाइत रहैत छलैक । प्रकाशके ई बड़ नीक लगलैक ।

तरुण गीताके स्कूली—जीवनक बहुत रास गप्प उत्साहपूर्वक सुनबैत रहलैक । गीता मुसकियाइत रहलैक । प्रकाश कखनो तरुण, कखनो गीताके निहारैत रहल । जहाज पानि पर ससरैत रहलैक ।

रोद मुह पर आवि गेलैक । पसेना छूट’ लगलैक । प्रकाश बाजल—“चल’ दोसर दिस ठाढ़ होइ ।

—“रह’ दही ! एतबा रोदक कोन डर ? की गीता ?”

गीता जबाब नहि देलकै । खाली मुसकिया देलकै । ओहिमे जिनगी भरल छलैक—लबालब । प्रकाशके अपन प्रस्ताव पर अकारण लाज भेलैक ।

—“तो बहुत बदलि गेल छे प्रकाश ?” एकाएक नहि जानि, की सोचि तरुण बाजि उठलैक ।

“के ? हम ?” प्रश्न करैत प्रकाशके लगलैक जे आब फेर सभटा उलहन दोहरीतैक तरुण—“विवाहमे नहि बजौले, एकटा बेटीक बाप बनि गेल मुदा भौजीसँ भेटो नहि करौले ।” ओकर उलहन उचित हैत, प्रकाश सोचलक ।

तरुण फेर बाजि उठलैक—हूँ, प्रकाश तोही । एकदम बदलि गेल छे तो ! तोहर गप्प-शप्पक ढंग बदलि गेल छोक । लगैत अछि जेना तो हमरा सँ बड़ पैघ भ’ गेल छे—एकदम बूढ़ ।

—“बूढ़ तँ भये गेल छी । बेटीक बाप बनि गेल छी । दस-बरखमे ससुर बनब । आब ओ गप्पक आ ओ ढंग कहाँसँ लाउ ?” बात मजाकमे टारबाक चेष्टा करैत प्रकाश झुक्क हँसी हँसल ।

—“बातके टार नहि, सत्त-सत्त बाज ।” तरुण अपनस्वसँ बाजल ।

—“तुकयबाक कोन बात छैक । समयक संग परिवर्तन होइते छैक । देख, कतेक मोटा गेल छी । पहिने एहने रही ?

तरुण बुझि गेलैक जे ई प्रसंग प्रकाश टार’ चाहैत अछि । ओ फेर चर्चा नहि कयलकै ।

लगातार रोद मुहपर पड़लासँ गीताक पिण्डश्याम मुह पर लाली आवि गेल छलैक । रोदसँ बचबा लेल ओ माथ पर आँचर राखि कनेक घोघ जकाँ काढ़ि लेलक । ई देखि दुनू गोटेके हँसी लागि गेलैक । हँसैत-हँसैत तरुण गुनगुना उठल—

आमि चेये छी तोमाय
से की मोर अपराध ?
सुधु एइ जीवनेर नेइ
इतो जेनो आमार कतो जनमेर
साध

गुनगुनाइत ओ दुष्टतापूर्वक गीताके देखि रहल छलैक । गीता लजा क' हँसि रहल छलैक । प्रकाशो हँसीमे संग दैत एकटा दुष्टता क' बैसलैक । तरुणके डाँड़सँ पकड़ि अपना दिस झीकि गुनगुना उठलैक—

आमि भये छी तोमाय—

X X X X

तरुण आ गीताके पटना जंक्शन पर दानापुरवला गाड़ी मे चढ़ा जखन प्रकाश डेरा पहुँचल दस बाजि रहल छलैक ।

ओकरा एना असमय आयल देखि किरण चिन्तित भ' उठलैक । ओकरा एना चिन्तित होइत देखि प्रकाशके अकारण प्रसन्नता भेलैक । विलम्ब हैबाक कारण ओ ओकरा कहि देलकैक ।

किरण आश्वस्त भ' चाह बनाब' मनसा घर चल गेलैक । जाइत-जाइत टेबुल फैन ऑन करैत गेलैक ।

जूता खोलि प्रकाश बिछाओन पर पसरि गेल । बड़ थकनी लागि रहल छलैक । सोसि देह टूटि रहल छलैक ।

तरुण परसू अयबाक वादा कयने छलैक । आइ ओ सभ नहि कलैक । आइ ओकर गुरुजीक भाषण छलैक । तरुण कोनो स्वामीजीक चककरमे छल आइ-काल्ह ।

कनेक काल बाद चाह लेने किरण कोठली मे अयलैक । चाह पीलासँ किछु स्फूर्ति अयलैक । कमीज खोलि किरणके देलकैक आ फेर ओहिना झाली देह बिछाओन पर पसरि गेल ।

—“ओझाजी कत' छथि ।” पड़ल-पड़ल किरणसँ पुछलकैक ।

—“ड्यूटी पर गेल छथि—बस्तिनारपुर । राति क' घुरताह ।” जबाब भेटलैक ।

—“आ प्रभा ?” ओ जनैत पुछलकैक ।

—“ओहि कोठलीमे छथि । अहाँक बेटियो ओतहि अछि ।” किरण जेना ओकर अगिलो सवालक जबाब दैत बजलैक ।

“ओकर घाओ कोना छैक आब ?” प्रकाश कनेक व्यग्रतासँ पुछलकै ।

—“एकदम छूटि गेल छलैक, मुदा एम्हर फेर दाना विकलि गेलैक अछि, पछिला हप्ता डाक्टर बजीने छल, कहाँ गेलियैक ?

प्रकाश कोनो उत्तर नहि दैलकै । बेबी दोसर कोठली मे कानि उठलैक । किरण ओम्हरे दौड़लि ।

किरणके एहि डेरामे अयला दोसर मास बीति रहल छलैक । दू मास पूर्व प्रभा एकाएक दुखिताहि भ' गेल छलैक । पेटमे जनमारा दर्द उठलैक । डाक्टर कहलकैक जे एपेण्डिसाइटिसक आपरेशन कराब' पड़तैक ।

प्रभा एकसरि छलि । ओझाजीक ड्यूटी रेलवेमे, रिलीविंग हेण्ड । आइ एत' काल्ह ओत' । माय-बाप कहलथिन, नहि जानि, कहिया कोन प्रयोजन पड़ि जानि । कनियके पहुँचा दहुन ।”

किरण आवि गेलि एहि डेरामे : तकर दू मास बितलैक, आपरेशन एखन घरि नहि भेलैक अछि । आब तँ दर्दो नहि होइत छैक । सैकड़ो एण्टीवायटिक कैपसुल खोआ देलकैक डाक्टरबा सभ । आब कहैत छैक—एपेण्डिक्स नहि, इलियाक एबसेस छल । कैपसुलसँ सुखा गेल ।

मुदा घाओ सुखयलैक वा नहि, किरण नीक जकाँ सुखा गेल छैक । डुब्बरि तँ पहिनो बड़ छलैक, मुदा एहि बीचमे एकदम निष्प्रभ भ' गेल छलैक । टोकला पर टारि दैत छलैक ।

—आब अहाँ चश्मा लगाउ ।

ओकर एना सुखयबाक कारण प्रकाश जनैत छल । बिना कारण, बिना कष्टक ओ सुखायलि जा रहल छलैक । कारण प्रकाश जनैत छल । जहिया एहि डेरा पर आयल छलैक वेहरा उत्साहसँ चमकि रहल छैक । रातिक एकान्तमे प्रकाशक चौड़ा छाती पर ओघराइत पुछने छलैक—“अहाँ कहिया घरि जायब काज शुरू कर' ।”

—“बस दू-चारि दिनमे बजाहटि अयबाक चाही । प्रकाश पूर्ण विश्वाससँ कहलकैक ।

दू मास पूर्व एकटा सरकारी नोकरीक हेतु प्रकाशक सेलेक्शन भ' गेल छलैक । केरेक्टर भेरिफिकेशनक हेतु फार्म भरि देने छलै । दौड़—बरहा क'

पुलिस था सी० थाइ० डी० रिपोर्ट पठवा देने छलैक । आव बस नियुक्ति पत्रक प्रतीक्षा छलैक ।

—“शुरूमे कते भेटत ?” किरण ओहिना छाती पर ओंधराइत बाजल छल ।

—“अढ़ाई तीन सय ।”

किरण चुप भ’ गेलैक जेना मोने-मोन किछु सोचि रहल होइ ।

“बहुत कम अछि ने ?” प्रकाश टोकलकैक ।

—“नहि तँ । शुरू-शुरू मे कोन कम अछि ? आरो नीक कतहु भेटि जायत तँ छोड़ि देबैक ।

—“अहाँ चला लेब एतबा मे ?” प्रकाश प्रश्न कयलकै ।

—“नीक जकाँ ।” किरण उत्साह मिश्रित विश्वाससँ बाजल ।

—“सय-पचास गामो पठाब’ पड़त ?” प्रकाश चेतौलकै ।

—“सेहो भ’ जायत ।” किरण ओहिना विश्वास पूर्वक बजलकै ।

—“बड़ चतुर गृहिणी छी तखन तँ अहाँ ?” ओकर पीठ पर मुक्का मारैत प्रकाश हँसल ।

—“अच्छा बाबा, छी चतुर गृहिणी । मुदा एना हड्डी-गुड्डी किएक तोड़ि रहल छी ।”

किरण सत्ते बड़ प्रसन्न छलैक । गुनगुना रहल छलैक । अपन देह पर ओकर स्पर्श अनुभव क’ रहल छल प्रकाश । ओहो दुलारि देलकैक ओकरा ।

एकाएक किरण कोनो निश्चयसँ तनिक’ बैसि रहलकै—“मुदा पहिल दरमाहा हमरा देब’ पड़त । ओहि मे सँ एक्को पाइ नहि देब ।”

—अच्छा बाबा देब । मुदा की हेतैक ओहि रुपयाक, कने हमहूँ तँ सुनी ?

—“अहाँ लेल कपड़ा सिआयब, जूता लेब । केहन फाटल कपड़ा पहिरने बसल चट्टी घिसियबैत इन्टरम्यूमे जाइत छी ।”

प्रकाश मुग्ध भ’ गेल ।—आर लग चीचि कहलकै—“आर की करब ?”

कोनो उत्साहित नेना जकाँ किरण बाजल—“एकटा बढ़ियाँ डेरा लेब । ओकरा खूब सजायब । तलन एकटा रेडियो लेब आ नीक-नीक फर्नीचर । नहि, नहि, रेडियो, फर्नीचर बाद मे लेब । पहिने एकटा गाड़ी लेबैक, बेबीक हेतु जाहिमे बैसि ओ ओर साँझ घूमत ।”

प्रकाश खँशीलकै—“मुदा गाड़ी कने पैघ लेब’ पड़त । बेबीक संग बेबीक मायो बैसतैक ओहिमे ।”

“जाउ, हटू ।” किरण लजाक’ ओकर छातीमे घुसिया गेलैक ।

.....दोसर कोठलीमे बेबी जोर-जोरसँ कानि रहल छैक । एखन एहिवा कनतैक । किरणक दूध सुखा गेल छैक । छ मासक अछि आ मायक दूध सुखायल । किरण बहुत रास बेबीफुड आ ड्राप्सक पुरजा लिखा चुकल छैक, मुदा प्रकाश एखन धरि एकोटा नहि आनि सकलैक अछि ।

बेबीक पैराम्बुलेटर सेहो नहि आबि सकलैक । ने नव डेरा भेटलैक, ने प्रकाशक नव-नव कपड़ा बनलैक । एहि डेरापर अथवाक दसम दिव खबरि अयलैक—नियुक्ति पत्र नहि भेटतैक । ओ अण्डरएज अछि ।

प्रकाश सुन्न भ’ गेल । अण्डरएज डिटेक्ट करवाक ई नव तरीका छलैक । ने इन्टरव्यू कालमे देखलक आ ने सेलेक्शनक काल । प्रकाश मोने-मोन हजारो गारि देलकैक ।

ओकरा हताश देखि किरण साहस देलकैक—जाय दियो । अहाँकेँ तँ मोने नहि छल ई नोकरी करवाक । हमहीं जिद कयने छलहुँ ।”

मुदा किरण सुखायल जा रहल छल । कारण प्रकाश जनैत छल । बेबीक पैराम्बुलेटर नहि अयलैक । किरणक दूध सुखा गेल छैक आ बहुत रास लिखल पुर्जा प्रकाशक पाकिटमे पड़ल छैक कहियासँ ।

डेढ़ वर्ष पहिने जहिया प्रकाशक विवाह भेल रहैक, ओकर गिनती होनहारमे होइत छलैक । उज्जवल भविष्य छलैक लोकक दृष्टिमे । वर्षे दिन बाद बेबी आबि गेलैक । आ ओही दिन अखबारमे एम० ए०क रिजल्ट सेहो आबि गेलैक । छः मासमे एकटा छोटछोन नोकरी वहि ताकि सकल प्रकाश ।

चारिटा इन्टरव्यू देने छल—तीनटा लेक्चररशिपक आ एकटा सरकारी कार्यालयक हेतु । दू ठाम बिना भेकेन्सीक बिज्ञापन भेल रहैक, आफिसक अविय-मियता प्रशस्त करवाक हेतु आ तेसर ठाम एकटा मंत्रीक सारक नियुक्ति भ’ गेल रहैक, इन्टरव्यूसँ पहिने ।

चारिम नोकरी ओकरा भेटि गेलैक । किरण बेबीक लेल पैराम्बुलेटर पसिन्न कयलकै, नव मकाष देखलकै । बड़ प्रसन्न छल ओ ।

प्रकाश खण्डर एज भ' गेल। ओ पच्चीसममे पयर देने छल आ अधिकारी वर्ग कम से कम पच्चीस पूर उम्मीदवार चाहैत छलाह। मुदा, एहि अनिवार्य शर्तक परीक्षा सेलेक्शनसँ पूर्व क' लेबाक गलती ओ लोकनि किएक करितथि। सभ तँ अपने हाथ छलनि।

दोसर कोठलीमे बेबी कनिते जा रहल छल। जकरा चुप्प करयबाक चेष्टामे किरण जोर-जोर सँ चिचिया रहल छलैक—“चुप्प करमघट्टी बिछाओन पर नहि रहती, हरदम क्यो टडने रहौन, जेना आर कोनो काजे नहि अछि हमरा। बाप चारिटा नोकर जे रखने छथिन.....”

प्रकाशकेँ इच्छा भेलैक जे किरणकेँ कहैक जे बेबी केँ एम्हर द' जाउ, हमरा लग। मुदा कण्ठलें बकार नहि फुटलैक।

तेसर दिन तरुण अयलैक। प्रकाश सभकेँ कहि देने रहैक ओकरा बारेमे.....।

कनेके कालमे तरुण सभसँ हँसि मिलि गेलैक। बेबीकेँ कोरामे खेलबैत रहलैक, किरण सँ बेर-बेर हँसी करैत रहलैक। बेबी ओकर पण्टकेँ भिजा देलकै तयो ओहिना खेलबैत रहलैक।

प्रकाशकेँ ओ दिन मोन पड़लैक जहिया कपड़ा कने छू देला सँ तरुण बिगड़ि उठैत छलैक। ओकरा एके टा पण्ट रहैत छलैक जकरा चिन्त खीचि ओ पहिरैत छल। आब ओ नीक कमाइत अछि। पढ़ाई त' मैट्रिकेक बाद छोड़ि देने छल मुदा एकटा नीक फर्ममे मेडिकल रिप्रजेन्टेटिव भ' गेल छल।

तरुण कहलकै—भौजी त' नीक खनने छै प्रकाश, मुदा हमरा एक टा संदेह भ' रहल अछि। तोहर पहलवाजी डिजाइनक संग एहन छड़ीकेँ शहर बाजारमे देखि लोक सोचैत हेतौक जे तो' हिनका विवाहिक' नहि, भगाक' ल' जा रहल छहुन आ बेचारी डरक मारे मदति लेल चिचिआइयो ने रहल छथि।

तीनू गोटे केँ तेहन हँसी लगलैक जे हँसैत-हँसैत पेट दुखाय लगलैक।

जाइत काल तरुण कहलकै—त' परसुक्का प्रोग्राम निश्चित। परसू तो' भौजीकेँ ल' क' दानापुर आवि रहल छै। माय देख' चाहैत छथि भौजीकेँ दानेपुरमे अछि अखन बड़की बहिन लग।

तरुणकेँ रिक्सा पर बैसा जखन ओ घुरल त' कोठलीमे भ' रहल गप्प सुनिक' पयर बाहरे थकमका गेलैक। ओझाजी कहि रहल छलथिन—मास दिन सँ प्रकाश बाबू कहैत छथि जे बेबीकेँ देखयबा' लेल रुपया नहि अछि। मुदा दानापुर जयवाल बातपर तैयार भ' गेलाह।

—“भैया” तँ एहिना कहैत छथि सभ दिन जे एको पाइ नहि अछि, मुदा सेर-सपाटामे सैकड़ो रुपैया बूकि दैत छथि।” प्रभा बाजि रहल छल।

—“बुकैत नहि छथि तँ टाका होइत की छति? सय पचास त' रेडियो आ मैगजीन सभसँ भेटिये जाइत छनि।”

प्रकाश चुपचाप दोसर कोठलीमे घुरि गेल। ओ जनैत छल, सभटा गप्प किरणकेँ सुनाओल जा रहल हेतैक। ओकरा किछु दिन पहिलुका गप्प मोन पड़लैक। सप्ताह भरि दौड़लाक बाद गामक सभटा तात्कालिक समस्याक समाधान क' जाहि दिन पटना जाय चाहैत छल, आइन्तमे खूब बहस भ' रहल छलैक। ओ ओहिमे सम्मिलित न हे छल, मुदा सभटा सुनि रहल छल।

ओकर छोट भाइ मैट्रिक कयने छलैक एहि साल। कालेजमे नाम लिखा देल गेल छलैक। खर्चक हेतु ओ मासमे डेढ़ सय माडि रहल छलैक, मुदा माय-बाबू एक सयमे चलाव' कहि रहल छलथिन।

बिगड़िक' प्रमोद बजलैक—“भैयाकेँ तँ सभ दिन डेढ़ सय-दू सय बिन मडने देलियनि। हमरा बेरमे एक सय मे आँखि लगैत अछि।

बाबू बुझबैत कहलथिन—“देबामे कहाँ आपत्ति अछि हमरा। मुदा आइ-काल्हि हाथ एकदम सिकस्त अछि। प्रकाशक नोकरी लाग' दहक, तखन जे मडबह, देबह।”

“लागि चुकलनि नोकरी हुनकर। साल भरि सँ तँ सुनि रहल छी। आ नोकरी लगलो सँ की? लेब रुपैया हुनू हाथे? पहिने अपन परिवारक बोझ तँ उठाबथु।” प्रमोद उदण्डता पर उतरल छलैक। माय-बाबू चुपचाप सुनि लेलथिन। हुनका अपनो भरिसक एकरे डर छलनि। प्रमोद भरिसक हुनके मोनक बात बाजल छलनि। एना स्पष्ट रूपसँ तँ नहि मुदा एहने गप्प सभ साल भरिसँ एहि घरमे ओ सुनि रहल छल। आइ प्रभा ओ ओझाजी सेहो बाजि रहल छलथिन। सभ एक्के बात बाजि रहल छलैक।

अनचिन्हार अप्पन

[१०१]

गामसे बिदा होइत काल कतहुँ सेँ पैच आनि दस टाका ओकरा हाथमे दैत माय कहने छलैक —“कहुना किरायाक इन्तजाम कयने छियह, मुदा चिन्ता नहि करिह’ । जहिना इन्तजाम हैत आर पठा देबह । मुदा एना कतेक दिव चलतह ? कोनी काज घ’ लैह ।

प्रकाश यह सोचि रहल छल । कोनो काज शुरू क’ देबाक चाहियैक । कोनो काज, केहनो काज । सोचबाक-विचारबाक आब समय नहि छलैक ।

ओकरा घुरबामे बेसी देरी देखि किरण कोठलीसँ बेबीके कोरामे छेने बहरयलैक । ओकरा बिछाओन पर पड़ल देखि चुपचाप लग आबि बैसि रहलैक । प्रकाश सभटा मुनि गेल छलैक, ओ बुझि गेलैक ।

किरण लगमे बैसल ओकर माथक केश छिड़ियबैत रहलैक । प्रकाश बेबीके छातीपर बैसा खेलाइत रहल । दुनू बातके टार’ चाहैत छल । अन्तमे किरण मौन तोड़लकै—“अहाँ जयबाक बातपर हँ किएक कहलियैक ? रुपैया अछि ?”

“भ’ जायत ।” प्रकाश ओहिना पड़ल कहलकै ।

—“कोना ?” किरणके विश्वास नहि भेलैक ।

“काल्हि एकटा कथाक रेकार्डिंग अछि । पच्चीस टाका भेटत !”

किरण फेर कोनो प्रश्न नहि कयलकै ! प्रकाश बेबीक संग खेलाइत रहल । बेबी ओकर नाक अपन दाँत विहीन मुँहमे ल’ चिबाब’ लगलैक ! ओकरा गुदगुदी छगलैक, ओ हँस’ लागल !

किरण बेबीके लेब’ चाहलककै । ओ मना कयलकै “खेलाय दिखी ।”

X X X X

यइ मनहूस दिन छलैक—गर्मीसँ चिपचिप करैत ।

प्रकाश दिन भरि कोठलीमे पड़ल रहल । साँझ बितलैक आ राति सेहो आबि गेलैक । भोरे आइ० ए० एस०क परीक्षाक परिणाम बहार भ’ गेलैक । सफल व्यक्तिक सुचीमे प्रकाश दू-बेर तीन बेर अपन रोल नम्बर ताकि गेल । मुदा ओकरा निराश होब’ पड़लैक । ई ओकर पहिल आ अन्तिम वर्ष छलैक । अधिसा सातक हेतु एज नहि छैक ।

ओकरा सफलताक आशा छलैक । ई वर्षका ओकरा नीक जकाँ तोड़ि देलकै ! दिन भरि कोठलीमे नुकायल रहल । बाकी एक मण्टा लेस जा क’ रेकार्डिंग करा बायल ।

दू चारि टा सम्बन्धी आ शुभ चिन्तक शान्तवना देव’ सेहो अयलथिन ! जाइत जाइत किछु उपदेश सेहो—“परिश्रम करू ! बिना परिश्रम कम्पीट करब मस्किल ! ई बिस्सा-फिस्सा लिखब छोड़ू किछु दिन ।”

प्रकाश किछु बहि बाजल । ओ पिछड़ि गेल छल आ पछड़ि क’ असल व्यक्तिके सभ किछु सहबाक चाहियैक ।

राति क’ जखन किरण बिछाओन पर अयलैक त’ बाजब आवश्यक भ’ गेलैक—भोरे उठि क’ चाह जलखँ बना लेब । भोरे सात बजेक गाड़ीसँ जायब आ साँझ घरि घुरि बायब ।

किरण किछु नहि बजलैक । ओ बुझलक जे किरण मुनि लेलक अछि । सुतबाक उपक्रम कर’ लागल !

—“अहाँ जगतक बहिनसँ बीस टाका पैच छेने छियैक ।” किरण एकटा दोसरे सवाल कयलकैक ।

—“हँ ।” ओ कहलकैक ।

—“तँ फेर घुरोलियैक कियैक ने ?”

किरणक प्रश्न आ प्रश्न करबाक ढंग ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक ।

—“घुरा देबैक । इन्तजाम होब’ दियोक ।”

—“आ प्रभाक दस रुपैया ?”

किरण जेना जाता पसारने छलैक ।

—“ओहो घुरा देबैक ।”

—“घुरा देबैक नहि, काल्हि भोरे घुरा दियोक । हमरा लोकनि दावापुर नहि जायब ।” किरण निर्णयक स्वरमे बजलैक ।

—“किएक ?” प्रकाश कतेक बिसिबाइत पुछलकैक ।

—“किएक की ? अहाँ के बहुतक संग घुमवा-फिरवा लेल टाका अछि, मुदा पैच सभयवा लेख बहि । सभक टाका घुरा दियोक ।” किरण अपन बात पर बड़लि छल ।

—मुदा हम तरुणके वचन देने छिएक।

—“अहाँक वचनक कोन मूल्य ? वचन तँ अहाँ रुपैया लेत काल देने छलियँकजे तुरंत घुरा देब। इ मास भ’ गेलैक। वचन तँ सभ दिन तोड़िते छी, एकटा बार सही !” किरण किछु कठोरता सँ बजलैक।

बात बड़ तीत छलैक मुदा ओ पीबि गेल। आइ ओ लड़’ नहि चाहैत छल। ओ टूटल छल। सहानुभूति चाहि रहल छल। किरण ओकरा बार तोड़ि रहल छलैक।

—हमर वचनक कोनो मूल्य नहि ? ओ व्यथित होइत पुछलकै।

—“हूँ हूँ, अहाँक वचनक किछुओ मूल्य नहि। वचन तँ एकटा अहाँ अपन बापोकेँ देने छलियनि जे पढ़ि-लिखि अहाँक भार हल्लुक करब ! मुदा अखन धरि अपने बोझ बचल छी ! वचन अपन मायोकेँ देने छलियनि जे एहन पुतोहु देबो जे तोरा चुलहा चक्कीसँ फुरसति देतौक। मुदा अहाँ एकटा फेशनेबुल मेम उठा अनलहुँ। वचन तँ एकटा अपन भाइयो-बहिनकेँ देने छलियँक जे ओकर हक नहि छिनबैक। ओकर आश्रय बनबैक मुदा अखन धरि अहाँ अपने आश्रय ताकि रहल छी। वचन तँ एकटा अपन पत्नियोकेँ देन छलियँक... ‘जाय दिअ’। कतेक गनायब, अहाँ उलटे अपन असमर्थता सुनाव’ लागब।

प्रकाशकेँ लगलैक जेना घोखासँ कोनो दोसर स्त्रीक बिछाओनपर आवि गेल हो। किरणक चेहरा ओकरा एकदम अनचिन्हार लगलैक। उठि क’ कोठलीसँ बाहर आवि गेल। राति बहुत बीति गेल छलैक—उमसल राति। ओ निरुद्देश्य सड़कपर बीआइत रहल। लगत छलैक जेना कोठलीमे घुरिते ओकर साँस बन्द भ’ जेतैक, ओ अनचिन्हार वातावरण ओकरा वरदास्त नहि हेतैक।

ओ बेर-बेर माय, बाबू, भाइ, बहिन किरण, बेबीक आकृति मोन पाड़बाक चेष्टा कयलक मुदा किछुओ मोन नहि पड़लैक। लगलैक जेना ओ एकदम एकसर अछि। संसारक सभ चेहरा ओकरा अनचिन्हार लागि रहल छलैक। परिचित चेहरा क्यो नहि, एकोटा नहि। प्रकाश सड़कपर बीआइत रहल—अनागत आ उद्विग्न।

ओरुकबा चमक’ लगलैक। प्रकाशक थाकल, हारल देह डेरा दिस घुरलैक। ओरुका हवा थाकल देहकेँ सुखद लागि रहल छलैक।

कोठलीक दरबज्जा ओहिना खुजल छलैक आ भीतर ओहिना बल्ब जड़ि रहल छलैक। प्रकाश कोठलीमे आवि गेल। किरण पेटकान देने सूतलि छलैक। बेबी चित्त पड़लि इजोत दिस तकैत हाथ पयर फेकि रहल छलैक। ओकरा देखिते हँस’ लगलैक। बिनु दाँतक मुँहमे ओ हँसी बड़ नीक लगलैक प्रकाशकेँ आ लगलैक जेना किछुओ अनचिन्हार नहि छलैक।

सभ परिचित छलैक, सभ अपन छलैक। ओकरे बेटी हाथ-पयर फेकैत हँसि रहल छलैक।

ओ झुकि क’ बेबीकेँ कोरामे उठा ओकर मुँह, गाल, आँखि, कान सभकेँ चुम्मासँ भरि देलकैक।

आ फेर दहिना हाथ बढ़ा सूतलि किरणक पीठ सोहरा देलकै—अपनस्व आ स्नेहक स्पर्शसँ।

ओकर स्पर्श मात्रसँ किरणक सम्पूर्ण शरीर थर-थराक’ हिलि गेलैक। ओ सूतलि नहि छलैक, कानि रहल छलैक। ●

सितम्बर १९६६

धमकी

एना नुका क' कत' पड़ावल जाइत छै, री ? आब एहि अभगली काकीक टुटली मड़िया मे पयरो दैत लाज होइत छी ? पहिने तँ एहि आंगन सँ ताघरि नहि जाइत छलै जाघरि अपन आंगनसँ तीन-तीन बेर बजाहटि नहि होइत छली ! हमरे मनसाक जरल-पाकल कतेक स्वादि-स्वादि क' खाइत छलै ? अही लतामक गाछ पर, अही शरीफाक फुनगी पर दिन भरि छड़पैत रहैत छलै ? आब तोरा कोना मोन रहतौक ओ सभ गप्प ? आब तँ एकोबेर हुलकियो क' नहि देखैत छै जे एहि आंगन मे, इहो देखवा लेल जे काकी जीविते अछि वा मरि गेल ? किएक देखबै आब ? आब त' तो बड़का लोक भ' गेल छै—हाकिम !

की कहलै ? हमरा लग कोना हाकिम बनबै, हमरा लग तँ आइयो ओतबेटा छै । से तँ ठीके कहै छै रे । हमरा लेल तँ आइयो ओतबेटा छै । कोरा मे खेलौने छियौ ! नडटे आंगन मे खेल'इत देखने छियौ । तोरे किएक, तोहर बापोके ! जहिया पहिल देर एहि आंगन मे पैर देने रही, तोहर बापो नडटे खेलाइत छली ! खुब गुलथुल रही । फुलल-फुलल आ थुलथुल देह ! सब कचकचवैक—मोटमल ।

तोरा हँसी लगै छी ? आइ तँ विश्वासो ने हेतौक जे कहियो तोहर बाप एहन मोटायल रहौ । लगातार बिमारीसँ कोना सुखा क' काँट भ' गेल छी । मुदा हमर विश्वास कर, कहियो रहौ तोहर बाप एहन ! मुदा ! भेटव कठिन छलौक ! किछुओ मोनक खिलाफ भ' जाउक तँ अन्हड़ बिहाड़ि बनि जाइत छलै । सभटा नोचि-नाचि, उजाड़ि-पजाड़ि फेकि दैत छलै । सभटा थुरी लतामक आंगन ने पथार लगा दैत छलै । सभ डराइ छली तोरासँ आ नाम राखि देने रहौक—गोरा पल्टन । कोरे सभ सन उज्जर-धपधप आ ओहने रोब दाब । हम तँ ओहो दिन बुझि गेल छलियोक जे बड़का हाकिम बनबै ।

की कहबै, सब हमरे आशीर्वाद सँ भेल छै ? से तँ छौहे हमर आशीर्वाद

तोहर संग हरदम । मुदा तँ एना ठाढ़ किएक छै, बैसि जा ! कनेक नीक जकाँ देखबौक ! आब आँखियो अन्हरा गेल अछि ! नीक जकाँ सुझितो वहाँ अछि ?

की कहलै ? नहि सुझैत अछि तँ चरखा लेने किएक बैसल छी ? लिय', आर सुनू ! चर्खा नहि काटव तँ पेट कोना चलत ? आर नहि अछि किछुओ संग मे, मुदा पेट मे अन्न तँ चाहबै करो । आ सिद्ध-असिद्ध किछुओ जुटय तकरा लेल चर्खा छोड़ि दोसर साधने कोन अछि ? अही अन्हरायल आँखिये तूर तुनेत छी, पीर बनबैत छी, सूत कटैत छी आ अही बूढ़ टाँके अपने पोला ल' खादी भण्डार घरि जाइत छी । तँयो की भेटैत अछि ? जुबनकी छोड़ी सभक मोटका पोला के नीक नम्बर भेटि जाइत छैक आ बुढ़ियाक नीकहा पोला छँटा जाइत छैक ! कपार तँ संगे लागल रहैत अछि ।

की कहलै ? हिस्सा ? सम्पत्तिये की छल जे हिस्सा भेटैत ? आ जेहो छल से तोहर मास्टर काका हथिया लेलथुन । हमरा हिस्सा मे किछु नहि रहल । भेटल एकटा फूसक खोपड़ी, छोट सन आडन आ आडन मे एकटा लताम आ एकटा शरीफाक गाछ ! तोरा कहाँ मोन हेतौक ई सभ ? बहुत छोट छलै ताहि दिन ।

तोरा तँ आरो बहुत रास गप्प नहि मोन हेतौक । इहो नहि बूझल हेतौक जे तोहर ई अभगली काकी जीवनक पचास वर्ष कोना एहि गाम मे बितौने छौक । सुनबै हमर खिस्सा ? तो तँ अपन सन्तान जकाँ छै । तोरासँ की लाज ? कथीक पर्दा ?

की कहलै ? सुनबै ? तँ फेर बैसि जा नीक जकाँ । ई ले, चारिटा लताम छोड़, खाइतो रह ! बड़ पसिन्न रहौ तोरा ई लताम ! नहि जानि, आब नीक लगतौ वा नहि ?

की कहलै ? नीक छी ? त' खो । आर अछिये की जे देबो आगू मे । सूर्य माथ पर आबि गेलाह, मुदा चूल्हियो बहि पजारने छी ।

की कहलै ? विवाह ? विवाह कोना मोन रहत ? पाँचे बरखक त' रही । के ? तोहर काका ? ओ कोना मोन रहताह ? विवाहे यात्रा मे तँ देखने रहियनि ।

खाली एतना मोन अछि जे खूब गोर रहथुन । सभ मयो दिन भरि घेने रहनि । धिया-पूता सभ भीसर भीसर करैत रहैत छलनि । हमहुं ओहि गोल मे मिलि जाइत छलहुं आ 'भीसर भीसर' कर' लगैत छलहुं । माथ झीकि क'ल' अनैत छलि, दोसर घर ल' जाइत छलि आ डटैत छले—“तों किएक भीसर कहैत छथुन ? ओहि घर किएक जाइत छे, तोहर त' वर छथुन ।” हम की जान' गेलियंक वर, फेर पड़ा जाइ ओही घर । अकच्छ भ' सभ छोड़ि देलक । हम दिन भरि हुनके लग बैसलि रही ।

तोरा हूँसी संगैत छौक मुदा हमर हूँसी तं भदवारि रौब जकां देखिते बिला गेल छल । विवाहक यात्रा तोहर काका घुरलथुन, सभ भरल मोने विदा कयल-कनि ! हमरो उदास उदास लागल ! सभ चहल-पहल खतम ! आ तकर बरखे दिनक बाद आइन मे कसाराहेटि मचि गेल । माय छाती पीटैत आ बाबू माथ पर हाथ रखने बैसल ! आइन मे भीड़ आ सभक मुँह तकैत अवाक ठाढ़ि हम जखन काकी हमर चूड़ी फोड़ि देलक आ हजमा के बजाक' माथक केश कटा देलक त' हमहुं चीत्कार कर' लगलहुं । केहन मुन्चर चूड़ी आ केहन घुघरू सन केश छल ! हम कनैत कनैत आइन मे ओघराइत रहलहुं । मुदा ताहूँसे बड़का काण्ड भेल आइक दिन । ब्राह्मण लोकनि चूड़ा-दही खा रहल छलाह । हम जिद्द ठानि देलियंक, हमहुं पांती मे बैसि क' पात पर चूड़-दही खायब । माय पहिने मनौलक आ फेर दूनु हाथे धुन' लागलि । मुदा बाबू मायक हाथ छोड़ाक' पात पर बैसा देलनि—“आब जानेसां मारि देबंक की ? खाय दियोक ।” माय कनैत घर पड़ा गेलि आ बाबू मुड़ी मुकौने ठाढ़ रहलाह ! हम खूब गव्वर-गव्वर चूरा-दही खयलहुं !

तोरा फेर हूँसी लागि रहल छौक ! कोना ने लगतीक । काजे तेहने कयने रही हम ! स्वामीक आइमे पांती मे बैसि क' गव्वर-गव्वर चूड़ा-दही खयने रही । ते देखि ले, आब फुटहो जुड़ब कठिन भ' गेल अछि ।

की कहलें ? एहि गाम मे कहिया अयलहुं ? पन्द्रहम वयस रहय तहिया । विधवा रही, मुदा बाबू कहियो तकर बोध नहि होब' देलनि । कहियो सासुर नहि जाय देलनि । तोहर मास्टर काका बेर-बेर दौड़ कर' लगलथुन, नचार भ' बाबू के विदा कर' पड़लनि । पन्द्रहम वयस मे द्विरागमन भेल आ स्वामीविहीन

सासुर मे प्रथमबेर पयर देलहुं । ने बाजा-गाजा, ने हर्षोल्लास ! मृत्यु सन सर्व छलैक ओ द्विरागमन !

बाप रे बाप ! ओहि दिनमे तोहर ई गाम रहौक । आइ बुढ़-बुढ़ानुस तोरा सभ पर हँसैत छौक जे धिया-पूता सभ बिनु कहल भ' गेल, उदण्ड आ अवारा भ' गेल । मुदा तोरा लोकनि तं हुनका सभसँ सात कच्छे नीक छे । बाहर पढ़ैत लिखैत छे, नौकरी करैत छे, जे मोन मे अबैत छौक, करैत छे । मुदा अपन घरमे अपने तं नहि थुक्' छे ! ओ जमीन्दारीक जमाना रहैक ! तोरा लोकनि मालिक आ हमरा लोकनि भगिनमान ! चारूकात रोबदाब ! नोकरनी-बनिहारिनीक कथे कोन, सर-सम्बन्धीक सेहो लेहाज नहि रहैक ! सभ गामे मे रहैक, नौकरी करब छानक खिलाफ बुझैक । धनक कमी रहबे ने करैक, आ ने खयबा पिबाक चिन्ता । मस्त साँड़ जकां बोआयल फिरय ! मुदा ई सभ तो कतहु लिखिक' छपवा नहि दियहिक । गामबला सभ ओहिना तोरा पर बिगड़ल रहैत छौक ! सभक नीक-बेजाय लिखिक' छापि दैत छहीक । मुदा ई सभ नहि छपा दियहिक, तोहेर संग हमरो जानक आफत भ' जायत ।

हँ, त' की कहि रहल छलियोक ? हँ, पन्द्रहम वयस मे एहि गाम मे आयल रही ! पन्द्रहम वरख आ ओ रूप ! आइ ई जरल चेहरा तोरा देखि क' तोरा विश्वास नहि हेतीक जे कहियो एहू चेहरा पर रूप अटैत नहि छलैक । जे देखय आइनक चक्कर लगब' लागय । गामक सम्बन्धे ककरो भौजी, ककरो काकी । मुदा तकर ककरा लेहाज ? सासु नहि, बूढ़ ससुर मतिभ्रम मे पड़ल, ननदि सासुर वसैत आ एक मात्र देखोर गामे गाम मास्टरी करैत ! मास-दू मास पर गाम आवथि । लागय जेना सौंसे गाम दिने-देखारे नोचि क' खा जायत ।

नोचवा लेल पहिल हाथ घरे से बढ़ल । ससुर सभ राति पयरमे तेल लगबावथि । कहियो संकोच नहि होअय । बूढ़ रूप ससुर । मोन लगा क' सेवा करी । एक राति वैह ससुर हाथ पकड़ि झीक' लगलाह । हाथ छोड़ा भागि पड़लहुं । लागल जेना बिनाओन पिलुआ सँ भरल खाधि मे खासि पड़ल होइ आ सौंसे देह सहनह करैत हो पिलुआ सभ । घृणासँ जी ओकाय लागल ।

की कहले? बाबू लग किएक नहि गेलहु? कोना जइतहु? की कहितियनि? कहितियनि जे हमर ससुर.....? चुप्पे रहि गेलहु। उनटे ससुरे बाज' लगलाह। आब रातिके तेल लगाब' नहि जाइत छलियनि, ते' दिन राति गारि शाप देब' लगलाह। कहियो बेटा घर अबधिन तँ दस हजार शिकायति जे ओ भरि दिन किलोल करैत छथि आ हम रंग रससमे लागल रहैत छी। तोरा लाज होइत छोक एहन बात सुनिक'। मुदा आइ कह' बंसल छियोक तँ सभ कहबोक। बहुत दिनसँ सभ किछु भीतरमे औना रहल छल। आइ तोरा कहि दैबोक, तँ मोन हल्लुक भ' जायत।

हँ, तँ एहिना पाँच बरख बीति गेल। बूढ़ ससुर हमरा गारि-शाप दैत संसार सँ विदा भ' गेलाह। मरितो काल हमरा क्षमा नहि कयलनि। मुदा तो' विश्वास कर, हमरा बड़ दुःख भेल हुनक मरबाक। केहनो छलाह, आइनमे पड़ल रहैत छलाह, तँ एकटा विश्वास रहैत छल जे एकसरि नहि छी, एकटा पुरुष आइनमे अछि। हुनकर मृत्युक बाद आइनमे एकसरि रहि गेलहु। बीस बरखक विद्यवा। देयोर परदेसी। मास-दू-मास पर घर आबथि तँयो मोन चौकल रहय। देयोर छलाह, मुदा वयसमे तँ दू बरख जेठे छलाह। नहि जानि, कखन मोन बदलि जानि।

एकटा रस्ता भेटि गेल। छोट बहिन कमला विवाह जोगरि भ' गेलि छलि। बाबूकेँ कहना मनाक' तोहर मास्टर काकाक संग ओकर विवाह करा देलियंक। सोचलहु जे दोसर घरक बेटी आओति तँ उपद्रव कराते, लांछन लगाओति। कमला छोट बहिनक दुख बूझति।

कमला माय बनलि। पहिने एकटा बेटी, फेर दूटा बेटा, फेर दूटा बेटी आ तखन फेर एकटा बेटा। घर भरि गेल। ओकरे सभक मुँहक देखि हमरो समय कट' लागल।

धोया-पूता सभ पैघ भेलैक तँ घरमे तंगी आर बढ़ि गेलैक। एकटा स्त्रीक पेट सभकेँ भार लाग' लगलैक। बहिन झगड़ा कर' लागलि आ देशोर लाल-जूतासँ मार' लगलाह। तंग भ' फराक भ' गेलहु। भेटल एकटा फूसक खोपड़ी, छोट छीन आइन, आइनमे एकटा लताम आ एकटा शरीफाक गाछ। ने एक्कोटा वर्तन, ने एक्को चुटकी अन्न। तँ तँ हरदम अही अन्नमे देखने छे, तो' की जान' गेलें ओ सभ गप्प। आरो बहुत रास गप्प छँक, तोरा रेहो कहाँ बूझल हेतोक?

नहि बूझल छीक तँ आब बूझि ले। आइ सभ कहबो। आब सहि नहि होइत अछि। हमर निसाफ कर। बिना एको चुटकी अन्न आ एक्कोटा पाइक एहि आइनमे आयलि रही। तँयो निराश नहि भेलि रही। हाथमे यश छल। दस घर खयनाइ बनौलहु। तोरो मुड़न आ उपनयनमे सभटा हमहीं कयने रहियोक। दसटा टाका जमा भेल। चर्खा लेलहु आ सूत काट' लगलहु। तहियासँ आइ धरि ककरो आगाँ हाथ नहि पसारलहु अछि। बेर-कुबेर तोहर मास्टर काकाक मदति सेहो कयलियनि अछि। आखिर हमरे देयोर छथि। हमरे बहीन थिक। ओकर परिवार पैघ छँक, अपने घरक खर्च नहि जुटैत छँक, ओकर कोन दोष? अभावमे मति भ्रष्ट होइते छँक।

हमर शिकायति ओकरासँ नहि, तोहर बाप-पित्तीसँ अछि। बड़ मालिक कहबैत छथि, हुनका लोकनिके ई शोभा दैत छनि?

तो' नहि बुझले? तँ ले, आब साफ-साफ कहैत छियोक। दस वर्ष चर्खा काटि पाँच सय टाका जमा कयने रही। तोहर मास्टर काका लग नहि रखलहु। रखलहु भोला बाबू लग जे पढ़ल लिखल प्रतिष्ठित लोक छथि, एकटा विधवाक संग बेइमानी नहि करताह। पछिला साल सभ स्त्रिगण सभ बढीनाथ गेल। हमरो बड़ इच्छा रहय। मंडलियनि तँ कह' लगलाह जे खर्चमे पड़ि गेल छी, हाथपर अबिते द' देब। हम हुनकर परिस्थिति बुझलियनि, जिद्द नहि कयलियनि। मुदा आब नीक जकाँ सुझैत नहि अछि। चर्खासँ पेट नहि चलैत अछि एहि महिमे। छौ माससँ मंडैत-मंडैत हारि-गेलहु, कोनो असरिये नहि होइत छनि। परसू कहलनि 'केहन रूपैया? कथीक रूपैया?' लोक सभकेँ जमा कयलहु तँ सभक सोझामे कथा कह' लगलाह। एहि वयसमे की-की नहि कहलनि, ककरो बकार नहि फुटलैक।

मुदा तो' हमर निसाफ कर। हाकिम बनल छे, तँ पहिल फसला घरमे कर। हमर रूपैया हमरा देया दे। तो' चुप किएक छे? नहि छीक साहस? तँ सुनि छे, हमरा साहस अछि। हम चुप नहि रहबोक? एहि वयसमे ओ क' बंसबोक जे आइ धरि नहि कयलियोक। बूढ़ि ब्राह्मणी विधवा भ' क' ककरो, कोनो जातिक घर जा बसबोक। तखन रहतोक तोरा लोकनिक इज्जति।

बाज, हमर निसाफ कर। एना चुपचाप उठिक' पड़ावल कत' जाइत छे? हम खाली घमकिये नहि दैत छियोक। जे कहलियोक अछि, से क' बंसबोक! सत्ते.....

जनवरी १९७०

दुःख

कार्यालयक डाकक मध्य ओहि लिफाफक टेढ़-मेढ़ परिचित लिपि हम देखि लेने छलियैक मुदा तत्काल ओकरा एकटा 'पेपरवेट' सँ दबा राखि देने छलियैक। कार्यालयक सभटा पत्र पढ़ि, चिन्हित क' ओकरा विभिन्न भागमे वितरणक हेतु आदेश द' जखने 'रेकड' क्लर्क' केँ विदा कयलियैक, फेर ओहि लिफाफ पर दृष्टि गेल। मायक पत्र। बड़ बेमनसँ बिना कोनो प्रसन्नताक अमुभव करैत ओहि लिफाफकेँ फाड़ि पत्र पढ़ैत छी। दुइये-चारि पाती पढ़ि मुँह लटकि जाइत अछि। पत्रकेँ बिनु सम्पूर्ण पढ़ने ओहिना छोड़ि दैत छियैक आ एकटा कागज पर छुट्टीक आवेदन लिखि ओकरा टाइपक हेतु चपरासीक हाथे टाइपिंग सेक्सनमे पठा दैत छियैक। दर्राजसँ टाइम-टेबुल निकालि सभसँ पहिने भेट' बला गाड़ीक समय देख' लगैत छी।

तखने दरबज्जाक परदा उठा सेक्सन हेड शर्माजी हुलकी दैत छथि —“भे आइकम इन सर।”

—“कम इन प्लीज।”

शर्माजी भीतर आबियो क' ठाढ़ रहैत छथि, बैसैत नहि छथि।
—“की बात छैक शर्माजी? कोनो विशेष काज?” हम प्रश्न करैत छियनि।

“हँ सर। विशेषे काज ब्रूमू।” शर्माजी ओहिना ठाढ़ रहैत छथि।

—“त' कहू ने। तारतम्य मे किएक पड़ल छी? पहिने बैसू आ तखन कहू जे की बात छैक?” हम हुनका उत्साहित करैत छियनि।

हमरा अनुकूल देखि शर्माजी बैसि जाइत छथि आ पाकिटसँ एकटा कागज बहार क' हमरा दिस बढ़ा दैत छथि।

—“ई की थिक, छुट्टीक दरखास्त?” हम प्रश्न करैत छियनि।

—“नहि सर! छुट्टीक दरखास्त नहि। एकसटेनशक दरखास्त। एही साल दिसम्बरमे 'रिटायर' भ' रहल छी। छोट-छोट धीया-पुता अछि, एकटा

बेटीक विवाह करवाक अछि, कमसँ कम एको सालक एकसटेनसन भेटि जाय तँ...—।”

बीचमे बात काटि हम कहैत छियनि—“अहाँ तँ स्वयं जनैत छी शर्माजी जे एहि व्यवस्थामे ककरो एकसटेनसन नहि भेटैत छैक, एको दिन नहि।”

—“जनैत छी सर। मुदा अपने यदि हेड आफिस स्पेशल केस ब्रूमि रिकोमेण्ड क' दी तँ...—।”

हम फेर टोकैत छियनि—“हमर रिकोमेण्ड कयलासँ की हैत? हेड आफिस नहि मानत, अहाँ नीक जकाँ जनैत छी। आ यदि मानि जायत त' की हैत? एक सालमे धीया-पुता सभ चेतन त' नहि भ' जायत।

—“भ' जायत सर। एक सालमे बहुत किछु भ' जायत। कमसँ-कम कम बेटीक विवाह त' अवस्से भ' जायत।” शर्माजी आशान्वित होइत बजैत छथि।

—“मुदा अहाँक दुनू जेठका बेटा तँ खूब कमाइत छथि, तखन अहाँकेँ चिन्ता कियैक? ओ लोकनि सम्हारि लेताह सभटा जिम्मेदारी। अहाँ किएक बुढारी मे घाम-पसेना बहाब' चाहैत छी?”

हमर प्रश्न पर शर्माजी किछु काल मौन रहलाह आ फेर आस्तेमँ बजलाह—“बेटाक निन्दा नहि करैत छी हम मुदा जखन जिम्मेदारी समानान्तर दौड़ैत छैक, बाप-बेटाक सम्बन्ध नहि रहैत छैक। हमरे धिया-पुताक वयसक ओकरो बहुत नेना सभ छैक। अपने जिम्मेदारी सम्हारय मे बेहाल रहैत जाइत अछि।”

हुनकर उत्तर सुनि हम सोचमे पड़ि जाइत छी। हमरा घुष देखि शर्माजी गिड़गिड़ा उठैत छथि—“हम नहि मानव सर। यदि अपने हमर केस रिकोमेण्ड नहि करब, तँ पयर पकड़ि लेब अहाँक हम” शर्माजी सत्ते हमर पयर दिस हाथ बढ़बैत छथि।

—“ई की करैत छी शर्माजी। हम अवस्स रिकोमेण्ड क' देब अहाँक केस। मुदा गामसँ घुरला पर। आइये हम छुट्टी पर जा रहल छी, बाबूजी बीमार छथि।”

ताबत टाइपिस्ट हमर आवेदन टाइप क' स्वयं उपस्थित होइत छथि। ओहि पर दस्तखत क' शर्माजीकेँ ओकरा हेड आफिस पठा देबाक आदेशक संग

दुःख

अन्य आदेश दे' हम झटपट आफिससे विदा होइत छी । काते मे नवाटर अछि, हम डेग झटकारैत छी ।

बाटे मे कपूरसे भेंट भ' जाइत अछि, संगमे तीनटा अपरिचित युवक । देखिते हमरा दिस लपकैत अछि—“अही” दिस जाइत छलहुँ । हिनका लोकनिसँ परिचय करा दी, ई मनोज वर्मा, बंगला फिल्मक सहायक निर्देशक, ई राजहंस, नव पीढ़ीक कवि आ कथाकार, आ ई नीरेन दास, संगीतकार ।

हमरा लोकनि परस्पर हाथ जोड़ैत छी । कपूर बजैत अछि—अहीसे भेंट करय आयल छलाह सब । बड़-प्रभावित छथि अहाँक लेखनसँ ।” अपन प्रशंसा हमरा नीक लगैत अछि । झट आग्रह करैत छियनि—आउ, आउ, ईरे दिस आउ ।

असमयमे डेरा आयल देखि अकचकायल नोकरके पाँच कप काफी आ पान सिकरेटक आदेश दे' हम ड्राइंग रूममे बसि जाइत छी । हमरा आयल देखि पिकी दौड़ैत देह' मे लपटि जाइत अछि । हमर आदेश पर ओ झट अतिथि लोकनिके नमस्ते करैत अछि, बेर-बेर सभके—नमस्ते अंकल...नमस्ते अंकल । हम सगवँ अतिथि लोकनि दिस तकैत छी । मनोज झट हमरा अनुगृहीत करैत बाजि उठैत छथि—बड़ी स्वीट बेबी है, आओ, मेरे पास आओ ।

एहि बेर पिकी नीक जकाँ हमर पयरसँ लपटि जाइत अछि । ठेलो पर मनोज दिस नहि बढ़ैत अछि । हमरा अकारण क्रोध होइत अछि आ खिसिआयल हँसी हँस' लगैत छी ।

नोकर एहि अप्रिय स्थितिसँ हमरा उबारैत अछि । एकटा ट्रे मे पाँच कप कॉफी आ प्लेटमे पान सिकरेट राखि जाइत छथि । अतिथि लोकनि काफी चुस्कीक संग सिकरेटक धुआँ छोड़' लगैत छथि । पिकी अवसर पाबि भीतर पड़ा जाइत अछि ।

सिकरेटक एकटा लम्बा कश लैत आ नाक मुँहसँ धुआँ छोड़लाक बाद कपूर बजैत अछि—असल बात कहबे बसरि गेलहुँ । आइ साँझ एकटा गोष्ठीक आयोजन कयलहुँ अछि अट्ठीक डेरा पर । किछु आर मित्र लोकनि आयल छथि, सभक आग्रह छलनि अहाँसँ भेंट करबाक । बिन पुछने सभटा तय क' लेलहुँ, माइण्ड नहि करब ।”

“एहिमे माइण्ड करबाक कोन बात छैक । ई तँ खुशीक बात थिक । अवस्से करू गोष्ठी ।” हम उत्साह पूर्वक बजलहुँ, मुदा तखने पाकिट मे राखल मायक चिट्ठी मोन पड़ल आ सभटा उत्साह बिला गेल । कपूर एकाएक हमरा चुप होइत देखि प्रश्न कयलक—“की बात छैक ? कोनो असुविधा ?”

“नहि, असुविधा कथीक । गोष्ठी अहाँ लोकनि अवस्स करू, मुदा हम नहि रहि सकब । आइये गामसँ मायक पत्र आयल अछि । बाबू बड़ दुखित छथि । हम गाम जा रहल छी ।

अतिथि लोकनि समवेत स्वरे सहानुभूति प्रकट करैत छथि आ काँफीक अन्तिम घोट पीबि, सिकरेटक आखिरी कस ल' पान मुँहमे दबा विदा भ' जाइत छथि । काल मम जाइत एकटा आग्रह—“एकटा पत्र अवश्य लिखि देब बाबूजी बीमारीक सम्बन्ध मे । हमरा लोकनिक मोन लागल रहैत ।

अतिथि सभके बाहर धरि अरियाति जहिना कोठली मे पयर दैत छी, श्रीमती बाट छेकि ठाढ़ भ' जाइत छथि—“ई गाम-जयबाक गप्प की कहलियैक ?” कोनो उत्तर नहि दे' हम पाकिटसँ मायक पत्र बहार क' हाथमे दे' दैत छियनि । पत्र पढ़ि ओहो उदास भ' जाइत छथि—“कहिया जायब ?

—आइये, एखने ।

—हमहूँ चलब ?

—जयबाक त' चाही !” हम औचित्य पर जोर दैत बजैत छी ।

आघ घण्टाक भीतरे मीरा तैयार भ' गेलीह । पिकी आ गुड्डूके सेहो तैयार क' लेलनि ! नोकर टैक्सी ल' आयल आ ओकरा डेराक सुरक्षाक आवश्यक निर्देश दे' हमरा लोकनि विदा भ' गेलहुँ । भरि बाट पिकी आ गुड्डू खुशीसँ चहकैत रहल । मीरा सेहो प्रसन्न छलीह ! मुदा टैक्सी जखन सिनेमा होल लगसँ आगू बढ़ल, मीरा उदास होइत बजलीह—“कतेक मोन छल ई सिनेमा देखबाक ! आइये ई सिनेमा आयल आ आइये हमरालोकनि जा रहल छी ! जा घरि घुर्ब, ई चलिये जायत ! अइ जरलाहा शहरमे कोनो सिनेमा एक सप्ताहसँ फाजिल चलबे नहि करैत छैक ! हमरो हुनकर दुखमे सम्मिलित भ' उदास होब' पड़ल !

स्टेशन पर मीरा पुनः प्रसन्न भ' गेलीह ! फस्ट क्लासक डिब्बामे खाली हमरे लोकनि रही ! मीरा प्लेटफार्म पर ठाढ़ अन्य यात्रीके हेय दृष्टिसँ तकैत

रहलीह ! रातिक' सभके' तेना नीन भेल जेना गाड़ीक डिब्बामे नहि, अपन घरेमे सूतल होइ !

भोरे गामक स्टेशन पर उतरैत मोन पड़ल जे बाबूजी दुखित छथि आ मोन उदास भ' गेल ! मीराके' वैटगरूममे जा क' अंग्रेजी आंचरके' हिन्दी माने उल्टा आंचरके' सोझा कर' पड़लनि आ ओहो असन्तुष्ट सन बूझि पड़लीह ! पिंकी गुड्डू खुशी-खुशी नव-नव सीनके' देखैत रहल !

बाबूजी अपन कोठलीमे बिछैन पर आँखि मूतने पड़ल छलाह ! ततेक दुब्वर भ' गेल छलाह जे चीन्हब मस्किल छन ! पयर छुलियनि त' आँखि खोलि देलनि ! एक क्षण देखैत रहलाह आ फेर आँखि बन्न भ' गेलनि ! ठीर पटपटयलनि मुदा शब्द नहि बहरयलनि ! बन्न आँखि सँ एकटा पैघ बुंद टघरि गेलनि ! भीजल मोन लेने हमहुँ लगमे बैसल रहलहुँ । एकटा टेबुल पर दवाईक बहुत रास शीशी सभ राखल छलैक आ दोसर टेबुल पर पेशाब जँचवाक हेतु टेस्ट ट्यूब, बेन्डिकट सोलुशन, आ स्पीट लैम्प । हम बैसल बैसल खाली ओकरे निहारैत रहलहुँ आ भीजल रोगिआह चुप्पी कोठलीमे पसरल रहल ।

छोट भाइ रमेश बहुत रास प्रेसक्रिप्शन आ रिपोर्ट हाथमे द' देलक । भारी मोनसँ सभटा प्रेसक्रिप्शन आ रिपोर्ट देखैत रहलहुँ । फेर सभटा मोड़ि-माड़ि पाकिटमे राखि कोठली सँ बाहर आबि गेलहुँ ।

बाहर ओसारा पर मीराक संग माय आ हमर भाइ-बहिन सभ ठाढ़ छल । सभ हमर पयर छलक मुदा हम जहिना मायक पयर छूबा लेल शुकलहुँ ओ हाथ पकड़ि भगवती घर ल' अनलक । भगवतीके' प्रणाम क' जहिना मायक पयर छुलियैक, ओ कनैत ओहीठाम माटि पर ओघरा गेल । ओकरा चुप्प करबाक चेष्टामे अपनो कनैत कहलियैक—चुप्प भ' जो, कनैत किएक छै ! सभ ठीक भ' जयतैक । आव हम आबि गेल छियौक, सभ ठीक भ' जयतीक.....

बाबूजीके' दरभंगाक बड़का डाक्टर सँ देखा अनलियनि ! सभटा दवाई शुरू भ' गेलनि ! बाबूजीक हताश आकृति पर आशाक चेन्ह उग' लगलनि आ माय आववस्त लाग' लागलि ।

गामबला सभके' मुदा डाक्टरक आश्वासन पर विश्वास नहि भेलैक । भोरे

सँ साँझ घरि स्त्री-पुरुषक गोल बना बना क' हमरालोकनिके शान्तवना देब' बँधैत रहल ! एहन मौका पर अपन सामाजिक दायित्वसँ पिछड़ि जयबा लेल बयो तैयार नहि छल । भोरे फूलकाकी टोलक चारिटा स्त्रीगणक संग अयलीह ! हमरा आंगनमे देखि सकपका गेलीह ! उठिक' पयर छुलियनि त' आँखिमे नोर आनि बजलीह—तोहूँ आबि गेलह ! की करबह ! भगवान दुखे तेहन देलथुन अछि ।

—तेहन कोनो बात नहि छैक काकी ! डाक्टर कहलक अछि, सभ ठीक भ' जयतवि !

फूलकाकीके' हमर बात पर विश्वास नहि भेलनि ! शान्तवना देवाक उत्साह अपेक्षित उत्तर नहि पाबि ठण्डा पड़' लगलनि ! हमरा बुझबैत बजलीह—तो पैघ छ', साहस करहेक चाहियह ! तो घबड़ा जयबह, त' सभ घबड़ा जयतह ! एहन असाध्य रोग.....

फूलकाकी बहि जानि की की कह' जा रहल छलीह कि हम बीचमे टोकि देलियनि—रोग पैघ छैक त' डाक्टरो पैघ छैक । घबड़यबाक कोनो गप्प नहि छैक ।

फूलकाकी एकदम हतोत्साह भ' गेलीह ! हमरा अनुपयुक्त पात्र मानि अपन टोलक संग भनसा घर दिस बढि गेलीह । माय भनसे घरक ओसारा पर एकटा पटिया बिछा देलकनि आ पटिया पर बैसितहि जहिना माय अपन जेटकी देयादनीक पयर छूब' लागल, फूलकाकी ओकर कान्ह पर माथ राखि हिचुकि हिचुकि काब' लगलीह—भगवान बड़ पैघ दुख देलनि कनियाँ ! साहस करू !

माय भरिसक शानवनाक एहि पद्धतिक अभ्यस्त भ' गेल छल । ओ कोनो विरोध नहि कयलकनि । फूलकाकी अपने चुप्प भ' गेलीह आ आंचरसँ अपन नोर पोछैत बजलीह—अरुण आयल अछि, आव तँ चिन्ताक कोनो गप्प नहि । स्पष्टाः पैसा त' खूब अनेने हैत ।

माय एह प्रश्न पर चुप रहल । फूलकाकी खोष' लगलथिन—ओहना त' सय दू सय मास अवरसे पठबैत हैत ।

माय गप्प टारैत कहलकनि—“अवरसे पठाओत” अखन अपने नहि बँचैत छैक । ओकर अपने खर्च पैघ छैक :

एहि बेर फूलकाकी आँखि आश्चर्यसँ पसरि गेलनि— बेहन आन्हरि छी अहूँ कनियाँ । ओकरा खर्च की छैक ? सुनैत छी, अफसर अछि, हजार रुपया दरमाह छैक । ऊपरी आमदनी सेहो हेबे करतैक ।

माय चुप रहल । प्रायः ई चुप्पी सहमतिक छलैक । प्रसंग टारैत बाजलि— हुनका नहि देखलथिन बहिन ?

फूलकाकी झट उठैत बजलीह— नै कनियाँ । हमर कलेजा बड़ कमजोर अछि । कोनो दुखिताह केँ देखले ने जाइत अछि । आव जाय दिय' हमरा...।"

फूलकाकी उठि क' ठाढ़ भ' गेलीह । माय दौड़िक' सुपारी अनलक आ सभक हाथमे चारि-चारि खण्ड द' देलकनि । सुपारीक टुक मुँहमे दैत फूलकाकी बजलीह—आइ एकर कोन काज ?

आँइनसँ बहराईत काल फूलकाकी आ हुनकर टोलक मोगी सभ हमरा विचित्र दृष्टिये देखलक । माय फेर भनसा घरमे पहुँचि पव्य, भानस-भातक व्यवस्थामे व्यस्त भ' गेलि । हम आँइनसँ उठिक' दरबज्जा पर आबि गेलहुँ । सामने पोखरिक' भीड़पर किछु गोटेक संग मास्टर काका गप्प क' रहल छलाह । हमहुँ ओम्हरे बड़ि गेलहुँ । सभ वयस आ सम्बन्धमे पैघ छलाह । पयर छूबि प्रणाम कयलियनि । प्रश्नक ढ़ेरी लागि गेल—

—कखन अयलहुँ ?

—काल्हिये अयलहुँ काका ।

—एखन रहबह, छुट्टी छह ?

—छुट्टी कहाँ, छुट्टी ल' क' आयल छी । बाबूजी दुखित छथि :

—हँ, हँ से त' बिसरिये गेल । कोना छथुन आव ?

—पहिने सँ नीक छथि, दवाइ भ' रहल छनि ।

—नोकरी केहन चलैत छह ? मोन लगैत छह ?

—मोन त' लगाब' पड़ैत छैक भाइ ।

'किएक ने लगैबह ? सुनैत छी, हजार रुपया दरमाहा दैत छह, ऊपरी आमदनी सेहो होयबे करतह ।

—नहि भाइ । ऊपरी आमदनीक ने समावेश छैक, ने इच्छा ।

—किएक झूठ बजैत छह । कभाइतै छह, अपने माय-बापकेँ दैबह । हमरालोकनि त' हिस्सा नहिये भोगबह । झूठ किएक बजैत छह ? बिना ऊपरी आमदनीक अफसरी केहन ?

बिरोध करब बेकार बूझि हम चुप भ' गेलहुँ । किछु एम्हरे-ओम्हरे-गप्प क' फेर अपने दरबज्जा दिस बढ़लहुँ । मास्टर काका हमरे संग अयलाह । दरबज्जा लग आबि आस्ते सँ बजलाह—तोरा सँ एकटा बात कहवाक अछि अरुण ! अघलाह नहि मानिह' । तोहर बाप बड़ दिक्कतिमे छथुन । बीमारी आ एतेक टा परिवार । बड़का बेटा धरनि होइत छैक । घर भरिक बोझ सहैत छैक । फेर तोहर सन बेटा । ओकरा सँ तँ आरो आशा रहैत छैक । हम पढ़ौने छिअह तोरा, तँ कहैत छिअह, अघलाह नहि मानिह' ।"

मास्टर काका अपन घर दिस चल गेलाह, हम ओतहि ठाढ़ रहलहुँ । घर दिस ध्यान गेल । सत्ते बाबूजी कोना चला रहल छथि सभटा । दू माससँ बिछौन घयने छथि । दरमहो नहि भेटैत छनि । अपन इलाज, सभक पढ़ाई-लिखाई, दस प्राणीक खोराक ? कोना चलि रहल छनि ई सभ ? हमरा घर दिस देखवाक चाही—मास्टर काका ठीके कहैत छलाह ।

दस दिन बितैत-बितैत लागल जेना अनेरो गाममे बैसल छी । मीरा उदास रह' लगलीह । बेर-बेर टोक' लगलीह—पिकीक पढ़ाइ बरबाद भ' रहल छैक—मास्टर रोज घुरि जाइत हेतैक । अपनी लागल जेना छुट्टी अनेरो बरबाद भ' रहल अछि । आव तँ मोनो पहिने सँ नीक छनि ।

बाबूजी मुनि क' बजलाह—जयबह, बेश जाह ।' फेर आँखि बन्द क' लेलनि । हमहुँ चुप्प बैसल रहलहुँ, आगाँ किछु बजबा लेल फुरबे नहि कयल ।

कोक काल न बाद फेर कहलियनि दवाइ सभ खाइत रहब, 'फल सेहो खाइत रहब । एखन कमजोरी बेसी अछि । दवाइ आ पथ्य परहेज बड़ जरूरी अछि ।

हमर बातपर बाबूजी फेर आँखि खोलि देलनि । किछु क्षण हमर मुँह देखैत रहलाह आ फेर बजलाह—जरूरी अछि से तँ हमहुँ बुझैत छियैक । मुदा आरो बहुत रास चीज जरूरी अछि । खाली जरूरी रहले सँ की हैत ? तो अपने सँ मिला क' देखि लैह । तोरा एक हजारमे दू गोटेमे सिकस्ती भ' जाइत छह आ एत' पाँच सयमे दस गोटे छी । तीन माससँ ओहो पाँच सय बन्द अछि । तखन की जरूरी वा नहि जरूरी, से सोचिये क' की हैत ?

एक साँसमें एतेक बाजि क' प्रायः बाबूजी याकि गेलाह । निश्चैष्ट बिछौन पर पड़ि रहलाह आ आखि बन्द क' लेलनि । हमरा किछुओ नहि फुरल । चुपचाप उठिके चल अयलहु ।

माय सुनिक' बाजल—जयबह, बेश जाह । मुदा आब नहि पठेबह मासे-मासे किछुओ तँ बाप नहि बचथुन ।

हम ओकरा बुझौलियँक जे पठेबासँ कहाँ आपत्ति अछि हमरा । मुदा एखन बहुत रास सामान सभ किस्त पर लेने छियँक । सभक किस्त कटेत अछि । सात-आठ मासमे सभक सधि जयतँक तँ निश्चय पठयबौक ।

“बैस सात-आठ मास बादे सही । सात-आठ मास हमरा लोकनिक पेट तँ भरिसक मानि जायत मुदा बीमारी भरिसक्के मानतह ।” माय कनैत दोसर दिस चल गेल । हम कोनो आश्वासन नहि द' सकलियँक ।

ठसम-ठसम भीड़मे हमर छोट भाय सभ ठेलि ठालिक' कहुना हमरा लोकनि केँ गाड़ीमे चढ़ा देलक । बाँचल-खुचल पाइ सँ कहुना थडँ बलासक टिकटक इन्तजाम भ' सकल छल । गाड़ी जखन खुजल मीराक आकृतिपर आब' काल बला गरिमाय मुद्रा नहि छलनि । कोनो हीन भावसँ ग्रस्त लागि रहल छलीह । बक्सा आ वेडिंगक ऊपर दुनू हाथसँ पिकी आ गुड्डू केँ सम्हारने अपस्यौत बैसलि छलीह । हमहुँ कहुना एक टाङ पर ठाढ़ छलहुँ । हमरा लागल एखन जेना दुनू गोटे एक्के बात सोचि रहल छी—निरर्थक एतेक टाका अयबा-जयबामे खर्च भेल । घुट्टी बरबाद भेल से फराके । एहिसेँ तँ एतेक टाका मनिआर्डर क' दितियनि । कोनो तेहब दुखिताह तँ नहि छलाह..... । ●

अप्रैल १९७०

आठम दशकक कथा : प्रभासक

- ☐ युद्ध-विराम
- ☒ पिता
- ☒ उत्तरकाण्ड
- ☒ ढेप
- ☐ मलाहक टोल
- ☒ पुरान चरित्रक नव कथा
- ☐ भयाक्रान्त

युद्ध-विराम

एना त' कहियो ने भेल छलैक । ओसारा पर बड़की बैसलि छलि—
उदास, एकसरि । अन्हार सरल जा रहल छैक । आन दिन भोरे अन्हरोवे
फूले तोड़त काल सँ शुरू भ' जाइत छलैक ।

—“हमर गेनाक एहू बेर एहन-एहन थोका जेना पीयर गुलाब हो ।”
बड़की बजैत छल ।

—“हमर तीरासँ भरि गाम पूजा होइत छैक, दू-चारि थोका गेनाकेँ के
पूछय !” अपन बाड़ीसँ छोटकी बजैत छलि ।

बड़की फूल तोड़ि आङन मे अबैत छलि । नूआ ल' स्नान करबा लेल
विदा हीइत छलि । पाछाँ-पाछाँ छोटकी । धारक कातमे, जल लग दुनू पाँच
हाथ दूरे दूर बैसैत छलि । बालुसँ दाँत मँजैत बड़की कहैत छलैक, बिना ककरो
सम्बोधित कयने—“कमला माइ तँ प्रात होइते देरी हमरे बाट तकैत रहैत छथि,
जा घरि हम नहि आबो, अनका अपन जल मे पयरो ने राख' दैत छथिन ।”

पानिमे डूब द', नूआ बदलि, हाथमे एक लोटा जल ल', ऊपर महादेव
मन्दिर दिस जाइत छोटकी बजैत छलि—“भोला बाबाकेँ तँ बिनु हमर लोटाक
जल पीने कण्ठे सुखायल रहि जाइत छनि, भोरेसँ बाट तकैत रहैत छथि ।”

बड़की पाछुए लागलि अबैत छलैक । दुनू बेरावेरी भोला केँ जल ढारि आङन
दिस विदा होइत छलि । बाटमे बड़की बजैत छलि—लोको सभ केहेन-केहेन
पाखण्डी होइत अछि, मुँह मे भोला-भोला आ मोन मे पाप.....”

चारिये डेग पाछूसँ छोटकी बजैत छलि—“सैह, कोना पार लगैत छैक
ककरो ? भगवानो लग प्रपंच !”

दुनू आङन आवि अपन-अपन ओसारा पर बैसि जाइत छलि । भानस-
भातक कोनो जल्दी बहिये रहैत छलैक । एकसर प्राणी । कथीक हड़बड़ी ?

निश्चित बैसलि बिबनि होंकैत बड़की बजैत छलि—‘हमर नूनू । एवको दिन निनु चिट्ठी लिखने नहि रहैत छथि, चलि आ, चलि आ,....’ एकसरि गाम मे की करैत छै, कोना मोन लगैत छैक ? कोना लिखियोन जे ऐ ठाम डइतियाँ सभकेँ आँखि अँटकल रहैत छैक । चारि दिन घर छोड़ि दिय’ त’ सभटा नोचि-खसोटि क’ जा जायत ।”

अपन ओसारा पर पाया सँ ओ’ठगलि छोटकी बजैत छलि—‘हमर मुन्नू त’ तार पर तार दैत रहैत छथि—चलि आ, चलि आ । छोड़ गामक मोह । मुदा कोना छोड़ि दिय’ ई राजपाट । हड़ाखिनी सभ चारिये दिन मे उजाड़ि-पजाड़ि क’ सभ टा चीपट क’ दैत ।”

बड़की आइन मे बैसलि-बैसलि अगुता जाइत छलि । उठि क’ बाहर दलान दिस अबैत छलि—“एहन-एहन सजमनि क्यो देखने हैत ? परकाँ एक बोरा नूनूकेँ पठा देने रहियनि त’ भरि टोलक लोक अकच्छ क’ देने रहति—आर मडाउ, एहन स्वादिष्ट सजमनि बजारमे-कत भेटत ?”

छोटकी पाछाँ-पाछाँ अपन हिस्साक मचान दिस चल अबैत छलि । कनेक जोरसँ सुनबैत बजैत छलि—अनेरुआ सजमनिकेँ केँ पूछय ? हमर मुन्नू जे अपन कुम्हरक मोरब्बा शहर मे अपन संगी-सभकेँ देलथिन से आइ घरि सभ हाथ चटैत अछि । कनियाँकेँ बनयबाक लूरियो तेहने छनि । सभक हाथ मे छोड़े ओ गुण रहैत छैक ।

बड़की सहटि क’ लग आबि आरो बेसी जोरसँ कहैत छलैक—लूरि त’ क्यो इमर बड़की कनियाँ सँ सीखय ? जेहने आमिल बनबैत छथि, तेहने अदीड़ी । शहर जा क’ तँ आरो किदन-किदन बनायब सीखि छेने छथि ! धुर जो, हमरा कोना नामो मोन रहैत अछि ।

छोटकी मुँह बिचकबैत फेर आइन दिस जाइत बजैत छलि—‘छोटकी कनियाँ त’ हीरा छथि । जेहने भानस-भात, तेहन सियाइ-कड़ाइ । ऊपरसँ पढ़लि-लिखलि, अपर पास ।

आइन आबि दुनू भनसा मे लागि जाइत छलि । कनेक काल लेल आइन मे मोन पसरि जाइत छलैक । ओना चूल्हियो लग दुनू किछुने किछु

बजैत रहैत छलि, मुदा भनसा घर दू छोर पर रहलाक कारणेँ एक दोसरक गप्प सुनि नहि पबैत छलि । एके गोटेक भानस । समये कतेक लगैत छलैक ? फेर बँह क्रम ।

मुदा एना त’ कहियो ने होइत छलैक ? आइन मे अपन ओसारा पर बड़की एकसरि बैसलि छलि । चारुकात अन्हार पसरि गेल छलैक । आइन सुन्न आ भयावह लागि रहल छलैक । पैघ सन आइन, चारुकात चारिटा घर, बीच मे मड़बा बाड़ी । मे ठाढ़ पैघ-पैघ आमक गाछ आ ओसारा पर एकसरि बैसलि बड़की । अनेरो बिसरलाहा कतेक बात मोन पड़लैक, नहि जानि, कतेक दिन पर । एना त’ कहियो ने मोन पड़ल छलैक ।

पहिने बड़की आयलि छलि एहि आंगन मे । आंगन-घर पसिन्न पड़ल छलैक । पैघ आंगन पैघ-पैघ घर, कोना वस्तुक कमी नहि । जखन जे चाह्य, भेटि जाइत । खाली एकसरुआ हैब कखनो-कखनो अबरि जाइ । ने सासु-ससुर ने ननदि । खाली एकटा देयर, सेहो चेतन, विवाहक योग्य । बड़की के एकटा बाट सूझि गेलैक । छोटकी दस वर्षक भ’ गेलि रहैक, बाबूसँ गप्प कयलक । बाबू एके घर मे दुनू बेटी देवा लेल तैयारे ने होइत छलथिन । बड़की जिद्द पकड़ि लेलक । छोटकीकेँ ल’ अनलक एही आंगन मे ।

दस बरखक छोटकी । सदियन जेठकी बहिनक पाछाँ लागलि रह्य—भोरसँ राति घरि । राति के बड़ मस्किल भ’ जाइ बड़कीकेँ । छोटकी अपन कोठली जयबे ने करैक, बहिने लग सूति रहैक । तखन कोनहुना उठा-पुठा ओकरा अपन कोठली मे द’ अबैक बड़की ।

सन्तान पहिने छोटकीये के भेलैक—बेटा । बड़की भरि आंगन नचैत-फिरलि । छठिहार मे भरि गामक मौगीकेँ खुशालक । फेर अपनो बेर अयलैक—पहिल बेटे भेलैक, फेर दूटा बेटा आ तखन फेर एक टा बेटा । छोटकीयो केँ चारिये टा भेलैक—दू बेटा, दू बेटा । एकदम हिसाब बराबरि ।

मुदा भगवानक एहि बराबरि हिसाब जकाँ घर-द्वारक हिसाब संभव नहि भेलैक । नहि जानि कहेया, दू बहिनक स्थान पर दूटा पट्टीदार ठाढ़ भ’ गेलैक आ बात-बात पर कलह शुरू भ’ गेलैक जकर अन्त आइनक बटबारासँ भेलैक ।

पुवरिया आ दछिनबरिया घर बड़कीके तथा पछबरिया आ उत्तरबरिया घर छोटकीके । आंगन आ मड़आ साझी । बाड़ी-घरक पाछावला, घरक पट्टीक संग ।

मुदा झगड़ाक अन्त कहाँ भेलैक ? दुनूक मुँहावज्जी त' फराक हैबाक पहिनेसँ बन्दे छलैक, मुदा अप्रत्यक्ष सम्बोधनक संग आक्रमण-प्रत्याक्रमण भोरैसँ आरम्भ भ' जाइत छलैक । दुनू अपन-अपन ओसारा पर बैसि जाइत छलि आ बाज' लगैत छलि जेना अपनेसँ गप्प क' रहलि होथ्य ।

—“लोको केहन-केहन बेमान होइत अछि । एकटा फुलही लोटा आ थारी नुका लेलक बाँट बखराक बेरमे । एहिसँ वरू माछि लैत । एकटा फुलही लोटाके के कह्य, सभटा बर्तन ओहिना छोड़ि दित्यैक” बड़की बजैत छलि ।

छोटकीयो कनेक कण्ठस्वर के ऊँच करैत बजैत छलि की—“बैमान के भरि दुनियाँ बैमाने बुझाइत छैक । दू भरिक बाजूबन्द छल, से तँ नहि जानि कत' निपटा क' देलक, ओकरे तोड़ाक' गहना गढ़ौलक । लोक नहि बुझैत छैक ?

एहि प्रकारे भोरसँ साँझ धरि दुनूक स्वागत भाषण चलैत छलैक । प्रत्यक्ष युद्ध कहियो नहि होइत छलैक । भोरसँ साँझ धरि दुनू बजैत रहैत छलि, अपन दिनचर्या सेहो करैत रहैत छलि ।

समय बितलैक । घीया-पुता सभ पंथ भेलैक । बेटा पढ़'-लिख' लगलैक । बेटी विवाहक योग्य भेलैक । पहिने छोटकीक जमाय अयलैक । बड़की सुस्त जकाँ सभटा देखैत रहलि । सभटा काज तिहारक बाद, जमायके विदा क' छोटकी एक दिन अपन ओसारा पर बैसलि बजलि—“हमरा सभके तँ नहि पार लागत जे लोढ़ी सन सन छाती लेने कुमारि बेटी गाममे बौआयल फिरत आ हम निश्चिन्त बैसल रही । नहि जानि लोक सभके कोना रहि होइत छैक निश्चिन्त ?”

बड़की अपन ओसारा सँ कनेक जोर सँ बाजलि—“लोढ़ी सन छातीवाली लेल अललक अछि बिनु दाँतवला वर आ गुमान ने देखू लोकक ? एना तँ क्यो दुश्मनोक गरदन नहि कटैत अछि ।”

छोटकी कनेक आरो जोर सँ बाजलि—“महादेव झा पाँजि छैक आ घरमे सोना चानीक पथार । लोकक छातीपर त' साँप लोटयबे करतैक ।

बड़की चैदसँ नहि बैसलि । दोसरे शुद्धमे अपन बेटी वियाहलक । छोटकी सुस्त भेलि सभटा देखैत रहलि । जमायके विदा क' एक दिन अपन ओसारापर बैसलि बड़की बाजलि—“एकरा कहैत छैक राधा-कृष्णक जोड़ी । जेहने वर तेहने कबियाँ । एहनो कोन वियाह जे बाप-बेटी लागय । लोको सभ केहन आन्हर होइत अछि ।”

छोटकी आंगनमे पटिया पर चाउर पसारैत बाजलि—“छोटहापर एहन गुमान । जकर पानि ल' क' लोक लग्बी नहि करैत छल, तकरा भार साँठि रहल अछि लोक ।”

समय आरो बितलैक । छोटकी पहिने विधवा भेलि । आदिकर्म भ' गेलापर एक दिन दुनू बहीन आन अपन ओसारापर बैसलि छलि । बड़की बाजलि—बेचारा लाज लेहाजवला छल । एहन एहन कुकर्मी सभक फेरामे पड़ल जे आँखिये मूनि लेब उचित बुझयलैक । आब तँ ओहो रोक टोक नहि रहलैक, उमकल फिरो जत'-जत' ।

छोटकीक कण्ठ किछु वेसी तीव्र भेलैक—“अमृत पीबि क' के अयलैक अछि से देखबैक । ओना तँ बेचारा जिनगियेमे काठ भ' गेल अछि ।”

भगवान फेर जल्दीये हिसाब बराबरि क' देलथिन । बड़काके सेहो भाइ लग बजा लेलथिन । छोटकी गुम-सुम बैसलि छलि काज-तेहारक बाद । बड़की अपन ओसारासँ बाजलि—“लोकक करेज ठंडा भेलैक, कबुला-पाती कयने छलि ।”

छोटकी किछु कहितैक मुदा बेटा सामने आवि गेलैक । जवान भ' गेल छैक । पुतोहु घरमे आब'क चाही—छोटकी विचारलक । अगिले साल पुतोहु आवि गेलैक—सुन्नरि आ काजुल । छोटकी अपन ओसारासँ बाजलि—“एहन पुतोहु लोक के आगसँ भेटैत छैक । जेहने सुन्नरि तेहने काजुलि । एकटा काठी ने उठब' दैत अछि । रानी जकाँ बैसलि रहैत छी ।

बड़की के बात अखरलैक । सभ मे पछआ गेल छलि ओ । वियाहिक पहिने ओ आयलि, मुदा पहिने माय बनलैक छोटकी, जमायो ओकरे पहिने अयलैक आ पुतोहुओ । बड़की के हड़बड़ी लागि गेलैक । एके शुद्धमे दुनू बेटाक वियाह-

शुद्ध-विराम

द्वि-गमन करा छोटकीसँ अगुआ गेल । फेर अपन ओसारा पर बैसि निश्चिन्त भ' बाजलि—“बैसलि-बैसलि लोथ भेल जाइत छी हम । ने कोनो काज, ने झंझट । खढ़ो उसकयबाक काज नहि । एक टाङ छोटकी कनियाँ दबैत छथि तँ दोसर बड़की कनियाँ । भागसँ भेटैत छैक एहव पुतोहु आइ-काल्हि ।”

छोटकीयो बेसी पछुआयलि नहि रहलि । दोसरो पुतहु ल' अनलक । बेटी एके रहि गेल छलैक, ओकरो सासुर विदा कयलक । बड़कीयोक दोसर बेटी सासुर गेलैक । पोता-पोती दुनूक आंगनमे खेलाय लगलैक । येटा सभ कमाय शहर चल गेलैक । मुदा दुनू बहीनक दिनचर्यामे अन्तर नहि अयलैक । बड़की अपन ओसारा पर बैसलि बजैक—“हमर नूनू, बड़का हाकिम, चपरासी, नोकर, बंगला कथूक कमी नहि, लोक देखतैक त' छाती फटतैक ।”

छोटकी अपन ओसारासँ बजैक—“छाती फटतैक ओकर जे कहियो अपने देखनहि ने होअय । हमर मुन्नू तँ अपने हेड । बाकी सभ मातहत । कथूक कमी नहि छनि, देखनिहारक छाती फाटि जयतैक ।

बड़की तेना बाजय जेना सुनने नहि होअय किछु—“हमर बच्चा । कहबा लेल किरानी, मुदा बाइली आदमी ततेक जे हाकिमो खुशामदो करैत छनि, तर-तरकारी लेल ।”

छोटकीयो तेना बाजय जेना किछु ने सुनने होअय—“हमर बल्लम त' पेशकार ! सभ किछु काटियो-छाटि क' डेढ़-दू सय रोज ! बड़का बड़का हाकिम की परतर करतनि ?”

आरो समय ससरि गेलैक । चारू पुतोहु-धीयापुता संग अपन अपन घर लग चलि गेलनि । पावनि-तिहारमे दू-चारि दिन अबैत छनि-वर्ष दू पर । कखनो सेहो नहि । मुदा दुनूकेँ कोनो अभाव नहि छलैक । खयवा-पीवा जोग नीक उपजा भ' जाइत छलैक ।

“हमर बाड़ीक भिमनीसँ तँ ऐ बेर गाम अघा गेल । ककरा ने पसेरी दू पसेरी देलियैक ।” बड़की कहैत छलि ।

“हमर बाड़ीक ओल त' ऐ बेर मालो-जालो ने पुछलक । ढाकीक ढाकी डबरामे फेकबा देलियैक । भरि गाम अछिन्नरो खयलक, से फराक ।” छोटकी अपन ओसारासँ बियनि होकैत बजैत छलि ।

बड़की करोट फेरि एक बेर आंगन दिस देखि फेर बियनि होकैत बजैक छलि—लोककेँ झूठ बजैत बाजो नहि होइत छैक । एकटा सड़ल आँठी तँ ककरो देवाक हियाब छैक ने आ भरि गाम खुअयबाक गप्प करैत अछि ।”

छोटकी उठि क' बैसि जाइत छलि—“सूप सन छातीवाली केँ की लोक चिन्हैत छैक ? गूहीं परसँ पाइ उठाब' वाली भरि गाम दानक गप्प करैत अछि ।”

मुदा आइ बड़की ककरासँ गप्प करओ ? एना तँ कहियो नहि भेल छलैक । अपन ओसारापर बड़की एकसरि बैसलि छलि—उदास । आङनमे अन्हार पसरल छलैक । बाकी कतहु किछु नहि । छोटकीक घरक दरबज्जा खूजल छलैक, मुदा कतहु कोनो आबाज नहि ।

बड़की एकसरि उदास स्तब्ध बैसलि छलि, भोरेसँ । भोरे शहरसँ पंचूबाबूक बेटा आयल छलैक समाद ल' क' । छोटकीक पोताक मूड़न बैद्यनाथ धाममे भेल छलैक, तकरो खबरि देब' बायल छलैक । किछु पेड़ा आ अड़ाँचीदाना सेहो द' गेल छलैक । छोटकी सुन्न भेल बैसलि रहि गेल छलि । बड़की बाजलि छलैक—“हमर नूनू एना करतथि तँ जिनगी भरि मुँह ने देखितियनि । मूढ़न करा क' समाद ?” छोटकी जेना नीन्न सँ जागलि छलि । हाथक पेड़ा आ अड़ाँची दाना फेंकि उठि क' कोठलीमे चलि गेल छलि । बड़की एकसरि बैसलि रहि गेलि । बारह बाजि गेलैक, चूल्हियो ने पजारलक । कोनादन लागि रहल छलैक । छोटकीक कोठलीक दरबज्जा खूजल छलैक मुदा भीतर कोनो सुगबुगी नहि जेना घर एकदम खाली होइक । आइ पहिल बेर बड़की केँ आङन एतेक सुन्न लगलैक । दू वर्षसँ आङन मे क्यो नहि रहैत छलैक मुदा कहियो ध्याने नहि गेल छलैक जे एतेक टा आङन एतेक खाली छैक । छोटकीक संग अप्रत्यक्ष सम्भागणमे दिनराति कटि जाइत छलैक । आइ छोटकी नहि छलैक, त' सभ किछु बेसी सुन्न आ उदास लागि रहल छलैक ।

बेर बितला पर बड़की चूल्हि पजारलक । भानस कयलक मुदा बायल नहि गेलैक । कयल भानस झाँपिक राखि देलक । भूख लागल छलैक, मुदा छोटकीक खूजल कोठलीक निस्तब्धता बेर-बेर निहारि बड़की भूख-पियास बिसरल जा रहल छलि । भनसाचरसँ उठि क' फेर सुत'वला घरक ओसारा पर आयलि आ पटिया

विछा पड़ि रहल। मुदा आँखि बेर-बेर छोटकीक कोठली दिस जाइत रहलैक। ओहने निस्तब्धता।

साँझ भ' गेलैक। अन्हार जमकले गेलैक। बड़की उठिक' बैस रहल। मोन कोनादन क' रहल छलैक ? भितरे भीतर किछु खदकि रहल छलैक।

परुका ओकरो पोताक मूडन छलैक। सभ क्यो प्रयाग गेल छलैक। बड़की ई बात छोटकी सँ नुका गेल छल। क्यो नहि बुझने छलैक। बड़कीकेँ समाद-चिट्ठी किछुओ ने आयल छलैक। बादमे चिट्ठी आयल छलैक। ओही एहिना घरमे पड़ि रहल छल। छोटकी ककरो आडन पूजामे गेल छलैक। क्यो नहि बुझलैक।

फेर जिनगी भरि मुँह नहि देखबाक गप्प कोनो कहलकै छोटकी केँ ? मुँह देखबाक ओहिना कतेक अवसर भेटैत छैक। साल दू सालमे दू चारि दिन। ओहूमे बेसीकाल घोयापुताकेँ शहरे छोड़ने अबैत छैक—कखनो परीक्षा, कखनो पढ़ाई हज' हैबाक गप्प।

मुदा ई सभ गप्प किएक मोन पड़ि रहल छलैक बड़कीकेँ ? ई सभ त' हैबे करैत छैक जिनगीमे। सभक घरमे होइत छैक। एहिमे नव की छैक ?

तखन छोटकी एना पेटकान किएक देने छैक—बताहि। ओकरा छोटकीपर तामसो भेलैक। फेर जेना मुँहमे नोराइन स्वाद आबि गेलैक, आँखि अनेरो भीजल ! कण्ठ अवरूढ ! एना किएक भ' रहल छलैक ?

बड़की उठिक' ठाढ़ि भ' गेल। आडन मे ठाढ़ि होइत काल एक बेर सिहरि गेल। सौंसे आडन अन्हार छलैक। डेराओन चुप्पी आ चतरल अन्हार। बाड़ीक झमटगर गाछ सभ अन्हारमे डेराओन लागि रहल छलैक। बड़की जल्दी जल्दी डेग उठबैत छोटकीक कोठली धरि आयल। चौखटि लग कनेक थकमकायलि मुदा फेर घड़फड़ायल कोठलीमे पँसि गेल। अन्हारमे पहिने किछु ने सुझलैक। फेर ठकनबैत देखलक—छोटकी माटिये पर पेटकान देने पड़ल छलैक। बड़की लगमे बैसि गेलैक आ पीठपर हाथ फेरैत कहलकै—“एना क्यो मोन छोट करय सीता ! बताहि, उठ, हमर संग आ। दिनेसँ भानस कयल पड़ल अछि, दुनू बहीन बाँटि कूटि खा लेब।”

मार्च १९७३

मुदा-बिरास

पिता

जीवकान्त एक बेर चिट्ठी लिखने छनाह। मुदा तकर गप्प बाद मे। पहिने एकटा गामक गप्प कहैत छी—कोनो, ककरो गामक। जेहन एकटा गाम होइत छैक, तेहने। मुदा खूब घनगर नहि, छेहर, दूर-दूर पर घर सभ। टोलो सभ खूब पैघ नहि—छोट-छोट। दस घर, बीस घर सँह। खाली गामक बीच महक पोखरि बढी टा—दैत्यक खुनायल पोखरि सभ सँ कनिये छोट। मुदा सौंसे कुम्भीसँ छारल। जाठि धरि निपत्ता। जाठिक मूड़ी केँ अगर्ती छोड़ा सभ हिला-हिला तोड़ि देने छलैक, हेलैत-हेलैत पचासो गोटे एके बेर लुधकि जाइत छलैक। किछु दिन टुटलाहा टुनगी पानिक ऊपर लिबलिब करैत रहैक। फेर कुम्भी तर झँपा गेलैक। आब क्यो ने नहाइत छैक एहि पोखरि मे। भानसक अदहनो जोगर नहि रहलैक एकर पानि। सभ कलेक पानिसँ भानस-भात करैत अछि गाममे—धनुखटोली सँ बभनटोली धरि आ मलहटोली सँ खतबेटोली धरि। सभ टोल पर कल छैक—जय हो स्वराज के ! जय हो सरकार के !

सरकार तँ आरो बहुत रास बात कर' चाहैत छलैक गाममे। कल त' पहिले एलेक्सन मे लागि गेल छलैक टोले-टोल। ओही दिनमे दरभंगा सँ अब'बला कचिया सड़क पर खूब माटि द' क' रोड़ा हसा देने छलैक। पिच बनतैक—सौंसे इलाका मे ढोल पिटा गेल छलैक। गनेसी झा प्राइवेट बस ओही पिच पर चलयबाक लाइसेंसक जोगार मे लागि गेल छल आ मन्नू कडवटरीक सपना देख' लागल छल। निरसन झा अपन चाहक दोकान घुसका क' चौराहा लग ल' जयबाक योजना बसा लेने छल आ एकटा नीक सन साइनबोर्ड अपन चाहक दोकान लेल दनयदाक भार गामक कलाकार फूदन चौधरीकेँ द' देने छलनि। बिजलीक खम्भा सभ बाधे-बाध अन्नत कल्लू बाबूक पछुआर धरि आबि गेल छलनि आ गामक लोककेँ अनेरो कल्लू बाबूसँ ईर्ष्या होब' लागल छलैक जे बिजलीक पहिल लाइन हुनके भेटि जयतिनि।

मुदा से सभ त' एलेक्सनक गप्प छलैक। वोटक बाद रोड़ा सभ निपत्ता होइत-होइत एकदम लोप भ' गेलैक आ खेतमे खसल बिजलीक खम्भा नहि जानि

कहिया उठलैक—लोको ध्यान नहि देलकैक ठीकसँ । गणेशी झा एखन धरि आँटा-चक्की चलाक' संतोष कयने छथि आ बसक लाइसेन्सबला गप्प पर आव तामस होइत छनि आ लोककेँ मार' दौड़ैत छथिन । मन्नू कण्डकरीक सपना देखैत-देखैत बहलमान बनि गेल अछि । एकटा टायरगाड़ी कीनि भट्ठा परसँ सभकेँ ईँटा खसबैत छैक आ दरभंगा गुदरी बजार सँ सामान लादिक' अनैत अछि । निरसन झाक चाहुक दोकान एखनो सड़कसँ हटिक' खत्ते लग छैक, जत' पानि पड़लासँ डबरा बनि जाइत छैक, आ कल्लू वाबूक घरमे आइयो डिविये टिमटिमाइत छनि ।

दरभंगा सँ आब'वाला कचिया सड़क दुसघटोलीक कात दने जाइत छैक, हाइ स्कूलसँ सटिक' । स्कूलक हाल आइ स्थापनाक तीसो बरखक बाद ओहिना छैक—टूटल फूटल घर, ढनमनायल देवाल आ उजड़ल सन पैघ प्रांगण ! आजादीक दोसरे बरख जखन कहूना जोर लगा वित्तमंत्रीकेँ इलाकाक, लोकसभ एहि स्कूलमे अने जल, त' प्रधानाध्यापकक बरूण विवरण सुनि वित्तमंत्री बाजल छलाह जे वित्त मंत्रीकेँ देखि प्रधानाध्यापककेँ लोभ भ' गेल छनि । अपन विशाल काफिलाक संग मंत्री महोदय चल गेलाह आ वित्तमंत्रीक आगमनसँ आशान्वित स्कूल आइयो ओहिना ढनमनायल-उजड़ल सन पड़ल अछि । छात्रक संख्या दिनानुदिन बढ़ले जाइत छैक मुदा आर हालत शोचनीय छैक । सालो भरि हेडमास्टरकी लेल मोकदमाबाजी होइत छैक, मान छी मास पढ़ाई होइत छैक । मास्टर सबहक गुट जकाँ विद्यार्थियो सभ गुटमे बटल अछि आ कने मीका भेटलैक कि छुटले—ले-ले...पुरं... ।

ई त' भेलैक बाहरी सिमानापरक स्कूलक गप्प । भितरिया हालति सेहो तेहने छैक । तीन बेर कन्या पाठशालाक लेल चन्दा भेलैक, घरनि-चार सेहो ठाढ़ भेलैक, जमीनक रजिस्ट्री भेलैक, मुदा आइयो स्कूल-मास्टरनीक दलाने पर क्लास होइत छैक । अपर स्कूलक हालति अर बिगड़ल । सोत' क्लासक हेतु मास्टरनीक दलानो नहि, बेलक गाछक छाहरि कटैत छैक आ छोटछोटी घीयापूता । रौद-बसात आ शीतलहरी । किछु सरकारी अनुदान कहियो भेटलैक, कोनो पता नहि छैक आइ । गामोक लोक सभ चन्दा कयलक एक-दू बेर, ओकरो कोनो पता नहि छैक आइ । एक बेर बालु पर टैंकस लागल । जे कोनो अनगौआ नदीक कछेरसँ बालु त' जायत, त' फी टायरगाड़ी दू टाका टैंकस । एहि विलक्षण आइयो सँ लोक

आशान्वित भेल जे आब स्कूल बनि जायत । मुदा टैंकस बलवटर' अनेको उत्पन्न भ' गेलाह । के कहिया ओसूललक तकर कोनो हिसाब नहि । योजना फल । बेलक गाछक छाहरि जिन्दाबाद । नव पीढ़ीक निर्माणक लेल दू ठाढ़, गामक एकमात्र व्यक्तित्व—बेलक झमटगर गाछ ।

धारक हाल सेहो कोनो नीक नहि छैक । सालमे दुइये-तीनमास, जेठ बैसाख मे हेलाह होइत छैक, ने त' अथाह पानि । नावक लेल घटवार, ओकर सीधा चाही । आ सभसँ पहिने एकटा नीक सन बाव । पुरना नाव मे घूरे-भूर । उपछैत-उपछैत तंग भ' घटवार पड़ा जाइत अछि । आव बुढ़बा मलाह लालजी थोड़े जीबैत अछि जे कतबो बाजि-भूकि फेर घाटे पर पड़ल रहत ! नवकाँ घटवार केँ नव नाव चाहियैक आ नव नाव लेल चाहियैक चन्दा । से के देत ? ककरा देत ? कतेक बेर देत ? नाव अधिक काल बालू पर उनटल रहैत अछि आ लोकसभ घुरि क' पुल पर दने धार पार करैत अछि । जेठ-बैसाखमे जखन हेलाह होइत छैक, लोक सभ घोती उछाहि क' ढेलि जाइत अछि । स्त्रीगण सभ पर्यन्त एम्हर-ओम्हर ताकि जांघ धरि नूआ उघारि पार भ' जाइत अछि । कोनो-कोनो नव-कनियाँ लाजे घुस द' धारक कातमे बैसि जाइत अछि । घंटाक घंटा बैसले रहि जाइत अछि कि केम्हरोसँ क्यो...गे-माय-गे-माय... हाथसँ उठाओल नूआ छूटि जाइत छैक । बोदरि भेल घर अबैत अछि । एकदम नवकी सभ लाजे कान' लगैत अछि ।

मुदा कुम्भीसँ छारल पोखरि द्वारे तँ भीड़ परक सभ लोक कानि रहल अछि । पैघ-पैघ मच्छड़ ! दुर्गन्धि ! दरबजापर बैसब मोस्किल । पोखरि गोसचरिया, पचासो मालिक । भीड़ पर दुइये-तीन पट्टीदार, बाँकी गौआसभ । विशेष चिन्ता ककरो नहि । मुदा पोखरिक भीड़परक लोग सभ अगुता गेल । निर्णय कयलक जे मछहर कराओल जाय आ जे माछ होइक ताही सँ पोखरिक सफाई भ' जाय । दू-चारि टा अगुथा छौंड़ा सभ दौड़-धूप क' बाबू-भैयाकेँ मना लेलक । मछहर भेलैक । शुरू मे सभ शान्त रहलैक । मुदा जहाँ महाजाल खसलैक आ पाँच-सात टा बड़का ललमूहाँ रहु आ भाकुर कुदलैक कि पट्टीदार सभ चारु कातसँ दौड़लाह—हिस्सा दिय', सफाई सँ हमरा कोन मतलब ? नहि, हम त' कहियो ने कहलहुँ जे हमर हिस्सा सफाई मे जायत, हमरा बाँटि दिय' । हिस्सा बँटा गेल, पोखरि कुम्भी सँ छारल ओहिना पड़ल अछि... दुर्गन्ध करैत—मच्छड़ भनभनाइत ! की करबैक ? आइ-काल्ह तँ मच्छड़ सभ ठाम रहिते छैक ।

पिता

[१४९]

मुदा पड़ल-लिखल गाममे एबटा लाइब्रेरी तँ रहिते छै। एहि गाममे किएक ने हेतैक ? नवयुवक सभ जोर लगौलक, आ घर-घरसँ किताब आनि एकटा छोट-छीन घर ठाढ़ कयलक, दू-तीन टा कठही आलमारी आ दू चारि टा बेंच जुटीलक। नीक जकाँ चल' लगलैक। एक दिन ओकरा सभकेँ ध्यान गेलैक जे एहि गाममे एकटा कवीश्वर भेल छलाह, हुनके डीह पर स्मारक-स्वरूप लाइब्रेरी हेबाक चाही। हुनक डीह पर छोट छीन जगह घेरि चारि क' एक टा छोट छीन स्मारकक रूप देलक। दू बेर दीयाबातीमे दीप जरीलक आ फेर सभ समाप्त भ' गेलैक। टेबुल बेंच निपत्ता, किताब सभ आधा दाम मे बजारमे बिका गेलैक आ स्मारक लग भाटा-रामझीमनीक खेती होब' लगलैक। बात पुरना क' बिसरियो गेलैक लोक सभकेँ।

मुदा एकटा बात गामक लोककेँ कहियो ने बिसरैत छैक जे एहि गामक एकटा इतिहास छलैक, इलाकामे कयो कहबैत छल, भलैँ आइ कयो घर पैसि बात कहि जाइक। लोककेँ आइयो बड़ दावी छैक जे हमरा लोकनि बड़ पड़ल-लिखल छी, मिथिलाक प्रमुख गाम साक्षरता आ भलमानसाहत मे ! भलैँ आइ गामक स्कूल बेलक गाछ तर होइत छैक, एकटा लाइब्रेरी नहि छैक, अस्पताल आ डाक्टर नहि छैक, बिजली आ सड़क नहि छैक, बाट कादो आ विष्ठासँ चिनाइत रहैत छैक। ई सभ तँ होइते रहैत छैक। गाम-गाम छैक। सभटा होब' मे समय लगैत छैक। मुदा हमरा लोकनि कयो कहबैत छी, आइयो लोक चिन्हैत अछि, मान-सम्मान करैत अछि। इलाका मे आर कोन गाम परतर करत ? छोटहा सभ अछि।

क्षमा करब, ई त' हम किदन सभ कहि गेलहुँ। हम त' एक टा गामक गप्प कह' चाहैत छलहुँ, जत' हमर पिता रहैत छलाह, हमर जन्म भेल छल। गामक हाइ स्कूलक हेडमास्टर हमर पिता जे वित्त मन्त्रीक समक्ष विद्यालयक विवरण पढ़ि अनुदानक सांकेतिक याचना कयने छलाह। जे गामक प्रत्येक सभाक सभापतिक हेतु पाँचो मिनट पहिने कहि देला पर स्वागत-गान लिखैत छलाह आ दुर्गापूजा कालीपूजाक राति नाटक मे अभिनय करबा लेल अयनाक समक्ष ठाढ़ भ' घण्टो रिहर्सल करैत छलाह आ प्रदर्शनक राति मेक-अप करबा काल भरि घरकेँ दोड़ा क' अपस्यांत क' दैत छलाह। बजारसँ त'र तरकारीक बदला—फूलक

पिता

गाछि, आमक कलम आ नव-नव फ्रेम कयल फोटो अनैत छलाह आ बरही राज-मिस्त्रीक संग डिजाइन बनबैत काल सायब पियब बिसरि जाइत छलाह। शिक्षक, कवि, कलाकार, इंजीनियर, आ सभसँ पैघ—एक टा पिता, सन्तानक हेतु सम्पूर्ण उत्सर्ग कर'वला पिता।

साँझ होइत देरी लालटेन ल' नोकर घरे-घरे तकैत छल, चेतनो भेला पर। गाड़ी मे बैसला पर क्लेटफार्म पर ठाढ़ देखि मिनटे-मिनट टोकैत छलाह—बैसि जाह, चलती गाड़ी मे नहि चढ़ी। बाहर जाइत काल दू दिन पहिनेसँ आवश्यक निर्देश दैत छलाह आ जहिया स्कूल-कॉलेज बन्द भेला पर गाम अबैत छलहुँ, पहिनेसँ धारक कात मे ठाढ़ रहैत छलाह। घरक नव फल, नव अन्न—कतहु रही, पहुँचि जाइत छल आ सप्ताह मे दू टा नियमित चिट्ठी..... से 'दादा'.....हमर पिता आइ नहि छथि.....ओहि बेर गामसँ बिदा होइत काल 'दादा'क पयर छूबि ठाढ़ भेलहुँ, तँ ठाढ़ रहि गेलहुँ। 'दादा' किछु नहि कहलनि। हम ठाढ़ रहि गेलहुँ जे दादा आब कहताह—ठीकसँ जेह'। चलती गाड़ी मे नहि चढ़िह'। सामान गति लिह'। पहुँचि क' चिट्ठी दिह'। आ संगे-संगे धारक कात घरि चल आताह। मुदा 'दादा' रैपरमे मूड़ी गोतने पड़ल छलाह। माय कने विचलित होइत कहलकवि—“हड़बड़ जाइत छथि, किछु कहबनि नहि।”

“अयँ।” दादा हड़बड़ा क' ओढ़ना हटवैत छथि। “जाइ छथि, बेस।” आ फेर ओढ़ना ओढ़ि लैत छथि।

हम कनैत आडनसँ बाहर भ' जाइत छी.....भरि बाट कबिते चल जाइत छी। दादा आब कहियो किछु नहि कहताह.....। जाइ छथि, बेस'.....सँ अधिक नहि कहताह कहियो। 'यूरीमिया' मे पड़ल छथि, सभटा बिसरि गेल छनि.....ममता.....चिन्ता-क्लेश.....सभटा। कहियो किछु नहि कहताह आब.....प्रायः नहि देखबनि आब.....

सत्ते नहि देखलियनि फेर। एतेक पंघ निर्ममता कोना संभव भेलनि दादा सँ। बिनु भेट कयने चल गेलाह.....बिनु देखने... बिना किछु कहने..... जिनगी भरि जे कहियो कोनो सजाय नहि देने छलाह, जयबाक काल एतेक कठोर इण्ड कोना द' गेलाह ? आइयो गामसँ घुरैत काल हुनक समाधिकेँ प्रणाम करैत काल एतबे प्रश्न पुछैत छियनि आ घुरि क' बिदा होइत काल लगैत अछि जेना

क्यों पाछासे कहि रहल होय—'ठीकसे जेह'—'चलती गाड़ी में नहि चढ़िह'—'मोटरी-चोटरी गनि लिह'—'.....'।

नहि, दादा दण्ड नहि द' सकैत छथि। ई शब्द हुनक नहि छलनि। ओ त' मात्र ममता, स्नेह आ आत्मीयतासे परिचित छलाह। दण्ड कहियो ककरो नहि देलथिन। मृत्युसे पूर्व अपन जीविकाक हेतु संघर्ष करैत काल सेहो मात्र आत्म-रक्षामे लागल रहलाह, दण्ड वा प्रतिहिंसाक बात नहि उठलनि मोन में। कहियो नहि, कखनो नहि।

× × × ×

क्षमा करब, ई त' फेर किदब सभ कह' लगलहुँ हम। बात तँ जीवकान्तक पत्र स' शुरू भेल छल। ओ लिखने छलाह, कने थमिह जउ, ओ की लिखने छलाह, से फेर कहब। पहिने 'दादा' की लिखैत छलाह, से कहैत छी।

आठमे क्लाससे हम गामसे बाहर रहैत छी—दरभंगा, पटना, भागपुर, बिहारशरीफ आ फेर पटना। दादाक पत्र नियमित अबैत अछि आ पत्रमे अबैत अछि गाम-घरक सभटा समाचार—महंथ भाइ हमरा लोककिके छोड़ि गेलाह, छोटकी काकी इनारमे खसि पड़लीह, महादेव नहि रहलाह, यदु भाइ बिछौन घ' लेने छथि...तुरन्ता दुखित पड़ि गेल, सम्पत्तिकाक बियाह भेलक, धान नीक अछि, सजमनि फइल अछि, दुर्गाजीक चाल लागि गेलनि, घोघनाक गाय विधायल छैक, उठोना दैत अछि.....

आ, गाम हमरा कहियो ने छुटैत अछि। गाम-घर हमरा संग लागल रहैत अछि। दादा अपन चिट्ठीमे गाम आ गामक लोकके हमरा संग क' दैत छथि।

मुदा छुट्टीमे गाम अबैत छी त' देखैत छियनि गाम दादाक संग नहि छनि। बाहर दरबज्जा पर दादा आँखि बन्द कयने पड़ल छथि—'जाक कस्त सुन, क्यों कतहु नहि.....'कहाँ छनि दादाक गाम आ गामक लोक—'ओ त' एकसर रूग्ण पड़ल छथि बिछौनपर।

दस बजैत-बजैत स्कूल जयबाक लेल दादा तैयार भ' जाइत छथि। रूग्ण देहके कहुना सोझ क' स्कूल विदा होइत छथि। छड़ी हाथ मे लैत पहिल डेग

दैत बजैत छथि'—'सभ दिन विदा होइत काल लगैत अछि जेना स्कूल नहि, युद्ध क्षेत्र मे जा रहल होइ।'।

मुदा युद्ध क्षेत्रक बात दादाके विसरि जाइत छनि। मोन रहैत छनि गाम आ गामक लोक। एकसरे पड़ल-पड़ल गामक लोकक चिन्ता—हुनक जमाय अयलथिन कि नहि, हुनक बच्चाक बोखार उतरलनि कि नहि, ओ पास भेल कि नहि.....

सभ दिन स्कूल जयबाक काल फेर युद्ध-क्षेत्र जयबाक गप्प। तहिया शरीर आरो रूग्ण भ' गेल रहनि। कपड़ो-लत्ता मायक मदति से पहिरैत छलाह आ कहुना पकड़ि क' रिकशापर बैसा दैत छलनि। हमहुँ गाम आयल रही। एना स्कूल जाइत देखि क' कहलियनि—'छोड़ि दिय' ने स्कूल। एना बित्त्य जयबाक कोन काज ?

दादा किछु नहि कहलनि। खाली हभर मुँह तकलनि जेना पूछि रहल होथि—काज की सत्ते नहि ? ओ चल गेलाह। जाइते रहलाह, अन्तिम समय घरि। हम फेर दोबोरा नहि कहि सकलियनि जे जयबाक नहि काज। सामने सौंसे परिवार ठाठल।

तहिना दादाके इहो नहि कहि सकलियनि जे चिट्ठीमे अपन गप्प लिखू, गाम भरिक गप्प लिखबाक कोन काज ? एकटा अनगोर्षा दरबज्जापर आबि मायके बात कहलक आ गामक लोक सुनलक, तेहन गाम आ गामक लोकक बात लिखबाक कोन काज ? अहाँ एकसर संघर्ष मे निमुआन छी, दिन-प्रतिदिन टूटि रहल छी आ अहाँक दुख-सुखसे उदासीन गामक खबर लिखबाक कोन काज ? मुदा से दादाके नहि कहि सकलियनि। बूझल छल जे ओ एतबे कहताह—आह, अपन गाम थिक, अपने लोक सभ अछि।

भाइ लगैत अछि जे तहिया यदि दादा नहि लिखतथि त' गाम हमरासे बीस बरब पूर्व छूटि गेल रहैत। सोरहम बरबमे गामसे बाहर आबि गेल रही। मुदा गाम आइ घरि अपरिचित नहि भेल अछि, ओहिना लग अछि—अपन गुण-अवगुणक संग।

एहि बेर सते क्षमा करू अहाँ। एहि बेर अवसरे जीवकान्तक चिट्ठीक गप्प करब। ओ लिखने छलाह—'अहाँक कथाक नायक बड़ 'एकोमोडेडिंग' होत अछि। अहाँक कथामे दू टा बिन्दु रहैत अछि—एकटा पिता आ एक टा पत्नी आ कथाक नायक दुनूक बीच डोलैत रहैत अछि।' डोलैत प्रायः ओ नहि लिखने छलाह, प्रायः ओसिलेट करैत लिखने छलाह। ठीकसँ मोन नहि पड़ि रहल अछि।

ओ पहिल बिन्दु आब टूटि गेल अछि। दादा नहि छथि। दोसर बिन्दुक बात जीवकान्त लिखने छलाह, हमर कथामेसँ एक्के टा बिन्दु छल, ओकरे चारू कात छोट-छोट बहुत रास बिन्दु ... माय, पत्नी, भाइ-बहीन, घीया-पूता, गाम-घर आ संसार... एहि सभसँ पैघ बिन्दु छलाह—छलाह नहि, छथि, आइयो वँह सभसँ पैघ बिन्दु छथि। दादा नहि छथि, ओ बिन्दु अछि, हमर सम्पूर्ण लेखक आ व्यक्ति-सामर्थ्यक बिन्दु। ओ सभ दिन रहत।

मुदा से हम अहाँकेँ कियेक कहि रहल छी ? ई तँ हमरा पत्र लिखबाक छल जीवकान्तकेँ।

आब सत्ते माफ करू हमरा। हम सत्य कथा बहि लिखि सकलहुँ। हम तँ फेर पुरने बिन्दु पर अदुरिया काटि क' रहि गेलहुँ। ●

सितम्बर १९७१

उत्तरकाराड

गाड़ी ठीक दस बजे दिन मे पहुँचल छलैक। कम्पाटमेन्टक खिड़की सँ नीक जकाँ चारू कात ताकि ओ प्लेटफार्म पर उतरि गेल छल, सभटा समान उतारने छल। सभ किछु ओहिना छलैक—अनमन। चौदह वर्ष मे कनियो किछु नहि बदलल छलैक, जेना समय ठहरि गेल होइक। ओहने प्लेटफार्म पर बोआइत दू-एक-टा कुली—सेहो पुरने। ओ सभकेँ चीन्हैत छैक, मुदा ओकरा क्यो नहि चीन्हैत छैक। परदेशी बूझ ओकर सामानक ढेरी लग घुरिआइत छैक मुदा ओकरा अनमनस्क देखि दोसर दिस चल जाइत छैक। कतेको परिचित आकृति ओकरा दिस देखि, बिना कोनो परिचयक भाव अनैत आगू बढ़ि जाइत छैक। बहि जानि कियेक ओ वेडिंग रूमक भीतर जाइत अछि। ओकर मलिछौन अयना मे अपन आकृति देखैत अछि—चौदह वर्षक वनवाससँ परिवर्तित अपन आकृति। वत्तीस वर्षक परिपक्व आ कठोर आकृतिक पाछाँ एकटा कोमल नौजवान आकृति कहिया ने बिला गेलैक। अयना मे ओकरा तकबाक ओ चेष्टा करैत अछि मुदा अपन ओ आकृति अपनो मोन नहि पड़ैत छैक। चौदह वर्षक प्रत्येक दिन अपन छाँह चेहरा पर छोड़ि गेल छैक। आँखि मे एकटा कठोर उदासीनता पसरि गेल छैक आ गोर कपार ताम्रवर्ण भ' गेल छैक। कनपट्टी पर दू-एक टा उज्जर केश—दूनु कात। साकक टुनगी कने आरो पातर भ' गेल छैक जेना। दुनू गालक हड्डी बेसी उभरल बुझाइत छैक आ छो फीटक देह किछु आगू झुकल सन। अयनाक समक्ष ठाढ़ अपन आकृति ओकरा तमसायल आ उत्तेजनापूर्ण लगैत छैक, जेना घुरि अयबाक अपन निश्चय पर अखनो अपना सँ नाराज हो। एहि चौदह वर्ष मे हजारो बेर घुरि जयबाक विचार भेल छलैक, मुदा विचारक संग सौँसे गामक हँसन, भर्त्सना करैत लोकक बीच दबकल बाबूजीक आकृति सोझाँ आबि जाइत छलैक आ ओकर निश्चय सहमि क' गलि जाइत छलैक—'हुनका सोझा कोना ठाढ़ हैब ? की कहबनि ? किएक बड़ायल छलहुँ ? आबो कहबाक काज पड़ैत ? सीता कहने हेतनि ? भरि गाम घात कयने हैत आ भरि गाम थू-थू कयने

हैत। बाबूजी घर में नुकायल हैताह। बाट-घाट सभक हँसी हुनका छेदैत हैतनि ! नहि, हुनका लग ठाढ़ हैबाक मुँह नहि अछि, जिनगी भरि नहि हैत। “आइ चौदह वर्षक बादो ओकरा सीता पर ओहिना घृणा आ तामस होइत छैक जेना गामसँ पड़यबाक काल सँ ल’ क’ आइ चौदह वर्ष धरि होइत रहलैक अछि—प्रत्येक दिन, प्रत्येक क्षण ! ओकर सम्पूर्ण जीवनकेँ व्यर्थ क’ क’ राखि देलकै, सभटा स्वप्न, सभटा महत्वाकांक्षा केँ ठाहि देलकै—एवके क्षण में, मात्र एक क्षण में। आइ एतेक वर्षक बादो ओहि क्षणक स्मरण सँ ओकर रोइयाँ रोइयाँ भुलकि जाइत छैक। अयना में एकटा गाछी, गाछी में एकटा एकान्त दुपहरिया, आ एकान्त दुपहरिया में एकटा घटना। नहि, ओ अयना लग सँ हँटि जाइत अछि। ई दृश्य ओ हजारो-लाखो बेर देखि चुकल अछि, ओकर मोनक अयना में ओ स्थायी रूप सँ अंकित छैक। आ संगे-संगे छैक एकटा कनैत धमकी—हम कहि देबैक... लाल काकाकेँ कहबनि... सौंसे गाम केँ कहबैक...—

ओ वेटिंग रूम सँ बहरा क’ प्लेटफार्म पर घुरि अबैत अछि। मोन होइत छैक, टाइल समय-सारणी में घुरबाक समय देखथ। ओ गाम में पयर नहि देत। किछहु नहि। लोक सभक सोझा ठाढ़ नहि भ’ सकत। बाबूजी सँ अखि नहि मिला सकत।

मुदा, बाबूजी केँ देखबाक जे इच्छा ओकरा एहि चौदह वर्ष में बेर बेर उसकबैत रहलैक अछि, सँह ओकर डेग फेर थकथका दैत छैक। नहि जानि, बाबूजी कोना हेताह ! कोना बीतल हैतनि ई चौदह वर्ष ? के छनि देख’ बला ? माँ त’ मोनो ने छथि। जहिया सँ होश भेल, बाबूजी केँ एकसरे देखलियनि अछि। हमहीं छलियनि सभ किछु, बाबूजीक सम्पूर्ण संसार। से बाबूजी हमर बनवासक बाद...

बनवास शब्द सँ ओकर देह सिहरि जाइत छैक। बनवासक बाद तँ फेर भेट...। ओ जल्दी सँ विचारधारा केँ मोड़ैत अछि। नहि, ई बनवास नहि छलैक, ई त’ आत्मनिर्वासन छलैक। खाली नाम भेला सँ सभ क्यो राम नहि भ’ सकैत अछि। ओ त’ राक्षस अछि, ओकर पापक हेतु बाबूजी किएक दण्डित हैथिन ?

ओ डेग झटकारैत सामान दिस अबैत अछि। दू टा कुली ओकर सभटा सामानकेँ ओगरैत बैसल छैक आ ओकरा दिस आश्चर्य सँ तर्कैत छैक जे केँ सामान छोड़ि क’ निश्चिन्त निपत्ता छल। प्रायः ओकर परदेशी हैबाक विश्वास दुनू कुली केँ भ’ गेल छैक। तीन-तीन रूपैया मंगैत छैक गाम जयबाक। ओ दुनू कुली केँ चीन्हैत छैक। ओकरा मोने मोने हँसी जगैत छैक जे चिन्हलापर दुनू कोना लजेतैक ? छौ आनाक बदला तीन रूपैया। मुदा तत्क्षण बितलाहा चौदह वर्ष मोन पड़ैत छैक आ लगैत छैक जे कोनो बेसी नहि छैक, एतना तँ हैबैक चाहियैक आनो वस्तुक मूल्य-वृद्धिक हिसाबे। ओ कुलीक पाछाँ-पाछाँ गाम दिस विदा होइत अछि।

रोद नीक जकाँ पसरल छैक। मुदा, जाड़क रोद प्रिय आ सुखद लागि रहल छैक। तैयो गाम दिस ससरैत डेगक संग एक टा अप्रिय कछमछी ओकर मोनकेँ व्याकुल कयने जा रहल छलैक ! लागि रहल छलैक जेना कखनो क्यो ओकरा चीन्हैक’ चिचिया उठलैक—यैह अछि रमुआँ। चौदह वर्ष पर घुरल अछि मुदा चौदहो जन्म में की ओहि पापक प्रापक प्रायश्चित हेतैक ? ताँही कछमछी में डेग अनेरो सुस्त होत गेलैक आ मोटा उठौने दुनू कुली बड़ी दूर निकलि गेलैक। जखन ओ गामक सीमामे प्रवेश कयलक, दुनू कुली सामान राखि बाट पर गैसल छलैक—बड़ी देर लगा देली मालिक ! कखन सँ गैसल हती ! किनका ओत्ते जयगैक ?

बाबूजीक नाम लैत ओकर जीह किछु थरथरयलैक मुदा दुनू कुलीबाक आकृति पर सेहो भाव परिवर्तन भेलैक। किछु चिन्हार सन भाव। मुदा किछु बजलैक नहि। सामान उठा विदा भेलैक आ ओहो पाछाँ लागि गेल।

परिचित घर सभ सोझाँ आब’ लगलैक आ फेर अप्पन दरबज्जा। गामक बहुत रास धीयापुता ओकर अपरिचित आकृति, डील-डौल आ वेशभूषा देखि पछोर धयने दरबज्जा धरि अयलैक। दरबज्जा ओहिना छलैक मुदा किछु श्रीहीन-सन। एकदम सुन्न। ओकर करेज धक्क द’ रहि गेलैक। बाबूजी त’ कहियो आङन में नहि बैसैत छलाह। मोनक आशंका केँ ओ फेर एक बेर दबौलक। कुलीबा सामान लेने आङन चल गेलैक आ तकर बाद लाल कालाक स्वर ओ नीक जकाँ चिन्हलकनि—के थिकाह ?”

ओ आगू बड़ि गोड़ लगलनि । लाल काका कनेकाल ओकरा निहारैत रहलथिन आ फेर डेन पकड़ि चिचिया उठलथिन—राम छह हो ? आ फेर छाती सँ लगा कान' लगलथिन । दहो बहो नोर खस' लगलनि । ओहो कान' लागल । बड़ी काल धरि कनैत रहल । नहि जानि कहिया सँ सुखायल आँखि भीजिक ठण्डा भ' गेलैक । मुदा तखने एकटा शब्द ओकरा भीतर धरि दागि देलक—देरी सँ अयलें राम, कने देरी सँ अयलें ! भाइ के विश्वास छलनि जे तों घुरबे, मुदा चौदह वर्ष वितला पर आस टूटि गेलनि आ आस टूटि गेलनि तें तोहर बाट नहि देखि सकलथुन आगू ।

लाल काका एक बेर फेर हिचुकि हिचुकि क' कान' लगलथिन । मुदा राम एहि बेर नहि कानल । सुन्न भेल लाल काका क दूनू बाँहि मे बन्हायल रहल । लाल काकाक कानब, हिचकब किछुओ ने सुनलकनि ओ । ओ त' जेना ज्ञान-संज्ञा शून्य भ' गेल छल । लाल काकाक बाँहि सँ छुटैत देरी लुद्द' ओतहि माटि पर गैस रहल...गैसले रहि गेल ।

भरि गामक लोक दरबज्जा पर जुमि गेल छलैक आ आइन मे स्त्रीगणक भीड़ । भीड़ बढ़ले गेलैक...गाम मे भरिसक्के बयो रहि गेल होइ जे ओहि काल ओकर दरबज्जा पर नहि जुटलैक ।

ओकरा होश भेलैक ? उठिक' ठाढ़ भेल । चारू कात तकलक । केम्हरो सँ कोनो भर्त्सनाक स्वर नहि उठलैक । ओ आश्चर्यपूर्वक प्रतीक्षा करैत रहि गेल ।

× × × ×
राति वेसिये बीति गेल छलैक । मुदा ओकर आँखि मे नीन्न नहि छलैक । साँझ धरि दरबज्जा पर ठेलमठेल छलैक । सभक एक्केटा प्रश्न—एना किएक निपत्ता भेल छलाह, कोम्हर छलाह ? एतेक दिन पर घुरलाह कोना ? ओ ककरो सत्य बात नहि कहि सकलैक । मुदा ओकरा आश्चर्य भेलैक जे लोक सत्त बात किएक नहि जनैत छलैक । मुदा ककरो प्रश्न मे ओकरा कोनो छद्म वा कटाक्ष नहि लागल छलैक ।

आ रातुक एकान्त मे यैह ज्ञान ओकरा मथने जा रहल छलैक । तखन त' व्यर्थ ओकर जीवन नष्ट भेलैक ? बाबूजीक प्राण अनेरो गेलनि आ ओ अनेरो बाबजीक स्नेह आ अप्पन घर-समाज सँ दूर पड़ायल ? ओ बाबूजीवला कोठली मे पड़ल छल मुदा कोठली मे बाबूजीक स्मृतिस्वरूप किछुओ ने छलैक ! प्रायः

लाल काका बौसार बना लेने छलथिन ओकरा । बाबूजीक एक एक वस्तु चुनि न' हटा देल गेल छलनि जेना । हुनक रुद्राक्ष, नोसिदानी, छड़ी छाता, खड़ाम पुरतक आ गीता कोनो वस्तुक अस्तित्व नहि छलैक घर मे । मायक बड़का फोटो आ माय-बाबूजीक संग-संग वला फोटो सेहो देवाल पर सँ चिपत्ता छलैक आ बाबूजीक संग ओकर अपन जे एक मात्र फोटो छलैक सेहो गायब छलैक । ओकरा सभटा असह्य लगीक आ जोरसँ चिचिया उठल—'लाल काका' !

काका प्रायः जगले छलथिन । खड़ाम खटखटबैत कनिबै काल मे पहुँचि गेलथिन—'की बात छैक राम ! किछु चाहियह ?

काका के एना आवि गेला सँ ओकरा अपन उत्तेजना पर ग्लानि भेलैक । कने लजाइत बाजल—किछु नहि काका ! अनेरो तंग कयलहुँ अहाँके । एहिठाम देवाल पर बाबू आ मायक फोटो छलनि, से की भेलैक ?

ओकरा आश्चर्य भेलैक जखन ओकर प्रश्न पर काका तेना संकुचित भेलथिन जेना कोनो चोरी पकड़ा गेल होनि । सफाइ जकाँ दैत बजलथिन—'खराप भेल जाइत छलैक फोटो । दूनू देवाल एहि कोठलीक वेसी सर्व छैक, ते उतारि क' तोहर काकी बक्सामे राखि देने छलथिन । काल्हि टाँडि देबैक ।'

काका चल-गेलथिन । ओकरा काकाक देल कारण यथेष्ट नहि लगलैक । फोटो के एना देवाल सँ हटा क' बक्सा मे राखि देनाइ, ओकर स्थान पर सस्त रुचिवाला कलेण्डर सभ टाँडि देनाइ ओकरा अरुचिकर लगलैक । काकाक सहमब आ सफाइ देब ओकरा मोनमे तरह-तरहक बातक जन्म देलक । मुदा सभके दबा पुनः बाबूजीक स्मृति आ बिछोह ओकरा बेर-बेर कचोट' लगलैक ।

पढ़' लेल शहरक स्कूल जाय लागल छल त' बड़ी काल धरि करेजा सँ सटने रहि गेल छलथिन । प्रायः पीठ पाछाँ आँखिक नोर पोछने छलथिन । तैयो भीजल आँखि स'टा देखार क' देने छलनि । जवदंस्ती हँसैत कहने छलथिन—'मोन लगाक' पढ़िह'... सभ शनि क' गाम पर जरूर आविह' ! बूढ़ बापो के देखिह' !'

आ, ओ शनिये—शनि गाम अबैत छल—नियमित । प्रत्येक सप्ताह । रिजल्ट भेला पर गाम अबैत छल त' सत्यनारायण पूजा करैत छलथिन । भरि गाम प्रसाद बटैत छलथिन आ सभ साल कहैत छलथिन—एहि परीक्षा मे

फस्ट कयला सँ की हैतह ? मैट्रिक में स्कॉलरशिप चाही । वमसँ वम जिला में फस्ट ! जहिया फस्ट डिवीजन सँ स्कॉलरशिपक संग मैट्रिक पास कयने छल खुशी सँ बसाह भ' गेल छलथिन । दरबज्जा पर लाउडस्पीकर आ रशनचौकी बजबा देने छलथिन । भरि गाम के भोज होबा देने छलथिन ।

कालेज सभ नहि खूजल छलैक । एडमिशनक हेतु मास दिनसँ बेसी गाममे रहबाक छलैक । जेठ-बैसाखक मास छलैक—आम सभ पाकब शुरू नहि भेल छलैक । डम्हायल डम्हायल, बनाएल आम सभ ! अपन झमटगर गाछीक एकांतमे मचानपर पड़ल छल कि तखने... नहि, ओ सभ आब नहि मोन पाइत । सभटा बिसरि जाय पड़ैत, नवसँ जिनगी शुरू कर' पड़ैत । गाममे लोक किछु नहि जनैत छैक, से वीके छैक । ककरो जनबोक नहि चाहियैक । ओ सुतबाक चेष्टा करैत अछि, मुदा सूत'सँ पहिने बेर-बेर मोनमे प्रश्न उठैत छैक जे गामक लोक कोना-ने जनैत छैक ओ बात ? आ बेर-बेर नीन्त उचटि जाइत छैक, मोरकबा धरि जगले रहि जाइत अछि । खिड़कीसँ भोरक हवा देहकेँ स्पर्श करैत छैक आ राति भरिक जागल भारी पिपनी झँपा जाइत छैक ।

X X X X

एकटा बारह तेरह वर्षक छौड़ा बड़ी कालसँ दरबज्जापर बैसल छैक । टुकुर-टुकुर ओकर मुँह ताकि रहल छैक । जिज्ञासु आकृति बड़ सुनर आ अपन सन लगैत छैक ओकरा । आकृति पर कोनो परिचितक छाया सन मुदा ठीक ककर, से मोन नहि पड़ैत छैक । बेराबेरी कहेको लोक दरबज्जा पर अयलैक आ चल गेलैक । मुदा ओ छौड़ा ओहिना बेंच पर बैसल रहलैक—टुकुर-टुकुर ओकर मुँह तकैत ! एकटा फाटल सन हाफ पैंट पर मोड़ल-मोचड़ल सन पुरान कमीज पहिरने छैक आ पैघ-पैघ कारी केश कपार पर लटकल छैक । दरबज्जा सुन्न भेलो पर ओकरा बैसल देखि राम ओकरा दिस ध्यानसँ देखैत छैक आ कने मुसकिया दैत छैक । ओकर मुसकी पर छौड़ा केँ बल भेटि जाइत छैक । कने ससरि क' लग अबैत पुछैत छैक—हमरा चिन्हैत छी राम मामा ?

'मामा' सम्बोधन पर ओ अन्दाज करैत अछि जे गामक कोनो बेटाक सन्तान अछि, मुदा चेष्टा कयलो पर ककरो आकृति ध्यान पर नहि अबैत छैक ।

—अहाँ त' नहि चिन्हलहुँ, मुदा माय कहलक जे तौ जो, तोरा अवस्से चिन्हथुन ।

—ककर बेटा छै'तौ ? एहि बेर राम प्रश्न कयलक ।

—“सीताक”

छौड़ाक उत्तरसँ स्पष्ट चौंकि गेल ओ । सीता गामे मे छलैक, ओकर बेटा छैक तेरह चौदह वर्षक, जीवनक सभ सुख भोगि रहल अछि आ हमरा एना ठाम-ठाम बौधा देलक ! जीवनक सभ सुख छीनि लेलक । ओकर चेहरा कठोर भ' जाइत छैक । मुदा ओ छौड़ा ओकर भाव परिवर्तन लक्ष्य नहि करैत छैक । ओहिना उत्साहित होइत कहैत छैक—“हमरा ओहि ठाम नहि चलब राम मामा ! अहाँ त' मायक संगी छलियैक !”

ओ किछु जबाब नहि द' मुसकिया दैत छैक । छौड़ा आरो उत्साहित होइत बजैत छैक—अहाँ त' बहुत दिन पर गाम आयल छियै राम मामा ? कत' गेल रहियैक ? किए गेल रहियैक ?

आब राम केँ कनेक तामस जकाँ होब' लगैत छैक । भरि गाम जकाँ इहो छौड़ा वैह प्रश्न कर' चाहैत छैक ! मुदा फेर ओहि छौड़ाक अबोध आकृति आ जिज्ञासा भरल आँखि पर ध्यान जाइत छैक आ अपन तामस केँ रोकैत कहैत छैक—“ओ सभ सुनिक' तौ की करबे ? तौ अपन सुना । कत' पढ़ैत छै ?

एहि बेर ओ छौड़ा लजा जाइत छैक—“कहाँ पढ़ैत छियैक ? अपर स्कूल धरि कहना पड़लियैक । फेर नानी मरि गेलैक । एकसरि माय । आब त' एकटा महींस रखने छियैक अप्पन आ एकटा गामक पोसिया लेने छी । ओकरे मे लागल रहैत छी ।”

ओहि छौड़ाक बुढ़ायल सन उत्तर पर ओकर मुँह बन्न भ' जाइत छैक । फेर मोन पड़ैत छैक जे जहिया गामसँ पड़ायल छल, एहि छौड़ा सँ दुइये-तीन वर्ष त' जेठ छल हैत । मैट्रिकक रिजल्ट संग छलैक, सर्टिफिकेट त' भेटलो नहि रहैक । पटना आ कलकत्ता । पटना मे त' भूखे मर' लागल छल । दू चारि दिन मजदूरी कयने छल । फेर कलकत्ता । एकटा पंजाबीक संग दोस्ती, ओकरे संग एकटा छोट-छीन कोठली आ एक टा मिल मे नौकरी । आइ० ए०, बी०ए०, एम० ए० आ फेर 'ला' इ परीक्षा । कालेजमे नाम लिखब' लेल चुपचाप एक बेर पुरवा स्कूल आयल

आ साटिकेट ल' क' घुरि गेल रह्ये । पढ़ाइक संग द्यूशन । पढ़ाइ खरमो भेला पर यूशन । एक डेरा, दोसर डेरा, फेर तेसर डेरा ! मिलक नौकरीक बाद प्राइवेट स्कूल आ फेर एकटा पैघ फर्ममे नौकरी । नौकरीक संग स्त्री, कतेको स्त्री, बंगाली, पंजाबी, मद्रासी, क्रिश्चियन आ नेपाली । जखन जकर काज भेलैक । मुदा पहिल बेर ओहि दोस्तक स्त्री छलैक । दोस्त के नाइट ड्यूटी रहैक अधिक काल । ओम्हर ओ ड्यूटीपर एम्हर ओ बिछाओन पर । गाम छोड़' काल एकटा क्षणिक आवेश मे जे काण्ड कयने छल, से एकटा अभ्यास मे बदलि गेल छलैक । रंग-विरंगक स्त्री, अपन इच्छा सँ संग भेलि स्त्री, अपन पाइसँ कीनलि स्त्री, मुदा सीता जकाँ कयो कानलि नहि छलैक, कानि क' कयो धमकी नहि देने छलैक ।

सीताक नामपर फेर ओहि बेंच दिस ध्यान जाइत छैक । ओकरा अनमनस्यक देखि ओ छौंड़ा बिन्चमे घसकि गेल छैक कखनो । ओकरा बड़ जोर इच्छा होइत छैक जे सीताक आइन दिस जाय आ ओकरा देखैक । मुदा ओ दरबज्जा सँ उठि अपन कोठली दिस अबैत अछि । दोसर कोठलीमे लाल काका आ काकीमे किछु गप्प भ' रहल छलनि । बिन चाहलो ओ गप्प सभ सुन' लागल—

—“ई कहाँसँ बज्ज बसल हमर नेना सभक कपार पर । बारह वर्ष पर तँ लोक आदो क' दैत छैक । अहूँ के कहने रही जे करबा दियोक आद, नहि मानलहुँ । ते' ने मुदा जीविक' आबि गेल ।”—लाल काकीक स्वर ।

—“आस्ते बाजू, दरबज्जे पर अछि, सुनि लेत । जे हेबाक छल, से से भ' गेल । सभटा ओकरे त' छैक । भाइ संग राखि लेने छलाह, कहियो पितृयौत नहि बुझलनि, अप्पन जकाँ रखलनि ।”

—“मुदा मरबा काल कहाँ लिखि गेला एक्को घूर अहाँक नाम । बूढ़ा भितरिया छलाह । हेरायल बेटा ले' सभ किछु छोड़ि गेलाह आ हमरा लोकनि जे जीवन भरि सेवा कयलियनि, से बेकार । स्त्री नहि छलयिन । पचीस-तीस वर्ष घरि तँयो जीबैत रहलाह । के कयलकनि सभटा ?”—लाल काकीक स्वर आरो तीव्र होब' लगलनि ।

“अहाँ चुप्प हेब की नहि ।—” लाल काका एहि बेर जोरसँ डंटलथिन
—“दरबज्जे पर छथि राम, सुनता त' अनर्थ हैत ।”

—“आब आर की अनर्थ हैत ।”— लाल काकीक कनीन स्वर तीव्र छलनि—“गला त' कटि गेलैब चारु भाइक । तीन तीन टा के' काछेजमे देन छियैक ! आब कहाँ सँ जुटत खर्च ? एषटा कमाया छथि, तनिका त' अपने बहु-बेटासँ नहि बचैत छनि । की हमरा-अहाँ के देता आ की भाइ सभके' देता । कप्पारे फूटल अछि ते' । ने तँ मरलो लोक घुरैत छैक कहियो ?”

रामक छाती पर एक एक टा शब्द हथौड़ा जकाँ वज्ररत छैक । लाल काकी ओकरा कोरामे खेला पोसने छलयिन, मातृहीन राम के अपन दूध पियोने छलयिन । से आइ ओकर घुरलापर दुखी छथिन । हुनक सन्तानक मुहसँ कोर छिना गेल छनि । मुदा ओ सम्पत्ति पर अधिकार कर' कहाँ आयल छल ? ओ तँ बहुत रास कमा लेने छल अपनो । ओ त' बाबूजी के' देख' आयल छल ।

बाबूजीक नाम पर देवाल पर टाङल फोटो दिस दृष्टि जाइत छैक । काकीक बक्सा नहि, अरजाल-खरजाल बीच फेकल तीनू फोटोके' ताकि, ओकरा पोछि-पाछि क' फेर टङने छल देवाल पर । एकसरि मायक एक टा पैघ फोटो, आ एकटा मे माय-बाबूजी दुनू कुर्सी पर बसल आ तेसर बाबूजीक संग सटि क' ठाढ़ राम-दस वर्षक राम । फोटो के' निहारैत ओकरा गाम अयबाक अपन निश्चय पर अपने तामस होइत छैक । कोन काज छलैक ? सौंसे गाम त' मुदा मानि लेने छलैक । एकटा बाबूजी के' प्रतीक्षा छलनि, चौदह वर्ष घरि प्रतीक्षा छलनि । मुदा तकर बाद मासो दिन नहि रहलाह । आस टूटि गेलनि । घुरबेक छलैक तँ किछु दिन पहिने किएक ने घूरल ? बाबूजी के' एक बेर देखि त' सकैत !

फोटोक सोझाँ ठाढ़ राम कान' लगैत अछि । आब संसारमे कयो नहि छैक ओकर । एहि बेर गामसँ घुरला आ पड़यला पर ककरो ओकर घरबाब प्रतीक्षा नहि रहतैक । ओ निश्चय करैत अछि जे एहि खेप गामसँ जाइत काल तँनू फोटो अपना संग लेने जायत ।

× × × × ×

मोन अकछ' लागल छलैक । दुइये सप्ताहमे गाम असह्य लाग' लागल छलैक । आब गामबलाक जिज्ञासा खतम भ' गेल छैक । आब ओकर दरबज्जा पर भोरसँ साँझ घरि भीड़ नहि रहैत छैक । लाल काका आब लाल काकीके' जोरसँ बजबा

लेल डंटत नहि छथिन, अपनो संग संग पसुर-पसुर कर' लगैत छथि । बड़ी-बड़ी राति धरि दुनूक फुसुर-फुसुर ओ सुनैत छथि । गोर्वा सभक संग लाल काकाक खुसुर-पसुर होइत रहैत छनि । किछु ओकरो लब अबैत छैक—बितलाहा चौदहो वर्षक हिसाब लियनु । मालिके बनल छलाह । सभटाक हिसाब लियनु पाइ पाइक । एतेक टा राज-पाट अछि । सभ टा हथियौने छथि । अपन कजामे करू ।”

राम सभटा सुनि क' अनठा दैत छलैक । गामक संग कोनो स्नेह-सम्बन्ध नहि जुड़ल छलैक आब । फेरसँ धरि जयबामे कोनो बाधा नहि छलैक । कहियो कोनो क्षण बिदा भ' सकैत छल ।

ओहि दिन ओहिना गाममे टहल' विदा भेल छल । कतेको ठाम धुरलाक बाद सीताक घर लग पयर थकमका गेल छलैक । घर नहि, एकटा खोपड़ी सन । एकटा घर आ ताहू चरक टाटमे सौंसे भूर । उजड़ल आङन, जंगलाह पछुबार. जेना कोनो बोनमे एकटा खोपड़ी ठाढ़ हो—उपेक्षित । खुट्टा सँ बान्हल महीसक पाँजर सकटल जेना महीनोसँ खोराकी नहि भेटल होइक । बड़ी काल धरि ओतहि ठाढ़ रहल । भीतर आंगनमे जयबाक साहस नहि भेलैक । तखने एकटा स्त्री बहरयलैक घरसँ बाहर—पातर देह, उज्जर सन साड़ी, मुदा सींथमे सुन्दर, पंतीस-चालीसक वयस, रुच्छ केश आ मुखाकृति ओहिना कोमल आ स्वच्छ । ओकरा ठाढ़ देखि चौकलैक आ मुँहक भाव परिवर्तित भेलैक आ ओहि क्षणमे ओ चिन्हलक—ओ त' सीता छलैक । ओकर सौंसे शरीर झनझना गेलैक । सीताक एहन स्वरूप ? ओकरा एक टा आर सीता मोन पड़लैक !

सीता हँसैत लगमे ठाढ़ि छलैक— नहि चिन्हलहुँ ?

—“चिन्हवौ कोना नहि ? मुदा एना किएक ? सीता ओहिना हँसैत रहलैक—“सभ टा त' देखिये रहल छी ।”

ओ एक टा अवाधिकार प्रश्न कयलक—सासुर किएक ने चल जाइत छै ?

ओ ओहिना हँसैत रहलैक—“लैये ने जाइस छथि । जवदस्ती जाउ ?”

ओकरा आगू किछु नहि फुरयलैक । बड़ी काल चुप्प रहल । डेगो आगू नहि बढ़लैक । फेर पुछलक—“तोहर बेटी बड़ सुन्नर छौक । हमरा सँ भेंट कयने छल । तो त' देखी ने अयलै । ओ ओहिना हँसैत रहलैक—“कोना अबितहुँ ?

हमरे डरे ने पड़ावल रही । डर भेल जे हमरा देखैत बेरी फेर पड़ाव तँ फेर चौदह वर्ष धरि गामक दिस मुँह नहि करब ।” एहि बेर ओकरो हँसी लागि गेलैक । अपराधी भौयो क' ओ अनेरो एतेक वर्ष धरि सीता पर खिमिआयल रहैत छल । ई त' एकदम मुक्त छैक । आब गामसँ बेसी हल्लुक आ ग्रंथिहीन भ' क' धरि सकत । आब कोनो अपराध बोध नहि कचोटैत ।

सीता टोकैत छैक—“की सोच' लगलहुँ— फेर डरा गेलहुँ । सत्ते एतेक डर भेल हमर बातक ?”

चारू कात सँ लोक हुलकी देब' लागल छलैक । सभक ठोर पर मुस्की छलैक—कोनो विशेष अर्थ भरल । चौदह वर्ष धरि बाहर रहल ओकर चरित्र के रहस्यमय आ संदिग्ध मानैत छैक सभ । आनो स्त्री आ छौंड़ी सभक ठोर पर अर्थ-पूर्ण हँसी बेर-बेर देखने छैक एहि पन्द्रह दिनमे । सीताक उपेक्षित घर आ चारू कातक अर्थपूर्ण हँसी । बहुत किछु स्पष्ट भ' जाइत छैक ।

राम सीताक बातक उत्तर बिनु देने जल्दी-जल्दी डंग उठबैत अछि—एकटा निश्चयक संग । आब ठहरव बेकार छैक । छाती पर राखल पाथर आब हटि गेल छैक । अपराध-बोधसँ मुक्त भ' गेल अछि । आब निश्चिन्त भ' गामसँ धरि सकत । मुदा नहि जानि कियैक, सीताक उजड़ल उपेक्षित घर-आङन, ओकर बेटाक सुन्दर अबोध आकृति ओकरा बेर-बेर कचोटैत छैक । पढ़वा-लिखबाक वयस मे महीस चरबैत छैक । ओ किछु मदति दैतैक तँ सीता लेतैक ? उत्तर ओकरा बूझल छैक । तैयो ई प्रश्न बेरबेर ओकरा मोन मे उठलैक—कतेक दिन धरि ई प्रश्न ओकर मोन मे अहुरिया बटैत रहलैक । मुदा ओकरा सीताक घर दिस जयबाक साहस नहि भेलैक ।

× × × × ×

लाल काका आग्रह कयने छलथिन—“किछु दिन-आर रहि जाह । एतेक वर्ष पर अयलहुँ आ एतेक जल्दी जाइ छह । लोक की कहत हमरा ।

लाल काकी खूब फनलथिन—“पहिल बेटा छह हमर । दूध पियौने छियह । एतेक कठोर नहि बनह । किछु दिन रुकि जाह ।

तीनू फोटो अपन बक्सा मे राखि ओ विदा भ' गेल छल । बाबूजीक नोसिदासी, छड़ी, चश्मा, गीता आ पुस्तक सभ सेहो ताकि-ताकि क'

बन्हा लेने छल । लाल काका कनैत कहने छलथिन—“एकरा नहि ल’ जाह । भाइक आखिरी निशानी अछि ।”

ओ सभटा बन्हा लेने छल । मोटरी-चोटरी ल’ दू टा बादमी स्टेशन चल गेल छलैक । दरबज्जा पर फेर भीड़ छलैक । कतेको बात । कनफुसकी—“फेर सभटा राज-पाट छोड़ने जाइत छी, लूटि-पाटि करबा देताह । कमसँ कम व्यवस्था कयने जाउ सभक । कतेको मुँह पर अर्थपूर्ण भाव—“ककरो राखि आयल हैताह कलकत्ता मे । ने तँ एना सभटा छोड़ि-छोड़ि कयो जाइत अछि ।”

ओ विदा होइत अछि । घर-दरबज्जा, गामक लोक, पाछाँ छूटि जाइत छैक । एहि खेप प्रायः अन्तिम । ओ घुरि-घुरि क’ तकैत अछि । गामक सिमानसँ बहरा जाइत अछि । अपन गाछी भेटैत छैक—ओहिना पैघ, किछु आरो बेसी झमटगर । ओ मचान कहाँ गेलैक ? मुदा मचान कहाँसँ ओतैक एहि जाइ मास मे । ओ त’ जेठ-बैशाख छलैक । मचान पर चित्त पड़ल छल राम ।

खिलखिल हँसी सुनि पलटल छल । सीता ठाढ़ि छलैक । गाछी मे सौंसे डम्हायल आम लटकल छलैक आ सोझा मे सीता ठाढ़ि छलैक—खिलखिल हँसैत । ओ टोकने छलैक—“एना हँसैत कियैक छै गय ? दू मास मे बियाह हेतौक, तकरे खुशी मे मातल छै ?”

ओ लजा क’ चुप्प भ’ गेलैक । तखन ओकरा आश्चर्य भेलैक जे दुपहरिया मे एकसरि ओ कोना आयल छलैक । ओ टोकि देलकै—“दू मासक बाद विवाह छीक आ तो गाछिये-गाछिये बीयाइत छहीक ?”

सीता फेर हँस’ लगलैक—“त’ की हेतैक ।”

तखने ओ एकटा अनर्गल प्रश्न कयलकै—“आ विवाहक बाद की होइत छैक ?”

“दुर !”—ओ लजा गेलैक ।

“कहु ने, की होइत छैक ?”—ओकरा अपव जिद्द औचित्यक ध्यान नहि छलैक ।

—“हम की जाने गेलियैक ? तोही लाल बुझवकइ छै, त’ कह ने ।”—लजाइतो सीता बाजि गेलैक ।

आ अनायास ओकर सम्पूर्ण शरीर मे तनाव भरि गेलैक—एकटा अपरिचित उन्मादक तनाव । सौंसे गाछी गमक’ लगलैक आ ओहि गाछीक बीच ठाढ़ि भरलि-पूरलि सुन्नरि सीताकेँ ओ नव दृष्टि सँ देखलकै आ पूर्ण आवेब सँ पकड़ि देहसँ साटि छेलकै—“त’ ले, हमही देखा दैत छियौक जे की होइत छैक ?”

कतहु विरोधक आभास ओकरा नहि भेल छलैक । आवेग शान्त भेला पर देखलकै जे ठेहन मे मूड़ी गोतने ओ कानि रहल छलैक, हिचुकि रहल छलैक । ओ लज्जित-सन लग मे ठाढ़ छलैक । कनैत-कनैत ओ ठाढ़ि भ’ गेलैक आ ओकरा दिस तकैत बाजि उठलैक—हम कहि देबनि नूनू काकाकेँ । भरि गामकेँ कहबैक । तो—तो—

सीता बात सम्पूर्ण करब छोड़ि कनैत पड़ा गेलैक । राम किछु क्षण सुन्न भेल ठाढ़ रहल । फेर आतंकित भ’ गेल । सीता बाबूजीकेँ कहतनि, सौंसे गामकेँ कहतैक—आतँके देह सिहरि गेलैक—ज्ञान-परान लुप्त भ’ गेलैक । ओ पड़ायल । पड़ायले चल गेल । दू दिन धरि भूखल-प्यासल दौड़ैत रहल—

“राम मामा !—राम मामा !” कयो पाछाँसँ सोर पाड़ि रहल छलैक । आइ राम पड़ायल नहि जा रहल छल । आइ त’ सभक सामनेसँ जा रहल छल । तखन के पाछाँसँ खेहारने आबि रहल छलैक ?

राम पाछाँ तकलक । सीताक बेटा दौड़ल आबि रहल छलैक । ओकर हाथ मे एकटा मोटरी छलैक । लग आबि ओ एकटा चिट्ठी हाथ मे देलकै । अकबकायल राम चिट्ठी खोललक—

“हमरा बूझल छल, अहाँ गाम मे नहि टिकब । जहिये अहाँ गाम आयल रही, तहिये तँ बूझल छल । चिट्ठी तहिये सँ लिखि क’ रखने रही, मुदा द’ नहि सकलहुँ ।

“हम अहाँ के की कहूँ ? कहियो किछु नहि कहलहुँ । जहिया गाम भरिक छोड़ी नाम दारे अहाँक नाम लगा क’ हँसी करैत छल, जहिया जबरदस्ती अपना दिस झिंकने रही, तहियो किछु नहि कहने रही । बाद मे कानलि रही, कानि क’ धमकी देने रही । मुदा ककरो किछु नहि कहलियँक । माइयोके नहि ।

चतुर्थीक राति हुनका कहि देने रहियनि । नहि जानि कियैक ? अहाँ अपन क्षणिक आवेग मे हमरा किछु द’ गेल रही, ओकरा हुनका सँ नुकसबाक पाप हमरा बुते नहि भेल । नीक लोक छलाह । हल्ला-फसाद नहि कयलनि । ककरो किछु नहि कहलथिन । चतुर्थीक प्राते जे गोला से फेर नहि घुरलाह । सुधी छथि, बाल-बच्चा छनि । हम अभारी छियनि ।

मुदा, अहाँक देल भार आव नहि सम्हरि रहल अछि । मायो नहि रहल । एकसरि नहि सकैत छी । अहाँक बेटा महीस चरबैत रहय, से अहाँके नीक लागत ?

हमर चिन्ता नहि करू । आरमहत्या नहि करब । असली सीतो नहि छी, हमरा लेल घरती नहि फाटत । बज्जर घरती पर जीबि लेब हम । चौदह वर्ष हम अहाँक देल वस्तु कहना सम्हारि क’ रखलहुँ, आइ घुरा रहल छी । अहुँक हिसाब बरोबरि भ’ जायत । सीता पर कोनो तामस नहि रहत । तामसो हैत त’ उपाय कोन ? आव हम नहि सम्हारि सकब । मुन्नूके ल’ जइयोक । मनुक्ख बसा दियोक ।”

पत्र पढ़िक’ राम एकटा नव आवेग सँ काँप’ लागल । मुन्नूक हाथ पकड़ि लेलक—“माय कहाँ छी ?”

मुन्नू हाथ सँ संकेत कयलक—“ओत’, ओहि गाछक पाछू मे ठाढ़ि अछि ।”

मुन्नूक हाथ पकड़ि राम ओम्हरे दोड़ल जेना सीता पड़ायलि जाइत होइ, जेना एखने घरती फाटिक’ सीता के ग्रहण क’ लेतैक । ओकरा ओहि सँ पहिने पड़बाक छैक ।

गाछक मोट जड़िक ओहिकात सीता ठाढ़ि छलैक । लग आवि हाथ पकड़ि लेवतै । दोसर हाथ मे मुन्नूक हाथ छलैक — “अहाँक लेल घरती नहि, हमर ! बज्जर हृदय फाटल अछि सीता । अहाँ ओहि मे धँसि जाउ । मुन्नू के नहि, पहिने हमरा मनुक्ख बना दिय’ ?”

सीताक आँखिक नोर प्रसन्नता सँ चमक’ लगैत छैक । स्टेसन दिस डेग उठबैत कहैत छैक—“चलू ।”

—“नहि सीता, ओम्हर नहि, गाम दिस चलू । चौदह वर्ष पहिने जे बात अहाँ लोकके नहि कहलियैक, से हम कहबैक, ने त’ कथा असम्पूर्ण रहि जायत ।”

सीता आ मुन्नूक हाथ पकड़ि गाम दिस घुरैत राम मोन पाड़बाक चेष्टा क’ रहल छल जे रामराज्य मे की-की भेल छलैक ? ●

अप्रैल १९७४

दप

बड़का काण्ड भ' गेलैक ओहि राति । चरवाह दप फेकि सूति रहल आ भरि गाम घोल होइत रहलैक । भरि गाम नोत छलैक । भोरे-भोर रामेश्वर झा सभक आडनक मुहथरि पर जा जोरसँ चिचिया आयल छलाह—“लूटनबाबू ओइ ठामसँ पुरखदहा दिस नोत !” पुरखदहा दिस माने पुरखाहा दिस । आब स्त्रीगणे-पुरुष नोत कहियो-कहियो होइत छैक—पाँच साल, दस साल पर क्यो साहस करैत अछि । नहि त' भरि गाम पुरखदहा दिस ! आ, आब त' भरि गामोक माने बड़ छोट भ' गेल छैक ! दुगोला आ भतबरी । भगिनमान टोलकेँ भगवानपुरसँ दुगोला छनि । अपना कारणे नहि ! चौधरी घरक भगिनमान छथि ओ लोकनि । मुदा ओ लोकनि मानि लेने छथि जे चौधरी परिवार माने सुनील चौधरी । हुनका दुगोला त' हमरा लोकनिकेँ दुगोला ! ओना भगिनमान टोल कहलापर ओ लोकनि आब बिगड़ि जाइत छथि । हमरा लोकनि कथीक भगिनमान ? जनिका जमीन देलथिन, बसौलथिन, से भगिनमान ! हम त' तेसर पीढ़ी मे छी ! अपन बाहुबलेँ उपाजन करैत छी, जीबैत छी । एहि बात पर आब गाममे दू मत नहि छैक । उपाजन चाहे जतबा कयने होथि, संचय ओहि सँ अधिक अबस्से छनि । सभ घर-सुखी-सम्पन्न । एकाधे घर टूटल छथि, सेहो सभक मुँह धयने रहैत छथि । खाली सन्तु बाबू कोटमे ठाढ़ भ' अपन सभटा गमा चुकल छथि । अर्जित कयल जमीन नित्य जा रहल छबि । ने त' सभ किछु ने किछु जोड़ने जा रहल छथि । ते' गाममे आब भगिनमान टोल नहि कहैत छनि, कहैत छनि ‘बिड़ला टोल’ । मुदा ताहू पर तामसे होइत छनि, व्यंग्य बुझाइत छनि । ओना भगिनमान टोलक लोक सभ बड़ प्रतिभाशाली । पढ़वा-लिखबामे आगू । देखबा-सुनबामे भव्य—गोरनार-चारि हाथ लम्बा ! नीक-नीक ओहदापर । मुदा प्रवृत्तिसँ भेड़िया घसान । जे सुनील चौधरी कहथिन, ताही मे हाथ उठा देताह । अपन कोनो स्वतंत्र मत नहि । ई बात पछित्रा तीस-चालिस वर्षसँ आवि रहल अछि । अन्तर एतबे भेलनि अछि जे जा भरि सुनील बाबूक स्थिति ठीक छलनि, संशुका बैसार हुनके दरबज्जापर

होइत छलनि । आब भोर साँझ सुनील चौधरी भगिनमान टोल जाइत छथि । भगिनमान टोल नहि, बिड़ला टोल ।

सुनील चौधरी द्वारे बिड़ला टोलकेँ भतबरी भगवानपुरसँ आ भोला चौधरी द्वारे पछबारि टोलकेँ । मामिला-मोकदमा भेल छलनि भगवानपुरक चौधरीसँ । बहुत दिन घरि चललनि । आब ने मोकदमा छनि, ने भगवानपुरक चौधरी जीवित छथि । मुदा दुगोला ओहू टोलकेँ छैक । हकारो-तिहार नहि ।

मुदा, लूटन बाबू ने त' पछवारिये टोलमे छथि आ ने बिड़ले टोलमे । ओ तँ गामक बीचमे छथि । ओकरा लोक कहैत छैक—बड़ टोल ।

कहियो एकटा बड़का बड़क गाछ छलैक ओहि टोलमे । ओ गाछ कटि गेलैक, मुदा नाम छैक—बड़ टोल ! एहि दुगोलामे सभसँ वेसी फायदा अही टोलक लोक सभकेँ भेलैक । कोनो अवसर अयलापर अपने टोलमे निमहि जाइत अछि । झट कहत—हमरा लेल तँ सभ अत्याज्य । जेहने भगवानपुरक चौधरी, तेहने सुनील चौधरी ! जेहने पछबारि टोल, तेहने बिड़ला टोल ! ककरा छोड़ू, ककरा राखू । हम सभ नहि पड़ब एहि झगड़ामे ! अपने टोलमे निमहि लेब ।

गामक आबादी बड़ कम आ गठन बड़ सोझ-साझ छलैक । एक परिवारक तीन पट्टीदार, ते' तीन टा फराक-फराक पट्टी आ टोल । एक पट्टी, कने दूर जा बसलाह, भगवानक मन्दिर बनबौलनि ते' भगवानपुर । चारि घर मालिक आ वादमे किछु भगिनमान । बेटीकेँ बियाहक बाद सासुर नहि पठौलनि, जमीन-जथा द' गामेमे बसा लेलनि । दोसर पछबारि टोल—दोसर फरीकक, गामक पछबारी सिमानपर । हुनक भगिनमान सभ सटले बसल छथिन, मुदा ठोलक नाम फराक छनि—भीड़पर । कनेक ऊँचपर बसल छथिन, पोखरिक भीड़पर । पोखरि कहब ठीक नहि हैत, जाठियो नहि छैक, ते' लोक कहैत छैक—बुढ़िया वला डबरा । आ तेसर टोल सुनील चौधरी वला, असल चौधराना, पुरना डीह, गामक बीचमे । मुदा, भगिनमान टोल कने हटिक' गामक उत्तरी सिमानपर, आठ-दस घर । पहिलुका भगिनमान टोल, आब लोक कहैत छैक—बिड़ला टोल ।

एहि तीनू टोलकेँ—चौधराना, पछबारि टोल आ भगवानपुरकेँ लोक सवा पाँच आना कहैत छैक—फराक-फराक । तीनू मिला क' पाने सोलह आना । बचि गेल एक पाइ—पुरनका, ताहिमे बड़टोल जकर छिकार गामक दक्षिणमे पीपड़ टोल

दप

[११३]

पुरना जमीन्दारीक मनेजर आ खरखाह आदिक परिवार। पीपड़क गाछ आइयो छैक—बेस झमटगर। दस-दस घरक टोल। आ बड़ टोलमे आठ-दस घर। एकर अतिरिक्त एकटा धनुकटोली छैक—ई सभ पहिने ड्यौढ़ीमे खवासी करैत छल, आब कलकत्ता—सिलीगुड़ी रहैत अछि। एकाध गोटे गाममे पकड़ा गेल त' खवासी कयलक। बिड़ला टोलक उत्तरमे खतवे टोली। कहार सभक टोल। पहिने ई सभ पालकी उठबैत छल आ जन-बोनिहारक काज करैत छल। आब त' ने पालकी रहलैक ने खडखड़िया। नवकी कनियाँ सभ स्टेशनसँ प्यरे चल अबैत अछि। मुदा खतवे टोलीमे लोक भेटब मोस्किल। आधा लोक दूधमे पानि मिला दरभंगा जा बेचि अबैत अछि आ किछु आइसक्रीम आ कुलफी बेचैत अछि। किछु जन-बनिहारी कयलक आ बाँकी रातिमे चोरि करैत अछि। पछवारि टोलक पश्चिम दक्षिणमे सेहो एकटा टोल छैक, मुख्य गामसँ बाहर—दुसाध सभक। ई सभ पहिने ड्यौढ़ीक बर्तन-बासन मँजैत छल आ महीस चरबैत छल। आब दरभंगामे रिक्सा चलबैत अछि आ सिलीगुड़ीमे ईजिनसँ खसाओल-चोराओल कोइला बेचैत अछि। मलेरियामे ई टोल एकदम पतरा गेल रहैक। दू-चारियेटा बचि गेलैक—रोगियाहा सभ। तखन गामक किछु जमाय सभकेँ बसौलक। आब फेर टोल भरि गेल छैक।

पहिने तेँ ई गाम एक परिवारक कहबैत छलैक। स्टेशनपर ककरो पाहुन उतरैत छलैक त' अपन पाहुन जकाँ लोक अरियाति क' अनैत छल। ककरो पुतोहु-बेटी अबैत छलैक, सभक जन कहारमे जाइत छलैक। ककरो चरबाह ककरो महीस दूहि दैत छलैक आ खवास ककरो आङनमे पानि भरि दैत छलैक आ भार ल' कुटुम्बक गाम जाइत छलैक। आब दोसरक पाहुनकेँ लोक चिन्हितो नहि छैक। एक गोटेक जन दोसर गोटेक काज नहि करैत छैक—केहनो बेगरता होअय। बेटी-पुत'हु स्टेशनसँ प्यरे गाम अबैत छैक आ ककरो जन अपन पट्टीक मालिककेँ छोड़ि दोसरकेँ प्रणामो नहि करैत छैक। 'हमरा कोन मतलब हे, कोनो हमर मालिक छथि!' उचित बोनि देलोपर आवक पट्टीमे रोपनी नहि करत, मुदा कटनीमे आँटी देबैक त' चल आओत। माने रोबसँ नहि, लोभसँ सुनत।

तहिना बड़टोलक लोक आब मनेजरी आ चरबाहकमे नहि रहैत छथि। मालिक मे ककरो लग काजो नहि छैक। एहू टोलक लोक सभ आब पढ़ि-लिखि बाहर नौकरी करैत अछि, डाक बाजिक' जमीन खरीदैत अछि आ साले-साल पक्का पिटबैत अछि। आ, ताहिमे पहिल नम्बर छैक लूटन झाक बेटा चन्दनक। बाहर रहैत

अछि, खूब कमाइत अछि। सभ साल जमीन खरीदैत अछि। ओहो गाम आयल छल। बाबा एक सय वर्ष जीवि स्वर्गवासी भेल छलथिन। बाप आ दुनू पिता सेहो गामे छलैक। सभ मिलि निर्णय कयलक जे एहि बेर टोला ल'क' नहि निमहब। सभकेँ नोट देबैक। जनिका अयबाक हैतनि, ओताह। आ भोरे-भोरे रामेश्वर झा गाममे सभक मुहथरि लग जा कहलथिन—'लूटन झा ओहि ठामसँ पुरखदहा दिस नोट दैत छी। पहिने रामेश्वर झा बीच अँगनामे जाइत छलाह आ जोरसँ सुनाक' कहैत छलथिन—'फलाँ बाबू ओहि ठामसँ नोट।' मुदा आब वयस भेलनि। नवकी कनियाँ सभ सभ आङनमे आवि गेल छैक। तेँ मुहथरिये लगसँ हाक द' दैत छथिन। ई काज गाममे रामेश्वर झा केँ छोड़ि आर क्यो नहि क' सकैत अछि।

मुदा, ओहि साँझ गणेश ठाकुरक चरबाह जे काज कयलक से त' क्यो नहि कयने छल। पहिले खेप बैसल छलैक—घीया-पुता सभ। दही परसले जाइत छलैक कि लूटन झाक आङनमे ढेपा बरिस' लगलैक। घीया-पुता सभकेँ चोट लगलैक, सभ उठि-उठि क' पड़ाय लागल। चारू कात सँ लोक दौड़ल। ढेपा बरिसब बन्द भ' गेलैक। तक्का हेरी भेल। ढेपा फेकनिहार नहि पकड़यलैक। घीया-पुता फेर बैसि गेल। सकरोड़ी परसल जाय लगलैक। तखने फेर तड़ातड़ ढेपा बरिस' लगलैक। एहि बेर चन्दन घपायल छल। गणेश ठाकुरक बाड़ी मे छपकल चरबाह बलेलबाकेँ पकड़लक आ पकड़ि क' चारि हाथ देलकै। आरो छोड़ा सभ लुधकल। गणेश ठाकुरक भाउजि ओम्हरसँ दौड़लथिन—'एहव अन्हर जुनि करू। निरपराध के नहि मारियौक।' तैयो लोक नहि मानलकनि त' चरबाह केँ अपन पाछाँ नुका लेलनि। ओम्हरसँ गणेश ठाकुर सेहो घड़फड़ायल अयलाह, सभक संग बहस कर' लगलाह—'अनेरो ढेपा फेकत हमर चरबाह। झुठे दोष लगा मारैत छियैक, ठीक नहि हैत।' विवाद बढ़ैत देखि चन्दन घुरि क' अपन काज मे लागि गेल। मुदा छौंड़ासभ गणेश ठाकुरक संग भीड़ि गेल। बहस होब' लागल। मन्दू बाबूक बेटा अविनाश अगुअ छल। ओकरा के रोकतैक? मन्दू बाबूक बेटा सभकेँ हुनक जिवितो लोकसभ बेकहल कहैत छलनि गाम मे, किएक त' ओसभ बजैत छल, सभ घटनापर स्वतंत्र रूपसँ बजैत छल। अविनाशक संग गणेश ठाकुरक बहस भये रहल छलनि कि ओकर बहिन सेहो ओत' पहुँचि गेलि। गणेश ठाकुरक भाउजि हाथ नचा-नचाक' बाजि रहल

ढेप

१६५

टलथिन। अविनाशक बहिन के देखिते तग आबि अंकर मुँहपर हाथ नचाक बाज' लगलथिन—केहन अवण्ड छी तोहर भाइ। मना नहि क' होइत छीक ?”

अविनाशक बहिन बुझनुक जकाँ बाजलि—“अवण्ड जकाँ त' बूढ़ो लोक सभ क' रहल अछि। ककरा-ककरा मना करियौक ?”

बिगड़ि क' गणेश ठाकुरक भाउजि चाट उठा देलथिन। छोड़ी हंसंत आड़न दिस पड़ा गेलि। बहसो कने कालक बाद शान्त भ' गेलैक। मुदा घण्टे भरिक बाद दोसर कुकाण्ड भेलैक। अविनाशक भाइ विभास पेठियापर सँ अयलैक। ओही विद्यार्थिये छैक एखन, बीस बाइस वर्षक। सभ ठा सुनिते आगि लेसि देलकै। तामसे रडल गणेश ठाकुरक आड़नमे पहुँचि गेल। विभास के देखिते गणेश ठाकुर सकपका गेलाह। ओकर उग्र स्वभाव सँ ओ परिचित छलाह। लग आबि विभास पुछलकनि—“अहाँ एकटा चरवाहकलेल, जे दोषी छल, एतेक टा काण्ड कोना कयलहुँ ? हमर बहिनपर चाट उठयबाक साहस कोना भेल अहाँ लोकनि के ? जवाब दिय' ?” गणेश ठाकुर डरक लेल ततेक सिटपिटा गेलाह जे बोल लाग' लगलनि। मुदा, हुनक भाउजि विभासक लग आबि मुँहपर हाथ चमकाब' लगलथिन। विभास एक-दू बेर रोकलकनि—“अहाँ हटि जाउ काकी, अहाँ स्त्रीगण छी, हम अहाँ सँ गप्प कर' नहि चाहैत छी।” मुदा, ओ ओहिना मुँह पर हाथ चमकौत रहलथिन। विभास हुनका हाथ सँ ठेलि तामसे बमकैत आड़न सँ बाहर चल आयल।

एक घंटा बाद लूटन बाबूक दरबज्जापर भीड़ छल। ब्राह्मण सभ जुटि गेल छलाह भोजनक लेल। आ, सभकेँ सम्बोधित करैत सुनील चौधरी कहि रहल छलथिन—“एकर पंचयती हैतनि। विभास अन्याय कयलनि अछि। स्त्रीगण पर हाथ उठौलनि अछि घर पैसि। ओ आड़नमे ओधरा गेलीह, ऊपर सँ गणेश आ गणेशक बेटा त' डरे बेहोश भ' गेलनि। ई अन्याय नहि चलतनि गाममे हमरा लोकबिक रहैत।

कोम्हरोसँ विभास ओत' पहुँचि गेल। ओकरो नोट छलैक। सुनील बाबूक बात सुनि टोकलकनि—“अहाँ एहि बातमे नहि बाजू। हमरा अहाँकेँ बाइ दस-वर्ष सँ दुगोला अछि, बाबुएक समयसँ। मामिलो-मोकदमा छल। आब बाबू नहि छथि, कोनो झगड़ो नहि अछि। नव झगड़ा बहि उठाउ।”

सुनील बाबू बिगड़ि एठलाह—“हम कोना नहि बाजब ? तो ककरो घर पैसि जनीजाति केँ बेइज्जति करवक आ हमरा लोकनि चुप रहब ? पंचेती हैबे करतह।”

विभास आरो उग्र होइत बाजल—“के ककर घर पैसैत छैक तकर पंचेती करब' लागब हमसब, त' सभ दिन पंचैतिये होइत रहत।”

बात बढ़ि गेलैक। हुनू गरज' लगलाह। सुनील बाबूकेँ हुनक बेटा रोकलकनि—“अहाँ चुप रहू बाबू। अहाँ कियँक एहिमे पड़ैत छी ?” मुदा, ओ नहि मानलथिन। बजिते रहलथिन। विभासकेँ नवयुवक सभ अपना दिस घोचिके पाँतमे बैसा लेलकै, पात परसाय लगलैक। भोजन शुरू भ' गेलैक। गणेश ठाकुर बिड़ला टोलक अश्वस्थामा झाक संग बैसल छलाह। भोजनक संग कनफुसकियो भ' रहल छलनि। अश्वस्थामा झा आस्ते सँ कहलथिन—“अहाँ काल्हि मोकदमा अवस्स करू। रुपैया-पैसा, लाठी, जकर काज पड़त, हम देब।

भरि राति सभ आड़नमे एतबे कनफुसकी आ विवाद होइत रहलैक। प्रात भेने महादेव झा एकटा लिस्ट लेने विभासक दरबज्जापर ठाढ़ छलाह, डरे कने सिटपिटायल—“दूत अवध्य होइत अछि। दूत बनि आयल छी। पंचक सूची अछि बत्तीस गोटेक। एहिमे जनिका मानी कहि दिय'। पंचेती हैत।”

सुनील चौधरीक दूत ठाढ़ छलनि। विभास लिस्ट ल' कहलकै—“की भेल ? मोकदमाक गप्प छल राति ! आब पंचेती पर अयलहुँ। लाउ, लिस्ट दिय'। बाद मे हम अपन नाम देब।

दूत चल गेलाह। विभास लिस्ट देख' लागल ! पहिल पंच लग दस वर्षक तीन-तीन टा सरकारी फण्डक हिसाब बाँकी छनि, दोसर साइकिल चोरबैत काल पकड़ा क जेल भ' आयल छथि, तेसर बाध-बोन बाड़ी-झाड़ीमे चरैत लोकक छागर पर्यन्त मारिके खा जाइत छलाह, चारिम एकटा भौगीक संग..... विभास केँ लिस्ट पढ़ि खूब हँसी लगलैक। ओकरा मोड़िक पाकिटमे राखि ओ रसूलपुर बजार दिस बिदा भेल।

बाटेमे अश्वस्थामा झा सँ बकबक भ' गेलैक। ओ किछु गोटेक संग रतुके खिस्सा पसारने छलाह आ विभास केँ दोषी करार द' रहल छलथिन। पंचक लिस्टमे हुनको नाम छलनि। विभास टोकलकनि—“अहाँक नाम पंचक लिस्ट मे

देखलहुँ अछि आ अहाँ दुनू पक्षक सुनबाइसे पहिने अपन फैसला द' रहल छियैक । ओहुना, पंच अहाँ लोकनि भये नाह सकैत छी । अहाँ लोकनिक बुद्धि त' सुनील काका लग बंधक अछि ।”

विभासक उग्र रूप देखि अश्वस्थामा झा विशेष बहस नहि कयलथिन । ओतहि सँ ओ रसूलपुर बजार पहुँचल । ओत' बड़ सनसनी छलैक । अखबार आबि गेल छलैक । राति रेडियोसँ ओ न्यूज नहि सुनि सकल छल । बेतिया गोली-कांडसँ अ'देसा बदल छलैक । मुदा, पटनाक घटना त' एकदम अप्रत्याशित छलैक । हिंसा, अगिलगी आ लूट-पाटि । पुलिसक गोलीसँ पाँच मृत आ कमसँ कम पचीसो घायल—अखबारक आँकड़ा छलैक । लोक पहिनेसँ उत्तेजित छल । विभासक पहुँचिते युवावर्गमे आरो उत्तेजना आबि गेलैक । झट एकटा सभा भेलैक । छात्र-संघर्ष समितिक गठन भेलैक । विभास ओकर संयोजक छल । एकटा जुलूस निकाललक । सँसै इलाकामे गामे-गाम नारा लगलक । सुनील बाबूक घर लग किछु बेसी-नारा लगलैक, पुतला सभ जरलैक । जुलूसक बाद सझुका गाईसँ विभास दरभंगा चललैक, ओतुक्का छात्र नेता सभसँ परामर्श लेब' ।

विभासक माय दिन-राति चिंतामे रहैत छलैक । हरदम कोँठ धड़कैत । दस गोटे दस रंगक समाचार अनैत छलैक । ओ बेटीकेँ कागज कलम द' जेठका बेटीकेँ चिट्ठी लिख' कहलकै “मोन लागल अछि । पटनामे बड़ हल्ला छैक । तोरा लोकनि कोना की छह ? एम्हर गामो दुश्मन भ' गेल अछि

× × × ×

शहर जेना बदलि गेल छैक । कपयूँ नहि छैक आब, तैयो आतंक छैक, आशंका छैक । आफिसजाइत काल आकाश सोचि रहल छल जे एना कोना भ' गेलैक ? सोचलापर बितलाहा किछु दिन एखनो स्वप्न जकाँ लगैत छैक, यद्यपि प्रत्येक घटनाक सबूत उपस्थित छैक शहरमे, कागजमे, लोकक ठोरपर आ आतंकित हृदयमे । ठाम-ठाम अनशनकारी । सत्याग्रही सभक टेन्ट आ टेन्टमे छात्र, स्त्रीगण आ घीयापुता सभकेँ देखैत ओ आफिस पहुँचि जाइत अछि ।

आफिसमे आइ-काल्हि उपस्थिति एकदम पंतरायल रहैत छैक, भोरक' त' आरो बेसी । घण्टा-दू-घण्टा लेट त' अधिकांश लोक ! छोट-मार्क त' होइते नहि छैक । शहरक असामान्य स्थितिक कारणेँ यूनिनयन साधिकार मांग अयलोपर घण्टो समूहने धमर्यन, तर्क-वितर्क । साफ प्रशासन आ भ्रष्टाचार उन्मूलनक, छात्र—आन्दोलन, महंगी एवं वस्तु-जातक अभावक.....आ जयप्रकाश नारायणक.....।

आकाश चुपचाप अपन कुर्सी पर बैसि जाइत अछि ! मोनमे बहुत विछ होइत छैक, मुदा, कुर्सीपर आँखि मुनि पड़ल-पड़ल मोन स्थिर करवाक चेष्टा करैत अछि ! विभागमे आयल चारिये-पाँच व्यक्ति खूब जोर-जोरसँ बहस क' रहल छैक जाहिसँ ओकर ध्यान बेर-बेर उचटि जाइत छैक । दू एक टा शब्द ओकर कानमे पड़ैत छैक—आन्दोलन..... घेराव..... अनशन..... पुलिस जुलुम.....।

ओकरा अनायास ओ दिन मोन पड़ि जाइत छैक । छात्र वर्ग गवर्नरकेँ विधान मण्डलमे भाषण देब'सँ रोकवा-लेल कटिबद्ध छलैक । बारह-एक बजे घरि ई इलाका एकदम शान्त छलैक । बाट सुन्न, सवारी बन्द । बीच-बीचमे हिजैक कयल एकाध बस विद्यार्थी सभकेँ लदने एम्हरसँ ओम्हर चल जाइत छलैक । आर ककरो पता नहि । मुदा, बारह वजैत बजैत सनसनी पसरि गेलैक । दूरसँ धूआँ देखाइ पड़लैक । आफिसक लोक सभ जगह छोड़ि-छोड़ि ऊपर छतपर ठाढ़ भ' गेलैक । ओ सभ तखनो ठाढ़ रहलैक जखन मात्र किछु गोटेक टोल, जाहिमे छात्र एक्कोटा नहि बुझाइत छलैक, सँसै सड़कपर कब्जा क' लेलकै..... होटल जर' लगलैक.....दोकान लुटाय लगलैक । ओ सभ तखनो ठाढ़ रहलैक जखन जरैत मकानक छतसँ उतरबाक चेष्टामे एक टा स्त्री चौमहलासँ धरतीपर आबि गेलैक ।

फायर बिगेड नहि अयलैक । पुलिस नहि अयलैक । होटल-दोकान-मकान जरैत रहलैक आ ओकर दफ्तरक सभ लोक तमाशा देखैत रहलैक । आनो-आनो दफ्तर आ घरक लोक जत' आगि नहि लागल छलैक, जे नहि लूटल गेल छलैक, छत पर ठाढ़, गलीमे दुबकल तमाशा देखैत रहल आ मिनट-मिनट पर बिना बेतारक समाचार सुनैत रहल—गवर्नरक भाषण भ' गेलैक.....लाठी चार्ज भेलैक.....छात्रनेता घायल भेलैक.....सचलाइट आफिस जरि गेलैक । गोली चललैक अछि ।

आ, जखन-जखन कोनो एम्बुलेन्स सड़क बाटे गेलैक, लोक सभ घेँट नमरा-नमरा बिनु देखनो एक दोसर केँ समाचार देब' लगैक—हे..... वैद.....ओहूमे लाश छैक.....शोणित देखैत छियैक—

देखवाक बातपर आकाशकेँ एक टा साँझ-मोन पड़लैक ! कतेक दिनका बाद साँझमे दू घंटाक हेतु कपयूँ हटल छलैक.....। आकाश सेहो बन्द भेल-भेल अकछायल छल, सड़कपर आबि गेल छल । सड़क-बाजारमे भीड़-भीड़ छलैक । लोकसभ घूमि-घूमिक' सभ सड़ककेँ देखि रहल छल, अपन बहु-बच्चाकेँ देखा

रहल छल... यह देखियो... हो जरल छै... हे यह, एतहि गोली चलल छलैक... —। जेवा कोनो प्रदर्शनी लागल होइ ! फर्क एतबे जे लोक प्रदर्शनी घुमैत काल जकां निश्चित नहि छल ! दुइये घण्टाक बाद फेर कपयूँ लगतैक । लोक जल्दीमे छल, । बजबामे आशंकितो, कोम्हरो क्यो सुनि ने लैक !

आब कपयूँ नहि छैक, ऊपरसँ सभ शान्त छैक । मुदा ओहि दिन त' स्थिति भयावह छलैक । ओ आफिसमे छल कि कपयूँ लागि गेल छलैक ! कोनो सबारी नहि ! ओ मुख्य बाट छोड़ि गलीक बाट घयने छल । कहियो गेलो नहि छल ओहि बाटे ! बाटमे क्यो पाछाँ-पाछाँ अबैक त' होइ जे पाछाँसँ मारिये दैतैक । जीपक आवाज सुनैत' लगैक जे कोम्हरोसँ आबि पुलिस ओकरे पकड़ि लैतैक । कहुना घर पहुँचल तँ दोसरे समस्या आबि गेलैक । गंस खतम, घरमे कोइला-लकड़ी नहि ! रातुक भोजन बनब मस्किल । वस्तु जात अछैत उपास । घरक पछुआड़ मे एक टा कठही बक्सा फेकल पड़ल छलैक ! ओकरे तोड़ि-ताड़ि कहुना खिन्चड़ि पाकि सकलैक । भोरे फेर देखल जयतैक...

ओहो दिन बितलैक । आब त' सिनेमा-होटल फेर चालू भ' गेल छैक ! ने त' दिन राति कोठलीमे बन्न ! ठाम-ठाम बैसार सभ । हवामे उड़िआइत गप्प-गोलँजर ! एक दिन त' एहन भ' गेलैक जे घरमे एक्को कनमा चाउर-आँटा नहि ! सुन'मे अयलैक जे चौराहा पर एकटा दोकान खोलबाक' विद्यार्थी सभ दू दू रुपये किलो चाउर आ डेढ़ रुपये किलो गहूम बेचबा रहल छैक ! एक-एक किलो भेटतैक ! पहिने संकोच भेलैक ! एक किलो सेल लाइनमे ठाढ़ हैत ? मोहल्लाक क्यो चिन्हतैक त' की कहतैक ? मुदा चूल्हि जरबाक समस्या सभटा संकोच केँ लगले भगा देलकै । ओहो चौराहाक दोकान पर पहुँचि गेल ! बढ़वा लाइन छलैक ! ओहो लाइनमे ठाढ़ भेल ! रौदमे डेढ़ घण्टा ठाढ़ रहला पर जखन ओकर नम्बर आब' लगलैक कि पुलिस-पुलिसक हल्ला मचलैक आ ओहो एकटा गलीमे बेजान पड़ायल । डेरापर आयल त' पसेनासँ नहायल छल ! दम फूलि रहल छलैक ! कोढ़ घड़घड़ा रहल छलैक !

आब त' ओहो दिन बीति गेलैक ! साढ़े तीनिये रूपए किलो, भेटि त' जाइत छैक चाउर । मासमे दसे किलो, भेटैत त' छैक गहूम राशन कार्ड पर ! मंत्रिमंडलक पुनर्गठन भ' गेल छैक, । आरो बहुत रास बात भ' रहल छैक, । महंगी आ अण्डाचार रोकबाक एहन-एहन बहुत रास उपाय भ' रहल छैक ।

ओहिदिन आकाश सिनेमा देख' चल गेल छल ! करमुवत सिनेमा छलैक— राष्ट्रप्रेमक सिनेमा ! हाउसफुल छलैक मुदा टिकट भेटबामे कोनो श्रंश्ट नहि भेलैक ! खुलेआम दू रुपयावला टिकट ब्लैकमे पाँच रुपयामे बिका रहल छलैक ! जकरा नहि भेटलैक ओहूमे, से मुँह विधुओने छल । ओत'सँ किछुए हटि क' सड़कक कातमे विद्यार्थी सभ सस्त दाममे तरकारी बेचि रहल छल ! ओत' कम्म भीड़ छलैक ।

.... आकाश चौकि क' आँखि खोललक ! विभागमे कोनो बात पर जोरसँ ठहाका लागल छलैक ! सामने देवाल पर टांगल घड़ी देखलक ! बारह बाजि गेल छलैक । अखनो आवास कम्म लोक आयल छलैक ! चपरासीसँ हाजिरी-बही मँगबोलक । जहिना लेट' सील मार' लागल कि किछु गोटे घड़फड़ायल आ उत्तेजित होइत लग अयलैक—ई त' अहाँक अन्याय अछि ! शहरमे जनता कपयूँ-लागल छैक, तँयो लेट मार्किंग

ओ सील राखि देलक आ फेर क्लान्त मने ओढंगि गेल । विभागमे गप्प जारिये छलैक ! विधान सभाक विघटनक मांग, विधायकक घेराब आत्यागपत्र । आदि बहुत रास बात कानमे आब' लगलैक । गयाक फायरिंगक न्यायिक जाँच पर बड़ी काल धरि गप्प होइत रहलैक आ फेर घुरि क' जे० पी०..... जयप्रकाश नारायण ! ओ फेर आँखि मूनि लेलक ! पछिला कतेको अखबारी समाचार, संसदीय भाषण, ओ दू तरफा तर्क मोनमे अहुरिया काट' लगलैक—ई नहि ओ..... ओ नहि ओ.....

हम नहि । ओ नहि । बहुत रास आरोप-प्रत्यारोप आ सम्पादकीय टिप्पणी मोनमे गोंगिआय लगलैक ! संगहि मोन पड़लैक सड़कक कातमे लागल एकटा चित्र-प्रदर्शनी आ नुककड़ कवि-सम्मेलन । ओहो गेल छल मुदा एकटा छोड़ा जखन एकटा कागज वस्तुखत कर' वास्ते देलकै, त' ओ पढ़ि क' घुरा देलकै । आन्दोलनक संग सहानुभूति फराक गप्प छलैक ! दस्तखत ओ कोना करैत ? सरकारी नोकर अछि ! मुँहजबानी बात आर छैक ।

तखने अपन टेबुल लग किछु गुलगुल बुझयलैक ! आँखि खोलि देखलक त' चारिटा छोड़ा ठाढ़ छलैक ! ओ डरा गेल ! एहने तीनटा छोड़ा किछु दिन पहिने बड़ा साहब लग आयल रहनि आ आफिस बन्द कर' कहने रहनि । झट गेट पर ताला लागि गेल रहैक ! ओ डरायल सन तकजक जे ओकरासँ कोन

कसूर भेलैक । एकटा छौड़ा रसीद भागू बढ़ा देलकै— “भाइ साहब, संघल समितिक हेतु चन्दा !” ओ इष्ट पाकिटमे बंचल एकमात्र पंचटकही बलजोरी हँसैत हाथमे राखि देलकै । छौड़ा सभ चल गेलैक । ओकर इच्छा भेलैक जे पुछैक जे अहाँ सभ कोन कालेजमे पढ़ैत छी ? फेर अपस इच्छा अपने अनगल लगलैक !

ओ देह सोझ करैत कुर्सी पर सम्हरिक' बैसि गेल । किछु कर्मचारी अपन-अपन सीट पर आबि गेल छलैक ! टिफिन हैबामे आधा घण्टाक बिलम्ब छलैक ! चपरासी अजुका डाक राखि गेल छलैक ! ऊपरेमे ओकर व्यक्तिगत पत्र छलैक—गामक चिट्ठी ! एकदम मेल सन मोड़ल माड़ल लिफाफ, बहुत दिन पर बौआइस आयल छलैक जेना ! ओ लिफाफ फाड़ि चिट्ठी पढ़' लागल—

—तोरा लोकनि कोना छ' ? पठनामे । बड़ हल्ला छैक ! कौड़ कँवैत रहैत अछि ! एम्हर गाम दुश्मन भेल अछि आ तोरा गामसँ मतलब नहि छह । भोजमे गणेश ठाकुरक चरवाह ढोप फेकलकै, लोक पकड़बो कयलकै । तँयो दोषी विभास, कियैक त' ओ बजला ! गणेश ठाकुरक घर गेला ! अन्यायक विरोध कयलनि । असल बात तर पढ़ि गेल । पंचैती हुनकेपर हैतनि ! गाम माने मुँहगर लोक, जे जोरसँ बाजि सकय । वैह सत्य, वैह न्याय ! एकटा दोषी चरवाह छे', एतेक पैघ काण्ड, पंचैती मामिला-मोकदमाक धमकी । मुदा धन्य कही गामक लोक के' । ओकरा कोनो मतलब नहि—“हम किएक बाजब ? हमरा कोन मतलब ?” ते' गाम माने सुनील बाबू—गाम माने अश्वस्थामा झा—गाम माने—

विभासके' भागू नहि पढ़ल गेलैक ! लगलैक जेना सभटा माय ओकरे लिखि रहल छैक ! गाम माने ओ । ओ माने ओकरा सन लोक । दस्तखत कर' सँ डेरायबला, ब्लैकसँ टिकट-डालडा चीनी खरीद'बला आ जरैत मकान, घर-दोकान सँ कौतुकसँ समाशा देख'बला । आ गाम माने सुनील चौधरी—गाम माने अश्वस्थामा झा—आ देश माने—

मई १९७४

मलाहक टोल

अपन चेथरी भेल नूआके' फाड़ि-फाड़ि क' फूलेसरी बुढ़िया मसहटोलीक सुखेलहा पीपरक गाछ तर नाचि-नाचि क' गबैत अछि । नचैत-नचैत आँचर माँटि मे लेटाय लगैत छैक, माथक केश छिड़िआ क' धोकचल कारी मुँह पर पसरि जाइत छैक, सुखायल चोकटल स्तन कुद क' लगैत छैक मुदा ओ नाचि-नाचि क' गबैत अछि—“हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता.....”

बताहि छैक बुढ़िया । आकाशमे मेघक एक्कोटा टिक्कर नहि छैक । ऐ साल एक्को दिन बुन्दो नहि खसलैक आ बतही हाली-हाली बरिसबाक गप्प क' रहल छैक । एही बरखाक गप्प पर ओहि दिन बधनटोली मे बड़का काण्ड भ' गेलैक । फिरंगी झा एकदम सोझा-सोझी ललकारने छलथिन सुशील मिसरके'—“एना तँ हैबे करत । ऐ साल सभठांभ पानिये पानि छैक । पटना मे दिन-राति पानि, गंगा, पुनपुन—सोनमे बाढ़ि आ अहाँक नदी सुखायल, खेतमे दरारि । आर दिअनु भोट जातिक नाम पर । सभठांभ जनना पार्टी जितलैक आ एम्हर अपन इलाका मे जातिक नाम पर मिश्रजीके' जिता देलियनि । ई त' हैबे करत ।

सुशील मिसर जोरसँ हँसलाह—बेस कहल अहूँ । देश पर त' जनता पार्टीक राज भँये गेलैक, स्वर्गो पर अधिकार कयलक । बिना ओकर अनुमतिके' इन्द्र महाराज घरती पर जल नहि ढारताह ।

फिरंगी झा एकदम तरंगि उठलाह—“फेर वैह काँग्रेसी दलालबला गप्प । रस्सी जरि गेल मुदा ऐंठन नहि गेल ।”

सुशील मिसर एकदम मार' लेल छुटलथिन—“हमरे दरबज्जा पर हमरे संग टेढ़ी । सभटा नेतागिरी घोसाड़ि देब एखने—” ।

बीचेमे लोक सभ पकड़ि क' थोड़थाम क' देलकनि, फिरंगी झा बाँचि गेलाह ।

ई इलाका कोना बाँचत ? असरेसा बितलैक, मग्धा बितलैक । एको बुझ पानि नहि । खेत अफाड़े रहि गेलैक ।

आ, फुलेसरी बुढ़िया तैयो नाचि क' गबैत अछि—हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता.....

ओना गबै छल नीक गुलमा । जखन मलहटोली साँझ होइते अन्हारक चादरि ओढ़ि लैत छलैक आ घर-आँगन सभसँ माछ आ सितुआ जरबाक गन्ध पसर' लागैत छलैक, गुलमाक स्वर ओइ अन्हारसँ बहरा... ओइ गन्धकेँ दबा दूर-दूर धरि पसरि जाइत छलैक । मेही आ दर्द भरल स्वर । पहिने आस्ते-आस्ते आ जहिना ताड़ीक निसाँ थढ़ैत छलैक, स्वर तेज भेल जाइत छलैक आ तेज होइत स्वरमे दर्द बढ़ल जाइत छलैक आ बढ़ैत-बढ़ैत ओइ टोलकेँ लाँघि, नदीक दुनू पाटकेँ लाँघि, सौँसे गाम आ बाघ-बोनमे पसरि जाइत छलैक ।

आ तहिना ओइ दिन ओ बातो पसरि गेल रहैक—भरि गाम, सौँसे बाघ-बोन । सभ बूझि गेल रहैक । मुदा गुलमाकेँ ककरो दिस देखबाक होश कहाँ रहैक । ओ त' खुशीसँ बताह भ' गेल छल । भोरे नेनाक जन्म भेल रहैक आ तकर कनिये काल बाद किछु चेतन आ बेसी वीयापुताकेँ एक पतिआनीसँ चलबैत आ आगू-आगू अपने झंडा लेने मही बाबू मलहटोली मे आयल छलथिन । पतियानी सँ चलैत लोक सभक हाथमे सेहो झण्डा छलैक आ सभ जोर-जोरसँ चिचिया रहल छल । ओ जुलूस ओकर घर-लग आबि गेल रहैक आ कने विलमि मही बाबू कहने छलथिन—तोहूँ चल गुलमा । आ, लाइनमे आबि जो.....

—“की बात छैक मालिक ?—गुलमा बिन किछु बुझने छलकनि ।

—“अरे, आइ बड़का खुशीक दिन छैक गुलमा । देशक गुलामीक दिन आइ समाप्त भ' गेलैक.....अंग्रेज चल गेलैक । हमरालोकनिक आजाद भ' गेलहुँ । सौँसे देशमे आजादीक जुलूस बहार भ' रहल छैक । आ' तोहूँ चल.....”

—“नहि मालिक । हमरा छोड़ि दिय' । आइ हमरो लेल बड़का खुशीक दिन हय । भोरे एगो ननकिरबा जनमल हय.....”

—“वाह, ई तँ बड़ खुशीक बात । बड़ नीक दिनमे जनमल छैक । ओकर नाम हम राखि दैत छियौक । तोहर नाम गुलमा नहि जानिकेँ रखलकौ, मुदा ऐ

ननकिरबाक नाम हम राखि दैत छियौक—आजाद । गुलमाक बेटा आजाद, नीन रहतौक किने —”

आ, सँह नाम पड़ि गेलैक । मुदा नाम पड़बासँ पहिनहि बड़का क्राण्ड भेलैक । गाम-घर-बाघ-बोन सौँसे बात पसरि गेलैक । गुलमाक बहु दस बर्षसँ बसैत छलैक, एक्को टा वीयापुता नहि छलैक । मुदा जखन भेलैक त' एकदम गोर घप-घप । कारी-कारी केश, पैघ-पैघ आँखि । जे देखलकै घरसँ मुसकिआइत बहुरैलैक, आ भरि गाम घूमि क' कनफूसकी कयलकै ।

मुदा, फुलेसरी त' सामनेमे कहि देलकै । जखन गुलमा कहलकै जे मही बाबू 'आजाद' नाम राख' कहलथिन अछि, फुलेसरी अपन बेटाक मुँह लग हाथ चमका क' कहलकै—“ठीके नाम राखि देलखुन हे' बीआ । जखन बहुए आजाद भ' गेलौक, हवेलीमे ढीढ़ फुला तोहर अइनामे अण्डा पाड़ि देलकौ, त' आजाद नाम पड़बै करतैक ।”

गुलमा माय पर झपटल । मुदा, बुढ़िया नहि मानलकै । आर हाथ नचा-नचा क' कण्ठ फाड़ि-फाड़ि क' चिचियाय लगलैक । गुलमा तामसे बताह भ' गेल । मायक झोट पकाड़ि ओकरा लाते-मुक्के मार' लगलैक आ ओहिना मारैत-मारैत आइनसँ बाहर क' देलकै । मलहटोलीक पीपड़क गाछ तर बैसलि, जोर-जोरसँ छाती पीटि क' कनैत फुलेसरी ओही बातकेँ दोहरबैत-तेहरबैत रहलि ।

बताहि भ' गेलि छलि फुलेसरी । एना क्यो अपन घरक खिक्सा दुनियाँक सोझाँ पसरैत अछि । फुलेसरी कारी छलि आ कारिये छलैक गुलमाक बाप गुदरा । गुलमो कारी छल आ ओकरोसँ बेसी कारी छलैक ओकर बहु । मुदा ओकरा गोर घपघव बेटा भेलैक । मुदा एना त' हँबै करैत छलैक । मलहटोलीमे सभ कारिये-कारी छल । बीच-बीचमे कोनो उज्जर प्राणी आबि जाइत छलैक । पहिने कनफूसकी, फेर मारा-पिट्टी आ फेर सभ शान्त । मुदा एना क्यो गाछ तर बैसि घरक खिक्सा त' नहि पसारैत छल फुलेसरी जकाँ ।

आ, एना अपन मायकेँ क्यो भगवितो नहि छल गुलमा जकाँ । ओइ दिन जे लाते-मुक्के मारि घरसँ बाहर कयलकै से फेर आँगन नहि टप' देलकै । गामे-गाम भीख माङ' लागलि फुलेसरी । मुदा साँझ होइते मलहटोलीमे घुरि

अबैत छल आ पीपर-गाछ तर पड़ि रहै छल। बरखा-बुन्नी भेलैक तँ ककरो ओसारा आ ओलती—”””

अलबत्त अछि फुलेसरी। तँयो तीस वर्षसँ जीबि रहल अछि बुढ़िया। ओकरा छाहरि आ आश्रय देब' वला पीपरक गाछ सुखा क' ठुठ भ' भेलैक मुदा फुलेसरी ओहिना जीबैत अछि आ ओही ठुठ गाछतर नाचि-नाचि क' गबैत अछि।

ओइ दिन जेना गुलमा क्रोवे जानवर भ' गेल छल। मायकेँ लाते-मुक्के मारि-पीटि आङनसँ बैला अपन घरमे आयल। थरमे पटिया पर सहमलि ओकर बहु पड़ल छलैक आ ओकर बगलमे छलैक एकटा कपड़ामे लपेटल ओकर नेना। गुलमा ने सहमल बहुक आँखि क याचना देखलकै आ ने नवे जनमल नेनाक सुन्दरता। ओ त' आगू बड़ि दुइये दिन पहिने खाली भेल कोखिमे समधानि क' लात मारलकै। चीत्कारक संग गैचि गेलैक ओकर स्त्री। फेर दोसर, फेर तेसर—फेर चारिम, नहि जानि कतेक लात मारि गुलमा बताह जकाँ ओइ घरसँ बहरायल आ एक दिस पड़ा गेल। घरमे दर्दसँ कुहरैत ओकर स्त्री आ किलोल करैत नेना पड़ल रहलैक। टोलो पड़ोससँ क्यो चुप्प कर' नहि अयलैक।

मुदा, कोखिमे समधानि क' मारल लातक असरि लगले हुलकी देब' लगलैक। बिछौनसँ उठि नहि सकलैक गुलमाक स्त्री। जे छी मास जीलैक घिसरिये कटलकै। गुलमाकेँ कहियो कोनो दोष नहि देलकै, ने कनलैक खोजलैक। खाली अपन नेनाक मुँहमे अपन सुखायल स्तन दैत काल आँखिमे नोर भरि-भरि जाइक।

आ, गुलमाक आँखिमे त' जेना बाढ़िये आबि गेलैक। एकटा सोन सन बेटा देने छलैक ओकर स्त्री आ ओ मारलकै ओकर कोखिमे लात। सेहो बेकसूरी। हवेली जाइत छलैक ओकर स्त्री मुदा कोनो बाबू—भैया लग टांग नहि पसारने छलैक। जखन हवेलीमे सुन्नर-सुन्नर गोर-नार घोयापूता सभकेँ देखै आ अपन फूलल पेट देखय, त' सभ ठाम हाथ-जोड़य—कोइला थानमे—सलहेसक मन्दिरमे, बाबाक मन्दिरमे—”हमरो एहने देब बाबा, एहने सोन-सन बेटा।”

बाबा सुनलथिन। मुदा गुलमा नहि सुनलकै। सुनलकै गुलमा मुदा कोखिमे लात मारलाक बाद। आ तकर बाद कतबो अहुरिया कटलक गुलमा

ओकर स्त्री नहि रुकलैक, छीओ मास नहि। आ छी मासक बिन भायक नेनाकेँ लेने गुलमा राति-बिराति बिरहा गबैत छल—ताड़ीक निसाँमे भेर—”एकसर—” सुतली रातिमे ओकर मेहीं दर्द भरल स्वर गाम-घर आ बाघ-बोनमे पसरि जाइत छलैक।

मुदा गुलमाकेँ बाघ-बोन जयबामे बड़ दिक्कति होब' लगलैक। जलकरमे अन्हरोबे जाल फेक' जायमे असुविधा होब' लगलैक। आजादकेँ ककरा लग रखितैक? एक बेर फुलेसरी बुढ़िया आयल रहैक घरक मुँहपरि घरि—”हमरा खाब' दे बीआ। नेनाकेँ के देखती? कनियाँ त' गेली—”

गुलमा तेना गुराँ उठलैक जेना बुढ़ियाकेँ उठा क' ओहीठाम जमीन पर पटकि दैतैक, बुढ़िया जान ल' पड़ायल। फेर घुरि क' घरक मुँहपरि लग पयर नहि देलकै। गामे-गाम भीख मङ्गैत रहल।

आ, गुलमा राति-बिराति बिरहा गबैत रहल। कतबो क्यो कहलकै—ककरो वसा ले', नेनाकेँ सम्हारि लैतौक, गुलमा नहि मानलकै। जो बहिना आँखि बरन करय ओकरा एकटा तुरत जनमल नेनाक बगलमे पड़ल एकटा स्त्रीक सहमल आँखि मोन पड़ैक आ ओ बताह भ' ढेर लगा दिय'—राति-राति भरि गबिते रहि जाय।

दिनमे सुवंशाक बहु राख' लगलैक आजादकेँ। ओकरा अपनो छी मासक नेना छलैक कोरामे, दूध होइत छलैक। गुलमा किछु टाका द' दैक सुवंशाकेँ। चारि-पाँच टा घोयापूताक रहैक आ एकसर कमैनिहार छल सुवंशा। दिक्कति रहैत छलैक।

ओना, दिक्कति त' घरे-घर छलैक मलहटौली मे। सभ घरक एक्के हाल। एकटा कमैनिहार आ खयनिहार बहुत। ताहि पर बैसार आ बेकारी। स्त्रीगण सभ सेहो काज करैत छल, पानिमे पैसि सितुआ बिछैत छल, चून बचबैत छल। तँयो बेसी काल बँह हाल—ने पेटमे अन्न ने देह पर कपड़ा आ ने घर पर चार।

गोड़ पचासक घर छलैक टोलमे। ओइमे रह'वला इ सभ, अड़ाइ सभ लोक। प्रति घरमे औसत चारिटा-पाँचटा लोक। प्रत्येक परिवारकेँ औसत

एकटा घर। घर माने खोपड़ी। जे बड़ ऊँच से तीन हाथ। जे बड़ लम्बा-से आठ हाथ दस हाथ। एतबे टा संसार। घरक आगू किछु जमीन काँट-कूस आ करचीसँ घेरल। बरस एतबे। आ एतबो जबर्दस्तिये। बेसी घर सड़के पर। सौंसे टोले लगैत छलैक जेना बान्हक कातमे बोट पर बसल होइ। कपचैत-कपचैत छोट भेल खेतक आरि आ घुसकैत टाटसँ घेरायल किछु गैरमजरूआ आम जमीन। वासक ओ दू घूर जमीन मालिकेक देल। सर्वे कहाँ भेल रहैक ?

आ कारी-कारी नमछर चिमर देहवला पुरुष आ कारी-कारी गुदगरि मुदा सबकत माँटिक बनलि स्त्रीगण सभ। पुरुषक देहमे मात्र एकटा चारि आङ्कुरक बिण्ठी आ मोगीक देह पर दसहत्थी ननगिलाटक नूआ। दोसर कोनो वस्त्र नहि। बारहो मास उघार दलकैत देह आ छिट्टा सन ओझरायल मायक केश। हरदम माँटिमे लेड़ाइत, धारक पानिमे चुभकैत धीयापूता सभ। येह धीयापूता कखन बढ़ि क' जवान भ' जाइत छलैक आ कखन पुरुषक देह पर चारि आङ्कुरक बिण्ठी अबैत छलैक आ स्त्रीक देह पर दसहत्थी ननगिलाट, क्यो नहि बुझैत छलैक। मुदा एकक बाद दोसर, पुस्त-पुस्तैन एहिना मलह-टोलीक कोनो घरसँ एकटा पुरुष बहराइत छलैक—कारी चिमड़ देह, डाँडिमे एकटा बिण्ठी आ पीठ पर लटकल जालक डोरी छाती लग दहिना हाथमे आ बामा हाथमे नीचाँ लटकल माछक खोंगी। बहराइत छलैक एकटा स्त्री देह पर दसहत्थी ननगिलाटक मेल बिन पादिक साड़ी, माथ पर छिट्टा, वेश सरिगर आ दुलकी चालिक संग दुलकैत बेह। आ बहराइत छलैक दीए-झाकी धीयापूता नाइट-असर्घ, गर्दामे लेटायल-कारी लोआइ।

आ, बेह धीयापूता सभ बिन पढ़ने-लिखने, बिन स्कूल गेने एक दिन बुझनुक आ टेकनगर भ' जाइत छलैक। धूरांमे लेड़ाइत, पानिमे चुभकैत ओकर मोछक पम्ही देखाइत छलैक आ ओइ पम्हीसँ पहिने ओकर हाथ मे जाल, खोंगी आ नावक लग्गा आ करुआरि आबि जाइत छलैक।

मछहर सभमे भेटैत छलैक आधा माछ। डबरा-खत्ता, पोखरि-नदीमे जाल फेकि दू सेर, चारि सेर माछ मारैत छल। अन्हरोखे सुतरि गेलैक तँ सोलहन्नी, ने तँ अधिया। ओइ अधिया माछके पेटियामे बेचि अन्न अनैत छल, पेट भरवा लेल।

आ जे से नहि होइत छलैक, मछहर नहि भेलैक, बेगारमे पकड़ा गेल वा बेसारी रहलैक वा माछक समय नहि रहलैक त' मलहाक मोगी बोधाइत छलैक आङ्के-आङ्कन। कट' लेन घान लबैत छलैक आ चूड़ा पहुँचा अबैत छलैक। जे किछु बचलैक ताहीसँ पेट भरै छलैक। नहि त' बेह उपास आ उपास नहि त' बेह गरैक—चेडनाक सन्ना, बेह डोका, बेह काकोड़ आ कछुआ * * * *।

गुलमा छल मुदा, ओम्ताद। कोनो मछहर होउ, एकटा दू टा माछके तेना ने पानियेमे मूड़ी मचोड़ि कतहु जालमे ओझरा दैत छलैक, जे कतबो ने ताकि लेअय, भेटव मस्किल! ओकर खोंगीके कतबो क्यो उनटि क' झाड़ि लोक, दू चारि माछ सटले रहि जाइत छलैक, तेहन व्योत करैत छल गुलमा। मुदा, कमबाक असल व्योत करैत छल गुलमा आमक मासमे! आन-आन गाम तीन-चारि मलाहक संग मिलि दू तीन टा पैघ-पैघ गाछीक आम खरीदि लैत छल। मेहनति बड़ होइत छलैक! राति-राति भरि ओगरवाही, मुदा तँयो किछु टाका बचाइये लैत छल।

मुदा, कतबो ओगरवाही कयलक गुलमा, आजादके वहि बचा सकलै! ओकर बाप गुदरा ओँठा छाप छलैक, गुलमा अपने ओँठा छाप छल, सौंसे मलह-टोली ओँठा छाप छलैक! मुदा आजादके गुलमा स्कूल पठा देलकै। देहसे अंगा, पँठ आ गोरनार मुँह-कान! छोड़ा बेछप लगैक टोलमे।

अपन नाम लिख' अबैत देरी स्कूलसँ मोन जीना गेलैक आजादक! स्कूलक नाम पर घरसँ बहराइक आ गाछीमे गुल्ली-डण्डा खेलाइत रहैक! लोक सभ गुलमाके कहलकै! ताबत बहुत देरी भ' गेल रहैक। ओइसँ आगू नहि पढ़ि सकलैक छोड़ा! तँयो गुलमाके सन्तोष रहैक जे ओकरा जकाँ ओँठा छाप नहि छलैक।

आ, छापक नाम पर गुलमाके भोटवला छाप मोन पड़ैत छलैक। तेहन ने निशान लगौने रहैक आङ्कुरमे जे छुटबे नहि करैक बहुत दिन धरि! आ ओ पाँचटा टाका सेहो बहुत दिन डाँडिमे रहलैक, खूब मजा कयलक। मुखिया देने रहैक। ऊपरसँ, सरकार दिससँ बकशीस आयल रहैक भोट खसैबा लेल। भरि टोलमे सभके देने रहैक मुखिया आ सभ संगे-संग भोट खसा आयल छल! मुदा दोसर बेर बाटावाटी तकिते रहि गेल गुलमा! मुखिया पाँच टाका ल' क' नहि अयलैक। ओकरा भेलैक जे ओ छूटि गेल आ सभके पँचटकही बकशीस भेटि गेलैक! ओ

टोलमे पुछारि कर' लागल ! परसू ओकरा विकल देखि कहलकै—“एना वैहाल भेने क्यो बजब' नहि ओतीक आइ आ ने भेटतीक पंचटकिया ! बक्शीस बला टाका अहू साल आयल छलैक ! मुदा ऐ साल बाँटक काज नहि पड़लैक ! गामक मुँहगर लोक आ इसकुलिया सभ सभकाज क' देलकै ! सभक शोट वैह सभ खसा देलकै—एक्के वेरमे एक बन्डिल ! आ टाकोक बण्डिल वैह सभ बाँटि लेलैक !

गुलमाके बड़ तामस भेलैक ! सभ लेल जे वक्शीसक टाका आयल छलैक तकरा किछुए गोटे आपसमे किएक बाँटि लेलकै ! ई त' बड़का बँइमानी भेलैक ! मुदा कहितैक ककरा ? इसकुलिया सभ जाने ल' लिहैक आ मुखिया बाट चलब मस्किल क' दितैक !

असल मस्किल कयलकै आजादबा ! धीयापुतामे गुल्ली-डण्डा पर परिकल रहैक ! चेतन होइत देरी आन-आन चीज पर परकि गेलैक ! टोलेक छलैक सुनरी ! भरि टोलमे गोरि छोड़ी वैह टा छलैक ! आजादक आँखिमे गढ़ि गेलैक ! छोड़ियो छलैक बदमास ! सासुरसँ पड़ा-पड़ा अबैक ! ओकर माय छलैक सुनरी ! बड़ दबाव देलकै ओकरा पर गुलमा मुदा कोनो फेदा नहि भेलैक ! आजादबा माय-बेटी दूनूके फँसोने छलैक ! मायक हाथमे दैक टाका आ छोड़ी हाथमे सिंगार-पटारक वस्तु ! अकच्छ भ' गुलमा सुनरीक सासुर गेल आ ओकर वरके आनि टोलमे पंचैती बैसा देलकै ! सुनरीके जाय पड़लैक ! मुदा गुलमाक अविकल गुम्म क' देलकै आजादबा ! सुनरी गेलैक त' रतिया ! कारी छलैक मुदा छलैक नोछगर आ पनिगर ! आजाद सुनरीक लेल उदास हैबाक बदला सभ ठाम कह' लगलैक—“जाने दो ससुरी को ! महीनामे एक सय डेढ़ सय रुपिया दिया आ दिन-रातिमे सात बेर-आठ बेर घर पैसा' आजाद अधिक काल एहने भाषा बजैत छलैक, 'खासक' एहन-एहन मौका पर !

गुलमा कप्पार ठोकि क' रहि गेल ! बेटा आरो अवण्ड होइत चल गेलैक ! मारि-पीटि क' ओकरासँ रुपैया छीनि लैक आ ताड़ी पीबि साँढ़ जवाँ बोधाइत फिरय ! रतिबाक बाद फुलिया..... फुलियाक बाद शुभकी—

आ, जहिया-जहिया गुलमाके मारै आजाद, फुलसरी बुढ़िया खूब मगब भ' नाचय—“हमरो आँखि जुड़ायल ! करेज ठण्डा भेल ! एही दिन लेल जीवैत रही !

ओइ दिन मुदा बुढ़िया आर्त्तनाद क' उठलैक ! कतहुँसँ राति बितलापर

धुरल अबैत छल गुलमा ! पथरमे बिछू लटपटा गेलैक ! जोरसँ झाड़लक पथर, तखने दाँत गड़ा देलकै ! ओही पीपड़क ठुट्ट-गाछक जड़ि लग निश्चिन्त पड़ल बुढ़िया लग जा गुलमा कहलकै—“आब चललियो माय, काल आबि गेली !

बुढ़िया हड़बड़का क' उठि बैसलैक “के, बोझा ? एना किएक बजै छै, की भेली ?....

गुलमा ओकर कोरामे पड़ि रहलैक—एकदम सुच्चा गहुमन छली माय ! सत्ते कहै छियो, कैक दिन अभरल छल एहीठाम ! आइ हबकि लेलक ! ओही लगेए माय, सूत' दे कोरामे.....

—“नै रे बीआ ! गहुमन नहि छली, घामिब हेतो ! बड़ छैक ऐ बँसविट्टीमे ! परसू कलरीक मायके दूध पीबि गेल रहैक—

“नै माय....एकदम सुच्चा छलै मे ! बस्स, आब चलाचली ! निरदोख पुतहुके अकलंक लगोलें तो आ निरदोख परसोतीक कोखिमे लात मारलियैक हम ! दुनू गोटे खूब भोगलहुँ.....आब जाय दे.....

आ बुढ़िया चिकरि उठलैक ! ओहूँसँ बेसी जोरसँ जतबा लातमुक्का खा क' गुलमाक घरसँ निकलैत काल चिकारल रहैक ! भरि टोल जुटलैक...भती सभ अयलैक मुदा ताघरि गुलमा मायक कोरामे सूति रहल छल !

आ जखन ओकर चितामे पाछाँ मुहे पंचकठिया फेकि लोक विदा होब' लागल रहैक, नहि जानि किम्हरसँ मुदंघट्टीमे आबि फुलसरी बुढ़िया ! अट्टहास कर' लगलैक—गेलें किने अपने, बड़ निकालने छली घरसँ— आब निकाल त' बुझियो

आ बुढ़िया बड़ी काल धरि मुदंघट्टीमे बीआइत अट्टहास करैत रहलैक ! रातियो क' नहि घुरलैक ! किछु दिन गाभेसँ निपत्ता भ' गेल रहैक ! जहिया घुरलैक एकदम निछछ पागल भ' गेल रहैक ! देहक नूआ फाटल, माथक केश छिड़िआयल आ लाल-आँखि ! फेर ओही गाछ तर डेरा जमा देलकै ! आ, अपन फाटल चेशरी भेल नूआके आर फाड़ि-फाड़िक', नाचि-नाचिक' गबैत अछि ठुट्ट पीपरक गाछतर सभ दिन !

आ मलाहक टोल ओहिना छैक ! साठि-सत्तरि टा घर ! घर पाँछा ओसत लोक बढ़ि गेल छैक ! सातो भ' सकैत छैक आ नवो ! माने चारि-पाँच सय

लोक । आ चारि-पाँच सय लोक लेल साठि सत्तरि टा घर ! घर नहि ओपड़ो ।
जे वड़ उँच से तीन हाथ, जे बड़ लम्बा-बौड़ा से आठ हाथ दस हाथ.....!

आइयो ओइ घर सभसँ एकटा पुरुष बहराइत छँक—कारी चिम्मर देह,
झँड़मे चारि आङुरक बिछी खोंसल, दहिना हाथमे पीठ पर फेकल जालक डोरी
छाती लग आ बाया हाथमे नीचाँ लटकल माछक खोंगी । आइयो एकटा स्त्रीगण
बहराइत छँक—देह पर दसहत्थी ननगिलाट आ माथपर पैघ भरिगर छिट्टा !
हुलकी चालिक संग दलकैत देह ! आइयो बहराइत छँक दौए-ढाकी नाइट घीया-
पुता सभ आ मलहटोलीक धूरामे लेटाइत, डबरा-पोखरिक कादोमे खेलाइत,
बागमतीक पानिमे चुभकैत कहिया कोन देह पर चारि आङुरक बिछी अबैत छँक
आ कीन देह पर दसहत्थी ननगिलाट, ककरो पते नहे चलैत छँक ।

आजादक सभटा काण्डक पता मुदा लोककेँ छँक ! बाप छलैक त' ठाट
छलैक । ने कमयबा-खटयबासँ मतलब, ने पेटक चिन्ता ! बाप मरलैक त' आफत
भेलैक । फुटानी छुटलैक, अन्न-वेतरे बेलल भ' गेल ! दौड़ल गेल सासुर आ अपन
बहुकेँ ल' अनलक । पहिने दू-तीन बेर गुनमा अनने रहैक, मुदा आजाद मारि-
पीटिक' बेला देने रहैक ! मात्र मुनलकै जे बड़ मेहनती मौगी छँक, कमाक' अपना
संग ओकरो पेट भरि लेतैक त' दौड़ले गेल सासुर आ बहुकेँ ल' आयल ! एक बेर
फेर निश्चिन्त भ' गेल ।

मुदा किछुए दिन ! बहुसल मोन छलैक ! बहु कमाक' खुभवैत छलैक मुदा
रुक्ख-सुख । आजादक मोन बोआय लगलैक । पहिने चोरीमे परिकल ! पकड़ायल
त' मारि-पीटि लोक छोड़ि देलकै ! फेर चोरी आ तखन डकैती ! चारु
कात ओकर नाम आ नामक संग आतंक पसरि गेलैक ! लोक पहिनो डेराइत
छलैक ओकरासँ टोलमे, आब इलाका डरे त्रस्त रह' लगलैक ! बारण्ट छलैक,
पुलिस बेर-बेर घर पर छापा मारैत छलैक मुदा आजाद पकड़ाइत नहि छल ।
ओ निपत्ता रहैत छल टोल-गामसँ वर्षक-वर्ष मुदा ओकर आतंक इलाकामे बढ़िते
जाइत छलैक—साले-साल ।

आ ओइ राति ओ साल भरि पर गाम आयब छल ! नुकाक' रातुक
अन्हारमे—एकसर । ओकर गिरफ्तारी पर इनाम छलैक । ओकरा घरमे देखि ओकर
बहु चौकलैक ! ओकर चौकब देखि बिगड़ैत आजाद बाजल—“ऐसे चौकी काहे !
हमको देख के खुशी वही हुआ ?”

बहु कोनो उत्तर नहि देलकै । आजादक ध्यान बहुत फूलल पेट पर गेलैक
आ सौसे देहमे जेना आगि लागि गेलैक ! ओकरा बिसिया क' अंगनामे अनैत
गुराँक' बाजल—“तो ई बात है, कमाईमे बढ़ोत्तरी हुआ है ! बाज, किसका है ?”
आ देलकै जोरसँ एकटा लात ओकर फूलल पेट पर ! ओकर बहुत चीत्कारक संग
अंगनामे ओघरा गेलैक ! एक दिन ओकर बापो अपन स्त्रीक कोखिमे लात मारने
छलैक । मुदा ओ कोखि खाली भ' गेल रहैक ! आइ ओकर लात ओकर बहुत
फूलल पेटेटा पर नहि, ओकर भीतर जीबि रहल शिशुओ पर पड़ल छलैक ! मुदा
चीत्कार बहरेलैक खाली ओकर बहुत मुँहसँ आ जावत दोसर लात देलकै
ओइ पेटक शिशुक रक्षार्थ ओकर स्त्री एकदम चुक्कीमाली भ' दून हाथे हुनू ठेहनकेँ
छातीमे दबा बैसि गेलैक । तखन लात ओकर पीठ, पाँजर आ मुँह पर पड़ैत
रहलैक आ ओ ओहिना चुक्की-माली भेलि एम्हरसँ ओम्हर ओघराइत आर्त्तनाद
करैत रहलि !

लोक जमा होब' लगलैक ! आजाद साकाँष भेल । ओकर गिरफ्तारी पर
इनाम छलैक । इनामक लोभमे कयो पुलिस ने बजा लोक । ओ दौड़ैत स्टेशन दिस
पड़ायल ! मुदा गाड़ीमे नहि चढ़ि सकल ।

ओही ट्रेनसँ पुलिस सभ उतरलैक । चारुकातसँ ट्रेनकेँ घेरि लेलकै !
ओकरे घेरबा लेल आयल छलैक खबरि पाबि ! आजाद बाघ दिस पड़ायल
अन्हारमे । ओम्हरो टौचक रोशनी आ पुलिस ! झाँड़सँ पिस्तौल निकालि फायर
कयलक—अनधुन । जबाबमे तीन दिससँ गोली अयलैक आ ओकरा छेदैत चल
गेलैक !

आ, जखन पुलिस ओकर लहासकेँ बिसिया क' ल' जा रहल छलैक ओकर
आङनमे भीड़ लागल छलैक । दर्दसँ छटपटाइत ओकर स्त्री बीचे आङनमे एकटा
नेनाकेँ जन्म द' देने छलैक आ आङनमे ओकरा घेरिक' भीड़ लागल छलैक !

आ जखन नीक जकाँ फड़ीछ भेलैक, ओहू दिन एकटा जुलूस मलहटोली
वाटे बहरयलैक ! मुदा ओइ दिन आगू-आगू मही बाबू नहि छलथिन, छलथिन
फिरंगी झा ! गुलमाक आङनमे भीड़ छलैक ओइ दिन, मुदा दरबजजासुन्न छलैक !
जुलूस आगू बढ़ि गेलैक । मुदा ठुठ्ठ पीपरक गाछतर बेसलि फुलेसरी बुढ़िया
जुलूसक आगाँ ठाढ़ भ' गेलैक—“आइ की बात हइ बौआ ? कने हमरो कहू !”

“हट बुढ़िया, तो” नहि बुझबहीक ! आइ बड़का महान दिन छैक ! आइ बस्याचारीक नाथ आ एकताक जीत भेल छैक, जनतंत्रक जीत भेल छैक !

बुढ़िया किछु नहि बुझलकै ! बाटपरसँ नहि हँटलैक ! ओहिना बाट छेकने पुछलकै—“कने बुझाक” कहूँ बीआ । के जितलै आ के हारलै ?” फिरंगी झा कहलथिन—इन्दिरा गाँधी हारि गेलीह आ जे० पी० जीति गेलाह ।

फिरंगी झाक बात बीचेमे कटैत बुढ़िया बाजि उठलैक—“ई जे० पी० के छै बीआ ?” फिरंगी झा बिगड़िक बजलाह—चल हट बतही ! कहलियो ने, जे तो नहि बुझबहीक ! ओ लोकनायक छै, गान्धीजीक चेला—

आब बुढ़िया प्रसन्न होइत बाजलि—“त’ से कहूँ नेगान्ही बाबा के चेला छै ! गान्ही बाबाके त’ सभ चीन्है छै ! आ ई इन्दिरा गान्ही त’ गान्हीये बाबाक बेटी छैक —”

फिरंगी झाक संग सभ जोरसँ भभाक’ हँसलैक—“गय बतही ! छोड़ बाट ! ओ गान्धीजीक नहि-नेहरूजीक बेटी छैक !

बुढ़िया मुदा बाट परसँ नहि हँटलैक—“सँह भेलै किने ! गान्ही बाबाक नहि, लेहरूजीक बेटी—” गान्ही बाबाक पोती ! सँह ने । ओ हारि गेलै—“मुदा ताहि सँ की हेतैक बीआ ?

अकच्छ होइत फिरंगी झा बजलाह—“हेतै तोहर कप्पार ! हट बागूस बतही ! गय, आब जनताक राज हेतैक, तानाशाहक नहि !

बुढ़िया भरिसक किच्छो नहि बुझलकै ! किछु काल जेना सोचैत ठहिरलैक आ फेर बजलैक—“ई ‘जनता’ के हय बीआ, हम नहि चीन्है छिये ! मुदा हमरा त’ अहाँ सभ चीन्है छी—गुलमाक माय, फुलेसरी बतही । हम त’ तीस सालसँ एही गाछ तर छी —” आइयो !

आ, फुलेसरी आइयो अपन चैथरी भेल नूआके “फाड़ि-फाड़िक” ओही मलाहक टोलक ओही ठुठठ गाछ तर नाचि-नाचिक’ गबैत छैक—हाली-हाली धरिसू इन्नर देवता ।

आ सौंसे धरतीमे दरारि फाटल छैक ! ●

सितम्बर १९७६

मलाहक टोल

१५४]

पुरान चरित्रक नटा कथा

माय लिखने छलैक—पटनामे बड़ उपद्रव छैक । हरदम कोद घड़कैत रहैत अछि ।

समय ससरि गेल छैक । ने शहरमे कपयूँ छैक, ने धारा १४४ । जवता राज समाप्त भेलैक । जनता (?) राज त’ भैवे नहि सयलैक कहियो । सभ किछु पूर्ववते रहलैक । खाली किछु लोक बदलि गेल छलैक राज-काजमे—

प्रकाशक डेरा बदलि गेल छलैक । डेरा बदलैत काल लोक सभ टोकने रहैक—ने ‘लिय’ ओ डेरा । मकान आ मोहल्ला त’ ठीक ठाक अछि, मुदा मकान मालिक—

मकान मालिक छलथिन कैप्टन साहब ? ओना, पाँच भाइ छलाह मुदा पटनाये एकसरे रहबाक कारणे हुनके जिम्मा छलनि । मकानक उपरका तल्लामे अपने रहितो छलाह । नीचाँ रहबा लेल प्रकाश आबि गेल ! लोक सभ बड़ कहने रहै किदन सभ !

कहने कैप्टन साहब छलथिन—लोक सभ बहुत रास गप्प कहत । मुदा आदमीके चिन्हबा लेल ककरो परामर्शक नहि, अपन दृष्टिक काज होइत छैक ! जेना हम अहाँके चीन्है रहल छी, बिना कोनो जान-पहचानक अपन मकान द’ रहल छी । मुदा, ई चानन ठोपवला लोक सभ, ई ‘ज्ञान-भारती’ टाइप लोक सभ । अजब-घूणा अछि हमरा एकरा सभसँ । आइ सिम्पली हेट दीज पीपुल—

कैप्टन साहबक हाथमे द्विस्कीक गिलास छलनि ! प्रकाश जखन ड्राइंग रूममे पहुँचल रहय, ओ शुरूक चुकल छलाह ! टेबुल पर आधा बोटल खाली छलनि आ हाथमे भरल गिलास । समय ल’ क’ पहुँचल रहय । देखिते कहलथिन—आज, बैसि जाउ । माइँड चहि करब । बड़ थाकि गेल रही, प्रतीक्षा नहि क’ सकलहुँ, मीरा, एकटा गिलास हिचको लेल दिय’ त’ !

कैप्टन साहबक पत्नी भीतर आबि प्रकाशके नमस्कार क' गिलास टेबल पर राखि देलथिन । प्रकाश टोकि बेलकनि—“नै, हमरा बेल नहि । हम नै लैत छी कहियो ।”

पेग बनब' लेल उद्यत कैप्टन साहब चौकि क' प्रकाशके देखलथिन जेना ओकर कथनक सत्यताक जाँच क' रहल होथिन ! फेर सहज भावे' हँसैत कहलथिन—रह' दियनु मीरा ! ई ठीके कहैत छथि, हम चेहरा पड़ि लेलियनि ! ई सत्ते पर-हेजी लोक छथि ।” कैप्टन साहब जोरसँ हँसलथिन ।

प्रकाशके लगलैक जेना व्यंग्य क' रहल होथिन, मुदा ओ हँसि रहल छलथिन—एकदम निश्चल हँसी । कतहु कोनो सन्देहक गुंजाइश नहि छलैक । ओहो संग संग हँस' लागल आ गप्प कर' लागल ।

आ, दू घण्टा हुनका संग बैसि, दू बोतल फैंटा पीबि आ बहुत रास भटबर' आ चटनी खा जखन ओ विदा होब' लागल छल, कैप्टन साहब कहने छलथिन—आइ सिम्पली हेट दीज पीपुल—

मोहल्ला बलाक लाख कहलोपर मुदा ओ कैप्टन साहबसँ घृणा नहि क' सकल । जेना-जेना समय बितैत गेलैक, ओ हुनकर आर लग होइत गेल, स्नेह बढ़ले गेलैक । साँझ होइते कैप्टन साहब निशामे बुत भ' जाइत छलाह । पहिली तारीखके' ओ दानापुरसँ एक-दूटा काठक बक्सामे बोतल सभ ल' अनैत छलाह आ सन्ध्या होइते अपन कोठली वा बरण्डा वा छतपर टेबुल सजा बैसि जाइत छलाह । किछुए पेगक बाद हुनका निशाँ लागि जाइत छलनि । पत्नीके' चिन्ता बढ़ि जा'त छलनि, घीया-पूता सभके' कोठली सभमे बन्द क' दैत छलथिन आ अपने एकसरे लगमे बैसि रहैत छलथिन । कखनो असीम दुलार, कखनो अकारण डाँट-फटकार । हाथ तक उठा दैत छलथिन । देहपर निशान पड़ि जाइत छलनि । तेहन मे कखनो काल नुका क' हुनकर पत्नीनीयाँ पढ़ा अगैत छलथिन, प्रकाशक पत्नी लग । कैप्टन साहब एकसर बढ़बड़ाइत ऊपरसँ हाँक दैत छलथिन—चौधरी जी छी यी ।

प्रकाश नीचाँ आङनमे आबि जाइत छल । जोरसँ कहैत छलनि—किछु चाही की कैप्टन साहब ?

कैप्टन साहब निशामे झुमैत वहैत छलथिन—यू आर ग्रेट चौधरी जी ! सभके' अहाँ एतबे पुछैत छियैक—किछु चाही ? अहाँके' अपना किछु नहि चाही ? हम अहाँके' नमस्कार करैत छी—हेट्स ऑफ दू यू !

कैप्टन साहब गरदिन झुका अभिवादन कर' लगैत छलथिन त' हँसी रोकबा लेल प्रकाश ओत'सँ हटि जाइत छल । डेरायल सहमति, मारिक चोटसँ नोरायल, कैप्टन साहबक पत्नीक आँखिमे सेहो हँसी झलकि जाइत छलनि—“अहाँक बड़ इज्जति करैत छथि । देखू ने, निशामे कोना सलाम क' रहल छथि ! यैह निशा त' काल छनि । आ तशो केहन ? दू घोंट कण्ठतर गेलनि की नहि, बमकब शुरु भ' जयतनि । बोतल सभक तीन चौथाई फेकि खाली पानि मिला दैत छियैक मुदा तौयो कोनी फर्क नहि । पानियोसँ निशाँ लागि जाइत छनि जेना ।

पानि मिलब'वला बात कहैत-कहैत कैप्टन साहबक पत्नी खिलखिला क' हँस' लगैत छलीह ।

ओहि राति मुदा, हुनकर हँसी बिला गेल छलनि । चीत्कार क' सठल छलीह । बारह वर्षक बेटी अलगे किलोल मचीने रहनि । ओकरे लेल तँ अपनो मारि खयने छलीह, सेहो सुतली रातिमे ।

चारू कातसँ अपन-अपन छत आ बरण्डा वा सामने सड़कपर लोक सभ जमा भ' गेल रह्य—बन्द करू ई तमाशा कैप्टन साहब ! नीक लोकक मोहल्ला यिकै ई । लोकके' मोहल्लामे रहब, चैनसँ सूतब मोसकिल क' देने छियैक अहाँ ।

कैप्टन साहबक तामस पलटि गेलनि, पत्नी-बेटीक जान बाँचि गलैक । ओ सब पड़ा क' दोसर कोठलीमे नुका गेलैक ।

कैप्टन साहब बाहर अपन वरण्डामे आबि चिकर' लगलाह—हू द ब्लडी बास्टर्ड यू आर दू इन्टरफेयर इन माइ पर्सनल अफेयर्स । के तखनसँ चिचिआ रहल छलहु, सामने आउ ।

कैप्टन साहबक ललकार पर बेसी लोक सटक गेल, मुदा किछु लोक हुनक डेराक आगू सड़कपर जमल रहल । एकटा नीजवान साहस क' आगू बढ़ल—है, ए हम छी ! हम रोकि रहल छली अहाँके' । ई नीक लोकक मोहल्ला छैक । ई सभ काण्ड नहि चलत एत' ?

—“के रोकत हमरा ? हू हैज दैट करेज ? हम अपन घरमे जे इच्छा हैत करब । दोसरके ओइसे मतलब ! आ जे हमर घरक मामिलामे टाड अड़ाओत, ही विल रोपेन्ट... कहि दैत छी हम ।”

ओहो छौंड़ा मुदा साहसी छल । एकदम अड़ि गेलनि—हम रोकब, हमरा लोकनि रोकब । की क’ लेब हमर अहाँ ।

कैप्टन साहब कोठली दिस दौड़लाह—की क’ लेब ! अखने देखा दैत छी । आइ विल शूट यू । गोली मारि देब अहाँके ।”

दौड़िक’ कोठलीमे आबि टाडल बन्दूक उतारि लेलनि कैप्टन साहब । गोली ताक’ लगलाह । तावत पत्नी भीतर आबिक’ बन्दूक छिनबाक चेष्टा कर’ लगलथिन । हुनका ठेलिक’ खसा कैप्टन साहब गोली तकैत रहलाह । पत्नी आइन दिस बरण्डामे आबि जोर-जोरसँ प्रकाशके नाम घ’ बजब’ लगलथिन । प्रकाशके नहि रहल गेलैक । दौड़ल गेल ऊपर । तावत पेटीमे गोली भेटि गेल रहनि कैप्टन साहबके । प्रकाश रोकलकनि, मुदा ओ ओकर बातपर बिन ध्यान देने गोली भर’ लगलथिन बन्दूकमे । प्रकाश बन्दूक छीनि लेलकनि । छीना-झपटी कयलथिन, मुदा प्रकाश हुनकासँ बलगर छल, बन्दूक छीनि लेलकनि आ कहलकनि “नहि कैप्टन साहब ! एना करब उचित नहि ।”

कैप्टन साहब छीना-झपटी बन्द क’ देलथिन, मुदा हुनकर चेहरापर घृणाक भाव उगि अयलनि—यू हू ब्रूट्स । चौधरी जी अहूँ ? अहूँक मुहे वेंह उचित-अनुचितक पाठ । यू आर फेक टू डे चौधरी जी—एकदम नकली छी, आइ अहाँ । एण्ड आइ डोण्ट बोदर फोर द फेक पीपुल—दी हिपोक्रैट्स...

ओ ‘फेक’ छल—एकदम नकली । प्रकाशके अपनो लागि रहल छलैक ।

ओकर अपन डेरा छलैक, पत्नी छलैक, धीयापूता छलैक, भाइ-बहिन छलैक । गामसँ मायो आबि गेल छलैक, मुदा जेना सभ किछु नकली होइ...

कैप्टन साहबक डेरामे भरि दिन टाइपराइटर खटखटाइत छलनि । सालाना हिसाब-किताब होइत छलनि । बाप अपन जीवने कालमे सभ भाइक हिस्सा फराक क’ देने छलथिन—सभक नाम फराक-फराक मकान, फराक-फराक पासबुक । खाली गाम आ मौजेक जमीन आ पटनोक मकान साझी छलनि ।

उपजके बेचि मैनेजर हिसाब लवैत छलनि आ पाइ-पाइक हिसाब जोड़ि सभके चेक जाइत छलनि—कलकत्ता, दिल्ली आ मद्रास । चार भाइक हिस्सा चारि ठाम । अपन हिस्सा कैप्टन साहब अपने राखि लैत छलाह । मुदा ऐ चारि हिस्सासँ पहिने आधा-आधी हिस्सा लगैत छलनि । आध हिस्सा काका साहबक । काका साहब विदेशमे छलथिन । हुनक पासबुकमे फराकसँ टाका जमा होइत छलनि । हिसाब-किताब साफ । हिसाबक टाइप थयल प्रति सभ पट्टीदार लग जाइत छलनि । ई सभटा कैप्टन साहब अपने कहने छलथिन प्रकाशके आ कहने रहथिन—हमर बाप पिती लोकनिके फोरसाइट छलनि, दूरदर्शी छलाह, सभ टा राफ-साफ क’ गेला । भैयारीमे कोनो झगड़ा झंझट नहि । अपन शेरसँ मतलब । ने तँ देयादक संग झाँउ-झाँउ करैत रहितहुँ सभ क्यो ?

मुदा प्रकाशक परिवारमे सभके संगे देखि, नौ भाइ-बहिनके संग देखि निशोमे कैप्टन साहब बड़बड़ा उठैत छलथिन—हैट्स आफ टु यू चौधरी जी !

मुदा प्रकाशके सभटा दोसर रंग लाग’ लगलैक—एकदम नकली !

पत्नीक आकृति हरदम तनल रहैत छैक ।

बात बातपर चिचिआ उठैत छैक । अनेरो धीयापूताके मारि बैसैत छैक आ कनैत धीयापूताक संग अपनो चीत्कार कर’ लगैत छैक । प्रकाश रोकि दैत छैक—बुप्प रहू ! लोक सुनत त’ की कहत ?

पत्नी आर चिचिआ उठैत छैक—लोक की कहत ? अहाँके खाली लोकेक चिन्ता रहैत अछि ! हम लोक नहि छी अहाँक लेल ? मनुख नहि छी ? हमर चिन्ता कहियो नहि होइत अछि अहाँके ? मुदा ई जे छी टा अछि... जकरा जन्म देलियैक अछि ओकर चिन्ता करियोक ! ने तँ सभके गला दबा-दबा मारि दैत छियैक हमही ।

पत्नी बकने चल जाइत छैक । प्रकाशक रोकबाक चेष्टा व्यर्थ जाइत छैक । अपन कोठलीमे बैसलि माय सुनैत छैक आ ओकरो आकृतिपर भाव बदलि जाइत छैक । एक दिन ओ पत्र लिखने छलैक—पटनामे बड़ हल्ला छैक । हरदम कोढ़ घड़कैत रहैत अछि । आइ ओ पटनेमे छैक, संग रहैत छैक डेरामे, मुदा लगैत छैक जेना बहुत दूर होइ ! दिनक दिन टोकबाक साहसे नहि होइत छैक । पत्नीयोके टोकैत डर होइत छैक । आफिसक बादो बेसी काल डेरामे

पड़ाया रहैत अछि । रातुक अन्हारमे दुनू गोटे विपरीत दिशामे मुँह कयने पडल रहैत अछि । प्रकाश तनाव सँ मुक्ति चाहैत अछि । ओ मुक्ति पत्नीक देहमे ताक' लगैत अछि । देह आइ अकड़ि क' काठ-कोड़ो भ' जाइत छैक । शिवका-तीरीक चेष्टा करैत अछि त' पत्नी बेस जोरसँ बाजि उठैत छै—अइसेल बिआह करक कोन काज छल ! ई त' बजारोमे भेटि जाइत !

प्रकाश डराक' दूरि हटि जाइत अछि । बगलक कोठलीमे घीयापूता सभ छैक । बड़की बारह-तेरह वर्षक भेलैक । तेसर कोठलीमे चारु भाइ आ माय छैक । सभ सुनने हेतैक ।

फेर लगैत छैक जे डेरायब बेकार छैक । कतेक दिनघरि नुकायल रहतैक ई बात ? ओकरा लगैत छैक जेना सत्ते बजारमे आबि गेल अछि ओ । सभकेँ दाम चाहियैक । सभ सम्बन्ध, सभ सिनेहक लेल दाम चाहियैक ।

ओकरा किछु पुरान बात मोन पडैत छैक । ओ तेसर दिन गाम पहुँचल छल । उतरी छोट भाइक गरमे छलैक । अन्तिम समय नहि देखि सकल पिताकेँ ! मायक कोरामे मूड़ी नुका मायक संग कानल, छोट भाइक गरसँ उतरी लेलक आ लेलक सभक दायित्व, मोने-मोन पिताकेँ स्मरणक' !

दायित्व आब लगिचिआयल जकाँ छैक । दू टा बहिन पहिने सासुर गेल छलैक, तेसरो अपन सासुर गेलैक । चारिम बहिनक संग बेटियो मैट्रिकमे आबि गेलैक । एकटा भाइ एम० ए० क' कमाय लगलैक । दोसर एम० ए० मे आबि गेलैक आ छोटका दुनू बी० ए० मे । मुदा जेना सभ किछु गड़बड़ भ' गेलैक । लगैत छैक जेना ओ ककरो दायित्व नहि, ओकरे दायित्व सभ उठौने होइ, वैह सभसँ वेसी असक्त भ' गेल हो । पत्नी त' सभ दिन साफ-साफ कह' लगलैक—नहि छल उपाय, त' कियैक जनमोलहूँ खदर-बदर ? अनका भरोसे कतेक दिन चलत ?

ओहो सभ टा लोक-लेहाज बिसरि चिचिया उठैत अछि—ककरा भरोसे छी हम ? केँ दैत छैक हमर घीयापूतकेँ अन्न पानि ? अपन वलें जीबैत छी हम...

पत्नी मुदा ओकर क्रोधक' चीत्कारसँ अविचलित रहैत छैक—से त' अहाँ जानी । डेरामे रही दिन भरि तखन ने बुझबैक ? हम त' यँह सुनैत छी जे अहाँ कर्ज कयने छी एक लाख, छाली अपन बहु आ घीयापूताक लेल, फुटानी कर' लेल आ आब अनकर कमाइ पर पेट पोसैत छी । के कहैत अछि जे अहाँकेँ तीन

हजार मास दरमाहा भेटैत अछि ! से रहैत त' बहु घीया-पूता एना पोसैये लगबितहुँ ?

प्रकाश डरा गेल—पत्नीक चीत्कारसँ नहि, ओइ राति देखल स्वप्नसँ । ओइ दिन पत्नीकेँ चिचिया क' कहने छलैक—एखन छी हम मुदा राति ओ स्वप्न देखलक जे ओ नहि अछि आ पत्नी घीया पूता बाटे-घाटे.....

नीन टूटि गेलैक । पसेनासँ देह भीजल छलैक—जाड़ो मासमे । पत्नी बिछीनक दोसर कात सिकुड़लि सूतलि छलैक आ ओकर दुनू कात दुनू छोटका निभेर सूतल छलैक । दोसर कोठलीमे बेटी सभ सूतल हेतैक । मुदा ओकर आँखि निन्न हेरा गेलैक । राति भरि आँखि खूजल रखने ओ बेर-बेर दोहरयबाक चेष्टा कयलक मोने-मोन—अखन छी.....हम छी अखन.....अखन कोनो भय नहि ।

एना नहि जानि कियैक होइत छैक ? एक दिन सभकेँ भयमुक्त रखबाक साहस राख'वाला एक दिन स्वयं भयभीत होब' लगैत अछि—कातर आ असहाय ! ओकरा पिता मोन पडैत छथिन । अपन नौ संतान संग, भागिन, भातिज, बहिन सभक उत्तरदायित्व उठौलाक बाद भयमुक्त आ प्रसन्न रहैत छलथिन । फेर नहि जानि कोना ओ निडरता आ प्रसन्नता बिलीन भ' गेलनि । हरदम चिन्तित भय-भीत आ सशंकित रह' लगलाह । जेना भविष्यमे किछु देखि रहल होथि आ देखि-देखि डेरा जाइत होथि ।

मात्र डेरायल रहलासँ भावी टरि नहि सकलनि । जहिया ओ नहि रहताह, सभसँ छोट सन्तान मात्र आठ वर्षक छलनि ।

प्रकाश मुदा निडर छल । सभ किछु क' सकबाक साहस आ संकल्प छलैक । पिताक श्राद्धमे भरि गाम तीन दिन घरि कचरि क' खयलाक बाद कहलकै—कोनो खुशनामा त' नहि भेल छलनि । एक तरहेँ जवानियेमे त' मरल छलथिन बाप, साठियो कहाँ पुरलनि ? एतेक पैघ परिवार छनि, ओकरा देखितथि । ई फालतु आडम्बर कियैक ?

प्रकाशके ककरो कहवाक चिन्ता नहि छलैक । ओकरा अपनापर विश्वास छलैक । अपन बाट ओकरा जानल छलैक, अपन आदर्शपर ओकरा विश्वास छलैक ।

आब लगैत छैक जेना ओकर विश्वास नकली छलैक। ओकर आदर्श एकटा आडम्बर छलैक—मात्र अपनाके ठकबाक लेल। ओ सभ दिन सभटा काज शुरूहसँ उनटा करैत आयल हो जेना।

घरेक लोक कहब शुरू क' देलकै—नै जानि कोना कर्ज-बर्ज भ' जाइत छनि ! हमरा लोकनि त' नहि जनैत छियनि किछु। पेटो पोसबा लेल अन्न-पानि अपने जमीनसँ भ' जाइत अछि। पावनि-तिहार..... एकाध टा वस्त्र..... ताहीमे एतेक कर्ज-बर्ज।

पत्नीक आँखिमे हरदम नोर रहैत छनि 'हमरासँ नीक त' दाइ—नौड़िन रहैत अछि। वर्षमे दू खण्ड नूआ, सेहो अहाँक देल नहि। देह झोपब मोस्किल भ' जाइत अछि त' वापस माझि लेत छी। बिन मडने दस टा पाइ नहि भेटैत अछि।

बड़की बेटीक आँखिमे नोर—अइ बेर फगुओमे कपड़ा नहि। वर्षमे दूटा कपड़ा भेटैत अछि—एकटा फगुआ आ एकटा दुर्गापूजामे। अइ बेर सेहो नहि !

मायक आँखिमे नोर—आइ ओ रहितथि त' धीयापूता एना आन ठाम पेट पोसैत ?' भाइ-बहिनक आँखिमे नोर—ककरो कृपापर त' जीवि नहि रहल छी ! एतबा त' अखनो छोड़ि गेल छथि बाप दादा !' पत्नी आ बेटीक आँखिमे नोर...

यैह सभ क्यो एक दिन प्रकाशक डेरापर छल आ निशामे कैप्टन साहब बड़बड़ाइत छलथिन—यू आर ग्रेट चौधरी जी !

आइ अपनाके सभसँ दीन आ पराजित पबैत अछि प्रकाश। घरमे दीनताक सूचक ओना एक दृष्टिमे लक्षित किछु नहि होइत छैक—नीक डेरा छैक, मोटर गाड़ी छैक, टेलीफोन छैक, नौकर चाकर छैक। ककरोसँ लाख-डेढ़ लाखक कर्जक गप्प करैत छैक त' अविश्वामसँ ओकर आँखि पसरि जाइत छैक—हूँसी करैत छी अहाँ !

ओकरा मुदा आब हँसबा लेल बहाना ताक' पड़ैत छैक। दिनभरि आफिसमे सशक्त रहैत अछि जे कोनो तगेदा बला नहि आबि जाइ। सम्पूर्ण व्यक्तित्व सशक्त आ भयाक्रान्त भ' गेल छैक। डेरामे पयर दैत डर होइत रहैत छैक जे पहुँचिबे कोनो सूचना ने भेटि जाइ—चाउर घटि गेल, मडल दियोक।

प्रकाश किछु बजबाक पूर्व पत्नीक प्रलाप शुरू भ' जाइत छैक—नहि जानि एहन लोकके बियाहक सोखे किएक होइत छैक ? धीया-पूता किएक जन्म-वैत अछि ओ, जकरा बुते ओकरा सभ लेल किछु कयले पार नहि लगैत होइ !'

कखनो लगैत छैक जेना पत्नी ठीक कहैत छैक। ओकरा बियाह नहि कर'क चाहैत छलैक। बियाहक पन्द्रह वर्षक अपरान्तो आइ पत्नीक देहपर, एकटा गहना नहि छैक। प्रकाश बुते कहियो कीनब पार नहि लगलैक। जे दू-चारि टा नैहरसँ आयल छलैक, सेहो बन्धक लगैत लगैत बन्धके बला लग रहि गेलैक। विवाहक पन्द्रह वर्षमे पन्द्रह टा साड़ियो कीनब प्रकाश बुते पार नहि लागल छैक।

तकर चिन्ता पत्नीके नहि छैक। खाली धीया-पूताक मुँह देखि ओ कान' लगैत छैक—एकरा सभक की हैतैक ? आब त' बड़की बियाह जोगर भेल जाइत अछि।'

मायक आँखिमे वैह चिन्ता छैक—एकटा बियाहक जोगर बेटी, तीन तीनटा कालेजमे पढ़तिहार बेटी... आइ ओ रहितथि !

पहिने पत्नी-मायक आँखि एहि भयक प्रकाश अवहेलना क' दैत छलैक—चिन्ता कथीक ? हम छी.....छी एखन हम !

आब मायक आँखि ओ भय.....पत्नीक आँखि ओ भय ओकर आँखिमे घोसिआय लागल छैक। एक दिन एहने भय अपन पिताक आँखिमे देखने रहैक। आइ लगैत छैक जेना पिताक आँखि ओकर आँखिमे आबि गेल छैक..... ओ अयना लग ठाढ़ भ' बेर-बेर अपन आकृति देखैत अछि आ मोन पड़बाक चेष्टा करैत अछि जे पितृक ओइ सशक्त भयाक्रान्त आकृतिसँ ओकर आकृति कतेक भेल जाइत छैक।

ओना, ओकर आकृति माय सन छैक। बापक दुलारु छल, मुदा माइयो कम नहि बिगाड़ने छलैक। मासे-मास बापसँ चोरी क' सैकड़ाक सैकड़ा टाका दैत छलैक। मुदा आब पुछलापर ओ कहैत छैक—जेठ जनके अपने परिवार पैघ छनि। बचिते नहि छनि, कहाँसँ किछु हेताह। ओ त' धनकटी छोट जनके जे कमाइ छथि, ताहिमे हमरो दैत छथि, छोट भाइ-बहिनोके देखैत छथि.....

ओहि दिन प्रकाश अवाक रहि गेल। माय डेरासँ छोड़ि चल गेलि छलीक। माय-भाइ-बहिन सभ निपत्ता। पत्नी एकसरि गुम्मे-सुम्मे बैसलि छलीक। कहलकै—मायके छोड़' गेल छनि सभ। सँझुका गाड़ीसँ गाम गेलीह।

प्रकाश दीडल स्टेशन गेल छल। माय गाड़ीमे बैसलि छलीक। बाकी सभ प्लेटफार्मपर छलैक। क्यो किछु नहि बजलैक। आब ककरो ओकरासँ किछु पुछबाक काज नहि रहलैक, ओ बुझि गेल। चुपचाप ठाढ़ रहल।

माय कहलकै—नहि रहि भेल ! लगैत छल जेना ककरो छाती पर बैसल होइ। हरदम आँखिमे तोर, बोलीमे आगि। तीन दिन बोखारमे किलोल करैत रही दिन भरि। तो आफिस छलह, बाँकी सभ क्यो बाहर। तँयो ओहिना गुम्मे। मुँही बज्जी नहि। एनामे नहि रहि भेल। हिसका लोकनिके नहि उपाय छनि, पेट पोसहि पड़ितनि। हमरा त' गाम-घर अछि.....

गाड़ी खुजि गेलैक खिड़कीसँ हाथ बढ़ा गोड़ लागि प्रकाश प्लेटफार्म पर सुन्न भेल ठाढ़ रहल। माय अपन गाम-घर जा रहल छैक ... ओकर गाम-घर फराक छैक। प्रकाशक डेरा ओकर घर नहि बनि सकलैक। ओकर डेरापर ओकर माइ-बहिन पेट पोसतैक—से माय कहने छलैक। प्रकाशके सुनियोक नहि विश्वास नहि करबाक मोन भेलैक।

गामसँ चिट्ठी आयल छलैक—जा घरि उपाय नहि छनि, ता घरि सभ तोरे डेरापर पेट पोसथुन। एतेक कर्ज-बर्ज भेल छ' हमरेलोकनि (?) लेल, त' थोड़' भारो कर'। कहना सभके पार लगा दहुन। बाप नहि छथिन हुनका लोकनिक—

प्रकाशके ओही दिनसँ सभ नकली लाग' लागल छलैक। जहिया छोट भाइक गरीसँ उतरि लैने छल अपन गरामे, सोचने छल जे सभक भार ल' रहल अछि। बाप खाली ओकरे मुइल छथिन। बाँकी भाइ-बहिनक हेतु बाप जीवित छलैक... जीवित छैक।

मुदा माय लिखलकै—कहुना पार लगा दहन समके'। ओकरा सभक बाप नहि छैक.....

ओ चिट्ठीके फाड़िक' फेकि देलकै। मुदा, फाड़बासँ पूर्ब पत्नी जिद कयने छलैक—कने हमहूँ देखू चिट्ठी.....

प्रकाश चिट्ठी ओकरा नहि देलकै। फाड़िक' फेकि देलकै। पत्नीक सन्देश पक्का भ' गेलैक—चिट्ठी ओकरे बारेमे छलैक। ओ अपन घरमे जा टिक दवेन्टी पीबि पड़ि रहलैक।

डाक्टर अयलैक। द्यूब लगाक' रद्द करीलकै। घीया-पूता सहमल ठाढ़ रहलैक। अगल-बगलक डेरासँ लोक हुलक' बुलक' लगलैक। किछु लोक डेरा आबि पुछारी कर' लगलैक। प्रकाश गुम्मे-सुम्मे बैसल रहल।

डाक्टर चल गेलैक। प्राण बाँचि गेल छलैक। डरायल-सहमल घीया-पूता दोसर कोठलीमे सूति रहलैक। भाइ-बहिन अपन कोठलीमे प्रायः सूतल छलैक। प्रकाश अपन कोठलीमे दबाइक निशासँ बेहोश जकाँ पड़लि पत्नीक बगलमे बैसल छल। सम्पूर्ण डेरामे एक टा भयावह अन्हार आ चुपची पसरल छलैक।

प्रकाश उठिक' कोठलीसँ बाहर बरण्डापर आयल। ओत' घीया-पूताके पढ़बा लेल टेबुल-कुर्सी लागल छलैक। ओ बत्ती जरोलक आ एक बेर भीतर दिस देखलक। क्यो जागल नहि छलैक। ओ कागज-कलम ल' मायके चिट्ठी लिख' लागल—

—तो' एक दिन डेरासँ चल गेल' आ आइ तोहर चिट्ठी नहि पढ़' बेलियनि त' कनिया जहर खा पड़लि छथि। प्राण बाँचि जयतनि। लगैत अछि जेना सभक मार्गमे हमही बाधक भ' रहल छियेक। सोचने रही जे जखन सभ भाइ अपन पयर पर ठाढ़ भ' जयताह त' दायित्वसँ मुक्त हैब। तोरा लोकनि हमरा पहिने मुक्त कर' चाहैत छे'। हमरा अयोग्यतापर दया क' समयसँ पहिने ई भार हमरासँ हँटब' चाहैत छे' तो' सभ।

भरिसक ई भार कहियो छलेने ! हमही सभ पर भार बनल छलियेक।

बाँट-बखराक बात हमरा कहियो बुझ'मे नहि आयल। तो' कहबे', तोरा बुझबाक काजे कोन छ' ? कमाइ छ', सभटा सामर्थ्य छ', तोरा बाँट-बखरासँ की फर्क पड़तह ? सत्ते, कहैत छियेक माय, बाँट-बखरासँ हमरा कोनो फर्क नहि पड़त। जाहि बखरामे तो' हमरा दिस नहि छे', ताहिमे भार हमर की सति हैत ?...

प्रकाश आर किछु लिख' जा रहल छल, मुदा तखने क्यो ठठाक' हँसलैक—
हैट्स आफ दू यू चौधरी जी !'

चिट्ठीके डैबुलपर छोड़ि प्रकाश उठिक' आङनमे आयल। ऊपर अन्हार छलैक, मुदा निचला बरण्डाक रोशनीमे ऊपरका सभ किछु देखाइत छलैक। कतहु क्यो नहि छलैक। लगलैक जेना कैप्टन साहब कोनो दोगमे ठाढ़ छथिष। जोर सँ पुछलकनि-कैप्टन साहब छी ?

कोनो उत्तर नहि भेटलैक। ओकरा आश्चर्य भेलैक। ओ कैप्टन साहबक आबाज स्पष्ट सुनने छलनि। कहाँ चल गेलथेन ?

ओ आङनसँ फेर बरण्डामे आयल। बैसिक' चिट्ठी केँ सम्पूर्ण कर' लागल—

फेर क्यो जोरसँ हँसलैक—हैट्स आफ टु यू....'

ओ हँसी आ ओ स्वर बेर-बेर ओकर चारुकात गोंगिआय लगलैक, जेना चारुकात नाचि-नाचि, ओकर चिट्ठी पढ़ि उपहास क' रहल होइ। अवाक् भेल प्रकाश चारुकात निहारेत रहल जे ओ स्वर किम्हरसँ आबि रहल छलैक। मुदा, ओकरा कतहु क्यो नहि अबरलैक।

एक दिन एकटा चिट्ठी लेने कैप्टन साहब हँसैत आयल छलथिन—ए ग्रेट सरप्राइज चौधरी जी ! महानतम आश्चर्य ! आब अहाँ नहि कहि सकैत छी जे हमरा-लोकनिमे खाली हिसाबे-किताब लेल पत्राचार होइत अछि। हमरा लोकनि खाली पट्टीदारे नहि, भैयारियो अछि ! पढ़ि लिय' चिट्ठी....'

प्रकाश चिट्ठी पढ़ने छल। कैप्टन साहबक छोट भाइ लिखने छलथिन—आइ वर्ष दिन बाद एकाएक मोन पड़ल जे ७५ मे जे पटनामे भीषण बाढ़ि आयल रहैक, ताहिमे अहाँक इलाका सभसँ बेसी क्षतिग्रस्त छल। साल भरिसँ कोषो पत्र नहि भेटबाक कारणे आश्चर्य छी जे जान-मालक कोनो क्षति नहिए भेल हैत। तैयो एक बेर जिज्ञासा क' लेब उचित बुझाइत अछि.....'

पत्र समाप्त क' प्रकाश कैप्टन साहबक मुँह देखने छलनि। हुनक ठोरपर हँसी छलनि—हमरो सभमे भैयारी अछि ! मान' पड़त बीजरीजी। बाफटर आल बी आर ब्रदर्स...सहोदर छी हमरा लोकनि—

आइ, रातिक एहि एकान्तमे चारुकातसँ गोंगिआइत ठहका सभक बीचमे ओकरा कैप्टन साहबक हँसी मोष पड़लैक। आ, ओकरा लाज भ' गेलैक। चिट्ठीकेँ

फाड़ि दैलक आ चिट्ठी फाड़िते ठहका दःद भ' गेलैक। एकटा शान्ति पसरि गेलैक। बत्ती मिझा ओ अपन कोठलीमे आयल। आब चारुकात पसरल अन्हार भयावह नहि लगलैक। लगलैक जेना चारुकात पसरल सभ चीज फेर बदलि गेल छैक। बिछीनपर पत्नी दबाइक निर्णामे बेहोश पड़लि छलैक। दोसर-तेसर कोठलीमे धीया-पूता आ भाइ-बहिन सभ छैक। गाममे माय छैक, घर छैक... सभ किछु छैक—अपन छैक—असली छैक....

किछु दिन बाद प्रकाशकेँ गामसँ मायक चिट्ठी भेटलैक—२६ आ २९ अगस्तकेँ फेर सभ' ग्रह एकत्रित भेल छैक जेना १९३४क भूकम्प बेर भेल रहैक। सभ क्यो पटनामे एक्के ठाम रहिह'। एम्हर-ओम्हर नहि जहिह' आ साकाँछ भ' रहिह'...तोरे सभपर मोन अटकल रहैत अछि...

सितम्बर, १९७६

भयाक्रांत

डाक्टर साहब अप्रतिभ भ' गेलाह ।

बहुत दिनपर भेटल छलाह ! बड़ आत्मीय आ दुलारू दोस्तक पित्ती ! देखि क' चीन्हि नहि सकल छलाह ! परिचय देला पर अवाक आ विस्मित रहि गेलाह !

अवाक आ विस्मित आरो लोक सभ होइत छथि । कतेक गोटे अविश्वास-पूर्वक चेहरा निहारैत बागू बढ़ि जाइत छथि । चीन्हियो क' रोकबाक साहस नहि करैत छथि जेना भय होनि जे कोनो अनचीन्हारके आत्मीय बूझि टोकि बैसताह । जे क्यो टोकि छथि से एकटा आश्चर्य आ भय सँ युक्त चेतोनी द' जाइत छथि—की क' रहल छी अहाँ ? हम त' चीन्हियो नहि सकलहुँ । एकरा रोकू ।

हम हुनकर विस्मयाहत चेतोनीकेँ हँसीमे उड़बैत कहैत छियनि—असम्भव ! एकरा रोकल नहि जा सकैत अछि । एकर त' दिन दुन्ना राति चौगुन्नाक हिसाब सँ तरक्की भ' रहल छैक ।

शुभचिन्तक-हितैषी अवाक मुँह ताक' लगैत छथि । हम गम्भीरता पूर्वक हुनका बुझैबाक स्वरमे कहैत छियनि—देखू । वर्तमान कालमे दुइए टा प्रमुख राष्ट्रीय समस्या अछि—बर्थ कन्ट्रोल आ गर्थ-कन्ट्रोल ! एहिमे पहिल समस्या अपेक्षाकृत कम गम्भीर अछि आ राष्ट्रीय स्तर पर एकरा लेल प्रयास भ' रहल अछि । मुदा दोसर समस्या अछि भयंकर । एकर नियंत्रणक कोनो उपाय नहि ।

हमर नकली गम्भीरता देखि हुनका हँसी लागि जाइत छनि मुदा तैयो ओ जाइत काल कहि जाइत छथि—एकरा हँसीमे नहि उड़बियोक, ई त' अपनाकेँ मारब भेल ।

आइ सँ पाँच वर्ष पूर्व डाक्टर सिन्हा सेहो कहने छलाह । बापक चिकित्सक छलाह, बच्चेसँ बापक आंगुर पकड़ि हुनकर विलंबिकमे जाइत रही ।

तहिया हुनकर विसनिक खाली रहैत छलनि । रोगीक संग हमरा सन श्रियो-पुताके संग गप्प क' लैत छलाह, नाम-गाम पुछि लैत छलाह । फेर ओ पैघ डाक्टर भ' गेलाह—एकदम व्यस्त । हमरा लोकनि सँ गप्प करबाक कोन कथा रोगियोसँ गप्प करबाक पलखति नहि रहलनि । ई सभ काज जुबियर डाक्टर सभ कर' लगलनि । दवाइक पुर्जो नवके डाक्टर लिख' लगलनि । अपने ओ एक मरीजके तीस सेकेण्ड टाइम दैत छथिन । सभ के एके टा सवाल—की तकलीफ अछि । मुदा ओकर जवाब सुनबासँ पूर्व दस सेकेण्ड लेल रोगीक नाड़ीपर हाथ जाइत छथि आ तावत जुनियर डाक्टर रोगीक हाल लिखल पुर्जो सामने राखि दैत छनि । ओकरा पर पाँच सेकेण्ड लेल दृष्टि दोड़ा डाक्टर साहब दवाइक बाम बाज' लगैत छथि जकरा जुनियर डाक्टर गलत-सही उतारि लैत अछि आ डाक्टर साहब दोसर रोगी दिस मुड़ि जाइत छथि—

“की तकलीफ अछि ?”

ओइ दिन ओइ भीड़ो-भाड़मे मुदा डाक्टर साहब के पलखति भेटि गेल रहनि । बाबूक हालत गम्भीर रहनि मुदा डाक्टर साहब हुनका लेल नहि, हमरा लेल चिन्तित भ' उठलाह—ह्वाट हेव यू डन व्वाय ? इस उम्रमे इतना ओभरवेट ? विथ दिस फैमिली हिस्ट्री । डोण्ट किल योरसेल्फ ।

आ डाक्टर त्रिपाठी सेहो सँह कहलनि । बहुत रास चेतोनीक बाद बजलाह—“हम तोरा दवाइ देलाक' दैत छियौक । सभ ठीक भ' जयतौक । भोरमे एकटा अण्डा आ एक गिलास दूध, दस एग्यारह बजेमे बिना चीनीक कौफी, डेढ़ बजेमे एक टा रोटी आ उसनल हरियर तरकारी जतेक मोन होइ आ राति नौ बजेमे तहिना एकटा रोटी आ तरकारी ! सांझन किछु फल फलहरी ।”

हमरा हालेमे देखल एक टा फिल्मक दृश्य मोन पड़ि गेल । खूब गम्भीरता पूर्वक पुछलियनि—अहाँक ई दवाइ भोजनक बाद खायब वा भोजनक पहिने डाक्टर साहब ?

डाक्टर साहब अप्रतिभ भ' गेलाह । मुदा भौजी त' हमरे अप्रतिभ क' देलनि ।

हमरासँ पाँच बरख जेठे छथि भौजी—खूब सुन्दर आ स्वस्थ । जहिआ हम पन्द्रह वर्षक रही, एक बेर विदागरी करब' हुनकर गाम गेल रहियनि । टींगामे

भयाक्रांत

हुनकर संग बिदाइक पीअर धोती पहिरि बैसि गेल रही । रास्तामे एकटा मुसलमान बटोही आह्लादसँ बाजल रह्य—“खुदा ने खूब अच्छी जोड़ी बनायी है ।” भौजी सबा गेलि रहिय ।

सेह भौजी खूब गौर सँ हमर चेहरा देखत बाजि उठलीह—“अहाँक चेहरा एहन शायर कोना भ' गेल ? केहन गौर आ कान्ति भरल आकृति रह्य ?

हम अप्रतिभ भ' गेलहु । फेर कहना सम्हरैत कहलियनि— फेर पीअर धोती पहिरि अहाँक संग टांगा पर बैसब त' चेहरा चमक' लागत ।”

भौजी अहू वयसमे नवकनियाँ जकाँ लजा उठलीह ।

मुदा कान्ता त' जेना मर्माहत भ' गेल ! कोनो शब्दे नहि बहरेलैक मुहसँ । नेनामे ओ हमरे टा कनियाँ बनेत छलि, कने चेतन भेला पर ताश पचीसीमे हमरे टा गोंधिया बनेत छलि आ पन्द्रहम वयसमे द्विरागमनक बाद सासुर जाइत काल हमरो कान्ह पर मूड़ी गाड़ि हिचुकि-हिचुकि क' कानलि छलि ओ बाल संगी ।

पच्चीस वर्षक अन्तराल पर ओइ बेर गाममे देखलियैक । एकदम बदलल । ने ओ रूप, ने ओ देहक कान्ति ! मुदा एतेक वर्षक बाद अपन बाल संगीके देखि अपूर्व आनन्द भेल । झट आगाँ बढ़ि टोकलियैक—“कहिया अयलै कान्ता ?”

ओ डरा क' पाछाँ हटि गेल । जेना कोनो भूत-प्रेत देखि लेने हो । आँखिमे पहिने आश्चर्य आ फेर एकटा घनीभूत पीड़ा पसरि गेलैक—तो पुलक — “तोही छै.....?”

—“तोही छै” मे निहित विस्मय आ पीड़ा हमरा भीतर तक छेदि देलक । आगू किछु पूछब सम्भव नहि भेल । ओकर आँखि दिस देखबाक साहस फेर नहि भेल जाहिमे एकटा खण्डित स्वप्नक पीड़ा छटपटा क' घनीभूत भ' गेल छलैक । जाय लागल त' बकार फूटल—“अखन किछु दिन रहब ने गाममे ?”

मुदा से प्रायः ओ नहि सुनलक । प्रायः सुनियो क' जवाब नहि देलक । चूपचाप चल जाइत रहलि । एक्को बेर पलटि क' पाछाँ नहि तकलक । हमर पैर सेहो ओतहि जमीनमे गड़ल रहल । अपन पच्चीस वर्षक विवाहित जीवनमे अनेक बेर नेहर आयलि छलि । प्रत्येक बेर हमर आँगनमे मायसँ अनुरोध क' जाइत छलैक आ प्रत्येक बेर सासुर जाइत काल माय लग हमरासँ भेंट नहि हैबाक कचोट

भयाक्रांत

बखानि जाइत छलैक । मुदा पच्चीस वर्षपर भेंट भेल त' ठौर सिया गेलैक आ चेहरा भयाक्रांत भ' उठलैक जेना भूत प्रेत देखने हो ।

कोनो-कोनो चीज लोकके बड़ जल्दी आक्रान्त करैत छैक—जेना कोनो मोहक व्यक्तित्वक जादू । ओकर जादूसँ ओइ दिन ‘भाभी’ आक्रान्त भेल छलीह । पहिले बेर भेंट भेल छलनि । तेहन-तेहन गप्प सुनीलकनि आ तेहन अन्मुक्त ठहाका लगौलकनि मनोज जे भाभी मुग्ध भ' उठलीह । हमरे संग गेल छल मनोज । औपचारिक परिचयक बाद दस पन्द्रह मिनट ठहरल हैत आ ओही बीच चाय-पानक क्रममे बहुत रास गप्प सुना देलकनि । ओकर जाइतहि भाभी अपन पति वर्मासँ बजलीह—देखै छियै, अहाँक वयसक त' छथि । मुदा चुस्ती आ चेहरा क' दीप्ति देखियोक । आ अहाँ लोकनि अही वयसमे एतेक टा पसरल पेट आ निस्तेज चेहरा.....।

ता' हमर चेहरा पर दुष्टि गेलनि । बात सम्हारैत ‘बजलीह’—“अहाँक बात नहि कहैत छी भाइ साहब ! अहाँ त' एतेक भारी देह होइतो कतेक स्फूर्तिवान छी मुदा हिनका देखियनु.....। हरदम अलसायल.....एण्ड दिस बिग टमी ।

आ फेर अपन बातके आधिक पक्षसँ जोड़ैत बजलीह—“असल बात छैक आधिक सुविधा । खाली नोकरी आ दरमाहावाला चेहरा पर ई दीप्ति आबिये नहि सकैत छैक । एहि लेल चाहियैक.....—आ कि नहि भाइ साहब ?

अपन बातक चोटके हल्लुक करबाक भाभीक प्रयासमे सहयोग दैत नाटकीय हम मुद्रामे कहलियनि—“असल चीज छैक भाभी, चिन्ता । एकरामे चिन्तासँ अर्घनकार बेसी छैक ।” आ फेर फारसी थियेटरक अन्दाजमे कहलियनि—

“चिन्ता हम उसको कहते हैं जो मुर्दे को जलाती है

बड़ी है इसलिए चिन्ता कि जाते को जलाती है ।”

हमर मुद्रा देखि भाभी भ्रमाक' हँसलीह । वर्माक मन्हुवायल आकृति पर सेहो एकर असरि भेलैक । मुदा भाभी अपन हँसी रोकि बजलीह—“ई बात झूठ भाइ साहब । अहाँके त' कखनो चिन्तित नहि देखैत छी । हरदम प्रसन्न आ चिन्ता मुक्त । हिनकर बात दोसर छनि ।” हम ओहिना नाटकीय मुद्रामे कहलियनि—“इत्युजब भाभी—बड़का भ्रम । ई त' भेल एकटा नकली चेहरा.....दुनियाके

भयाक्रांत

देखाव' लेल'.....अपनाके' बहटार' लेल' .. ऐ चेहराक पाछाँ नुकायल चेहराके' देखू भाभी.....।

हमर अभिनय पर भोजी नीक जकाँ हँसैत छथि..... अहाँ त' बढ़िया नाटक क' लैत छी भाइ-साहब ।

झूठ ! एकदम झूठ ! भाभी झूठ बाजलि रहथि ओइ दिन । कहाँ कोनो नाटक पार लगैत अछि हमरा सँ... कहियो, कोनो दिन पार नहि लगैत अछि । सभ किछु ओहिना आकृति पर लिखा जाइत अछि । पत्नी अनेक बेर कहि चुकज छथि—'अनेरो झूठ बजैत छी अहाँ । अहाँक त' चेहरा कहि रहल अछि ।

पकड़ैत छथि सभ सँ पहिने कका.....बड़का कका ! सुतली रातिक निस्तब्धतामे आवि सिरमामे बैसि जाइत छथि—चिन्तित आ उद्विग्न । कनेक फुसफुसा क' कहैत छथि—'एकटा विचित्र बात सुनलहुँ अछि बाउ । तहिया सँ मोन चिन्तित अछि । ओना विश्वास नहि भेल मुदा नीलकंठ कहलनि...ते' झूठो मान' मे कोनादन लागल । एहि बूढ़ वयस मे झूठ बजताह ओ ?

हम उठि क' गेसैत कने उत्सुकता सँ पुछलियनि—एहन कोन बात छैक कका ?

कका आरो फुसफुसा क' बजलाह—'सुनलहुँ अछि जे तोरा बड़ बेसी कज भ' गेल छ' । सुनिक' विश्वास नहि भेल । एतेक कमाइ छ', गाड़ी-बोड़ा रखैत छ', ताहि पर कतहुँ कज ?

झूठ ! एकदम झूठ । भाभी झूठ बाजलि छलीह । नाटक हमरा बुते नहि पार लागत ? हम ककाक विश्वासक रक्षा लेल अपन सम्पन्नताक नाटक वहि क' सकैत छी । कहैत छियनि—'कहने त' ठीके छलाह नीलकंठ कका !

ककाक आकृति पर पसरल आश्चर्य आ भयक भाव रातुक अन्हारोमे पड़ल जा सकैत छल । बड़ीकाल कका स्तब्ध बैसल रहलाह आ फेर उठि क' आस्ते आस्ते अपना कोठली दिस जाइत जेना अपनहि सँ बाजि उठलाह—मुदा एतेक बेसी कज ! इ सघत कोना ?

कोनाक जबाब हमरो लग नहि छल ! मुदा जे सत्य छलैक तकरा नुकयबाक नाटक कका सँ करब पार नहि लागल ! कका एक तरहें सन्यासी छथि ! काकी

आइ सँ पैंतालिस वर्ष पूर्ब संसार छोड़लनि ! कका एकसर छथि—निलिप्त, एक तरहें संसारक चिन्ता सँ मुक्त । हुनको एकटा सूचका सँ चिन्ता भेलनि आ हुनकर चिन्ता केँ मिटा देब' लेल सम्पन्नताक नाटक करब पार नहि लागल ।

माय केँ त' चुप्पो करब पार नहि लागल । ओ कका जकाँ लग बैसि अपना मे बुदबुदाइत नहि चल गेल, सामने बैसि जोर सँ कान' लागल । ओकरा कजैक गप्प नहि बुझल छलै से बात नहि । मुदा गामक लोक ई बात कहैक से बर्दाश्त नहि छलैक । कनैत कनैत बाजलि—सभ त' इएह ने कहत जे हमरे लोकनि द्वारे एना कजमे घँसल छ' ! अनेरो सभक लग एकर खिस्सा पसारला सँ लाभ ?

झूठ ! एकदम झूठ ! भाभी खाली झूठे बाजलि छलीह । नाटक किमहुँ हमरा बुते पार नहि लागत । माय केँ चुप्प करबा लेल अपन सम्पन्नताक स्वांग करब संभव नहि भेल । हम ककरो, किछु कहने नहि छलियैक, मुदा जे स्थिति छल तकरा झाँपबाक नाटक हमरा निष्प्रयोजन लगैत छल, आइयो लगैत अछि । आ भाभी कहने छलीह—अहाँ त' खूब नाटक क' लैत छी भाइ-साहब ।

कार्यालयक कोनो-कोनो आत्मीय कहियो कहियो काल नितान्त अपनैती आ व्यवहारिक बुद्धि देखबैत कहि बैसैत छथि—अहाँ केँ चीन कोना होइत अछि, पुलक बाबू ? एतेक रास कज माय पर तखन, एतेक प्रसन्न आ चिन्तामुक्त । हमरा त' बेटीक विवाह मे अपन जमाक अतिरिक्त पाँच हजार कज भ' गेल अछि, से दिन-राति माय टनकैत रहैए । परिवार अहाँक पैघ अछि, मानलहुँ । मुदा खर्च त' अपन ओकाति एक मुताबिक करक चाही ।

कहीं ओकातिक बात पर खिसिया ने जाइ, तेँ कनेकाल हमर मुँह देखि कहैत छथि—'ओना अहाँ सब तरहें समर्थ छी, अहाँ लेल एतेक कज किछु नहि अछि ! मुदा तँयो अपन बूझि कहलहुँ, बुधियार लोक समय सँ पहिने चेति जाइत अछि ।

बकलेल त' हमहुँ नहि छलहुँ कहियो । मुदा ई बुधियारी बला गप्प कहियो नहि बुझ' मे आयल ? आइयो नहि अगैत अछि । पत्नी दिन-राति कनैत छथि, अपन भाग्य केँ कोसैत छथि, हमर असमर्थताक विद्रूप करैत छथि, मुदा बुधियारी हमरा नहि सुझाइत अछि । हम किछु कहूँ चाहैत छियनि त' चिकरि क' बाजि उठैत छथि—बस करू आब ! हमरा देवा लेल आर अछिये की अहाँ लग—मात्र

एकटा उपदेश, सत्रह वर्ष से ओकरे धोरि अ' पिबा रहल छी । हम त' बह पोबि सन्तोष क' लेलहुँ । मुदा ई अबोध नेना सब, ई विवाह जोगरि बेटी आ ई दूध पिबुआ बेटी । एकर भविष्य की हेतैक ?

हम हुनका परबोध' लेल किछु कह' चाहैत छियनि मुदा ओ हमरा तकर मौका नहि दैत छथि । ओहिना उच्च-स्वरमे बकने चल जाइत छथि—“असलमे अहां सन लोककेँ विद्याहे नहि कर' चाही । सभटा झंझटसे चैन । आ अहां केँ अखनो कोन झंझट अछि । बिछौन पर पड़ैत देरी चैन से फोंफ काट' लगेत छी आ हम सब राति अन्हारमे जागलि, एकसरि भविष्यक आशंकासे थरथराइत रहैत छी ।

पत्नीक एहि आक्रमणसे अपन आत्मामे उत्पन्न सिहरन केँ दबबैत हम किछु कह' चाहैत छियनि मुदा ओ ओहिना क्रोधावेश मे बड़बड़ैने जाइत छथि—“आब कोनो दोसर उपाय नहि । अहाँ पाथर छी । आब एकेटा उपाय रहि गेल अछि, एक दिन छबो नेन्ना केँ गरदनि दाबि अपनो फाँसी लगा केब । सभटा झंझट एक्केबेर चैन ।”

पत्नीक अइ आक्रमणसे हमर शरीरक शोणित जमि जाइत अछि । पत्नीक आंखिमे एकटा आहत हिंसक भाव छनि । ओइ से हमरो डर लगेत अछि । ओ कनेत पड़ि रहैत छथि । पड़ले रहैत छथि । प्रायः नीन भ' जाइत छनि ।

हम चुप्प भेल बैसल रहैत छी । लगेत अछि जेना एहने क्षणमे पुरुषक मोन मे बुधियारी जन्म लैत छैक ।

बुधियारीक जन्मक आशंकामे हम राति भरि जगछे रहि जाइत छी ।

आ प्रायः बहुत वर्ष पर पत्नी भरि राति निश्चिन्त मुतैत छथि । ●

अगस्त, १९८०

नवम दशकक कथा : प्रभासक

- एकालाप
- इन्द्रधनुष
- स्थानान्तरण
- बजन्ताक पोता
- विकलांग
- बाढ़ि
- रक्षक

રુકાલાપ

ઓ ચિટ્ટી ડેરામે મનોરંજનક વસ્તુ બનિ ગેલ છલ ।

ઓના ઓઈ ચિટ્ટીમે એહન કિલુ નહિ છલૈક જકરા મનોરંજનક વસ્તુ માનલુ જાય ! પોસ્ટકાર્ડમે લિલ્લ ચિટ્ટી ! ખૂબ ગજલ-ગજલ ઘુમા-ઘુમા ક' લિલ્લ આખર ! ટેઢ-મેઢ મુદા દૂરસેં દેખવામે બેસ સુન્નર । અસલ મનોરંજન પોસ્ટકાર્ડ હાથમે લેલાક બાદ શુરુ હોઈત છેક ! ઊપરસેં નીચાં ઘરિ એવકો આખર પઢિ સકબ સમ્ભવ નહિ । કકરો થાહે-પતા નહિ લગૈત છેક જે કકર ચિટ્ટી થિકૈક ! હોઈત છેક જે કયો મજાકસેં એહન પોસ્ટકાર્ડ હસા દેને અછિ । સાંજાન આફિસસેં ડેરા અથલા પર ઓ પોસ્ટકાર્ડ હમરો હાથમે અબૈત અછિ ! બઢકી વેટી ઓ ચિટ્ટી હાથમે દૈત કહેત અછિ —“અહાંક લેટર પપ્પા, !” આ મુસકિયા ઊઠૈત અછિ । ઘર ધરિક લોકક ડોરપર મુસ્કી ! હમરા કિહુ આશ્ચર્ય હોઈત અછિ ! પોસ્ટકાર્ડ પઢવાક ચેષ્ટા કરૈત છી ! એવકો આખર પઢલ નહિ હોઈત અછિ ! પલટિ ક' પતા દેખૈત છિયૈક —કોનો દોસર હાથક અંગ્રેજીમે સાફ સાફ લિલ્લ પતા ! ચિટ્ટી હમરે છલ —એહિમે કોનો સન્દેહ નહિ ! મુદા કકર ?

દોબારા-તેબારા લાલ્લ ચેષ્ટા કયલો પર ને એવકો અક્ષર પઢવ સમ્ભવ હોઈત અછિ, ને કોનો અન્દાજે લગૈત અછિ જે કકર ચિટ્ટી છેક ! હમર હાલતિ દેખિ ઘર ધરિક લોક ઠિઠિઆય લગૈત અછિ ! હમહૂં હિસિઆયલ સન હૈસૈત છી । મોનમે એકટા ચિન્તા પસરિ જાઈત અછિ - નહિ જાનિ કકર ચિટ્ટી થિકૈક ?

ચિટ્ટી હમર હાથસેં છિના હાથે-હાથ બૂલ' લગૈત અછિ । સભ અપન-અપન અંટકરસેં કિહુ ઊટપટાંગ સન પઢૈત અછિ આ ડેરામે ઠહકા પરઠ હવકા છૂટ' લગૈત અછિ ! હમ કપડા-લતા બદલિ જહિવા ડ્રાઈંગ રુમમે આવિ બૈસૈત છી કિ સામને ટાંગલ 'દાદા' (હમર પિતા)ક ફોટો પર દૃષ્ટિ જાઈત અછિ આ સમટા અન્હાર ફાટિ જાઈત અછિ !

એકટા પુર્જી હાથમે લેને દાદા ઘઢફડાયલે આંગનમે અબૈત છયિ ! માય મંસાવરમે વાતલ અછિ ! દાદા લગ જા કહેત છયિન —“સુને છી, કકરો આઈયે

सौराठ पठन' पड़त ! साबीक चिट्ठी आयल अछि ! पंडीजी आयल छथि सौराठसँ !"

माय कोनो उत्तर नहि दैत छनि । दादा ओइ ठामसँ हटि आंगनक बीचमे आवि जाइत छथि ! ओइ पुर्जिकेँ एक-दू बेर फेर उनटबैत छथि आ एकटा स्नेहपूर्ण खींझाहटि हुनकर आकृति पर पसरि जाइत छनि—“की लिखैत छथि साबी से बिन अन्दाज कयने बूझबे मुस्किल !

एहने स्नेहपूर्ण वत्सल हँसी हम बहुत बादोमे दादाक आकृतिपर अभू दाइ (हमर छोट बहिन)क चिट्ठी अयला पर देखैत छलियनि—“अमू त' साबीक दोसराइत छथि । बिन अन्दाज कयने एक्को आखर बूझब मुस्किल !

सभटा अन्हार फाटि जाइत अछि ! हम लपकि क' ओ पोस्टकार्ड छीनि लैत छियैक ! साबी पीसीक चिट्ठी ! सभटा अक्षर स्पष्ट होम' लगैस अछि—

चि० हड़बड़केँ श्रीमतीक तरफसँ आशीर्वाद ! आगाँ समाचार जे.....

छोट रही त' बड़ आश्चर्य होअय ! आँगनमे जखन साँझक झलकल अन्हार पसरि जाइ, घरे घर लालटेन डिबिया छेसा जाइ आ हम खेला धूपा क' अपन आँगन घुरि आबी त' कखनो माय वा कखनो बाबीकेँ देखिगैक जे हमर कोनो भाइ वा बहिनकेँ कोरामे सुता दीप देखा रहल छैक ! कोरामे तेल कूड़ देल कखनो सूतल, कखनो आँखि मिलमिलबैत बच्चा आ बाबीक हाथमे ऊपर नीचाँ घुमैत जरैत दीप ! ओ दृश्य हमरा बड़ अद्भूत लागय ! बाबीक आँखिमे ममता आ पटपटाइत ठोर—माय मासु साबी पीसी, देखनिहारि... आजो पीसी केँ हम साबी पीसी सुनि लैत छलियैक ।

हमरा अहू बातक आश्चर्य होअए जे बाबी सभ दिन साबिए पीसीक नाम कियैक लैत छनि ! फेर अपने मोनसँ उत्तर ताकि ली जे पीसी त' हमरा एक्केटा छथि, आर ककर नाम लैतैक बाबी ! मुदा कोनो साँझ खेलाइत-बोआइत साँझ भेलोपर यदि कोनो आने आँगनमे रहि जाइ त' ओतहु बेह दृश्य देखियैक । कहियो शरदक बाबी त' कहियो चुन्नीक बाबी ! हुनको हाथमे ओहिना घुमैत बारल दीप आ पटपटाइत ठोर—“माय मासु साबी पीसी, देखनाहारि सुननाहारि...—

तखन हमरा लागय जे साबी पीसीकेँ सभ बड़ मानैत छनि—अपन बाबी, शरदक बाबी, चुन्नीक बाबी ! सभ हुनके नाम लैत छनि । कतेक मानैत छनि सभ हुनका ।

२०६]

एकाक्षप

बाबी कहैक, बापो बड़ मानैत छलथिन साबीकेँ ! सावित्री नाम देवे छलथिन । बड़का जमींदार छलाह, आ धोहूँ बड़का छलनि हुनकर रोब-दाय ! धोयो पुता सभ डेरायलै रहैत छलनि, डरे लगो ने जाइत छलनि ! मुदा साबी छलीह छोटकी बेटी—बापक बड़ दुलार ।

बाबीक बात पर बड़की बाबीकेँ लेसि दैनि—“देह मे आगि नै लगाबह दे सुभानी ! केहन मानैत छलथिन से त' सभ देखिते छनि ! अपन सातो सन्तानक लेल सभ दिन छिछिआइते रहैत छथि !

अपन जेठ बहिनकेँ बाबी कोनो उत्तर नहि दैत छलैक ! ओहुना कठोर बात कहब ओकर स्वभावे नहि छलैक आ बड़की बाबी त' अपने जेठ बहिन छलैक, सेहो बाल बिधवा ! सातमे वर्षमे जखन स्वामी संसार छोड़ि देलथिन, त' बड़की बाबीकेँ सासुरो छूटि गेलैक ! बाप रहथिन दरिद्र भलमानुस आ छोटकी बहिनकेँ रहैक बड़का जमींदारो ! बड़की बाबी छोट बहिनक संग ओकरे सासुर चल आयलि । जिनगी बिता देलक !

ओकरा मोनमे आगि रहैक अपन पहूड़ सन एकसरूआ जिनगीक अर्जित एकमात्र पूजी ! जखन तखन ओ घबकि उठैत छलैक ! बाबी जखन साबी पीसीक बापक दुलार हेबाक बात कहैक, बड़की बाबी एहिना घबकि उठैक ! बाबी बुझबैत कहैक—“एना नहि बाज' ठक्कनि ! बापक दुलार अवस्से छलीह साबी ! ओहुना कोनो बाप, कोनो गरीबो बाप जानि बूझि क' अपन बेटीक गरइनि कटैत अछि ? हुनका जाति-पाँतिमे, उच्च कुल-शीलमे बेटा-बेटी विशाहवाक बड़ सौख रहनि । कहुन जे नशा रहनि । सभ बेटीकेँ तहिना बिआहलनि । बड़की दुनू भागमन्त छलीह, सखा-सन्तति भेलनि आ स्वामीक अछैत संसारसँ गेलीह । साबीकेँ कोनो जन्मक चकलाहा छनि, भोगि रहलि छथि !”

बाबीक ई तर्क बड़की बाबी नहि मानैक ! कोनो आर कठोर बात कहैक मुदा ओ नहि सुनैक ! बाबी किछु बेसी उँच सुनै । किछु नहि, खूब बेसी उँच । बड़की बाबी अपन बात फेर दोहरबैक मुदा बाबी तैयो ने किछु सुनैक । बड़की बाबी लोहछिक' कहैक—“कप्पार तोरा कहिय', तोहर त' काने जरल छ'—

आ ई दृश्य देखि आ दुनू बहिनक प्रेमाभाप सुनि घर भरिक लोक खूब हँसैत छल !

एकाक्षप

२०९]

ओइ दिन मुदा सभक आँखिमे नोर भरि गेल छलैक ! दादाक आँखिमे नोर, बड़का काकाक आँखिमे थरथराइत पानि । बड़की बाबी आ मायक आँखिमे दहो-वहो नोर ! खाली बाबी आशंकित-अपस्यांत, सभ लग बौड़ैत ! पहिने अपन बहिनके नेहोरा कयलक—“कने हमरा कह’ ने हे ठवकनि ? एना सभ कयो कनैत किएक छ’ ?”

बड़की बाबी कोनो जबाब नहि देलकै ! बाबी अपन छोटका बेटा लग गेलि—“तो कह’ गट्टू ! की बात छैक ?”

दादा ओकरा टारैत कहैत छथिन—“कहबो बादमे ! तो चैन सँ बेस ने !

बाबीके मुदा चैन नहि ! ओ बड़का बेटा लग गेलि—तोही कह’ ने लोभू ! की भेलैक अछि ?

बड़का काका किछु कहबाक चेष्टा करैत छथि ! ठोर थरथराइत छनि मुदा एक्को शब्द नहि बहराइत छनि ! ओ ओत’सँ बाहर दलानमे चल जाइत छथि ! कोनो आशंका बाबीक मोनके दलमलित कर’ लगैत छैक ! ओ हमर माय लग जाइत अछि—“आब हम नहि मानव जसमन्सी दहुरिया ! एना सभकयो मिलि क’ हमर जान नहि लिय’ ! कहू हमरा जे की भेल अछि—”

माय आँखिमे नोर पोछि कहैत छैक—“सौराठ सँ आदमी आयल छैक । मौसर—”

बाबी चीत्कार नहि करैत अछि ! अपन कोठलीक माटिपर पड़ि रहैत अछि ! ने आँखिमे नोर, ने ठोर पर कोनो शब्द ! भोरसँ साँझ होइत छैक, साँझसँ प्रात ! बाबी ओहिना पड़ले रहि जाइत अछि । बड़की बाबी बेर-बेर लग जा कहैत छै—“आब उठह, साहस करह सुभानी !”

बाबीक शरीरमे कोनो स्पन्दन नहि ! बड़की बाबी बेर-बेर देह डोला थाकि क’ ओतहि बैसि अपने कान’ लगैत अछि । दादा कतेक बेर लग जा कहि अबैत छथिन—“उठ माय ! एना कयलासँ गेतिहार घुरि ओथुन ?” बाबी तैयो ओहिना निशब्द पड़लि रहैत अछि । बड़का काका बेर-बेर ओकर कोठली मे जाइत छथि मुदा बिन टोकने घुरि अबैत छथि ।

तेसर दिन सौराठबला पीसा अबैत छथि—पंडीजी ! गामक हाइ स्कुलमे हेड पंडित छथि ! दादाक पितृभौत बहिनक वर आ पीसाक पितृभौत भाइ ! बिल्ली पीसी सेहो ओही घरमे बिआहलि छथि ! सझिए आंगन छनि ! जमायक अयदक वात सुनि बाबी झट उठि बैसैत अछि । घोती सँ नीक जकाँ देह-हाथ झाँपि लैत अछि, अँचर कने मुँहपर धीवि लैत अछि ! पंडीजी बड़ी काल घरि सभटा बात कहैत छथिन ! बाबी चुपचाप सुनैत अछि, देहो ने हिलैत छैक ! पंडीजी उठिक’ बाहर जाइत छथि आ बाबीक आर्तनाद घर-आंगनमे पसरि जाइत अछि—“साबी हे साबी ! कोना आब पहाड़ सन जिनगी कटतह हे साबी ...”

× × × × ×
जिनगी त’ कटिए जाइत छैक—एना वा ओना । हँसी-खुशीक समयक पयरमे बिहाड़ि रहैत छैक आ दुखक दिनक पयरमे वान्हल जाँत ! जाँत नहि, पहाड़ ! मदा ओही कटि जाइत छैक ! साबियो पीसीक दिन कट’ लागल छलनि जेना सभक कटैत छैक !

साबित्री नाम देने छलथिन बाप मुदा यमसँ स्वामीक जिनगी घुराक’ नहि आनि सकली ! सतीत्वमे, तपमे कोनो कमी नहि छलनि ! भरिसक बाबिएक बात ठीक छलैक ! कोनो जन्मक चुकलाहा छलनि । मनुबख लग एकर हिसाब-किताब ककरा भेटतैक ।

भोला मिसर (हमरपीसा) लग सेहो हिसाब-किताब नहि छलनि ! नहि बूझल छलनि जे एतेक जल्दी चल जयताह । भूमिहीन नहि छलाह ओ ! गरीबीमे गुजर कर’ जोगर, दू व्यक्तिक साग-भातक ओरिओन छलनि अपना घरमे ! सासुरसँ जखन-तखन किछु ने किछु आबिए जाइत छलनि । कोनो चिन्ता फिकिर नहि छलनि ! फेर सात टा सन्तान भेलनि ! पहिल दूनु बेटी-मंजुल आ संजुल ! तखन जौआ देटा शीत आ वसन्त ! फेर एकटा बेटा हेमन्त । छोटकी बेटी सुफला आ छोटका बेटा बहुरन ! बेस शिकस्त होम’ लगलनि । धीया-पुता अधिक काल मातृकेमे रह’ लगलनि !

अपने ओ बेशकारी छलाह आ कदकाठी सेहो छोट छीन ! मुदा प्रतिष्ठा खूब ! स्वाभिमानि आ दुखसह लोक ! चारिटा लोक दरबजापर अबिते छलनि, अपने बिन बजौने नहि जाइत छलाह कतहु’ ! सासुरो नहि ! ओना सासुरसँ अधिक काल बजाहटि अबिते रहैत छलनि !

हमरा पीसा खूब मोन छथि । मानितो खूब छलाह हमरा ! जतबा दिन सासुरमे रहथि, बड़का काकाक संग कहियो धार आ कहियो पोखरिमे वंशी अवरस खेलाथि ! बड़का ककाके रहनि घिरणीबला वंशी आ पीसाके हथलग्गी ! सेर-दू सेरक रहुके छोपि क' उपर फेकि दैत छलथिन पीसा ! बड़का कका जकाँ आधो सेरक रहुके पानिमे खेलबैत नहि छलथिन ! माछ पकड़'मे आ दौड़िक ओकरा अंगना पहुँचाब'मे हमरा बड़ मोन लगैत छल ।

पीसियो अधिक काल नैहरेमे रहैत छलीह ! हमरा खूब मानैत छलीह ! ओना सभ छोट नेनाके ओ बड़ मानैत छलथिन, आइयो मानैत छथिन ! ककरो कोराक नेना होइ, साबी पीसीक कोरामे द' दिओक आ निश्चिन्त भ' जाउ । तेल-कूड़ द' एना गरमा क' सुता देखिन जे भरि दिन लेल चिलकाक माय निश्चिन्त ! हमरा जाड़ मासमे अखनो दम फूल'वला बीमारी तंग करैत अछि ! गलामे निरन्तर कुचकुची ! ओकासी करैत करैत आंजर-पांजरमे दर्द एकदम बहिरा ओकासी ! कोनो दवाई, कोनो उपचार नहि सुनत ! दमा नहि, स्नोफीलिया नहि ! मात्र एलर्जी ! ठंडासँ एलर्जी ! एक बेर खूब पैघ भेलापर, तोहरी शुरू कयलाक बाद, अही ओकासीसँ छटपट करैत गाममे रही । साबी पीसी सेहो आयलि रहथि ! आंगनमे कोनो काज रहैक ! हमरा ओना कष्टसँ छटपटाइत देखलनि त' मायके दस हजार गंजन कयलथिन—“रहि गेलहुँ अहूँ बेतियाक बागड़ ! नेना एना ओकासीसँ जान द' रहल अछि आ अहाँ भड़ार-भंसामे बुधियारी देखा रहल छी !”

आ झट गाय घी, आ बाटीमे कड़ुतेल ल' एकटा मटकूरमे आगि पजारि ओहि पर गरम हैबा लेल हमर बिछौन लग राखि लगमे बैसि गेलीह ! जाड़ मास रहैक, तुराइ ओढ़ने रही ! तँयो ओकासी करैत करैत घामसँ तर-बतर रही ! ओही तुराइ तरमे हाथ पैसा-पैसा छातीसँ तरवा धरि तेहन मालिश आ ततेक काल धरि करैत रहलीह जे पते ने लागल जे कखन पपनी बन्द भेल आ कखन प्राप्त भेल ! पीसीक ममत्व भरल स्पर्शक उष्णतामे शक्ति कटि गेल !

पीसीक ई ममता सभ ठाम एक रंग नहि रहैत छनि ! ककरो ककरो पर गलती वा बिना गलती कयनो ओ अतिशय कठोर भ' सकैत छथि ! हमर माय खूब काजुलि आ बीध-व्यवहार वृक्ष' सूत्र'मे गाममे बेस नामी, दुखित-सुखितक

परिचर्यामे अद्वितीय आ धीयापुता लेल प्राणदेव'वाली मुदा पीसीक आर्गाँ ओ छल आ बकलेल बनि जाइत अछि । आंगन कयो कतबो नीक जकाँ नीपि दैक, पीसी अवस्से डँटथिन मायके—“जेहने अलूरि अपने छी, तेहने राड़िनो रखने छी !” आ झट अपने हाथे तेना नीपि बहार देखिन जे अंगना झकझका उठैक ! माय अपना मोन कुजरनी सभसँ नीक जकाँ मोल-मोलाइ क' बेचा द' क' तरकारी किनय, पीसी अवस्से डँटथिन—मुफतक भेटल अछि, खूब लुटबैत छी ! दोबर दैत, डेओढ़ेमे मानि गेलियैक !

साबी पीसीक बात पर मायके कहियो क्रोध नहि होइक । एकैटा ननदि, सेहो समययस्क । देयादनी के देखबे ने कयलक । ओकर विवाहसँ पूर्वे भूकम्पमे ठहैल मकानमे अपन जेठ बेटाक संग दबा गेलीह । विधुर भँसुर आ हुनक बेटा-बेटी । विधवा सासु आ हुनकर जेठ बहिन, दूटा स्वर्गीया नचदिक धीयापुता आ एकटा ननदि छोटकी ! साबी पीसी ! साबी पीसीक बात पर कहियो तमसाइत नहि देखलियैक मायके !

साबी पीसी मुदा मायके कोनो गलती वा असावधानी पर खूब फज्जति करैत छलथिन आ अन्तमे कहैत छलथिन—“कप्पार देखू अपन ! केहन दरिद्रक बेटी आ कत' राज करैत छी ! आ हमरा देखू ! ककर बेटी आ कोना रहैत छी...”

× × × × ×
साबी पीसी कोना रहैत छलीह—हम देखने छलियनि !

हुनकर बापक जिनगीमे नहि ! बाबा हमर जन्मसँ पूर्वे मरल छलाह ! कतेक दुलारू छलीह साबी पीसी बापक, से बाबी कहैत छलि ! हम देखने नहि छलियनि !

देखने छलियनि साबी पीसीके ! सभ दिन एक्के रंग ! सघना रहथि त' पाढ़िवाला साड़ी पहिरथि, रंगि क' ! विधवा भेलीह त' कोरा, छोटी पहिर' लसली ! ऊपर कोनो वस्त्र ने तहिया पहिरैत देखलियनि, ने आब देखैत छियनि ! ओढ़नामे सभ दिन एकटा सूती सलगा ! सूतबो काल ओकरे ओढ़ि लेथि ! जाड़-मरमी-बरखा-सभमे । जाधरि बाबी जीबैत छलि, बाबी-बड़की बाबीक संग उत्तरबरिया फूषक कोठलीमे कतहु माटि पर वा पटिया बिछा सूति रहैत छलीह । हाथमे सदखन एकटा बिअनि । नीचोमे अनवरत घुमैत—माय बेटी दुनूक हाथमे ।

माय-बेटीमे बस यह टा साम्य । और सभ किछु विपरीत । रूपरंग-स्वभाव कयुमे मेल नहि । बाबी जतबे शान्त, पीसी ततबे तमसाहि, बाबी जतबे कारी, पीसी जतबे गोरि । बाप पर गेल छलीह । स्वभावो हुनके सन छलनि । मुँह कान सेहो खूब निखरल । बादमे समय बितला पर आकृतिक झलकैत रंग आ निखरल मुँह-कान चाम धोकचला सँ रच्छ आ आकर्षणहीन भ' गेल छलनि ।

पीसी कोना रहैत छलीह-से हम हुनकर सासुरोमे जा क' देखि आयल रहियनि ! कोनो उपनयन रहनि आंगनमे ! माय नहि जा सकलि । हमरा पठा देलक ! हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही तहिया मुदा देह दशा सँ बेस चेतन सन लागी !

सप्तिया आंगन रहनि पीसीक । चारू कात चारूभाइक एक-एकटा फूसक घर । दू टा सहोदर आ दू टा पितयौत, एक्के आंगनमे । सभक घरमे दू टाक कोठली । टाटकेँ माटि सँ लेबल । चार पर खड़ । एकटा पर खरक बदला पुआर । तीनू कोनटामे तीनू गोटेक फूसेक छोटछीन भंसा घर । चारिम कोनटाबाटे दलान पर जयबाक रस्ता । ओही दुख्खा लग एकटा कटहरक आ एकटा लतामक गाछ । पीसीक घर दक्षिणवारी कात रहनि आ भंसा घर दक्षिणवारी-पछवारी कोनटा मे । दक्षिणवारी-पुवारी कोनटा बाटे दलानक रस्ता रहैक । सभसँ छोट भाइ रहथि पछवारी कात । हुनका भंसा घर नहि । अपन घरेक ओसारा पर भनसा होनि । हुनका दलानो ने रहनि । अपने घरक पछुआरमे जे ओसारा रहनि दू हाय चौड़ा आ दस हाय लम्बा । सँह दलान रहनि । बाकी तीनू भाइक दलान अंगनाक मुँहथरि सँ आगू, पोखरिक मोहार पर रहनि । सभ सँ पहिने पंडीजी, तखन पीसा आ तकर बाद समसँ जेठभाइ । सभक सिमान पर करचीक टाट आ एकटा क' कटहरक गाछ । पीसीक दलानपर एकटा फूसेक घर दक्षिणवारी कात सँ, माल जाल हेतु । एकटा गाय आ एकटा बाछी । पूब मुँहे दलान आ आगूमे बेश पैघ पोखरि । दक्षिणवारी पछवारी कोन पर दुर्गस्थान । पीसीक सासुर हमरा नीक लागल छल ।

ओहूँसँ नीक लागल छल ओइ आंगनक लोकसभ । चारू आंगनमे चारिटा पीसी, एकटा भाउजि, आ बहुत रास भाइ-बहिन । सभक स्नेहपूर्ण आत्मीय व्यवहारमे अतिशय अपनत्व । हम ओइ बेर बहुत दिनधरि रहि गेल रही पीसीक सासुरमे । ततेक दिनधरि जे गामक बहुत रास स्त्रीगण सभ हमरो सासुरक इन्तजाममे लागि गेल रहथि ।

ओइ उपनयनक आंगन मे एकटा सुन्दर सन छोड़ी सेहो आयल छल ! ओ जखन हमरा लगमे ठाढ़ होअय, कोनोने कोनो स्त्री बाजि उठथि—“खूब रुज छनि जोड़ी ! विवाह होइतनि त' बड़ नीक लगितनि !

पीसी ओना बहोर छथि मुदा इ बात श्रुति लैत छलथिन आ ओइ स्त्रीगण पर ललकि उठैत छलथिन—“दुर जाउ ! अहुँक मतिहरण भ' गेल अछि ! छोड़ी त' पैघे हेतैक वयसमे ! भोगार देह छैक ते' एना लगैत अछि ! फेर ककर बेटा-पोता छैक से विसरि गेल ! जहाँ तहाँ विवाह हेतैक !”

पीसी अपन नेहक गुमानमे किछुओ बाजि जाइत छलीह मुदा ओइ छोड़ी पर कोनो असरि नै होइत छलैक । एकान्त मे भेटितहि मुँह दूसिलैत छल—“इह ? सोख ने देखिअनु । हमरा संग विवाह हेतनि ।”

पीसीक सासुर सँ घुरल रही त' दुइये टा चीज मोन रहि गेल छल—शकशक करैत ओ बड़काटा साक्षो आंगन जकर बीचमे मड़बा बनल छलैक आ पीयरकी गोराइवाली छोड़ी, बड़की टा आखि आ पिपनीवाली ।

फेर बहुत रास समय बीति गेल छल, बहुत किछु मेटबैत-भसियबैत, बहुत किछु जोड़ैत ! पीसी, पीसीक आंगन आ ओ छोड़ी सब बहुत पाछाँ छूटि गेल छल !

बीस वर्षक बाद फेर पीसीक सासुर गेल रही ! असलमे गेल रहो सभागाछी ! पीसीक ओहिठाम नहि ठहरल रही ! सभे टोलमे दल्ली भाइक ओहिठाम ठहरल रही, हमर सभसँ पैघ पोसिऔत भाइ, बड़की पीसीक बेटा ! साबी पीसी सँ भेंट कर' मुसहरी टोल गेल रही !

आंगन जेना ओहिनाक ओहिना राखल छल— । सभ किछु यथावत । खाली बीच महक मड़बा निपत्ता ! पीसीक हिस्साक आंगन ओहिना शकशक करैत ! हमरा भेल जे अखने किम्हरोसँ ओ छोड़ी बहरायत आ कहैत—“इह ! सोखने देखू ! हमरासँ विवाह करताह ! नेपाली बोको नहिन !

हमर गोर रंग, मोट नाक आ मजबूत काठी द्वारे ओ नाम राखि लेने छल—नेपाली बोको । हमहूँ मौका नहि छोड़ैत छलियैक । श्रुत कहैत छलियैक—“ककर आफत आयल छैक जे बिढ़नीसँ विवाह करत ! सेहो ललका नहि, पिअरका बिढ़नी ! एहन क' बीन्हि लेतैक जे भरि जिन्दगी छुटपटायत । हम त' काब पकड़ैत छी ।

ओ लजा जाइत छल ! हमना ओ नेपाली बोको कहि दैत छल त' हमरा तामस नहि होइत छल । हम कहैत छलियैक बिदुनी त' ओ लजा जाइत छल, नहि जानि कियैक ! जहिया पीसीक सासुरसँ विदा भेल रही, भोरेसँ गुमसुम छल, जाइत काल हम टोकबो कयलियैक— “जाइ छी बिदुनी ?” तैयो किछु नहि बाजलि ! आँखि मुँह फुलल सन रहैक ।

आइ बीस वर्षक बाद पीसीक आंगनमे ओ कंत' सँ आओत ? एतेक पैघ घरती पर कोनो गाममे अपन स्वामी, अपन परिवारक संग भगन हैत ! पीसीक आंगनमे पथर दितहि जेना कोनो सुखायल घावक खँठी नोचा क' बल्ल द' बहरायल— “आउ नेपाली बोको !” हम अकचकाक' चारू कात ताक' लगैत छी ! ताबत भनसा घरवला कोनटासँ पीसी बहराइत छथि आ हुनका पाछाँ पाछाँ घीया पुताक झुण्ड ! गोर लगैत छिअनि त' पीसी सभके आदेश दैत छथि । — “गोर लगहुन, बड़का काका छथुन !

जेना जेना बेरा बेरी गोर लगैत अछि, पीसी परिचय देने जाइत छथि— ई छीतक बेटा विनय, ई बेटी ! ई दूनु बेटी बसन्तक आ ई बेटा ! ई सुफलाक बेटा किसुनजी !” आ फेर कोरा महक छोड़ी के देखबैत कहैत छथि— “आ ई हेमनूक बेटी !”

पीसी पहिनेसँ स्वस्थ बुझाइत छथि ! पछिला बेर गाममे देखने रहियनि त' मरणासन्न रहथि, पेटक दर्दसँ अपसर्थात । लहेरियासराय जा अपन संगी बिनोदसँ देखा आपरेशनक व्यवस्था करा देने रहियनि । आपरेशनक दिन हमरा पटनासँ लहेरियासराय अस्पताल पहुँचबामे देरी भेल छल ! ताबत आपरेशन भ' गेल रहनि मुदा पीसी बेहोश रहथि ! विनोद कहलक जे चिन्ताक प्रयोजन नहि, आपरेनन ठीके भेल छनि ! बड़का गोला छलनि पेटमे !

ओइसँ पैघ गोला माइक पेटमे हड़कम्प मचौने छलैक ! अवसर भेटितहि कहलक— “देखहु आओ पीसीक काम ! कष्ट कटैत छथुन, पेटमे गेरूआ बान्हिक' सूति रहैत छथुन, आ देखहु ई गेरूआ ! एहिमे पाँच सय टाका नुकाक' रखने छथुन ! आपरेशन लेल ल' जाय लगलीहु त' ई गेरूआ हमरा दैत कहलनि— “अइमे टाका अछि ! दवाइ-दारू लेल काज होअय त' अही मे सँ निकालि लेब !” मायक ठोर पर करूणा मिश्रित हँसी छलैक आ आँखिमे नोर !

दोसर दिन होश भेला पर माय हँसी कयलकनि— “दुर जाउ छोटकी दा ! अपने ओतेक घिसरी कटैत छलहु” एतेक दिन घरि, दवाइतक नहि कयलहु कोनो ! आ गेरूआमे नुकाक' टाका रखने छलहु ! कोन दिन लेल आ ककरा लेल ?”

ओहनो स्थितिमे पीसी डाँटि देलथिन मायके— “अपना लेल आ अही दिन लेल ! ल' क' आयल छी तोड़ा, करब सबटा खर्च-बर्च ! बेटो सब हाथ डोलबिते आयल छथि । माय कोनो उत्तर नहि द' सकलनि ! हमरा दिस तकलक, हमहुँ अगल-बगल देख' लगलहु ! मोनमे एकटा लज्जित अपराध-भाव छल !

पीसी ओहिना बजैत रहलीह— ककरो एक पाइ नहि जनैत छी हम ! भाइ छलहु त' कहियो ने बुझायल जे बाप नहि छथि । आब ओ नहि छथि त' लगिते नहि अछि जे हमरो क्यो नैहरमे अछि । आमो—आंठी पठायवने मोन रहैत अछि, त' टाका रैसा की पठायब अहाँ लोकनि । अपन बेटो सभक किछु नहि जनैत छियनि हम ! ई सभटा कारी बाबूक कृपा, हमर धर्मक बेटा ! दुखिया मौसी लेल मासे मास टाका पठबैत छथि, धोती कपड़ा द' जाइत छथि सभ वर्ष !

उत्तेजनमे पीसी आर किछु बजितथि मुदा हम रोकि देलियनि जे लगले आपरेशन भेल अछि, बेसी नहि बाजू । हुनकर बातक जबाब ककरो लग नहि छलैक ! सभ गुमसुम ठाढ़ छल हुनकर बिछौन लग ।

साबी पीसी अखनो अबैत रहैत छथि अपन नैहर ! दादा जिवैत छलाह तहियो आ आबो अबैत छथि ! पहिने, दादाक जिनगीमे बजाहटि पर आ अपनो मोनसँ अबैत छलीहु, आब बिन बजौने अबैत छथि । बजाहटि कोनो विवाह-दान, मुड़न, उपनयन भेले पर होइत छनि । दादाक जिनगीमे बसन्त हेमनू-बहुरन-सभ अही गामक स्कूलमे पढ़ि क' मैट्रिक कयलनि ! आइ० कम आ बी० कम बसन्त गामे सँ मधुबनी जा क' पढ़लनि ! शीत नहि पढ़ि सकलाह । हुनको स्त्री छनि, दू टा बच्चा छनि ! बसन्त नीक रिजल्टक बादो नीक नोकरी नहि पाबि सकलाह, नवानीक संस्कृत स्कूलमे शिक्षक छथि ! छओ मास पर दरमाहा भेटैत छनि ! हेमनू हजारीबाग खानमे काज करैत छथि आ बहुरन बेकार ! सभक स्त्री, घीया पुता सोराठे रहैत छनि । पीसीक जोरो देलापर कोनो बेटा मातृक जाय लेल तैयार नहि होइत छनि आब !

साबी पीसीके मुदा नैहरक गुमान आइयो छनि ! हमरालोकनि अपनेमे अपरयात रहैत छी, पीसीक मुछ-दुखसँ अज्ञात, निरपेक्ष ! काज तिहारमे पीसीके बजा कर्त्तव्य मुक्त होइत छी ! मुदा पीसीक मोनमे उलहन-उपराग नहि छनि । अस्पतालक बिछीनपर बाजि गेलीह पीसी बहुत किछु, मुदा हुनका आइयो अपन नैहर आ ओतुक्का लोकसँ सिनेह छनि ! ओइ ठाम अपन मान अपमानक विचार नहि करैत छथि पीसी ! समाद गेलनि कि चल अबैत छथि ! आ पीसीक अबैत देती सभ धीयापुता प्रसन्न भ' उठैत अछि ! पीसी सभकेँ खूब खिस्सा कहैत छथिन ! ओ सभ खिस्सा जे कहियो बाबी हमरा कहने छल—प्रह्लाद बाबाक खिस्सा, दुबरियाक खिस्सा आ मनियरवा दैत्यक खिस्सा । सभ नेन्नाकेँ पीसी बड़ नीक लगैत छथिन-एकदम अपने बाबी-नानी सन !

पीसीक आंगनमे हुनकर ओही दक्षिनवरिया घरक ओसारा पर राखल चौकीपर बैसल बैसल हमरा अनायास ई बात सभ मोन पडैत अछि ! पीसी लगमे बैसल बिअनि होकैत छथि, धीयापुता घेरने अछि !

तखने माथपर छिट्टा लेने बसन्त अबैत छथि अंगना आ हुनके पाछाँ बहुरन । बसन्त दिस तकैत पीसी अपने बड़बड़ाय लगैत छथि जेना हमरा सुना रहल हाथि—

—“जखन गाम ओता एहिना खटैताह बड़द जकाँ । कर्म देखियोन केहन लुहलुहार छनि ! एतेक पढ़ि लिखिक' वैह संस्कृत स्कूलमे मास्टरी करैत छथि आ बहिन ओत' पेट पोसैत छथि ! आ कनिया एकदम प्रचण्ड ! सभटा लुटबैत रहतिनि ! सभक उधार खा लेतिनि-तरकारी बाली, दूधवाला, दोकानवाला-सभक उधार ! हम टोकबैक त' हमरे गरिओत-भारत पीटत ।

बसन्त स्थिति बेसम्हार होइत देखि असहाय भाव सँ माय दिस तकै छथि ! बहुरन डटैत छथिन—“चुप्पे रहै ने माय !”

भरिसक पीसी नहि सुनैत छथिन ! हुनकर बाजब जारी रहैत छनि—
—“ओ त' छथिहे तेहने गामक मुदा ई जे छथि सोतिआइन, शीतक कनिया, सेहो कनियो उन्नैस नहि । आयलि रहथि त' केहन शान्त सुशील रहथि मुदा आब

नहि ! मुदा कथीपर ! बर बेकार, दूटा पैघ धीया-पुता ! कत'सँ ओत' अ-
वस्थ ! हम छियैक त' कहना अपने गुदरियो पहिनि एबरा सभकेँ देह आपि दैत
छियैक ! मुदा हमही दुस्मन ! लोक सभ सिखा दैत छैक !”

एतबा कहि पीसी पुबरिया घर दिस ताक' लगैत छथि । बिल्ली पीसीक घर । ओत' बिल्ली पीसी बैसलि छथि ! हमरा आश्चर्य होइत अछि जे हमरा देखियो क' ओ इम्हर कियैक ने अबैत छथि ! कोनो घरसँ क्यो नहि आयल छथि जेना हम एकदम अनचोन्हार भ' गेल होइ । हमरा बिल्ली पीसीक ओसारा दिस तकैत देखि साबी पीसी बाज' लगैत छथि—“सुफलाक गर्दनि काटि देलथिन पंडीजी ! तेहन ठाम बिआहि देलथिन जे सभटा जमीन कोशीक काटमे चल गेलैक । वेटाकेँ एत' द' गेल ! कहना पढ़बैत छियैक ! सुफलाक अपनो मोव खराब रहैत छैक, मुदा के रखतैक ? अबैत अछि त' सभटा हम अपने करैत छी, तँयो सभकेँ अखरैत छनि । किमुनजी सभक लेल खटैत छनि, ओकरो अन्नपानि अखरैत छनि सभकेँ ! सभ भिन्न भ' गेल छथि । होइ जायु ! छनिहे की जे बेटाह ! एकटा हेमनू पठबैत छलाह सभकेँ ! भाइयो सभकेँ आ धीयो-पुताकेँ दैत छलाह ! कनियां छलथिन त' कारी, मुदा बड़ लूरिमरि ! शुरुमे रहबो कयलीह बीक जकाँ ! आब हुनको बरक कमाइक गुमान भेल छनि ! आब मनीआर्डर हमरा नाम नहि अबैत अछि—बहुक नाम अबैत छनि !”

पीसी एकदिसाहे बजने जा रहल छलीह ! अनकर बात ओ सुनबे ने करैत छथिन जल्दी ! हुनका चुप्प नहि होइत देखि बसन्त इशारा कयलथिन ! तँयो पीसी चुप नहि भेलथिन ! बहुरन जोरसँ डटैलथिन—“बन्द कर ई चर्खा आब ।”

की कहलथिन बहुरन, से पीसी नहि बुझलथिन मुदा हुनका बजैत देखि ओम्हरे पलटि गेलथिन—“आ ई बहुरनकेँ देखू ! भाइ मैट्रिक करा देलथिन मुदा कोनो काजक नहि । गाम मे घेर घर सभ ट्यूशन मढ़बा लेतैक आ फेर पाइ लेल दौड़बैत रहतैक ! ताहिपर देह बिमरियाह भ' गेलैक ! तँयो कोदारिल' खेत पहुँचि जायत । बड़का बोझ उठा लेत माथपर ! कनिया छेक, परिवार हेतैक... एकर कोनो जोगार करियौक — —”

हम कह' चाहैत छथिन जे ठीक छै, चेष्टा करबनि ! मुदा बोल नहि फुटैत अछि जेना बकशर लागि गेल हो ! ई हमरा बैसाक' कोन खिस्सा पसारि लेलनि पीसी ! कनिया लोकनिकी सोचैत हैतीह !

पीसी भरिसक हमर मोनक भाव वृद्धि जाइत छथि आ फेर कह' लगैत छथि—'वनियो बिचार छैक एकरा सभके' ? बहुक संग इहो निलंज्जा सभ बाज' लागत जे हम की जाने' गेलियो तोहर बाप आ भाइके' ! ककरो किछु ने जनैत छियो ...

आब हमरा डर होम' लगैत अछि जे कोनो काण्ड भ' जयतैक अंगनामे ! पीसीके हाथक इशारासे बुझबैत बिल्ली पीसीक ओसारापर जा गोड़ लगैत छियनि, त' ओ कहैत छथि—खूब शिकाइत कहने हेथुन साबी हमर ! हमही हुनकर सभ पुतहुके दूर करैत छियनि ! हम हुनका लेल अलूरि आ अपरोजक छी ! ओ रहथु काजुलि आ होशियारि, मुदा हम त' अपन बेटा-पुतहुक मुँइ घ' क' रहैत छी ! जैनसँ रहैत छी ! ते ओ नहि करतीह । तखन कलह होइत छनि, त' दोष हमरा माथ दैत छथि ।'

किछु काल ओत' बैसि क' हम फेर दक्षिणवरिया ओसारापर चल अबैत छी ! पीसी लग आबि बिअनि होँक' लगैत छथि—'अभ्यास रहय एतेक गर्मीक तखन ने ! सभदिन त' पंखे तर रहलहु' ! तौहू आवह ही विमुन जी ! पंखा होँकि दहुन । अइ छोटकी बिअनिसँ की हैतनि ! अहाँ पड़ि रहू नीक जकाँ ।

हम चुपचाप बिछीना पर पड़ि रहैत छी । पंखा आ बिअनिक दुतरफी हवा नीक लगैत अछि । आँखि मूनि लैत छी ।

पीसी हमर कान लग बड़ करुण स्वरमे बाज' लगैत छथि—'हमर जिनगी त' कटि गेल बाड ! कोनासे हमही जनैत छी ! मुदा सभ दिन इज्जतिसँ रहलहु' । ककरो आङन नहि गेलहु' कहियो, ककरो लग हाथ नै पसारलहु' ! बेटी तीनू ठाम लागि गेलि—नीककी बेजाय ! बेटा सभ पैघ भेल छथि, दू टा कमाइतो-खटाइत छथि मुदा जेना छिछिपैनी पैसि गलि होअय ! कुजरीनी कवारनीसँ बत्तर जिनगी भ' गेल अछि ! बात-वातमे गारि-मारि ! बीच अङनामे ओँघरा दैत, कपार फोड़ि दैत । सभके' होइत छैक जे हम की की ने रखने छी ! मुँह सीबि क' रहैत छी !

पीसीक मुँह सीबि क' रहबाक गप्प पर हमरा हँसी लागि जाइत अछि आ आँखि खुजि जाइत अछि ! बसन्त पीसीके टोकैत छथिन—यैह रामायण पसारने रहबै, कि किछु खायो-पीब' लेल देबहुन !

पीसी घड़फड़ा क' उठैत छथि ! अपन कोठनीसँ फुलही थारी बाँटे, पापड़, तिनीडी आ की की सभ निकालैत छथि आ सभ लेने भनसा घर चल जाइत छथि ! हम वृद्धि जइत छी जे पीसी भंसा घरमे हमरा लेल सचाइ लगातीह आ अपन चारू पुतहुके डँटतीह—अहाँ सभ की जाने गेलियैक ई सभ ! कहियो आँखि देखने रही तखन ने ।'

हम पड़ल-पड़ल पीसीक बारेमे सोच' लगलहुँ जे मनुखक स्वभाव केहन विचित्र होइत छैक । जकरा सभक लेल ओ भरि जिनगी अपस्यांत रहलीह आ छथि, तकरा एकटा नीक बोल कहब हुनका नहि पार लगैत छनि आ ओ सभ हुनके अपन दुश्मन वृद्धि रहल छनि । आइओ सभ बेटा लेल, ओकर स्त्री आ धीयापूता लेल एक एकटा पाइ, एक-एकटा अन्न जोगबैत छथि मुदा बदलामे मारि-गारि भेटैत छनि ।

हमरा अपन नेनपनक बात मोन पड़ैत अछि जहिवा हमरा लगैत छल जे साबी पीसीके सभ बड़ मानैत छनि ! आइ लगैत अछि जे क्यो ने मानैत छनि हुनका ! अइ संसारमे, अपन समस्त परिवारक बीच रहितो अपन चिन्ता आ अपन चेष्टामे नितान्त एकाकी छथि साबी पीसी ! हुनका क्यो ने मानलकनि कहियो ! भगवानो नहि ।

× × × × ×

पीसीक चिट्ठी डेरामे मनोरंजनक वस्तु बनि जाइत अछि पढ़िने हमरा नै बुझाइत अछि जे ककर चिट्ठी थिकै । दादाक फोटो पर ध्यान जाइत अछि आ अन्हार फाटि जाइत अछि । हम ओ चिट्ठी जे अखन धरि पहेली बनल छल, धड़, घड़ पढ़' लगैत छी—

'आगाँ समाचार जे आब अहाँ बहुरनपर ध्यान नहि देबनि त' ओ बताह भ' जयताह ! दुनू सांझ भाँग पीबि बमकल रहैत छथि । द्यूशनो छोड़ने छथि, ते त' बस कयने छथि । अखन पाइए नहि दैतनि त' पढ़ीलासँ कोन लाभ ?

वसन्त हेमनू अपनठाम घयने छथि ! खाली शीतक चिन्ता छल जे हमर बाद हिनका के देखतनि । ने पड़ल-लिखल छथि ने कोनो आन लूरिए छनि ! खासी गाममे बेसस पतिया लिखैत छथि । कहियो काल पाँच टा सुपारी आ पाँच आना पाइ भेटि जाइत छनि, ताहिसँ कोना गुजर हैतनि ? स्त्री धीया-पुता छनि ! हुनके लेल सोचि क' बताहि भेल रहैत छी । ऊपरसँ गाममे पढ़ि-लिखि क'

वे सर बैसल बहुरन लगैत अछि जेना माथ फाटि जायत । ओना अहाँ कहब जे हुनरा कोन गर्ज अछि, सभ फराक भेल अछि हमरासँ, बहुरन सेहो ! अन्न बाँटि लेत, एक्के मासमे खा लेत आ फेर धरना देत माइक दिस ! जेना मायक बापक जमींदारी उठि क' आव अही गाममे आबि गेल होइ ! तैय उपास कोना रह' देखैक कहियो । जहिया क्योने छल, सभ भाइ अबोध छल, तहियो उपास नहि पड़' देखियैक कहियो !

आब हम थाकि गेल छी ! अहींक आस अछि । पैष हाकिम छी । शीत पड़ल-लिखल नहि छथि, हुनका भगवान देखथिन । अहाँ बहुरन कोनो उपाय करियनु !”

हम पीसीक आस पूर नहि क' पबैत छियनि ! आरो बहुरास पत्र अबैत अछि । बहुरनोक चिट्ठी आब' लगैत अछि, हमरा बुते उत्तरो देल पार नहि लगैत अछि ! खिसिया क' बहुरन लिखैत छथि—“ई हमर अन्तिम चिट्ठी अछि ! आव फेर नहि कहियो कष्ट देव अहाँकेँ ।”

बहुरन चिट्ठी लिखब छोड़ि दैत छथि मुदा पीसीक चिट्ठी अबैत रहैत अछि । हमरा बुते एक्को बेर जबाबो देब संभव नहि होइत अछि ! व्यस्तता हरदम घेरने रहैत अछि । फेर एकटा दोसरे रंगक पत्र अबैत अछि—“चि० हड़बड़ केँ श्रीमतीक तरफसँ आशीर्वाद ! आगाँ समाचार जे यदि आव अहाँ ध्यान नहि देब त' हम अहींक डेरापर आबि क' बैसि रहब ! एत' हमरा सभ सदिखन गेंद जकाँ गुड़कबैत रहैत अछि, कान-कपार फोड़ैत रहैत अछि ! सभ त' शुरू कयनहि छल, आव बहुरन अगुआ भेल अछि । भांग पीबि बेमत्त भेल रहैत अछि । आव सहाज नहि होइत अछि ! आबि क' हमर निसाफ करू वा हमरा संग ल' चलू !”

हमरा बुते धुनूमे किछुओ पार नहि लगैत अछि । ने पीसी अपन धमकीपर अमल करैत छथि । हमर डेरा पर नहि अबैत छथि ! हमरा बूझल छल जे पीसी गाम छोड़ि कतहु नै जयतीह ! हुनकर प्राण ओही घर आंगनमे बसै छनि ।

दोसरे मास हुनकर फेर वैह पुरने ढंगक चिट्ठी अबैत अछि—“जल्दीसँ जल्दी बहुरनक कोनो व्यवस्था करियनु ।”

× × × ×
मनुक्खक सक्क कोन व्यवस्था छैक ? सभटा व्यवस्था त' कयल रहैत छैक । दिन-अध पल ! कनियो हेरफेर नहि होइत छैक ! बड़का काका चल गेलाह—अरुस्मात ! हमरालोकनि सभ क्यो गाम पहुँचल रही !

साबी पीसी सेहो आयल रहथि ! आव पाँच भाइ-बहिनमे एकसरि बाँटि छथि—हुनका देखि क' ई बात बड़ टीस देने छल ! काजक हूलिमालि खतम भेला पर एक दिन वसन्तकेँ डँटलियनि—“तोरालोकनिकेँ अप्पग इज्जतिक कनिओ ध्यान नहि छ' ! एना सभ क्यो मिलि क' पीसीकेँ मारैत छहुन, पटना घरि चिट्ठी लिखैत रहैत छथि !”

वसन्तक आकृति पर एकटा दयनीय भाव एसरि जाइत छनि—“बुद्धिये बराब भ' गेल छैक ! हमरालोकनि मारबैक ओकरा ?

वसन्तक बात गोविन्द काका बीचमे लोक लेत छथिन—“कोन नव बात करब अहाँ ? अहाँ ओइठाम त' ई रिवाज एक खादी ऊपरसँ आबि रहल अछि !

वसन्त लजायल सन हँसैत छथि—अपन मामक पितृश्रौतक बातक प्रतिवाद नहि करैत छथि ! हमहू बेगी नहि कहैत छियनि !”

फेर बहुत रास समय बीति जाइत अछि । ममयक ओइ बाढ़िमे पीसीक अस्तित्व मर्यादा विलीन नहि होइत अछि ! कहियो काल पत्र अबैत अछि । हमर मोनमे एकटा अपराध-भाव जकड़ल जाइत अछि !

ई भाव गाम गेला पर आर गहींर धँसि जाइत अछि ! अपन भतीजी दीपाक विवाहमे गाम जाइत छी । माय एकसरमे कहैत अछि—“कने सरपटकेँ कहनु ! आर ककरो साहसे नहि होइत छैक । हम कहि क' हारि गेलियनि, नहि मानैत छथि ! एक्के टा पीसी बाँचल छथुन ! एहनो अवसपर आशीर्वाद लेल नहि बजबैत जेबहुन, त' अनुचित हेतह !

हम मायकेँ कोनो आश्वासन नहि दैत छियैक । सरपट भाइसँ कहबाक सेहो अवसर नहि भेटल ! हम स्वयम् विवाहसँ एक दिन पहिने कार्यवश पटना चल अयलहुँ । सभटा काज नीक जकाँ सम्पन्न भेलैक । एहिना चलेत छैक सभटा ! ककरो लेल किछु नहि रुकैत छैक ! जहिया दादा छलाह, लगैत छल जे बिना हुनकेँ किछुओ नै चलत । आइ दस वर्षसँ ओ नहि छथि, बड़का काका सेहो नहि रहलाह । सभ किछु चलि रहल अछि । मनुक्खक सबसँ पैष ताकति आ कम-जोरी । ओकरा सभटा स्मरण रहैत छैक आ किछुओ स्मरण नहि रहैत छैक ।

साबी पीसीक नाम सेहो कटि गेलनि आब ! पावनि-तिहारमे हुनका बजेबाक कर्तव्यसे सेहो मुक्त क' गेलहुँ हब सभ अपनाकेँ ।

सदाक लेल मुक्ति देवाक वाट स्वयम् पीसी देखा दैत छथि—“कहियो किछु मगेलहुँ नहि बाउ मुदा आब नहि सहल होइत अछि ! बूढ़ि भेलहुँ आ बूढ़क लेल जड़काला बड़काकाल । सेहो एहि बेरका जाड़ । हड्डी-हड्डीकेँ छेदैत रहैत अछि ! एकटा मोटगर कम्बल पठबा दिय' त' जाड़ खेपि जायब ! नै त' अही जाड़मे पीसी समाप्त.....!”

दू वर्ष पूर्व एहने चिट्ठी बड़का काकाक आयल छल । पैघ पिस्ती, आचार्य गुह ! विद्वान, संयमी । जिनगीमे कहियो किछु नै मँगलनि ! गाम जाइत छलहुँ त' आशीर्वाद द' कहैत छलाह—“किताब-मँगजीन अनने छ' ने खूब ।” सभटा किताब आ पत्रिका उठा क' ल' जाइत छलाह आ फेर किछु काल बाद एकटा पोथी नेने अबैत छलाह—“लेह, ई पढ़' ! गोविन्दसे मांगि क' अनने छी !

काकाक आदर आ स्नेहवश पढ़ल रहलो पर ओ पोथी हम राखि लैत छलहुँ । हुनकर एकबेर चिट्ठी आयल—“आइ हम सत्तहत्तरि वर्षक भ' गेलहुँ । हमरा दिससे अहाँ लोकनि मधुर खा लेब ! हमर कोनो ठेकान नहि । ई जाड़ खेपब वा नहि ! बूढ़क लेल जाड़ काल ! अइ बेर पुरना तुराइसँ काज नहि चलत ! सुविधा होअय त' एकटा मोटगर कम्बल पठायब !”

कम्बल पठबा देलियनि ! बड़का काका जाड़ त' खेपि गोलाह मुदा वर्ष नहि ।

आ आइ पीसी सेहो कम्बल द' लिखने छथि ! इच्छा होइत अछि जे कम्बल पठबा दियनि । लगले डर होइत अछि जे बड़के काका जकाँ पीसी सेहो वर्ष नहि खेपि सकतीह ! दोसर मोन कहैत अछि जे नीके हेतनि ! आब साबी पीसीक एकालाप समाप्त क' देवाक चाही । बहुत दिन धरि ओ एक एकसरि चललीह, एक बाट पर ! ओ कहियो ने सुनलथिन ककरो मुदा सोचलथिन सभ दिन अनके लेल ! आइयो ओ अनके लेल सोचैत छथि, जिवैत छथि मुदा आब हुनकर क्यो ने सुनैत छनि ! ई एकालाप समाप्त करवाक हमरा अवसर भेटल अछि !

अवसर हम च्कि जाइत छी ! कम्बल पठायब पार नहि लगैत अछि ! आन-आन खर्च सामने आवि जाइत अछि ! सोचैत छी जे अगिला वर्ष पठबा देबनि, ई जाड़ कहना खेपि जयतीह ! वर्षक वर्ष एकटा सूती सलगा पर खेपने छथि ।

एकालाप

पीसीक एकालाप समाप्त नहि भेल छनि । आब हुनका क्यो ने मानैत छनि, तँयो ओ जीवैत छथि ! आब अपना चिलकाकेँ सँझखन तेलकुड़ द' क्यो ने जरैत दीप देखा कहैत छैक—“माय मासु, साबी पीसी, देखनाहरि सुननाहरि....”

सुनै छी, ऐ बेर धीया-पूता सभ किछु बेसिये मारि मारलथिन आ पीसी एसि क' दोसर अंगनामे छथि !

तँयो साबी पीसी जीवैत छथि ! फेर हुनकर एकटा पोस्टकार्ड आओत ! डेरा मे मनोरंजनक साधन बनत ! पीसीक लेल हमरालोकनि किछु सहानुभूतिपूर्ण चर्चा क' अपन सहृदयताक भ्रम पोखब आ फेर सभटा बिसरि अपन-अपन दुनियामे व्यस्त भ जायब ! ●

सितम्बर १९६३

एकालाप

इन्द्रधनुष

मायक बात पर विश्वास नहि करबाक कोनो कारण नहि छल । तैयो बेर-बेर लागि रहल छल जेना किछुओ सत्य नहि होइ.....

अकस्मात् गाम आवि गेल रही । कोनो पूर्व निर्धारित कार्यक्रम नहि छल । जखने मुँह-हाथ घी क' चाह पीबि दलान पर आवि क' बसलहुँ त माय कहलक —भने आवि गेलाह । गाममे बड़का उधवा उठल छैक । तोरालोकनि क्यो गाम पर नहि, बड़ डेरायल रही हम !

मायक गप्प खतम हैबासँ पूर्वहि नहि जानि किम्हरसँ अनिल दलान पर आवि गेल—“डर कोन बातक काकी ? हमरा लोकनि त' छीहे गाममे । सभ तैयारी भ' गेल छैक । एहि बेर जहिना आओत, तहिना निपटि लेबा लेल तैयार छियैक हमरा लोकनि ।”

हमरा सभटा गप्प विचित्रे लागि रहल छल ! कोन तैयारीक गप्प करैत अछि अनिल ? मायकेँ कथीक डर छैक ? आइ दस वर्षसँ ऊपर भेलनि बाबूजीक मुइना, तहियेसँ लगभग सभ भाइ हमरा लोकनि बाहरे रहैत छी, पावनिये-तिहारे गाम अबैत छी । पहिने कोनोने कोसो बहिन अपन घीया-पुताक संग माय लग रहैत छलीह, आब सेहो नहि । माय एकदम्भ एकसरि रहैत अछि, मुदा कहियो कोनो भयक गप्प नहि कयने छल । आइ एकरा भ' की गेल छैक ? एबा किदैक आतंकित अछि आइ ?

अनिल मुदा खूब उत्साहमे छल—“अहाँ कोनो फिकिर नहि करू भैया । सभ इन्तजाम छैक ? बस तक आवि गेल छैक ।”

हम स्तम्भित रहि गेलहुँ ?

एहि गाममे लाठियो ककरो ककरो घरमे भेटैत छैक । एकटा साँप बहरा जाइत छैक त' ओकरा मारबा लेल लाठी आ सट्टय ताक' लोक अंगने-अंगने

दीडैत अछि । एहि गाममे बम कत' सँ अयलैक आ कियैक अयलैक ? माय सत्ते कहने छल —गाम एकदम्भ बदलल छह'.....विश्वसे ने हेतह जे बेह सभ लोक अछि ।

एहि गामक लोककेँ हम खूब चिन्हैत छियैक । ओहो सभ हमरा चिन्हैत अछि । छओ मास-वर्ष दिन पर गाम अबैत छी, मुदा बुझाइत नहि अछि जे गाममे नहि रहैत छी ।

जाही टोल बाटे बहराइत छी, क्यो आगाँसँ घेरि लैत अछि—“परनाम मालिक, हमरा नहि चिन्हली ?”

हमरा हँसी लागि जाइत अछि—“तोरा कोना चिन्हबी रे ठुण्डा ? कहियो जामुन तोड़ि क' खबैत छँ आब जे चिन्हबी ?”

हकरा गदगद होइत बाजत—“एह मालिक । अहाँकेँ कुच्छो ने बिसरै हय । ओ जमुनी आब अहाँकेँ निम्नन लागत ?”

हमरा सभ नीक लगैत अछि । दुसधटोलीक हकरा आ खतबेटोलीक हजरो । धनुखटोलीक ठिठरा आ मुसहरटोलीक गेनमा सेहो ! मुसलमान टोलक अजीज जखने देखत, एक हाथ झुकि जायत—“आदाब हजूर !”

—“अरे अज्जो मियाँ आप ? कैसे हैं ?” अजीज ओहिना झुकले कहत—“सभ अहाँकेँ किरपा हय हजूर !

‘मालिक-हजूर’ एकरा सभकेँ ठोर पर बसल छैक ! पहलमान रघुनाथो देखत त' झुकि जायत—“गोर नगै छी मालिक ?” आ झट चोल करत—“अहाँ त' दिन-दिन भिसिण्डे भेल जाइ छी मालिक ! कोन चक्कीक पोसल आंटा खाइ छियै !”

हमहुँ हँसि क' कहैत छियैक—“तोरे पछाड़बाक तैयारीमे छीओक ! अइबेर आवि जो अखाड़ामे फेर !”

रघुनाथ कने नाटकीय मुद्रासँ कहत—“जाउ जाउ, मालिक ! फोंक देह हय अहाँक ! अइ अखाड़ामे पोसल देहसँ अहाँ भिड़ब ?”

हम हँसी करवैक :—“आ जहिया अखाड़ामे चारू नाल चित्त क' देने रहियोक, तहिया ई पोसुआ देह कन' गेल रही ?” रघुनाथ लजायल हँसी हँसत—“ओत' मालिक अनचोकामे पटकि देली—ओकर मोजर नहि होत ।”

हम शट कहवै—‘त’ आवि जो, लड़ि ले अइ बेर...’

आ माय कहैत अछि—गाम उनटल रह ! अनिल कहैत अछि—सभ तैयारी छैक भैया ! अहाँ कोनो चिन्ता नहि करू !

हमरा तकर चिन्ता नहि अछि ! खाली विश्वास ने होइत अछि जे अहूँ गाममे एना भ’ सकैत छैक ? पछिली बेर त’ गेल रहौ खतबे टोली दिस ! बाटे पर बिशनपुरवाली बैसल छल । बूढ़ि झुरखुट । डाँड़मे एकटा मैल चिक्कट कपड़ा लपेटल आ कारी चाम सिकुड़ि-सिकुड़ि क’ धारीदार बनल । आँखिमे इजोत कम । गाय-महीसकेँ गाछीमे छोड़ि बाट पर बैसल छल । लगमे जा कहलियैक—‘तौँ जीबिते छे’ ने नट्टिन बुढ़िया !”

बिशनपुरवाली अकचकायल । फेरसँ अकानलक आ आह्लादसँ बाजलि—
“अहाँ हती बौआ ! अइ गरीबनी बुढ़ियाकेँ अखनियो कोना चीन्हि गेली ?

हम ओकर आकृति पर पसरल हीनताकेँ हट्यवा लेल हँसी कयलियैक—
“तोरा कोना नै चिन्हिबौ ने नट्टिन बुढ़िया ! सभ साल कटनीमे हमरा ठकि लैत छले ! अपने एकटा छोटकी आँटी बन्हैत छले आ अपन जुअनकी पुतोहुकेँ आँटीक बदला बड़का बोझ बन्हवा दैत छलहिक !”

बिशनपुरवालीक आकृति पर चिर-परिचित दुष्ट हँसी पसरि गेल छलैक—
“सत्त बात कहू मालिक ! बुढ़िया बन्हैत बड़की आँटी, त’ दितियैक एक्को अहला बेसी ! आ जुअनकीकेँ कोना छोड़ि दै छलियै आधा आ बोनियोमे कोना ओकरेबला बड़का बोझ छोड़ि दै छलियै ? इहो बुढ़िया दुनियाँ देखले हय मालिक—”

बिशनपुरवाली झूठ नहि बजैत छल ! दुनियाँकेँ ओ नीक जकाँ देखने छलैक ! अपने त’ ओहू दिनमे एहिना छल ! मस्किलसँ दिन भरिमे दूटा बोझ कटैत छल...सेहो बोझ नहि, पुल्ली ! मुदा पुतोहु रहैक लुत्ती ! जतबा कालमे आन एक पाहि कटैक, ओ दूटा पाहि काटि लैक ! भरिदिनमे छः टा सँ कम बोझ कहियो ने कटैक, सेहो छबो जबदस्त बोझ ! बोनिक बेरमे ओ अड़ि जाइ जे हम अपने बोझमे बोनि लेब ! काटब जबदस्त बोझ त’ पुल्लीमे बोनि कियैक लेब ? सोलह बोझपर एकटा बोझ भेटैक ! पुतहुक संग बुढ़ियाक दुनू आ आठ टा अनकर बोझ भजि लागि जाइ । आ आँटी चूकब’ बेरमे ओ एकदम भीड़ि जाइ जिरतियाक संग—“एहन जुलुम नै करह हौ जिराती ! मालिक

देखैत छथुन !” आ हमरा मोलायम देखि जिरतियाक हाथ उपरसँ बिछु सीस घीचिक’ रहि जाइ ! जाबत काल कटनी चलैक, बुढ़िया हमरा उकसबैत रहय—
“लुत्ती हय हमर पुतोहु मालिक ! बाहि दू अहाँक देवामे ?” हम कृत्रिम तामससँ कहियैक—‘मारबौ गे बुढ़िया ! हमर देवामे आगि लगयबे !’ बुढ़िया ओहिना दुष्टतासँ हँसय—“करेजामे त’ आगि लागले हय मालिक ! बुता लू ! भेजि देबै आइ राति हवेलीमे...”

हम खिसियाक’ मार’ दौड़ियै, त’ बुढ़िया प्रसन्न भ’ हँस’ लागय । ओहू दिन अपन बात पर बुढ़िया प्रसन्न भ’ हँस’ लागल ! हम कृत्रिम क्रोधसँ कहलियैक—“तौँ रहि गेले ओहिना नट्टिन !” आ आगाँ बढ़ि गेल छलहुँ । पाछाँसँ ओकर स्नेह भरल स्वर आयल छल—“खूब जीबू मालिक ! भगमान भल करथि—”

आ माय कहैत अछि—“आब एहि गाममे ककरो भल नहि हेतैक ! सीस आगि पसरल छैक !” अनिल कहैत अछि—“एहि बेर फँसला भ’ क’ रहतैक, बड़ बहसि गेल अछि ई सभ ? आ बहसत कोना नहि ! हमही अहाँ बहसबैत छियैक कि क्यो आन ? सभटा ओइ पारक महाकान्त झा आ भुट्टा झाक कृत्य अछि ! दुनू कम्युनिस्ट बनैत अछि ! एक गोटे आधा गजक एक गज नपैत अछि आ दोसर तीन पावकेँ सेरभरि, आ कहत जे कम्युनिस्ट छी ! घास छथि । साँझसँ एकरा सभक चौपालमे बैसत दुनू, घरेघर तिमन चिखत ! तिमन की चिखत, मोगी सभकेँ अँखियोत आ लेर चुषीत ! दुनू भारी चमचोर अछि भैया ! ओकरे फिराकमे रहैत अछि !”

हम आर अचम्भित भेल जा रहल रहौ ! एतनी टा अनिल, कोन-कोन गप्प कयने जा रहल छल ! चमचोरी आ घरपैसीक गप्प क’ रहल छल । हमरा आँखिमे अविश्वास देखि क’ ओ फेर बाजल—“अहाँकेँ विश्वास ने भ’ रहल अछि भैया ! चारि दिन गाममे रहू त’ सभ बूझि जयबैक ! सभ फसादक जड़ि बँह दुनू अछि ! ग्राम पंचायतमे सेहो घुसिआयल अछि ! मुखियाजी मुट्ठीमे छथिन ! सभटा रोड बनेबाक ठीका ल’ लेत आ हमरा अहाँक जन-बोनिहारकेँ टाका-आठ आना बेसी द’ क’ बहकाओत ! हमरे अहाँक गाछीसँ माटि काटि क’ सड़क-बान्ह बनाओत आ हमरे अहाँक जन-बोनिहारकेँ भड़काओत ! सरोज भैयाक काज जे

सभ राड़-राड़िन आ जन-बोनिहार छोड़ि देने छनि तीन माससँ, ओकरो पाछाँ अही दुनूक हाथ अछि....”

हमरा किछुओ अर्थ नहि लागल । तीन माससँ सरोजक काज कियैक बारि देने छलनि, हमरा नहि बूझल छल । अनिल कहलक—“अहाँकेँ आरो बहुत रास गप्प नै बूझल हैत । गाममे रहू त’ अपने बूझि जयबै सभटा पेँच ।”

हमरा पेँच सोझराब’ नहि पड़ल । किछु काल बाद सरोज अपने अयलाह—“की कहू भैया । ई सभ त’ सनकि गेल अछि । कनियेटा बात पर आफत क’ देने अछि । परबोधना हरबाही कयने छल, साँझखन आफिससँ आयले रही कि ओकर बटु बोनि लेल आयल । मोन गरमायल छल, बिगड़ि देलियैक जे जो काल्हि अबिहै । बस्स, एतबे टा पर फसाद क’ देलक । प्रात भेने पनिभरनीकेँ रोकि देलक । हरबाह नागा क’ देलक । सभ पर बन्हेज कयने अछि । पंचंती कयलक अपना मे जे हमरा माफी माँग’ पड़त ओकर बहुसँ...आरो बहुत रास माँग सभ तैयार कयने अछि । देखू त’ सार सभक खचरपनी....”

बड़ीकाल अपन दुखनामा सुना अन्तमे जाइत-जाइत सरोज कहि गेलाह—“हमरा सभमे अपना मेले नहि अछि तै, न त’ देखा दितियैक खचरहबा सभकेँ जे बन्हेज केहन होइत छैक ? ककरो कोनो काज नहि कर’ दितियैक । अपने भीख माँग’ अबैत । मुदा हमही सभ माया बढौने छियैक....”

सरोजक संग महेश सेहो आयल रहथि । सरोजक गेलाक बाद कहलनि—“सभटा बात ठीक नहि कहलनि भैया । बोनि लेल तीन दिनसँ घुरि जाइत छलनि ! ओहू दिन दू बेर घुरि गेल रहनि ! कमायल बोनि रहैक, से देवाक बदला गारि देलथिन विखिल-विखिल ? धकियाक’ आँगनसँ बाहर क’ देलथिन । अपनी मुँह सक्कमे नहि छनि । झट अवाच्य कथा कहि दैत छथिन सभकेँ । ई तेसर बेर छनि । हिनका लेल ककरा-ककरासँ झगड़ा करत लोक ? अपनी बहिरिनी-हरबाह काज छोड़ि देत, त’ की करब हमरालोकनि ?”

अनिल हुनका जोरसँ डेंटलकनि—“बस्स, अही द्वारे अहाँ सभक ई दशा होइत अछि । करबै किएक ने हम सभ ? तेहन उपाय करबै जे सभ दशा भ’ जयतैक । खाली अपना मेले आ बन्हेज आबू, सभटा नडटपनी घुसाड़ि देबैक....”

महेश सिटपिटा क’ चप्प भ’ गेलाह । माय उठिक’ अंगनी चल गेल । अनिल विस्तारसँ सभटा खिस्सा कह’ लागल ।

+

×

+

राति अधिक नहि बितल रहैक मुदा अन्हार बेस पसरि क’ बैसि गेल रहैक गाममे । नामी बाबूक दलानपर मुदा अन्हारक लेशो नहि रहैक । रत्ती-रत्ती झकझकायल । सब बनल पुरान-साहवी फैशनक बंगलीमे दू बल्बक संग-संग एकटा पेट्रोमेक्सक रोशनी सेहो पसरल छलैक । यहाथही लोक । किछु बैसल, किछु ठाढ़ । नामी बाबू अपने नहि घुरल छलाह मधुबनी सँ । हुनकर गाड़ीक हॉनक प्रतीक्षामे सभ कान ठाढ़ कयने बैसल-ठाढ़ छल । सभक अपन-अपन दुखनामा छलैक । आशा छलैक जे कहीं अइबेर हमरे भाग्य जागि जाय । ककरो दू-दू टा बेटा बेकार बैसल छलैक—कमसँ कम एको टाक कोनो जोगार बैसि जाइ....

नामी बाबूक लेल कोन मोस्किल । कने नजरि फेरबाक देरी छनि । किनको कोनो दोसरे आस छनि । हाथपर नमरी-दू नमरी राखि देताह, हुनका लेल कोन कीमति छैक दू-चारि नमरीक । गरीबक उपकार भ’ जायत । सय-दू सय देलाक बाद बिसरि जाइत छथिन नामी बाबू । गाममे कयो पाँचो टाका पँच देत त’ तेसरे दिन तगेदा पठाओत...जान अकच्छ क’ देत तगेदासँ ।

जिनका सभक आशा नमरी-दू-नमरीसँ बेसीक छनि, ओ सभ दलानमे राखल कुर्सी सभपर बैसल छथि । बीचबला कुर्सी—रामजी सिंहासन जकाँ खाली छनि ! नामी बाबू औताह त’ सिंहासन ग्रहण करताह ! पैघ भाइ...भरत जकाँ छोट भाइ नहि—विन खड़ाम रखने भक्तिभावसँ ओहि सिंहासनक रक्षा आ सेवामे रहैत छथिन सदियन ! अखनो सिंहासनक बगलबला कुर्सीपर विराजमान छथिन—दहिना कात । आ बामा कात बैसल छथि काशी चौधरी ! गामक पुरना जमींदार । नामी बाबू लोकनि हुनके घरक भगिनमान छथि । मुदा आब सम्बन्ध पलटि गेल छनि ! नामी बाबूक ग्रामक फ्रंटक सेनापति बनल छथि काशी चौधरी ! ओना कहबा लेल सरपंच छथिन अपने जेठ भाइ मुदा गामक राजनीतिक असली कर्णधार छथिन काशी चौधरी ! नामी बाबू हुनका प्रसन्न करबा लेल बीच-बीचमे कहि दैत छथिन—शेर बब्बर छथि काशी काका ! बूढ़ भेला ताहिसँ की—अखनो ककरो साहस छैक हिनकासँ भिड़बाक...!

काशी बाबू तखनी कुसीपर झकड़ल बैसल छलाह । सुट्टा खतवे ओहि बंगलीक लगमे बाबि गेलनि आ गरजि क' कहलकनि—'हमर बोनि देब की नहि काशी बाबू ! नहि देब त' बेजाय बात हो जायत !'

सुट्टा ताड़ी पीने बुत्त छल । हाथमे मोटगर लाठी छलैक । संगमे रहैक चारि-पांचटा नौजवान खतबे-धानुक । बंगलीमे बैसल आ नीचामे ठाढ़ पचासो लोकमे ककरो साहस नहि भेलैक जे ओकरा रोकतैक !

सुट्टा चारूकात ठाढ़ लोककेँ सम्बोधित करैत बाजल—“देखू त' हिनकर चालि अहाँ सभ ! माटि कटली हम सभ । महीना बीति गेल ! बोनि लेल सभ दिन दौड़ा रहल छथि जेना हम सभ भीख मँगैत छियनि ! सुनि लू काशी बाबू, बोनि नै देब आइ त' दरबज्जापर सँ बड़द खोलि लेब ! ई नडटपनी छोड़ि दू... सभटा घुसाड़ि देब ! कोनो बभवाक साहस हय जे बाजत किच्छो ! हइए... ठाढ़ छी हम आउ, के अबै छी—”

लाठी आगूमे गाड़ने सुट्टा ठाढ़ छलनि आ दलानमे थहाथही भरल लोक सकदम्भ छलाह । ककरो बोल नहि फुटलनि । काशी चौधरी उठि क' ठाढ़ पर्यन्त नहि भ' सकलह । भरि इच्छा गरि पढ़ि, धमकी द' ओहिना लाठी बजारैत चल गेल सुट्टा...मस्त साढ़ जकाँ झुमैत ! पाछू-पाछू ओकर दल छलैक ।

ओकरा जाइते काशी चौधरी छड़पि क' ठाढ़ भेलाह । लोक सभ अखबो सकपकायलै छल । नामी बाबूक भाइ बटेसर बाबू लेल धन सन ! एना निर्विकार बैसल, जेना हमरा कोन मतलब...कोनो हमरा गरि पढ़लक अछि ! हमरा दरबज्जा पर आवि क' पढ़लक त' की भेलैक ! हमरा खिलाफ थोड़े बाजत ! सभ साल सभ पाबनिमे घर-घरानिकेँ नोट बँटैत छथि नामी... ..

काशी चौधरी मुदा तामसे थर-थर कापि रहल छलाह । बिना किछु बजने दौड़ैत अपन टोल दिस बिदा भेलाह ! पोखरिक भीड़पर अबैत देरी हाक मारलनि ...बौड़ह हो अनिल—

आ चारूकातसँ लोक दौड़' लागल । काशी चौधरीक दलानधर भीड़ लागि गेल । अनिल सभकेँ जूटोलक । लाठी-भाला आवि गेलैक । मुदा राति क' ओइ भीड़केँ खतबेटोली दिस बड़बाक साहस नहि भेलैक । नामी बाबूक गाड़ीक हॉर्न

सेहो लोक सुनलक । ओहो काशी चौधरीक जिज्ञासामे नहि छलथिन । ओरें सुट्टाकेँ बाप काशी चौधरीक पयर पकड़ि लेलकनि—“हमही पयर पकड़ैत छी मालिक । निशामे छल । माफ क' दियोक । हमरा जतेक मारब से मारि लू...”

अनिल ओकरा ठेलिक' पार्छा क' देलकै—“जो, भाग एहिठामसँ । नाटक नहि कर । तोरा माफी मंगने की हेतौक । सुट्टाकेँ पठा दहिक । ओकरा आइ लाठी घुसा मुँह बाटे बहार करब तखने फैसला हेतौक । नेता बनैत छौक । धनुख-टोलीक मुनराक संग कमिटी बनौने छौक 'पिछड़ा वगं जागरण समिति ।' बजा आइ सभकेँ, जे के बचबैत छैक ।”

यदुआ बेर-बेर कल जोड़ैत रहलनि आ ई सभ घकियबैत रहलथिन, सार... बहोना...गरियाबैत रहलथिन । ओहीकालमे पोखरीक उत्तरबारी महार पर लाठी नेने सुट्टा निकलल—“घुरि आब' बाबू ! ककर नेहोरा-मिनतीमे लागल छ' ! कथी वास्ते ! कोन गलती कयली हम...मुफ्त बोनि मंगली...अपन कमायल बोनि ! से जे हमरा नहि देत तकरा एहिन्ती गारी देबै हम...बभना सभकेँ...अपन कमा क' खाइ छी हम त' छोटका जाति, आ ई बैठल खयता त' बड़का जाति...अलहुआ”

छौड़बा सभ मुनराकेँ छोड़ि सुट्टा दिस दौड़ल । पचासोक संख्या छलैक । सुट्टा एकसर छल । अपन टोल पड़ायल । खिसियायल भीड़ निरपराध यदुआकेँ खूब पिटलक । अधमरू भेल ओहो अपन टोल दिस भाग' चाह्य मुदा भीड़ घेरने छलैक ।

ताही कालमे दछिनबारी टोलसँ काशी चौधरीक घरक सिमानलग आवि मुनरा गरजल—“छोड़ि दिऔ यदू काकाकेँ अहाँ सभ' ने त' बेजाय बात भ' जायत । खतबेटोली-दुसघटोली-मलहटोली सभ उन्टि पड़त । सभक घरक चार नोच लेत...लाश बीछि जायत...”

क्रोधान्ध भीड़ यदुआकेँ छोड़ि मुनरा दिस दौड़ल । मुनराक पीठपर क्यो ने छलैक । ओहो पड़ायल । भीड़ ओकर अँगनामे दूक गेलैक । ओ अपन कोठलीमे बन्द भ' गेल । उत्तेजित छौड़ा सभ आंगनमे ठाढ़ ओकर स्त्रियेकेँ गोलिएब' लगलैक । नूआ तिरौ-तिरौ क' देलकै...मुनरा घरमे नुकायल रहल ।

मुदा ओ बहरायल घरसँ । सभ घरसँ बहरायल ओ सभ । टोले-टोल बहरायल ! हाथमे लाठी, भाला-गड़ास लेने बहरायल ! बड़कीटा जुलूम बना क' बहरायल । गामक सभ बाट, सभ दरबज्जा पर बाटे बहरायल । सभ बभनाके गारि दैत बहरायल । क्यो घरसँ नहि बहरायलाह ! अपन-अपन कोठलीमे नुकायल रहलाह ! अनचोकासँ जे पकड़ा गेलाह, तिनकर दुर्गति भेलनि । नेडरा विश्वनाथ मिसर अपन दलानपर बैसल छलाह, हुनका उठाक' बॅग जकाँ पटक देलकनि ! पण्डित मुसहर झा पूजा कयने अबैत रहथि, हुनका फुलडालीक संग ओधरा देलकनि माटिमे । सरोजक घरक सोझा बाटपर मूर्ति देलकनि आ काशी चौधरीक दलान लग दस मिनट धरि नारा लगौलकनि ।

फेर सभ मिलि एकटा मीटिंग कयलक । बहुतरास प्रस्तावसभ सर्वसम्मतिसँ पारित भेलक—

(१) हमर सभक जनीजाति बोनि लाब' नै जायत ! पहिने बोनि भेटत तखन हरबाही-चरबाही करब !

(२) बोनि नगद लेब, सेहो तीनटाका रोज नै, छओ टाका रोज । अन्नमे खाली धान आ गहूम लेब, सेहो अढ़ाई सेर पक्का । कच्चीसँ चारि सेर ।

(३) सरोज जा घरि परबोधनक स्त्रीसँ माफी नहि मंगताह हुनकर कोनो काज क्यो नहि करतनि ।

(४) काशीबाबू जाबत सुट्टाकेँ माटि कटवाक बोनि नै देखिन, हुनको कोनो काज क्यो नहि करतनि ।

सभाक अध्यक्षता कयलनि—सतीनाथ झा ।

× × × × ×

सभटा खिस्सा सुना अनिल हँसैत नाटकीय मुद्रामे कहलक—“आब बुझलिये भैया जे कत' फी छै आ कत' छौ छै ! ओइपरक महाकान्त झा आ भुट्टा झा आ अपना पारक सतीनाथ झा...पहिल दुनू महान साम्यवादी आ अन्तिम लोकदलक उन्नायक—आब वर्गविहीन समाज स्थापित भ' क' रहत !”

हमरा हँसी लागि गेल—“मुदा सतीबाबू त' पुरान कांग्रेसी छथि—स्वतंत्रता सेनानी ! पेंशन भेटैत छनि...”

अनिल आरो जोरसँ हँसल—“असली स्वतंत्रता सेनानी छथि...; एष बेर जहल भ' अयलाह त' बाट देखल भ' गेलनि ! स्वाधीनताक बादो दस बेर जहल भ' आयल छथि । चोरिसैल'क' घरपैसी धरिमे ! पेंशन त' भेटैत छनि, धीयोपुता सभ कमाइत छनि मुदा बुढ़ारीमे एकटा आफत आबि गेलनि तँ लोकदलमे शामिल भ' गेल छथि ।”

हम उत्सुकतासँ पुछलियैक—“एहन कोन आफत आबि गेलनि एकाएक !”

अनिल गम्भीर होइत बाजल—“परकाँ बुढ़ारीमे स्त्री मरि गेलथिन ! बिन मौगीक रहबाक अभ्यास नै छनि सती बाबूकेँ ! विधवोसँ बिवाह करबा लेल तैयार छथि—पुरान समाज-सुधारक छथि ! मुदा ब्राह्मणी विधवो भेटबाक आस नहि छनि । तेँ आब लोकदलमे गेल छथि ! पहिने कमलपुरक खतबे सभ भरोस देने रहनि । मुदा बुढ़बाक संग सगाइ लेल कोनो खतबिनियाँ तैयार नहि भेलनि । आब अपने गाममे दुसघटोली पर आस लगौने छथि !”

हमरा अनिलक गम्भीरता पर हँसी लागि गेल ! बुझबामे भांगठ नहि रहल जे बातकेँ अतिरजित क' रहल अछि । मुदा हँसी लगले थमि गेल । मोनमे बहुत रास बात उमड़' लागल । की थिकँक ई सभ ? दलितक जागरण ? जाति संघर्ष वा वर्ग संघर्ष ! कथीक तैयारी थिकँक ई । बोटक लेल जे जहर पसारैत अछि नेता सभ जातिक नामपर... तकरे प्रतिफल थिक ई ? तखन अइमे महाकान्त झा, जट्टा झा आ सतीनाथ झा कोना छथि ? दोसर मोन कहैत अछि जे कहीं ई देशक इन्द्रधनुषी राजनीतिक एकटा छोट-छीन दृश्य मात्र त' नहि थिक ? कानून-व्यवस्था, शासन, सभटाक स्वरूप इन्द्रधनुषी भ' गेल अछि । वर्षासँ पूर्ब आ वर्षा हैबा धरि कतहुँ पता नहि । वर्षा समाप्त आ इन्द्रधनुष उगि आयत । उपद्रव समाप्त, हत्या मारि-पीट समाप्त—पुलिस उगि आयत । चोरी-वैदमानी, लेनदेन, आपसी वितरण समाप्त, अधिकारी उगि आयत । पुल-बान्ह बनत आ टूटत, तखन जाँच-कमीशन उगि आयत । अदृश्य शक्तिक द्वारा उपद्रव पसारल जायत... निरपराध लोक मरत-मारत आ तखन ओइ घटनास्थलक आकाश पर एकटा छोट-छीब नेता अवतरित हैताह जेना आइ महाकान्त झा, भुट्टा झा आ सतीनाथ झा अवतरित भेल छथि । एकर बाद एकटा पैघ, ओहूँसँ पैघ नेता अवतरित हैताह... इन्द्रधनुष पैघ...आरो पैघ हैत । सौँसे आकाशकेँ छापि लेत । तखन सभ समस्या सभ दुःख—कष्ट स्वतः तर पड़ि जायत... समाप्त भ' जायत । सर्वोपरि भ' जायत

राजनीति आ नेता । नेताक समस्याक समाधान राष्ट्रक समस्याक समाधान बनि आयत ।

ओही समस्याक समाधान लेल नामी बाबू सेहो गाम दिस झुकल छथि । टाका बहुत कमा गेलनि, आव नेता बनबाक छनि । ओनाहो पाटला सभ कवचरूपमे नेतागिरी धारण कइए लैत अछि । मुदा आव ओकरी सभकेँ बिछु दिवकति भ' रहल छैक । नेताकेँ चाही पाइ आ लाठी । पहिने पाइस लाठी भेटि जाइत छलैक । आव स्थिति उनटा भ' गेल छैक । लाठीकेँ पाइ आ प्रतिष्ठा स्वतः भेटि जाइत छैक । आव ओकरा नेताक लठैत बनबाक काज नहि होइत छैक, ओ स्वयम् नेता बनि जाइत अछि लाठीक जोरसँ । लाठीक जोरसँ बहुमत सभ दिन प्रभावित होइत अयलैक अछि । नामी बाबू टाकासँ बहुमत प्रभावित कयने छथि... किछु लाठियो छनि । मुदा धारक ओइ पारमे खाली लाठिए लाठी छैक । ओतेक लाठी खरीदब सम्भव नहि भेलनि, मुखिया पदक उम्मीदवार अपन भाइकेँ नहि बना स लाह । मुखिया फेर ओही पारक बनला, समझौता क' सरपंचासँ सन्तोष कयलनि । हुनका दरबज्जा पर लाठी पटक अयलनि सुट्टा । अपने नहि छलाह, भाइ बटेसर बाबू छलथिन... ओ अनठा देलथिन— हमरा पर घोड़े लाठी बजारलक अछि । हम अनेरो कियैक अराड़ि मोल लिअ' । नामी बाबू घुरलाह, ओही शान्ते रहलाह । भाइक बुधियारी नीक लगलनि । काशी काकाकेँ 'द' ल' क' मना लेबनि ।

ई कथा हमरा अनिल नहि कहलक । ई त' हमर अन्तर्मनक दृष्टिमे सभटा स्पष्ट झलफला रहल छल । हमरा गुनधुनमे देखि अनिल बाजल—“अहाँ कोनो फिकिर नहि करू भैया । ओकर सभक जुलूस आ मीटिंगसँ डेरायल नहि छी हमरा लोकनि । अइ बेर हमहूँ सभ अड़िये गेल छियनि... फैसला भैया जयतैक । बिना पैर पर नाक रगड़बयने नहि छोड़बैक...”

अनिल बड़ विश्वासपूर्वक हमरा सभटा आयोजन आ तैयारीक विवरण देब' लागल ।

+

+

x

मीटिंग काशी चौधरीक दरबज्जा पर भेलैक । भरि गामक लोक आयल । खाली बटेसर बाबू आ हुनकर भैयारी नहि अयलथिन । नामी बाबू भोरे अपन मोटरसँ पटना बिदा भ' गेल छलाह । मीटिंग शुरू कर'सँ पहिने बटेसर बाबूकेँ

समाद गेलनि । ओ समदियाकेँ घुरा देलथिन—चल, अबै छी । आना घंटाक बाद दोसर समदिया गेलनि, ओकरो सैह कहलथिन—चल, अबै छी । काशी चौधरी तैयो मीटिंग शुरू नहि क' रहल छलाह । भाड़ उठ' लगलनि—“तखन हमही सभ जाइत छी । एक गोटे लेल एतेक काल के बैसत ?”

अनिल सभकेँ रोकलक मुदा काशी चौधरीक भातिज महिम गरज' लागल—“यौ कथी लेल नाटक करै जाइ छी अहाँ सभ । ओ किन्नहु ने ओताह । हुनका दरबज्जापर, हुनका सामनेमे ककाकेँ गारि देलकनि, किछु बजलाह ? बटेसर भाइक त' जाय दिअ', नामी भाइ घुरिक' अबलाह, ओही किछु बजलाह ? ओना बात बातमे बन्दूके बहार करै जाइत छथि, ओइ कालमे सभ चूड़ी पहिरि लेलनि । आव मीटिंग शुरू नहि करब त', हम सभ जाइत छी !”

मीटिंग शुरू भेल आ खत्मो भेल मुदा बटेसर बाबू नहि अयलाह ! काशी चौधरी सभकेँ सभटा घटना सुना कहलथिन—“ई खाली हमरे संग नहि भेल अछि, सरोजक संग नहि भेल छनि, अहाँ सबहक संग हैत । एकर सभक साथे उनटि गेल छैक । सुट्टा त' अछि पाजी । ओही दिन मुसलमान टोलीक एकटा छोड़ीक संग खेतमे लट्ठमपट्टी कर' लागल छल—दंगा करबा दैत ! हमही बचा देलियैक ।” भीड़मे मन्नू चौधरी फुसफुसा उठलाह—“खेतमे छोड़ी संग लट्ठमपट्टी करैत छल, त' ई कोना पहुँचि गेलथिन ? हिनकर त' एको टा खेत नै छनि ओइ ठोलमे...”

कन्तू चौधरी आस्तेसँ जबाब देलथिन—“हौ हिनके गोलक त' लोक छनि ई सुट्टा आ मुनरा ! सभटा छोटका लोकसँ साँठ-गांठ रहैत छनि हिनका ! सभपर हुलकीने रहैत छथिन ! अइ बेर अपने पर हुलकि गेलनि, त' जमीन-आसमान एक कयने छथि !

गुलगुल होइत देखि अनिल ठाढ़ भेल आ एकटा कागजपर लिखल प्रस्ताव सभ पढ़' लागल—

ई सभा सर्वसम्मतिसँ पास करैत अछि जे

१. जा धरि प्रबोधना आ ओकर सरोज बाबूसँ आ सुट्टा आ मुनरा काशी बाबूसँ पैर पकड़ि क' माफी नहि मंगतनि, हमरा लोकनि ओकरा सभकेँ काज नहि देबैक, चाहे सभटा काज हमरा सभकेँ अपने कर' पड़य ।

२. तीन टका जे दोनि दै छियैक ताहिसें फाजिल एक पाइ लेल गयो तैयार नै हेबैक, माफी मांगि लेत तैयो...

३. एहि संघर्ष खेल बड़ टाका लागत ! लाठी जुटब'पड़त...बम आ बन्दूकक इन्तजाम कर' पड़त ! तै सभ घरसँ तत्काल पच्चीस टाक' टाका चंदा लागत !

४. सती नाथ झाके' ने कयो नोत देतनि ने हुकार । हुनकर सम्पूर्ण सामाजिक बहिष्कार कयल जायत ।

५. एहि संघर्षक खंचालनक हेतु सात गोटेक एकटा समिति गठित होइत अछि, जकर अध्यक्ष काशी बाबू, आ कोषाध्यक्ष अनिल बाबू रहताह । अन्य सदस्य रहताह—बटेसर बाबू...

महिम तुरत हल्ला मचौलक—'हुनकर नाम कोना रहतनि ! मीटिंगमे बजाहटिपर बजाहटि गेलापर नै अयलाह, से एकर संचालन करताह । चलू यी...

ओकर आवाजपर मुदा कयो नहि उठल । बटेसर बाबूक गप्प छलनि, नामी बाबूक भाइ ! खुल्लम खुल्ला हुनकर खिलाफमे के बाजैत ?

मीटिंग समाप्त भेलापर घुरिक' अपन आंगन जाइत मन्नू चौधरी कन्तू बाबूके' कहलथिन—'भ' गेलनि काशी भाइक ब्योत ! चन्दा पूरा आविये जयतनि । नामी बाबू संग छथिन्ह । काल्हिए मुनरा आ सुट्टाके' बजा मिलि जयताह...हुनके गोलक त' सोक छनि । आ गाम भरिक लोक बनब उल्लू । काशी भाइ त' खेत पथारसँ निश्चिन्ने छथि ! जमीन परती रहत अहाँक आ भोज करता ओ...

+

+

+

अनिल मीटिंगक सभटा छिस्सा सुना चल गेल । बीचमे माय नहि जानि कखन आवि क' दलानमे बैस गेलि से पतो ने लागल ! असलमे मन्नू चौधरी आ कन्तू चौधरीक टिप्पणीक गप्प वैह कहलक ! अनिल त' खाली मीटिंगक गप्प कहलक आ चम गेल ।

ओकर गेलाक बाद माय कहलक—'आब तोही देखह ! एहन गामने कोना रहैत छी हम एकपरि आ तोरा लोकनि एकदम निश्चिन्त रहैत छ'...

सत्ते हमरालोकनि एकदम निश्चिन्त रहैत छी । माय भाइ एतेक बात कहलक...गाम उतटि जयबाक गप्प कहलक, तैयो कोनो डर नहि भेल । गामक लोकसँ मायोके' कोनो डर नहि छैक—हम जनैत छी । ओकरा सभ लेल स्नेह छैक मायक मोनमे...कोनो प्रपंच वा राजनीति नहि । ओकरा कथीक डर ?

तैयो हम जखन गाममे टहल' विदा होइत छी त' माय टोकैत अछि—'सम्हरि क' जैह', ओ पुरना गाम नहि रहल' आव !'

हम उत्सुकताक संग आगँ बढ़ैत छी । सत्ते यदि गाम जागि गेल हो... सत्ते यदि एकरा सभमे आत्मसम्मान जागि गेल होइ...एकरा सभक ठोरपर साटल 'मालिक हजूर' नोचा' येल होइ...त' केहव लागत ? एकटा सुखद परिवर्तनक संग साक्षात्कारक प्रत्याशामे हम आगू बढ़ैत गेलहुँ ।

कतहु किछुओ ने अभरल । पहिने छतवे टोली दिस गेलहुँ । बाटपर ओहिना बैसलि छलि बिशनपुरवाली ! हे, बिशनपुरवाली नहि । लग जा देखलियैक, ओकर जुअनकी पुतोहु छलैक...एकदम बूढ़ि ओहिना, डांडमे थोड़े नमगिलाट लपेटल...झोखड़ल-सिकुड़ल देह ! बहुत दिनपर देखने छलियैक, मुँह यदि अपरिवर्तित नहि रहितैक त' चिन्हबो नहि करितियैक । ओ चीन्हि लेने छलि । लग अबिते कहलक—'परनाम मालिक !'

हम हँसी कयलियैक—'आइ गाय चरब' जुअनकी कोना आवि गेलै... नट्टिन बुढ़िया कत' छी ?

ओकर पपड़ी पड़ल ठोरपर बड़ दयनीय हँसी पसरि गेलैक—'कोन जुअनकी मालिक ? हमरो आरके' जुआनी अबै हइ कहियो ! कोन बाटे अबै हइ आ केन्ने जाइ हइ अनका भले बुझा जाउ, अपना नै बुझाइ हइ ! आ जतबो दिन रहै हइ—कोन अप्पन होइ हइ ? बन्हकिए त' रहै हइ सभ दिन...

हमरा सिहरन भेल ! बिशनपुरवालीक पुतोहु इ कोन भाषा बाजि रहल अछि ! माय झूठ नै कहैत छलि । गाम सत्ते बदलल छैक...बिशनपुरवालीक लुत्ती-पुतोहु भाइ सत्ते लुत्ती बनल छैक ।

हमरा किछु सोचैत देखि ओ अपने कहलक—'बुढ़िया त' मरि गेल मालिक ! बूढ़ देह रहलै, भूख नै बरदाश्त भेलै, भुक्खे मरि गेल ! रोदी हइ...

कहाँतें खियैतियैक ! एक मास भीख माँगि क' खयलक आ एक दिन घरमे सूत रहि गेल सात सांझक उपास रहलै...

हमरा अबाक आ हतप्रभ देखि ओ कहलक—“हमरा आर के जान लेल दुख नै करू मालिक ! बुढ़िया गेल आ हमहू सभ जायब । भुक्खे मरि जायब । सुट्टा शहरमे रहि क' रिक्शा चलबै हय आ मुनरा गामे-गामे घूमिक राजमिस्त्रीक काज करै हय... ! ओकरा सभके कोन चिन्ता हई ! आगि लगा मौज करै हय । एन्ने हमरा सभक पेटने आगि घघकै हय, धीयापुता अन्न बेतरे मरै हय... ! अहाँ सभ निर्दयी बनल छी—काज बन्न केने छी... माल-जाल सेहो भुक्खे मरै हय । गाछी-बिरछी, खेतक आरिमे गाय-महीस नै चरब' देब ! इहे बान्हपर, ओइ रोदीमे चरै हय गाय-महीस ! मरबै करत ! जे ने करै ई सुट्टा आ मुनरा !”

हम सदैव भ' गेलहुँ... लुत्ती त' सदैव-हेमाल भेल अछि ! कत' छैक आगि ! ई त' खाली छाउरे-छाउर छैक । माय सत्त नहि कहलक । किछुओ ने बदलल छैक । गाम त' ओहिना छैक...

हमरा घुरैत देखि ओ फेर कहलक—“कोनो उपाय करियौक मालिक— !

हम ओकरा बिना कोनो आश्वासन देने मलहटोली दिस विदा भ' गेलहुँ । धार पार करैत जहिना पहुँचलहुँ, ओइ पुरना पोपरक गाछ लग कि एकटा बुढ़िया, एकटा पाँच वर्षक नेनाक आँगुर पकड़ने हमर चारूकात नाचि-नाचि क' गाब' लागलि—“हाली-हाली बरिसू, इन्नर देवता !”

बतही अछि । रोदी छई—अकाशमे मेघक एक्कोटा टिककर पर्यन्त नहि छैक आ ई नाचि-नाचि क' गबैत अछि—“हाली हाली बरिसू इन्नर देवता !”

बाट घूमिक' हम आगू बढ़' लगलहुँ त' ओ फेर आगूसँ हमर बाट छेकि लेलक—हमरा नै चिन्हली मालिक ! हम छी बतही फुलेसरी ! गुलमाक माय आ अजदबाक दादी ! गुलमाके हबकलकें साँप आ अजदबाके पुलिस बन्दूकसँ सभा क' देलकै । मुदा बतही जिवै हय मालिक... नै चिन्हली ।

हम गौरसँ देखलियैक ! विशनपुरवालीसँ बेसी बूढ़ि-झुरकुट ! चमड़ी घोकचिक सिकुड़ि क' आकृतिकें अजीब स्वरूप देने । तिरी-तिरी भेल डाँड़मे टपेलल लता । डाँड़सँ ऊपर कतहु किछु ने ! उज्जर सनसन केश मुँहपर शबरल आ ओइ तरसँ मिलमिलाइत ओकर चमकैत आँखि...

हमरा आगू बढ़ैत देखि फेर बाट छेकि लेलक बुढ़िया—“नै जाउ बौआ । राच्छस सभ रहै हय, खा लेत । हमर बेटा-पुतहुके खयलक तँयो सन्तोष नै भेली... अइ बिन बापक नेत्राक मायोके खा गेलै । पुतोहुके खयली हम अपने । एकरा सभके बातमे आबि क' अकलंक देखी... जनमौतीक कोखिमे लात मारलक गुलमा । बहु चलि गेलैक रूसि क'... 'द' गेलैक सोन सन बेटा । ओ बगदि गेलैक । चोरी-डकैतीमे परकि गेलीक । पुलिस ओकरो सन्ना बना देलकै । जाइत-काइत ओहो अपन गद्दुआरि बहुक कोखिमे लात मारने गेल । ओकरो बहु सोनसन बेटा देलकै । ओइ लातसँ नै मरलौ मोगी, साहसवाली छलि । एकसरे अपन नेनाके पोसि क' पैघ कर' चाहैत छलि । समन्ध लेल कतेक लोक कहलकै मुदा नहि मानलकै मोगी । तकरा की कयलकै अइ टोलक लोक से जनबै मालिक । काजपर बन्हेज लगा देलकै । सांझक सांझ भूखलि रहलैक मोगी । एक दिर भोरे मूइल पड़लि छलैक आ छातीसँ सटल किलोल करैत रहै ई छौंड़ा...

हम घूर' लगलहुँ । मोनमे बहुत रास बात छटपटाय लागल । बुढ़िया पाछीसँ जोरसँ बाजलि—“भागू नै बौआ, कहले जाउ । ऐ छौंड़ाके के देखतैक, फुलेसरी बतही त' पाकल आम हय, कहियो खसि पड़त । कहने जाउ बौआ... अही सभने कहने रही जे आब अद्याचारीक राज नहि, जनताक राज हई... आब क्यो जुलुम नै करतैक... कहने रही ने बौआ... जबाब दू ।

हम बिन कोनो जबाब देने पड़ाइत रहलहुँ । मलाहक टोल पूर्व-वत छल । छोट-छोट फूँक घर । जे बड़ पैघ से आठ हाथ लम्बा-चारि हाथ चौड़ा । ओहिना डाँड़मे विष्टी पहिरने पुरूख आ ननगिलाट लपेटने मोगी सभ । तंग-घड़ंग खेलाइत, धारमे चुभकैत धीयापुता सभ । माय झूठे कहने छलि । गाम ओहिना छलैक... मलहटोली ओहिना छलैक । एकदम अपरिवर्तित ।

घुरतीकाल धनुखटोली बाटे घुरलहुँ । लागल जेना किछु बदलल-बदलल होइ । पहिने ठीकसँ नै बुझायल जे केहन परिवर्तन । फेर ध्यान देला पर स्पष्ट परिवर्तन बुझायल । टोलक पछबरिया छोर पर एकटा ऊँच मड़बा जकाँ । मड़-बाक चार जरल, जेना हालेमे जरल होइ । खाम्हसँ बान्हल एकटा आधा लटकल तरुती—“पिछड़ा वर्ग जागरण मण्डप” । मड़बा पर बैसल बहुत रास लोक सभ ।

हमरा उत्सुकता भेल । लग जा पैर ओहिना थकमका गेल । माय कहने छल, सम्हरि क' जैह' मुदा हमरा कोनो भय नहि भेल । हमरा ओना ठाढ़ देखि किछु गोटे ठाढ़ भेल—“परनाम मालिक ।”

मोनमे किछु कच द' उठल । मालिक अखनो एकरा सभक ठोर पर साटले छैक । हम सटहाके पुछलियैक—“नव बनगै जाइ गेलैं हैं । मुदा एना चार जरल कियैक छी... ? सटहा नम्र भावसँ कहलक—“समितिक मड़बा हइ मालिक । कोइ जरा देलक परसू राति...”

तल्लगे एकटा छौंड़ा छड़पि क' मड़बा परसँ नीचा आयल—“जशौला से की होतैक । चार फेर ठाढ़ भ' जयतैक । ई हमरा सभक हकक लड़ाइ हय...”

हमरा मोनमे किछु छड़पि उठल...माय ठीक कहने छल । गाम सत्ते बदलल छैक...किछु भ' क' रहतैक । तखने मड़बापर ध्यान गेल । किछु परिचित चेहरा...सभ उत्सुकता बश इन्हरे तकैत । खाली एक गोटे पीठ अढ़ कयने... । ध्यानसँ देखितहि चीन्हि गेलियैक—सतीनाथ झा ।

मोन फेर छोट भ' गेल । आकाश अखनो इन्द्रधनुष सभसँ भरल छैक । सभकेँ नोचि क' फेक' पड़तैक । मोन भेल जे अखने जे छौंड़ा हकक लड़ाइक गप्प कयलक अछि, दौड़ि क' मड़बा पर जाय आ सतीनाथ झाकेँ लात मारि क' ओघरा दिअय । फेर ओइ मड़बा पर बान्हल मृद्वी तानि क' ठाढ़ भ' जाय आ आकाशमे लहरा क' कहय—ई हमरा सभक हक के लड़ाइ हय...जीत हमरे होत—

नवम्बर १९८३

स्थानान्तरण

नीक जकाँ ई बुझि गेलाक बादो जे एहि दिनके आब बेसी बिनधरि टारल नहि जा सकैत अछि, हम बेर-बेर भगवानसँ ई प्रार्थना करैत छलहुँ जे कहना ई बिन धरि जाय ! अपना एहि कामना आ एकर औचित्यके प्रमाणित करबाक लेल हम पछिला अनेक वर्षसँ बहुतरास तक आ सुरक्षात्मक तथ्य तथा आंकड़ा एकत्रित क' लेने रही आ कोनो चर्चा अहितहि अस्त्रक उपयोग अपना पक्षकेँ मजबूत करबाक लेल जी जानसँ करैत रही ।

तैयो चर्चा उठिते रहैत छल आ बेर-बेर हमर पक्षकेँ कमजोर प्रमाणित करबाक चेष्टा सेहो होइत रहैत छल । पछिला बेर त' उच्चतम अधिकारी सेहो कहि देलनि—“आब कोनो उपाय नहि अछि । बात संसद धरि पहुँचि गेल अछि । अहाके एत'सँ जाय पड़त । एकेठाम काज करैत सत्रह वर्ष भ' गेल अछि अहाकेँ ।

हम बीचे मे बात कटैत कहलियनि—एई सत्रह वर्ष तँ अहाँ लोकनि अपन आवश्यकतासँ रखलहुँ, कहैत रहलहुँ जे हम ‘इन्डिपेन्डेन्स’ छी । आब दू वर्षसँ हमरा आवश्यकता अछि त' वर्षक गिनती शुरू भ' गेल अछि ।

उच्चतम अधिकारी हमर तकसँ अप्रभावित रहलाह—‘त' हम की क' सकैत छी ? वर्ष ई गिनती हमरा लोकनि तँ नहि शुरू कयने छी । अहाँक अपन सहकर्मी, स्थानीय अधिकारी लोकनि एहि गिनतीक हिसाब रखने छथि, बातकेँ अखबारधरि पहुँचा देने छथि । बात आब हमरालोकनिक नियंत्रणसँ बाहर भ' गेल अछि ।

हमर मन में किछु कचकल । नीकजकाँ बुझियो क' जे आबा कोनो आस नहि छल, एकबेर अन्तिम प्रयास कयल—‘मुदा ई कहाँधरि न्यायसंगत हेत सर ! कोशिश-पैरबी क' कोनो टुटपुजिया अखबारमे किछुयो छपालेत आ अहाँलोकनि ओही आधारपर अपना फैसला बदलि लेब । हमर एतेक वर्षक निष्कलंक एवं निष्ठापूर्ण सेवकेँ नहि देखबैक । सत्रह वर्षधरि एकेठाम रहि जायब अपराधभ' जायत' मात्र ककरो अखबारमे छपवा देलासँ ? अखबार मे छपबासँ पूर्व केन्द्रीय कार्यालय नहि जनैत छल जे एत' हम सत्रह वर्षसँ एके स्टेशन पर छी ?

उच्चातम अधिकारी तैयो कोनो आश्वासन नहि देलनि । हम अपन ग्रहमास्त्र छोड़वहूँ—‘अहाँ तँ हमर पारिवारिक स्थितिसँ अवगत छी सर ! कतेको वर्षसँ पैघ संयुक्त परिवारक दायित्व वहन करैत आयल छी, आर्थिक रूपसँ एकदम टूटि चुकल छी । अब अपनो छवो सन्तान पैघ भ’ रहल अछि । एखन बदली भेलासँ ओकरा सभक पढाइ-लिखाइ आ भविष्यपर कतेक घातक असरि हेतैक ? लोअर केजी सँ एम० बी० एस० सी० धरिक विद्यार्थी सभ अछि ।

हमर ग्रहमास्त्र कोनो असरि उच्चातम अधिकारी पर नहि पड़लनि । ओ मुसकिआइत बजलाह—हम सभटा बात जनैत छी मिस्टर सा आ इएह मुख्य कारण अछि अहाँक बदलीक निर्णयक । अहाँक एहि सभ समस्याक कारणे हमरा लोकनि एतेक वर्ष एकठाम रखलहुँ मुदा जिनगीमरि हमरालोकनि कोना राखि सकैव छी एकेठाम अहाँके ? सेवा-निवृत्त भेलाक बादो अहाँक समस्या समाप्त होइ वाला नहि अछि ।

ओ चल गेलाह आ हम तामस आ निराशासँ थरथराइत ठाढ़ रहि गेलहुँ । पहिलबेर एहन थरथराइत तहिया भेल छल, जहिया किछु मास पूर्व हम आफिसक लंच रूममे पहुँचल रही । हमर बहुत रास सहयोगी पड़िनहिसँ ओत’ बैपल छलाह आ एकटा अखबारक कतरन पढि-पढि किछु गप्प क’ रहल छलाह ; हमरा देखतहि सिन्हा बाजल—‘लिखलक तँ ठीके अछि । ई आफिस तँ पक्षपात आ भ्रष्टाचारक अड्डा बनिये गेल अछि । हमरालोकनि पछिला पन्द्रह वर्षमे पाँच-पाँच ठामसँ घुरि अयलहुँ आ किछु गोटे मौलिक पाथर जकाँ ओहिना एहिठाम गड़ल छथि । जे लोकनि चमचागिरी करता से लड्डू खयताह आ हमरालोकनि सूप महंक भाटा जकाँ ओषराइत रहब, ई कतक इन्साफ छैक—बाजू अहीं लोकनि.... ।

तावत ओकर दृष्टि हमरापर पड़लैक । ओ बात बदलि बाजल—हम अहाँक बात नहि क’ रहल छी साजी !—अहाँ तँ अपन मेरिटपर एहिठाम टिकल छी, मुदा कतेक लोक छथि अहाँ जकाँ ! काजो नहि करताह आ खाली चमचागिरीक बलपर चासनी चाटैत रहवाह ।

हमरा नीक जकाँ किछु बुझबामे नहि आयल । प्रसाद एकटा अखबारक कतरन हमरा हाथमे दैत बाजल—‘आइए छपल अछि ! देखि लिय’ ।

हम ओ कतरन पढ’ लगलहुँ । स्थानीय दैनिक पत्रक कतरन छलैक । एकटा स्थानीय संवाददाता एतुका कार्यालयक मुख्य अधिकारीपर पक्षपात, जातिवाद आ क्षेत्रीयताक आरोप लगौने छलथिन ! स्थानीय अधिकारी लोकनिक अधिकारक हनन एवं लगातार बदली द्वारा हुनका लोकनि पर कयल गेल अन्यायक सेहो चर्चा कयने छलथिन आ संगहि एकटा सूची देने छलथिन मुख्य अधिकारीक दुलरुआ आ संरक्षण-प्राप्त अधिकारी गणक जे हुनका जातिक वा हुनका प्रान्तक छलथिन । सूचीमे पहिल नाम हमर छल ।

हम तामसे थर-थरा उठलहुँ मुदा लंचरूममे बैसल सभ सहकर्मी मुसकिया रहल छलाह । उपरी सहानुभूति देखबैत ठाकुरजी बजलाह—‘आर बात त’ ठीके लिखलक अछि साजी । लिस्टो लगभग ठीके छैक । खाली अहाँक नाम कोना एहिमे आबि गेल । ने त’ अहाँ हुनकर जातिक छियनि ने प्रान्तक.... ।

मोन आर लोहछि गेल । ई नकली सहानुभूतिसँ जरलपर मोन छोटि रहल छल ठकुरवा । हम लगभग ओइ सभ नाम आ चेहराकें चोन्हि सकैत छलियैक जकर ई बदमाशी छलैक । हालेमे किछु स्थानीय अधिकारी सभक बदलीक आदेश बहरायल छलैक जकर विरोधमे बहुत आक्रोश छलैक एकटा वर्ग विशेषमे । वैह वर्ग एक तोरसँ दूटा चिड़ मारने छल । मुख्य अधिकारीपर आरोप लागौने छलनि आ हमरो धकिया क’ एहि-ठामसँ हटयबाक चेष्टा कयने छल । सत्रह वर्ष धरि हमर एक-ठाम रहि जायब ओकरा सभक आँखिक कुरकुराइत बनल छलैक.... ।

हम ठाकुरक गप्पक कोनो जबाब नहि देने छलियैक, ओहिठामसँ उठि गेल रही । मुख्य अधिकारीसँ ओहि दिन किछु कार्यवश भेट कयने छलियनि । ओहो मुसकियाक बाजल रहथि—बाजुक अखबार देखलियैक अछि मिस्टर सा ।

हम मूढ़ी ढोलाकेँ सहमति जतौलियनि । ओ ओहिना मुसकिआइत बजलाह—‘एहि साल बदली लेल प्रस्तुत रह । आइये अखबारक कटिंग केन्द्रीय कार्यालय पठा देने छियैक ।

हमरा आश्चर्य भेल । पुछलियनि—एहि समाचारक हमर बदलीसँ कोन सम्बन्ध छैक सर ? अहाँलोकनि हमरा सत्रह वर्ष धरि एकेठाम रखलहुँ, से हमर अपराध भ’ गेल ?

मुख्य अधिकारी मुसकिओइत रहलाह—“बदली कोनो सजाय तँ नहि छैक मिस्टर सा ! मुदा बात तँ सत्य छैक । अहाँ दू दू प्रमोशन भेलाक बादो एक्केठाम रहल छियेक ।

हम तमसाक' हुनकर कोठलीसँ बहरा गेल रही । बहरेवासँ पहिने मन भेल जे पुछियनि—अखबारमे जे अहाँक बारेमे छपल अछि सेहो सत्य अछि ? मुदा किछु नहि पुसलियनि । दू साल पहिलुका एकटा बात मन पड़ल ! प्रमोशन भेल छल, बदलीक आशंका छल । यह मुख्य अधिकारी दूतासँ बजलाह—अहाँकेँ बदली नहि हैत ! अहाँकेँ हम छोड़ि नहि सकैत छी ! स्थानीय शाखामे बहुत रास जखरी पछिला आदेश लागू नहि भ' सकल छैक ! अहाँकेँ सभटा लागू कर' पड़त... ।

हम पछिला दू सालमे सभटा लागू करवा देलियेक ! प्रशंसा पत्रो भेटल । फेर सभठाम हमर-बदलीक गप्प होम' लागल आ सभक ठोरपर दबल-दबल मुसकी छलैक । हम मुख्य अधिकारीक कोठलीसँ लोहछल बहरयलहुँ आ सोझे अग्न बेरा आवि गेजहुँ ।

सुनिहहि सीसे घर मे प्रसन्नताक लहरि दौड़ि गेल ! हरदम उखड़ल-तनल रह' वाली पत्नी प्रसन्न भ' उठनीह आ बेटा-बेटी सभ खुशीसँ नाच' लागल । नव स्थानमे जयबाक संभावनासँ सभ क्यो प्रसन्न भ' उठल । पहिले बेर लागल जे एकठाम रहैत-रहैत ओ सभ कतेक उबिया गेल छल ।

हमर मन आर हताश भ' गेल । आसक कोनो किरण कतहुँसँ नहि अभरि रहल छल । हम एहि शहरक छूटि जयबाक संभावना मात्रसँ थरथरा रहल छलहुँ आ हमर तैयार कयल गेल सुरक्षा-दुर्ग एक-एक क' ढनमना रहल छल । कार्यालयमे हमर तर्ककेँ नकारल जा रहल छल आ जिनका लेल आ जिनका लोकनिक आधार-पर हम अपन तर्कक निर्माण कयने रहो ओ सम ओहि तर्कसँ असहमत लागि रहल छलाह ।

भाइ बहिन सभसँ भेंट भेलापर किछु साहस बढ़ल । ओ सब किछु चिन्तित बुझायल बदलीक संभावनासँ मुदा लगले पता लागि गेल जे भयभीत आ चिन्तित ओहो सभ नहि छल । खूब सक्षम लागि रहल छल । हमर बदलीक संभावनासँ हमरे लेल चिन्तित छल ओ सभ ।

एतेक दिन छरि हम सभक लेल चिन्तित रहैत थायल छलियेक । बेर बेर सोचैत थायल रही जे हमरा बिना एत' किछुओने चलतैक-ने हमर कार्यालय, ने हमर संयुक्त परिवार ! आब दुनू सक्षम लागि रहल छल ! कार्यालयकेँ हमर जयबासँ कोनो क्षतिक चिन्ता नहि छलैक आ हमर परिवार हमरे लेल चिन्तित छल । अपनाकेँ हरदम केन्द्रमे राखि सोचऽ बला हमर अहंकारकेँ एहिमे बड़ ठेस लगलैक । ओ बेर-बेर छटपटाय लागल ।

मुख्य अधिकारी लग हम फेर एक बेर चेष्टा कयलहुँ—हमर शाखामे किछु काज अपूर्ण रहि गेल अछि । एक दू मास आर रहि जेतहुँ त' सभ काज प्लानक अनुसार पूरा भ' जाइत ।

मुख्य अधिकारी बोचेमे रोकि देलनि—प्रैक्टिकल बनू मिस्टर सा ! एतेक सेलफिस जुनि बनू । जिनगी भरि एक कार्यालयमे रहबाक बात ककरो ने सोचबाक चाहियेक । आयब-जायब तँ लगले रहैत छैक । काल्ह हमरे बदली भ' जायत, तँ कार्यालय बन्द भ' जयतैक ?

हमर चोटायल अहंकार फनफना उठल ! मन भेल जे कहियनि—“अहाँ सन-सन दसटा मुख्य अधिकारी चल गेलाह सर आ अहाँ सहित सभ यह कहैत रहलाह जे अहाँक बिना एतुका काज नहि चलत । आ भाइ अहाँक मूड बदलल अछि”“खाली अखबारमे किछु छपि जयबाक कारणे ।

हम किछु नहि कहलियनि । ओत'सँ चल अयलहुँ । दोस्त लोकनिक संगहि हम अपन चोटायल अहंकारकेँ शान्त कर' आहलहुँ । मयंक मलहम लंगोलक—“त' अब तोहूँ चल जयबैं । एक-एक क' सभ चल गेल, कालेजक सभ संगी-साथी शहर कतेक सुन्न लागत।

हम ओकर बातसँ उलसित भेल जाइत रही की ओ अपन काज आ आन-आन लोक मे व्यस्त भ' गेल । हम किछु काल आर बसैल रहलहुँ । हमरा मन पड़ल जे एके शहरमे रहितहुँ हमरा लोकनिक भेंट एक वर्ष पर भ' रहल छल । हम कखन उठिक' चल अयलहुँ, ओ प्रायः बुझबो नहि कयलक ।

हम अने कार्यालयक सहयोगी संगक बीच सहानुभूति बटोरबाक चेष्टा कयलहुँ । पाँच-सात सयलाक । पछिला सत्रह वर्षमे लगभग सभ कहिबोने कहिओ

प्रत्यक्ष हमरा संगे काज करे छल । बहुतोके बेर कुबेर काज पढ़ल छलैक । सुनिक उदास होइत कतेको गोटे बाजल—‘अहाँक गेलास’ कार्यालयक बड़ क्षति हैतैक । खासक हमरालोकनिक । अहाँक रहलासँ एकटा बल रहैत छल बेर-कुबेर । दू-चारि बरष बाहर बिता फेर चेष्टा क’ एत’ अबरस चल आयब....।

ओतहुसँ लोहछिके भागि अयलहुँ हम । सभदिन भय आ आशंकासँ थरथराइत प्रार्थना करैत रहलहुँ जे ई दिन टरि जाय । एहि शहरके छोड़ि नहि सकब हम, टूटि जायब, एकदम छिड़िया जायब ।

आ आइ प्लेटफार्मपर ठाढ़ छी । भीड़ छँक आ भीड़मे बहुतरास चीन्हल-जानल चेहरा आ नाम अछि जे हमरा संगे वा हमरा लेल एहि प्लेटफार्मपर नहि आयल अछि । अपरिचित चेहराक बीच मिश्रायल अछि किछु आर चेहरा जकर नाम हम नहि जनैत छियैक मुदा लगैत अछि जेना चीन्हैत छियैक । बहुत कम, गनल गुथल लोक छथि जे हमरालग ठाढ़ छथि—किछु परिवारक लोक, स्कूल-कालेजक एकटा मित्र आ दफ्तर एकटा अधिकारी आ एकटा कर्मचारी । हिनका लोकनिक बीच ठाढ़ हम ओहि असंख्य अवसरक आ एहि प्लेटफार्म वा एयरपोर्ट वा बस स्टैंडपर ठाढ़ अनेक चेहराकेँ मन पाढ़बाक चेष्टा क’ रहल छी जनिका विदा कर’ वा बिनका स्वागत कर’ बेर-बेर एहि सभ स्थानपर अबैत रहल छी । ओहि महक कोनो चेहरा एत’ नहि छल । ने दफ्तरक ने दोस्त-महिसक । ने सरसम्बन्धीक । मात्र एकटा भीड़ छल जाहिमे बहुत रास चीन्हल जानल चेहरा छल । किछु नजदीकी लोक छलाह जे घेरिक’ ठाढ़ छलाह प्लेटफार्मपर ।

एतेक वर्षसँ एहि शहर आ एहि शहरक लोककेँ हम एतेक निकट अनुभव करैत रही जे शहर छोड़बाकाल हुनका लोकनिके देखितहि हम कानि उठब, टूटिके छिड़िया जायब । मुदा ओहिमेसँ अधिकांश चेहरा एहि भीड़मे नहि छल आ हमर डर एकाएक काम होम’ लागल अछि । ओहि चेहरा सभकेँ एत’ नहि देखि किछु सहज होब’ लागल छी । जिनकालोकनिकेँ छूटि जयबाक डर आ आशंकासँ हम एतेक दिन धरि थरथराइत रही आ सभ एत’ छलाहे नहि । मन एकाएक हुलसित भ’ रहल छल ।

आइसँ 27 वर्ष पुर्व जखन स्टीमर पर चढ़ि गंगाक जहरिपर हेलैत हम एहि शहर दिस आबि रहल रही, मन एहिना सरलसित छल । ई शहर एहि भ्रान्तक ई

राजधानी पछिला सत्ताइस वर्षमे हमर गाम बनि गेल छल आ अपन एहि गामकेँ छूटि जयबाक डरसँ हम बेर बेर ओहिना डेराइत रही । हरदम सोचैत रही जे एहि शहरसँ जाइत काल ओहिना कानब जेना मेट्रिक पास क’ एहि शहर लेल विदा होइत काल कानल रही । मुदा तेहन किछु नहि भ’ रहल छल आ हम ओहिना सरलसित भेल जा रहल रही जेना स्टीमरपर एहि शहर दिस अयबाक काल भेल रही ।

आ आशाक विपरीत पत्नी आ धीयापुता सभ जे एहि शहरकेँ छूटि जयबाक समाचार मात्रसँ प्रसन्न भ’ उठल रहथि, एखन उदास लागि रहल छथि । हुनका-लोकनिक आँखिमे नोर छनि आ प्लेटफार्मपर ठाढ़ लोक सभसँ गप्प करैत करैत बेर-बेर ओ लोकनि कानि रहल छथि ।

गाड़ी विदा होइत अछि आ छूटि रहल एहि शहर आ शहरक लोककेँ आ प्लेटफार्म पर क्रमशः विलीन होइत आकृति सभकेँ बेर-बेर हाथ हिलाक’ हम प्रसन्नतापूर्वक विदा द’ रहल छियैक ।

अप्रैल १९८७

बजन्ताक पोता

बीच आंगनमे भीजल अखरा चौकी पर चितंग पड़ल रही। उमससँ सौसे आंगन औनायल छल। धीया-पूता सभ सटल-सटल चौकी पर अंगनेसे बैसल गर्मीसँ लोहछल हल्ला-गुल्ला मचा रहल छल। श्रीमतीजी सेहो बच्चे सभक बीच यैसलि जल्दी-जल्दी हाथक पंखा घुमबैत अपस्यांत छलीह।

माय मुदा अहू गरमीमे भनसा घरमे छलि। पहिने शर्वत, फेर चाह आ कनिये कालक बाद जलखइ। आइए गाम आयल रही जमशेदपुरसँ-कलकत्ता स्थापनक छः दिन बाद। आ अहू मासमे एहन गरमी। भीजलो चौकी पर चैन नहि छल। दू बेर स्नान क' आयल रही, तैयो नहि।

जलखइ-चाहक व्यवस्थासँ निश्चिन्त होइते माय फेर आंगनमे आयलि। एहि बेर ओकर हाथमे एकटा बड़का पंखा छलैक। ताड़क बड़का पंखा जाहिमे अढ़ाइ हाथक पतरका बांसक डण्टा लागल छलैक। एहि पंखाकेँ हम चीन्हैत छियैक। दादा (हमर पिता)क बनबाओल छलनि। जहिया कहियो गाम अबैत रही, बजन्ता बड़का पंखा ल' ठाढ़ भ' जाइत छल। ताघरि हौकते रहैत छल—जाघरि हम मना नहि करैत छलियैक। जेना कोनो मशीन रह्य। समान गतिसँ ओकर हाथमे ओ पंखा धण्टो डोलैत रहैत छलैक। दरबज्जा पर कोनो पाहुन आबथि, पंखा लेने बजन्ता स्वागत आ सेवामे हाजिर।

आइ ने दादा छथि ने बजन्ता। आइ मायक संगमे छलैक एकटा दस बारह वर्षक छोटो-मढ़बा पर राखल लालटेनक-इजोतमे ओकर कारी आकृति त' खूब स्पष्ट नहि देखाइत छलैक मुदा ओकर सुन्दर आ साफ दाँत झकझक चमकि रहल छलैक। हाथमे बड़का पंखा लेने मुसकिआइत ठाढ़ छल ओ छोटो। देह खाली मुदा डाँड़पर चरखानाक साफ सन पैजामा।

—चीन्है छहक ? चुगलाक बेटा छैक। आब क्यो दसो वर्षक छोटो नहि भेटैत अछि गाममे जे माल-जाल चराओत, बर्तन बासत माँजत। एकर माय आब नहरसँ

एतेहि आबि गेल छैक। चुगला आब रिक्शा चलबैत अछि दरभंगामे। भोरे जाइत अछि आ राति क' घुरि अबैत अछि। कहना अइ छोटो-डाँकेँ फुसला क' रखने छी एक माससँ। मुसहरबाक सभ बेटा आब रिक्शे चलबैत छैक। एतेकटा आंगनमे येह एकटा छोटो-डाँक संग रहैत छी हम आ तोरा लोकनिकेँ गाम अथवाक इच्छे नहि रहैत छ'। सभ भारक एक्के हाल—खाली सालमे एक बेर दुर्गापूजामे ग'। बाँकी एगारह मास कोना रहैत अछि माय, तकर कोनो चिन्ता रह' तखन ने।

माय अपन दुखनामा सुना फेर भनसा घर दिस चलि गेल। ओ छोटो-डाँका पंखा होंक' लागल। हम आबि मुनि पड़ि रहलहुँ। पड़ल-पड़ल बजन्ता मोन पड़ल। नाह जानि, के ओकर नाम बजन्ता राखि देने छलैक। छल ओ एकदम गुम्मा। कखनो काल एकाध टा शब्द शकि-शकि क' बजैत छल जेना ओहो दू चारि शब्द बजबामे कष्ट भ' रहल होइ—'पनपिआइ मलिकाइन'।

भोरे उठि, महीसकेँ चौरमे चरा, रातुक सभटा एँठ-अपैत बर्तन-बासन पोखरिक घाटपर माँजि, कुल्हड़ि ल' जारनि चीरि मंसाधार लग राखि, चौरमे जहाँ तहाँ बोधाय एक छिट्टा घास छ'लि, लूयँ माथपर अथलाक बाद ओ भनसा-घरक कोनटा लग ठाढ़ होइत छल—'पनपिआइ मलिकाइन'।

माय ओकर गमछामे किछु मोटसन उसना चूड़ाक संग नून आ कहियो काल अचारो द' दैत छलैक 'जकरा ओ बथान पर, अपन मचान पर बैसि बड़ीकाल घरि चिबा-चिबा क' खाइत छल। अहू बीच कतेको बेर लल्ला मचैत छलैक आंगनमे—'केम्हर गेल बजन्ता। सभ काज पड़लै छैक ?'

चूड़ा आ नूनक पनपिआइ क' बजन्ता आत्मनियमक बड़का बट्टा निकालैत छल आ कल पर जा ओइमे पानि भरि भरि क' दू तीन बेर भरि छोक पीबैत छल, माथ कपार सेहो धो लैत छल। ताबत आंगनमे गर्द मच' लगैत छलैक।

—'महमदपुर चलि जो बजन्ता। मिलसँ एक बोरा आँटा पिखा ला।'

—'लाघा चलि जो बजन्ता। ओत' दस बोरा घान जिरतियाक घरमे पड़ल छैक। बैलगाड़ीक इन्तजाम नहि भ' रहल छैक तोहो' दिनमे दू खेप क' ल' आ। पाँच दिनमे सपरि जयतौक।

'गाछीमे पाँच सय बम्बइ आम तोड़ि क' राखल छौ। जल्दी जो बजन्ता। तीन खेपमे भ' कयतौक। बोरा लेने जैह'।

‘स्टेशनपर चलि जो बजन्ता। रतुका गाड़ीसँ बैतियावला आँखा ओथुन ।
ट्रेन डेढ़ बजे रातिमे छैक । एगारह बजे खाम्पी क’ स्टेशन चलि जैहें । दियासलाई
आ लालटेन अवस्स ल’ लिहै । आब कालमे लेसि लिहै ।

बजन्ता घिरनी जकाँ नचैत रहैत छल । कोनो काज लेल ‘नहि’ नहि बजैत
छल ओ, सभ काज फुर्तीसँ करैत छल—तुरन्त । पसेनासँ तर-बतर, डेढ़ सय बम्बड़
आम वा डेढ़ मन चाउर-धान वा आँटाल’ आँगनमे पहुँचैत देरी नव हुकुमनामा
जारी भ’ जाइत छलैक । ओ अपन मैल फाटल गमछासँ गरदनि पोछैत विदा भ’
जाइत छल ओहू हुकुमक तामिल कर’ । अकड़ल टेढ़ भेल गरदनिकेँ सोझ करबाक
वा दू मिनट बैसि क’ हकमैत कौड़केँ स्थिर करबाक मौका बहि भेटैत छलैक
कहियो ।

एकटा मौका मुदा ओकरा अवस्स भेटि जाइत छलैक—छोट-मोट चोरी
करबाक मौका । चोरियो एहन जे सभ बेर पकड़ले जाइत छल ।

माजेपरसँ चाउरक बोरा ल’ क’ बजन्ता आँगन आबय । माय ओइ
चाउरकेँ फेर तौलबैत छल । चाँउर डेढ़ सेर कम ?

—‘चाउर डेढ़ सेर कम कोना छौक बजन्ता ?’ बजन्ताक जबाब हाजिर ।
ओही कालमे ओ एतेक राश शब्द एक संग बजैत छल—‘गीर पड़लैक मलिकाइन ।
बाटमे एक जौर बोराक मुँह खुजि गेलैक । चाउर माटीमे गीर पड़लैक । सभटा
चाउर उठा लेलियैक मुदा किछु चाउर एकदम माटी-माटी हो गेलैक—छोड़ि
बेलियैक ।

आमक बोरा ल’ क’ गाछीसँ अबैत छल । आमक गिनती होइत छलैक ।
दस आम कम ।

—‘आम त’ दसटा कम छौक बजन्ता ।’ बजन्ताक जबाब हाजिर—‘नवीमे
गीर गेल मलिकाइन । बोराक मुँह खुजि गेलै आ आम पानीमे गीर के बहि गेल ।

आर ब्यो रहैत छलैक आँगनमे—काका, दादा वा बड़का भाइ, त’ ओकर
पसेनासँ तर बतर मुँह हाथ पर दू चारि चाट लागिये जाइत छलैक । खाली माय
रहैत छलैक त’ बचि जात छल । मुदा माइयो एकदम नहि छोड़ैत छलैक ।
ओकरा खोंचाड़ि क’ पुछैत छलैक—सत्त-सत्त बाज बजन्ता । चाउर आ आम
पसिनियाँकेँ द’ अयलहिक ने ।”

—जाउ मलकाइन” बजन्ता लजा जाइत छल—“अहूँ त’ मलकाइन चाल
करैत छी ।

—देख झूठ नहि नै बाज । पठबियोक खवासिनीकेँ पसिनियाँ लग ।”

बजन्ता ओहिना लजाइत बजैत छल—“अहूँ त’ मलकाइन । मोन बड़
थाकि गेल छल । दू चौठी ताड़ी—

माय ममतापूर्ण भत्सना करैत कहैत छलैक—दुर जाउ । चोरियो करैत
छी त’ पसिनिये लेलः अपन बहु बाल बच्चाक लेल नहि ।’

ओना चोरी ओ खाली पसिनिये लेल नहि करैत छल । सन्तु काकाक काज
सेहो बजन्ते चलबैत छलनि । बथानक सटले रहैत छलाह, बजन्ताक बड़ आस
छलनि । चारि खेप चाह पीबैत छलाह मुदा ने बथानपर गाय महींस छलनि, ने
उठौना लैत छलाह । मौका भेटिते बजन्ता दुहि क’ एकटा बड़का लोटामे द’ अबैत
छलनि । रुपयाक बदला चौअन्नी भेटैत छलैक सेहो बेर-सबेर आ बजन्ता दौड़ैत
छल पसीखाना ।

बजन्ताक इहो चोरी सभ बेर पकड़ल जाइत छलैक । दूध दूहि क’ जहिना
डाबा मायक सामने रखैत छल, ओ बूझि जाइत छलैक—“दूध आइ बड़ कम
छौक बजन्ता ? बजन्ता गोंगिआय लगैत छल—“संझियामे भैस एक गो खराब
घास खा गेल । दूध बिला गेल ।”

ओकर फेर दुर्गति होइत छलैक । डाँट-डपट आ कखनो काल दू चारि
थापर । बजन्ता मारियो खा क’ घिरनी जकाँ नचैत रहैत छल—कोनो काज बन्द
बहि करैत छल । रोद अखन झुक’ लगैत छलैक, दू बजेक बाद, अपन अलुमुनियमक
थानी लेने बजन्ता फेर भनसा घरक कोनटा लग ठाढ़ होइत छल—“कलउ
मलिकाइन ।”

कलउ माने दिनुका भोजन । भोजन माने मइआक दू टा मोट-मोट रोटी ।
संगमे नून आ तेल । कहियो काल अचार आ रतुका बसिया तरकारी । कहियो
काल चाउर वा घाटिक रोटि भेटि जाइ, त’ बजन्ताक आँखि चमक’ लगैक ।
जहिया भात भेटि जाइ, बजन्ता दौड़ क’ अपन बड़का बट्टा सेहो ल’ अबैत छल ।
थारीमे भात आ बट्टामे माँड । संगमे नोन । माँड-भात बड़ प्रेमसँ खाइत छल
बजन्ता । ओना किछुओ भेटैत छलैक ओ कहियो किछु ने बजैत छल ।

एक दिन ओ बाजल । पहिने माय लग ठाढ़ भेल—“हम पूब जेबै मलकाइन”, अइ गाममे गुजर नहि होत अब ।

माय चिन्तित भेल मुदा उपरसँ सहज बनल कहलकै—“त’ जो । हम आर कतेक पेट भरबी तोहर । कमाइ छेँ असगर आ खयनहार छौक छः टा । बहु छौ तेहन लूरिगर जे कती कोनो काज सरपबे नै करतैक । बेटाकेँ तो’ दुलार बनौने छेँ—कती काज लगेबे नै करबहिक । तीनू बंटी कखनो काल किछु करैत छौक, ब्रस । हम जे दैत छियौक ताहिसँ बेसी नहि द’ सकबौक ।

जे दैत छियौक मतलब दस कट्ठा जमीन । ओइमे जे उपजि जाइ’, नगद किछु नहि । खयनाइ आ जलखइ उपरसँ पावनि तिहारमे एकटा घोती आ गंजी, वर्षमे एक बेर ब्रस ।

माय लगसँ ससरि क’ बजन्ता डेराइत दादा लग ठाढ़ भेल—“हम पूब जेबै मालिक । आब गुजर नै होइ-ए । कमेबै ओतै-टोलाक लोक सभ जाइ-हए । हमरो जाइ दू । ‘दादा तामसे थरथर कांप’ लगलाह’ नमक हराम छेँ तो’ । सात पुस्तसँ अही घरसँ तोहर घर-परानिक गुजर होइत अपलौक अछि । आब तोहर गुजर नहि होइत छौक । पूबमे राखल छौक तोरा लेल तोरा । अजमा क’ देखि ले मुदा घुरि क’ हमरा लग नै अबिहेँ खबनिया कर’ से कहि दैत छियौक ।

बजन्ता चल गेल । ओकरा ने दादाक चेतीनी रोकि सकलैक ने मायक बुझौताइ । ओ निर्णय क’ चुकल छल । चल गेल सिल्लीगुड़ी । ओत’सँ कमाक’ पाइ पठब’ लगलैक । ओकर परिवारक गुजर होब’ लगलैक । माय चरवाहीमे मुसहरबाक छोटका बेटाकेँ राखि लेलक । सभ बजन्ताकेँ बिसर’ लगलैक ।

हमरा मुदा अधिक काल बजन्ता मोन पड़ैत छल । हम दुनिया ओकरे कनहा पर बैसि क’ देखने रही । दुर्गापूजामे जखन भरि गाम यात्रापर विदा होइत छल विजयादशमीक दिन, दादा हमरा बजन्ताक कनहापर बैसा दैत छलाह । महमदपुर-लाघा ओकरे कनहा पर बैस क’ जाइत छलहुँ । पैघ भेलापर जखन बाहर पढ़-लिख’ लगलहुँ, गामसँ विदा हैवा काल हमर बक्सा आ मोटा ल’ क’ बजन्ते स्टेशन पर अबैत छल आ जहिया छुट्टीमे गाम अदैत छलहुँ, स्टेशन पर लालटेन लेने बजन्ते ठाढ़ रहैत छल ।

बजन्ता पूब चल गेल—गाममे ओकर पेट नहि भरैत छलैक । ओकर मचानपर आब मुसहरबाक बेटा कोइला सुतैत छलैक आ पसिनियाँ आ सन्तु काकाकेँ आब ओकरे आस रहैत छलनि ।

बजन्ताकेँ लोक बिसरि गेल रहितैक कि तखने एक दिन ओ घुरि आयल । बीचमे एक दू दोर ओ गाम आयल छल । आँगन आबि हवेलीमे अपन हाजिरी ओ द’ गेल छल । लोक वेशी ध्यान नहि देलकै । एहि बेर सभक ध्यान गेलैक । ओ रोगी भ’ क’ घुरल छल—मरणासन्न । डाक्टर जवाब द’ देने छलैक । दिन गनि रहल छल । फूलल बड़की टा पेट—पीयर चेहरा आ लटपटाइत डेग । देहमे एक्को बून्द शोणित नहि । भूख मुदा खूब । अधिक काल आँगनमे आबि क’ बैसि रहैत छलैक । माय किछु स्नाय लेल द’ दैत छलैक । खाइत काल ओकर आँखिसँ दहो बहो नोर चुगीत रहैत छलैक । बजैत ओ किछुओ नहि छल ।

आ एक दिन ओकर बाजब सभदिन लेल बन्द भ’ गेलैक । बजन्ताक बाजब बन्दो भेलासँ संसारक कोनो काजमे कोनो फर्क नहि पड़लैक । ओकरा मोन पाड़बाक समय वा इच्छा ककरो नहि छलैक । भरिसक ओकर अपनो बेटा-बेटीमे नहि । युग बीति गेलैक ।

एकटा बताहि-बूढ़ झुरछुट स्त्री हमर आँगनमे बैसलि कानि रहल छलि आ बजन्ताक नाम ल’ रहल छलि । हम साकांक्ष भेलहुँ । हमर सभसँ छोट बहिन दादासँ पुछलकनि “ई के छैक दादा ?”

दादा बहुत रुग्ण छलाह । डाक्टर सभ जवाब देब’ लागल छलनि । ओसारा पर चौकीपर पड़ल रहैत छलाह । लोककेँ चीन्हबोमे भ्रम होइत छलनि । मुदा ओइ बुढ़ियाकेँ चीन्हि गेलथिब ।

—“ई माय छैक—बजन्ताक माय । अपन बेटा लेल कनैत अछि । हमरा त’ मायो नहि अछि, हमरा लेल के कानत ?” दादा कालक क्रमशः लग अगैत डेगक घाप सुनि रहल छलाह । बजन्ताक बुढ़िया माय जे गाम-गाम घुरि क’ भीख मँगीत छलि हुनका आन मायक स्मृति करा देने छलनि । हमर छोट बहिन अवाक हुनका लग बैसलि छलि । ओकरा किछुओ नहि बुझायल छलैक ।

आब दादा नहि छथि । हमर सभ भाइ बहिन सयान भ’ गेल अछि । बहिन सभ सासुर बसैत अछि आ सभ भैयारी पटना-जमशेदपुर रहैत छी । गाममे

माय एकसरि रहैत अछि । हमरा लोकनि पावनि-तिहारमे, सेहो खाली दुर्गापूजामे गाम अबैत छी ।

बजन्ताक बेटा पहिने अरकसियाक काज करैत छल दरभंगामे, अपन ससुरक संग । बहुओ संगे रहैत छलैक । बजन्ताक परिवार बिलट' लागल छलैक । माय ओकर बड़की बेटाकेँ गायक चरवाहीमे राखि लेने रहैक । बजन्ताक बहु सेहो मजूरी कर' लगलैक । बड़की बेटा सासुर गेलैक त' माय दोसर बेटाकेँ रखलकै । दोसरो सासुर गेलैक त' सभसँ छोटकी बेटाकेँ रखलकै, ओहो सासुर चल गेलैक ।

मुसहरबाक बेटा सभ दरभंगामे रिक्शा चलब' लगलैक । दू टा कानपुर चल गेलैक । मायकेँ चरवाहो भेटब मस्किल होब' लगलैक । चुगला सेहो आव गामे रह' लागल छल । भोरे जाइत छल, रातिक' धुरैत छल । दरभंगामे रिक्शा चलबैत छल । ओकर बेटा मुनराकेँ माय राखि लेने छलैक ।

—अहाँ त' सूति रहली । पंखा डोलबैत-डोलबैत हमर बाँहि ऐठि गेल आ अहाँ चैनसँ फोंफ काटि रहल छी ।

मुनरा देह डोलाक' हमरा जगा रहल छल । ओ हाथक पंखा राखि चुलल छल आ हमर देह डोलबैत झुकल ठाढ़ छल ।

हम कने सकपका गेलहुँ । पंखा ओकरा लेल सत्ते बड़ पैघ छलैक आ बड़ी कालसँ डोला रहल छल । ओकर बाँहि सत्ते ऐठि गेस हेतैक : हमरा आश्चर्यो भेल । ओ छौंड़ा अपन बात एकदम स्पष्ट बाजल छल — निडर आ निष्कम्प ।

—“आब भ' गेलैक, तो' जो ।” हमर एतबा कहैत देरी ओ पंखा उठा बिदा भ' गेल । हमर आश्चर्य कोतुहलमे बदल' लागल । मुनरा हमर अत्याचारक भले ओ अनजानमे भेल छल, विरोध ऐहन स्पष्ट शब्दमे क' गेल छल । राति खयला-पीलाक बादो सुतबामे बिलम्ब भेल । गमीसँ बड़ी काल छटपटाइत रहलहुँ आँखि लागल त' भोर तक सुतले रहि गेलहुँ । आरो देरी तक सूतल रहितहुँ यदि दरबज्जा पर किछु गुलगुल सुनि नीन्न ने उचटि जाइत ।

दरबज्जा पर आबि क' देखलहुँ जे हमर श्रीमतीजी तामसे थरथराइत मुद्रामे ठाढ़ छथि आ हमर छोटका बेटा लगातार कानि रहल अछि । माय हमरा देखितहि मुनरा पर हाथ चला देलकै—तोहर ई मजाल । नेन्ना पर हाथ उठले तो' ?

मुनरा एकदम तुरंगि उठल—ई हमरा मारलनि से किच्छो ने आ हम कने हाथ लगा देलियनि तकर एतेक हल्ला । जे हमरा मारत तकरा हम मारबै । मारि ला क' चरवाही न करव हम । लू अपन छिट्टा-खुरपी, हम जाइ छी ।

माय एकदम डरा गेल । ओकरा बड़ मस्किलसँ एकटा चरवाह भेटल छलैक । चाट त' ओ अपन पुतहु आ बेटाकेँ प्रसन्न करबाक लेल मारने छलैक । हमर श्रीमतीजी ओहिना तमसायलि ठाढ़ छलीह ।

हम अपना बेटाकेँ लग घीचि ओकरा चुप्प करैत मुनरासँ कहलियँक—तो' जो, घास कर ग' । तोरा क्यो नहि मारतीक ।

मायक आँखि डर विला गेलैक । श्रीमतीजी आँखि तामस आर लहकि उठलनि । हमरा भर्त्सनापूर्वक दृष्टिये ताक' लगलीह । मुनरा छिट्टा आ खुरपी उठा बिदा भ' गेल ।

पत्नीक भर्त्सनापूर्ण दृष्टि जखन असह्य होम' लागल त' हम आगू बाट दिस ताक' लगलहुँ । मुनरा छिट्टाकेँ माथसँ लगा ओकरा पीठ पर लटकीने आदहिना हाथक खुरपीकेँ बेर-बेर हवामे नचवैत कोनो गीत गवैत जा रहल छल जेना ओइ खुरपीक धारसँ काटि काटि क' आना लेल अपन बाट बनवैत जा रहल हो ।

हमरा ओ बड़ नीक लागल ।

जुलाई १९८७

विकलांग

ओकरासँ हमरा डर लाग' लागल अछि ।

हरदम लगैत अछि जेना ओकर आँखिमे कोनो घघरा लपलपा रहल छैक । ओना ओ हमरा आगाँ हरदम शान्त रहैत अछि, एक्को शब्द नहि बजैत अछि मुदा हमरा सदिखन ओकर आँखिमे लपलपाइत घघराक घाहीक अनुभव होइत अछि आ हम ओकरासँ डेरायल रहैत छी ।

डेरायल रहबाक ओना कोनो कारण नहि अछि । ओ हमर आदर करैत अछि । हमर सभ बात मानि लैत अछि मुदा ओकर ओइ आज्ञाकारितामे एकटा विचित्र ढंगक अवज्ञाक भाव मिश्रित रहैत छैक । भरिसक तेहन किछु नहि रहैत छैक, हमरे भ्रम होइत अछि । सदिखन लगैत अछि जेना ओकर पैघ-पैघ आँखिमे हमर प्रत्येक धारणा, प्रत्येक सिद्धान्त आ प्रत्येक आज्ञा लेल एकटा स्थायी अवज्ञा आ उपेक्षाक भाव आवि गेल छैक । यद्यपि अपन आचरण वा उक्तिमे, कमसँ कम आम्ने-सामने ओ हरदम आज्ञाकारी बनल रहैत अछि ।

अखनो ओकरा आँखिमे वैह भाव हेतैक—हम सोचैत छी आ मूड़ी उठा क' ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि । यद्यपि हमहीं ओकरा बजौने छियैक । ओ आवि क' चुपचाप हमर सोझाँमे ठाढ़ अछि आ हमर बकार नहि फूटि रहल अछि । ने आँखि उठा ओकरा दिस तकबाक साहसे भ' रहल अछि, ने जयबाक लेल डेगे उठि रहल अछि । आइ अन्तिम दिन छैक— हमरा बूझल अछि । वैह कहने छल । आइ यदि काज नहि हेतैक त' इहो अवसर समाप्त । ई अवसर समाप्त माने सभ किछु समाप्त । एकर बाद सरकारी नोकरीक लेल वयस नहि रहतैक ।

ओ जखन हमरा कहने छल त' कने आश्चर्य भेल छल । ओकर वयस एतेक कोना भ' जयनैक । पछिले साल एम०ए० पास कयलक अछि आ एहि साल वयस समाप्त । एतेक छोटेसँ स्कूल जाइत रहल अछि ओ ।

फेर अपन आश्चर्य पर अपने हँसी लागल । मैट्रिकक बाद दस वर्षमे एम० ए०, क कोर्स पूरा भेल छलैक । आइ० ए०, बी० ए०, आ एम०ए० तीनूमे दू-दू वर्षक बदला तीन-तीन वर्ष लागल छलैक । एहि लेल नहि जे ओ सभ क्लासमे एक-एक बेर अनुत्तीर्ण भेल छल । एहि लेल जे परीक्षा आ रिजल्ट लगा क' सभ क्लासमे तीन-तीन वर्ष लागल छलैक । आ बी० ए० (प्रतिष्ठा) आ एम०ए० क परिणाम दुहस्त करवामे एक वर्ष आर लागि गेल छलैक, तँ ओ बात सुद्धिआयल नहि छलैक । आइ अन्तिम दिन छैक आ ओ हमरा सोझाँमे ठाढ़ अछि । डरे हमरा मूढ़ा उठा ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि । ने ओकरा संग जयबाक लेल डेगे उठि रहल अछि ।

एकरा आवेशमे हमरासँ बजा गेल छल —“तोरा बुते किछु नहि हेतह । खाली जा क' झगड़ा क' लेबह, हम अपने जायब । चलिह' हमरा संगे, सभटा काज करवा देवह ।” ओ दाबल स्वरे मुदा जेना चुनौती दैत बाजल छल —“दरखास्त जमा करबाक अन्तिम तिथि मुदा लग आवि गेल छैक ।

आइ जयबा लेल तैयार बैसल छी बड़ी कालसँ । ओहो आवि क' सामनेम ठाढ़ अछि मुदा हम ओहिना बैसल छी आ आँखि उठाक' ओकरा दिस तकबाक साहसे नहि भ' रहल अछि । ओकरासँ हमरा डर लाग' लागल अछि ।

ओना ओकरासँ डरबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि । ओ हमर छोट भाइ अछि । पाँच भाइमे सभसँ छोट । नखी भाइ-बहिनमे मात्र एकटा बहीन ओकरासँ छोट अछि । हमरासँ बीस वर्ष छोट अछि ओ । पन्द्रह वर्ष पूर्व जवन दादा (हमर पिता) मरल रहथि, ओ मात्र बारह वर्षक छल । बापक दुलारु ! हरदम दादा ओकरा अपना संग रखैत छलथिन । सभ जिद्द पूरा करैत छलथिन । दादाक मृत्युक खबरि जहिया पहुँचल छल, आलोक हमरा संगे छल । अबोध छल । मृत्युक अर्थ मुदा बूझ' लागल छल । खबरि भेटितहि तेना आर्तनाद कयने छल जे हमर आँखिक नीर सुखा गेल छल । ओकरा आन बाँहमे समेटैत कहने छलियैक— नहि कान । दादा खाली हमर मरल छथि । तोरा सभ लेल त' हम छियो । तो' नहि कान' । हम छियो तोरा लेल ।

आ आइ आलोक सामने ठाढ़ अछि आ हमरा मूड़ी उठाक' ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि । ओकर आँखिक घघरा लपलपाइत पुछि

बैसल 'कहाँ गेल अहाँक आस्वासन ? अहाँ सामर्थ्यवान छी मुदा की क' सकलहुँ हमरा लेल आइ धरि । हमरा देवा लेल अछि की अहाँ लग—मात्र एकटा नपुंसक आदर्श । भरि जिनगी वह घोरि-घोरि क' अपनहुँ पीलहुँ आ हमरो सभकेँ पिआ रहल छी ।' अपन नपुंसकता आ सामर्थ्यहीनता पर ततेक ग्लानि भ' रहल अछि, जे डेगे नहि उठि रहल अछि । बड़ जोशमे कहने छलियैक जे हम अपने चलब, सभ काज भ' जयतह । तहियासँ सात दिन घुरि आयल छी आ काज नहि भेल अछि । पहिल दिन कोनो थाहे पता नहि लागल । गेटे पर हम डेरा गेल रही । चारू कात संगीतधारी सिपाही जेना विश्वविद्यालयक कार्यालय नहि कोनो सैनिक शिविर वा सुरक्षित जगहमे आबि गेल होइ । कोन विभागसँ काज हैत सँह पता नहि लागल । अधिकांश कक्ष खाली । उप कुलपतिसँ भेट करवाक इच्छा भेल त' पता लागल जे ओ आइ काहि कम्मे काल कार्यालय अबैत छथि । कहियो काल जखन कार्यालय अबैत छथि, तँ पुलिसक सुरक्षाक काज पड़ैत छनि । कार्यालयमे पुलिसे मात्र स्थायी रूपसँ रहैत अछि । बाँकी सभ अधिकारी-कक्ष वा कार्यालयमे ककरो भेटववा नहि भेटव अहाँक भाग्य आ संयोग पर निर्भर । तेसर दिन लाचार फेर अपन ओही परिचित अधिकारीक कक्षमे गेल रही जिनका लग तीन वर्ष पूर्व आलोकक एम० ए० क एडमिशन बेरमे जाय पड़ल छल ।

ओइ बेर नीक जकाँ स्वागत कयने रहथि । यद्यपि हुनकर कोठलीमे पचास सँ अधिक विद्यार्थी एक्के बेर संगे उच्च स्वरमे गप्प क' रहल छलनि । किछु नेता-नुमा प्राध्यापको लोकनि सेहो हुनका कोठलीमे कुर्सी पर पलथी मारने बैसल छलाह । सभक गेलाक बाद हम अपन समस्या कहलियनि—“आलोकक एम० ए०मे एडमिशन नहि भ' रहल छैक । ओकरा औनर्स नहि भेटल छैक यद्यपि ओकर सभटा पेपर्स नीक भेल छलैक आ जे सभ कमजोर विद्यार्थी छल तकरा सभकेँ फस्टक्लास भेटि गेल छैक ।” सुनिक' ओ हँस' लगलाह—“ई सभ त' होइते रहैत छैक, अइमे कोन आश्चर्य ?”

हमरा मुदा बड़ आश्चर्य भेल हुनकर ओहि वक्तव्य पर । कहलियनि—“हमहूँ त' अही विश्वविद्यालयक विद्यार्थी छी, एहि ठामक लेल तँ ई सोचबो अनर्गल छल ।” ओ ओहिना हँसैत रहलाह—“आब किछुओ अनर्गल नहि होइत छैक । आब खाली दुइए टा बात होइत छैक—सुतरब आ नहि सुतरब । जकरा सुतरैत

छै से बाजी मारि लेलक । भ' सकैत अछि जे अहाँव भाइक काफीक नम्बर बोली दोसर विद्यार्थीमे लागि गेल होइ आ कोनो कमजोरहा विद्यार्थीक काफीक कबर अहाँक भाइक काफीमे लागि गेल हो ।” हमर आश्चर्य बढ़िले गेल—“एना कोना भ' जाइ छैक ? कोनो नियन्त्रण नहि छैक अइ सभ पर ?” ओ हमर अज्ञानता पर हँस' लगलाह—“नियन्त्रण कोना नहि छैक । जकर नियन्त्रण छैक तकरो माध्यमसँ काज होइत छैक । उपकुलपति रजिस्ट्रार सभ बेकार । अखने देखलियैक नहि, कतेक नेता लोकनि छलाह एत ।” प्राध्यापक आ विद्यार्थी दुनू । हिनके लोकनिक हाथमे सभ किछु छनि । कबनो काल हिनके लोकनिक नाम पर आनो सुतारि लैत अछि ।

हम हतब्रभ भेल जाइत रही । हमर स्थिति देखि ओ बजलाह—“आब ई आश्चर्य करब छोड़ू । अहाँ अपन भाइक एम० ए०मे एडमिशन चाहैत छी ने ?” हम उत्साहित होइत कहमियनि—“अपनेन बहुत कृपा... । ओ हँस' लगलाह—“कृपा हमर नहि, विकलांग वर्षक भ' सकैत अछि । जय विकलांग वर्ष ।

हमरा कोनो अर्थ ने लागल । ओ स्पष्ट करैत कहलनि जे-जेफार्म जमा कयने छियैक तकरा किछु टाका-ताका चपरासी-क्लर्क आदिकेँ द' क' वापस ल' लिय' आ ओहिमे लिखि दियौक जे अहाँक भाइ विकलांग छथि ।

हमर स्थिति दयनीय भेल जा रहल छल—“ई कोना सम्भव छैक । हुनकर हाथ-पयर, नाक कान आँखि सभ दुस्त छनि । लोक देखतनि नहि ?”

ओ पूर्ववत् हँसैत रहलाह—“कयो किछु न देखतनि । अहाँ हुनकर दुनू हाथ मेडल एकटा फोटो खिचा क' आवेदन पत्र पर साटि दियौक । बाँकी हम सहायि लेब । अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्षक एतबो त' फायदा होअय ।”

हम हुनकर परामर्श स्वीकार नहि क' सकल छलियनि । चुपचाप बाहर आवि गेल रही । आलोक ठाढ़ छल । घुरैत काल सभटा बात सुनि ओकर आँखिमे फेर वह प्रधरा लपलपा उठलैक—“सभ चोर अछि सार सभ । भी-सी आ रजिस्ट्रार दुनू । एकरा सभ बुते किछु नहि हैत । आब हम अपने इन्तजाम क' लेब । एतेक दिन अहीं रोकैत रहलहुँ अछि, आब देखियौक ?”

हमरा फेर डर लागल । पुछलियैक ‘तोरा बुते कोन इन्तजाम हैतह ?’

विकलांग

[३६१]

ओ तमकि क' बाजल—'सम इन्तजाम भ' जायत । आइ काटिह दृष्टि टो इन्तजाम होइत छैक—चक्कू आ रुपैया । चाहै त' पाकेट रुरि दियौक, चाहै प्राणक घमकी दियौक, सबटा काज भ' जायत ।

हमरा आलोकक गप्पसँ बड़ कष्ट भेल । नवका पीढ़ी की सोचि रहल छल—से देखि मर्मान्तक पीढ़ा भेल । ओकरा डाँटि क' कहलियैक—'किछु कर'क काज नहि छ' । फेरसँ जाँच' लेल सम पेपरक हेतु पाइ जमा क' दहक ।

आलोक व्यंग्यसँ बाजल—'एकर मतलब फेर एक साल गेल । एडमिशनक तारीख खत्म भ' रहल छैक ।

दोबारा रिजल्ट होइत-होइत ठीके एक वर्ष चल गेलैक, तखन ओकर रिजल्ट भेलैक । फस्ट क्लास भेटलैक । कहाँ आनसो नहि छलैक, वहाँ फर्स्ट क्लास । अइ विश्वविद्यालय पर, जे हमर अपन विश्वविद्यालय सेहो छल, हमर आस्था डोल' लागल ।

ओना आस्था रखबाक कोनो प्रयोजन नहि छल । आलोकक आइ० ए० परीक्षामे जे भेल छलक तकरा देखत हमरा सतर्क रह' चाहैत छल मुदा हम ओकरा एकटा संयोग मानि टारि देने छलियैक ।

आलोककेँ आइ० ए०मे प्रथम श्रंणी नहि भेटलैक । नम्बर अयलैक त' देखिक' आश्चर्य भेल । इतिहासक एक पेपरमे अनुपस्थित । एक्के पेपरमे साठिस अधिक नम्बर रहबाक कारणे ओ पास क' गेल छल मुदा दोसर पेपरमे परीक्षा देलाक बादो ओकरा अनुपस्थित देखाओल गेल छलैक ।

बहुत बेर तहियो दौड़ल रही । हमरा परतारैत एकटा अधिकारी कहलनि—'आब छोड़ू एकर गीजा गीजा ! काँपी हेरा गेल हैतैक त' अनुपस्थित लिखि देल गेल हैतैक । बी० ए०मे नाम लिखाइए गेल अछि, तखन आब एतेक चिन्ता कियैक ?'

हम गुम्म रहि गेल रही । आलोक सुनलक त' बमकल छल—'काँपी हेरायल नहि हैतैक । ओइपर कोनो दोसर लड़काक काँपीक कवर साटि देने हैतैक । यह चालिए छक एकर सभक ।

हमरा ओहि दिन विश्वास नहि भेल छल । मुदा बी० ए०क परीक्षाक बाद जखन फेर एकर पुनरावृत्ति भेलैक आ अजिकारी स्वयम् ई बात कहलनि त'

मानि लेबाक अतिरिक्त कोनो उपाय नहि छल । तँयो हमरा मोनमे अपन विश्व-विद्यालय लेल बड़ उच्च भाव छल, जे, एहन बात मानबासँ बेर-बेर हमरा रोकि रहल छल ।

ओना स्वयम् हमर अपन समयमे किछु चर्च होम' लागल छलैक । हमरा जखन एम० ए०मे पहिल स्थान नहि भेटल त' हम अपनाके सन्तोष देने रही जे हमर तैयारी नीक नहि छल आ हमर अक्षरो बड़ खराब होइत अछि । हमर एकटा मित्र कहलक—'प्रोफेसर सभक डेरापर जाइत छे ?'

—'आइ घरि प्रयोजन नहि भेल अछि ।'

ओ हँस' लागल—'प्रयोजन त' छौक । प्रथम स्थान ओना भेटतौक ? व्यक्तिगत सम्पर्क आ प्रोफेसरक समथन अवश्य होइत छैक । डेरापर टहल-टिकोरा क' देल करहिक । परीक्षासँ पहिने पत्र भेटि जयतौक ।' हमरा क्रोध भेल छल । बिना मेरिटकेँ टॉप करबाक बात सोचब हमरा लेल असम्भव छल मुदा हमर ओ मित्र हमर धारणाक मजाक उड़बैत कहलक—'हमर भाइ साहबकेँ चीन्हैत छहुन ?'

हम सहमति मूड़ी डोला देलियैक । ओ बाजल—'हुनका बुढ़ारीमे डाक्टरेट चाहियनि । एकटा प्रोफेसरसँ काल्हिए गप्प करबा देने छियनि । तीन हजारमे तय भ' गेल छनि । प्रोफेसर हुनका लेल तीन हजारमे थीसिस लिखि देतनि आ डाक्टरेट सेहो दिसा देतनि । भाइसाहबकेँ बुढ़ारीमे अपन नामक संग डाक्टर लिखबाक सख पूरा भ' जयतनि ।

ई त' बड़ पुरान बात भेलैक । ओहू दिनमे ओकरा मानबामे हमरा आपत्ति भेल छल । आब त' लोक बहुत रास गप्प करैत अछि । ओइ दिन विश्व-विद्यालयक अविकारी स्वयम् कहलनि । आलोक त' बहुत किछु कहैत अछि । ओकरा हिसाये आब एहि विश्वविद्यालयमे बिना परीक्षा देने प्रथम हैब, बिना थीसिस लिखने डी० फिल भेटब आम बात छक । एहि सबपर लोककेँ आब आश्चर्यो ने होइत छैक । पछिला साल आनर्सक परीक्षामे ओ कहैत छल जे सभ परीक्षार्थी अपन अपन काँपी ल' घरपर चल गेलैक आ सन्ध्याकाल विश्वविद्यालय कार्यालयमे खिड़की बाटे खसा देलकै । परीक्षा भ' गेलैक ।

आलोकक एम० ए० क परीक्षा भेलक-दू सालक बदला तीन सालमे। अहू बेर ओकरा संग वैह भेलक जे सभ परीक्षामे होइत आयल छलैक। प्रथम श्रेणी नहि भेटलैक। नम्बर लेलक त' एक विषयमे फेर अनुपस्थित लिखल छलैक। आलोक ओहि दिन तेहन उग्र रूप धारण कयलक कि हमरा डर भेल। घर भरिमे सभके आशंका छलैक जे कोनो कांड ने क' बसय। ओकर वयस सेहो खतम भ' रहल छैक। कतहु कोनो प्रतियोगिता परीक्षामे नहि बसि सकत। एहन रिजल्टपर प्राध्यापकी भेटब सेहो असम्भव छलैक, तँ आइ० ए० एस क फार्म भर' लेल कहने छलियक।

ओकरा लग बी० ए० क ते सर्टिफिकेट छलैक जे मार्कशीट। औनर्स नहि भेटलापर पुनः जाँचक लेल जे आवेदन कयने छल, रिजल्ट भेलापर पुरना मार्कशीट सेहो देब' पड़लक। प्रथम श्रेणी भेटलैक मुदा परिवर्तित मार्कशीट अखन धरि नहि भेटल छलैक। सर्टिफिकेट सेहो नहि। आ हम बड़ विश्वासक संग कहने छलियैक जे हम अपने जायब, सभ काज भ' जयतैक।

तीन दिन निराश भेलाक बाद हम ओइ परिचित अधिकारी लग गेल रही। ओ हुनकर विभागक काज नहि रहनि मुदा ओ सम्बद्ध विभागमे फोन क' देलथिन। हम सम्बद्ध अधिकारीसँ भेट' क' सभ समस्या कहलियनि त' ओ हँस' लगलाह— 'अइ लेल अपने कियैक चिन्तित छी। ई सभ त' होइते रहैत छक। अपने निश्चिन्त रहू, सर्टिफिकेट आ मार्कशीट परसू अवस्स भेटि जायत।'।

हम आश्वस्त होइत बाहर आयल रही मुदा हमर बात सुनि आलोक चिन्तित भ' उठल छल— 'ओकरा बात पर नै जाउ। सार नम्बरी जातिवादी आ हरामी अछि। किन्तहु ओना काज नहि करत। अहाँ जिनकासँ फोन करबा देलियैक तिनकासँ त' ओकरा जानी दुश्मनी छैक, काज गड़बड़ा गेल। दुनू दू जातिक आ दू गुटक अछि।' हमरा मुदा पूर्ण विश्वास छल। तेसर दिन हम पहुँचल रही।

ओइ अधिकारीक कतहु पता नहि छलनि। कार्यालयसँ छुट्टी ल' हम दिन भरि हुनकर कोठलीक बाहर ठाढ़ रहि गेल रही। पता लागल ओ कोनो नेताक संग घूमि रहल छथि, कखन औताह तक कोनो ठीक नहि। सन्ध्याकाल हम निराश घुमि आयल रही।

दोसर दिन हम फेर कार्यालयसँ छुट्टी ल' क' पहुँचल रही। बारह बजेके बाद ओ कार्यालय आयल छलाह। हम बिना बजाहटिक प्रतीक्षा कयने कोठलीमे

पैसि गल रही। ओ कने रूच्छ होइत बाजल छलाह— 'छखने आयल छी, भारी काज सभ अछि, अपने कने प्रतीक्षा करू।'।

हम बैसैत कहलियनि— 'काज हमरो अछि आ हम दू दिनसँ काज छोड़ि अपनेक प्रतीक्षामे बैसल छी। आइ हम मार्कशीट आ सर्टिफिकेट लैयैक' जायब। काल्ह ओकरा पठयबाक अन्तिम तिथि छैक।

ओ कने संकुचित हैबाक अभिनय करैत बजलाह 'काल्ह जरूरी काज छल सचिवालयमे, दफ्तर दिस नहि अयलहुँ। आइ अपनेक काज अवस्स करबा क' राखब। अपने काल्ह भोरे आउ।'।

— "काल्ह मुदा अन्तिम तिथि छैक।"

— "अपने निश्चिन्त रहू। भोरे हम दुनू चीज अपनेक हाथ मे द' देब।"

आ आइ नओ बजेसँ तैयार बैसल छी। हमरे बजाहटिपर आलोक आबि क' सामनेमे ठाढ़ अछि। ने ओकरा दिस देखबाक साहस भ' रहल अछि, ने डेगे आगू बढ़ि रहल अछि। आलोकसँ हमरा डर भ' रहल अछि।

आलोक हमरा टोकैत अछि— 'देरी भ' रहल अछि। जयबैंक नहि? रजिस्ट्री सेहो कर' पड़त आइए।

हमरा तैयो ओकरा दिस तकबाक साहस नहि होइत अछि। चुपचाप उठि क' विदा होइत छी। भरि बाट मोटरमे गुमगुम बैसल रहैत छी, एक्को बेर आलोक दिस नहि देखैत छियैक। जेना-जेना विश्वविद्यालय कार्यालय लग अबैत जाइत अछि, हमर डर बढ़ले जाइत अछि। अजुका दिन निर्णायक अछि। हम आलोककेँ आश्वस्त कयने छलिलैक जे काज भ' जयतैक। यदि नहि भ' सकलैक आइयो त' कोना ओकरा दिस ताकि हैत हमरा? ओकर जिनगी हमरे हाथे नष्ट भ' जयतैक। हम जे नेनपनसँ ओकरा आदर्श आ उपदेश घोरि क' पिअबैत आयल छियैक, से काज देतैक ओकरा आइ?

हम डेग विसिअबैत आशंकित ओइ अधिकारीक कक्ष लग पहुँचि परदा हटा भीतर हुलकी देलियैक। जकर आशंका छल, सैह भेल। कक्ष खाली छल। हम भीतर पैसि हताश एकटा कुर्सी पर बैसि रहलहुँ। आलोक बाहरे रहि गेल, कतेक काल बीतल से ज्ञात नहि भेल। बैसल-बैसल हमरा प्रायः झपकी आबि

गेल छल । तन्द्रामे लागल जेना क्यो टोकि रहल अछि— “अहाँ एना भीतर कोना आवि गेलहुँ ? कोन काज अछि ?”

हमर भीतर जेना एकाएक किछु लहकि उठल । कने ऊँच स्वरमे कहलियनि ‘हमरा चीन्हैत नहि छी अपने ? नहि जानल अछि जे हम किएक बैसल छी ?’

—“बिन कहने हम कोना बूझब ?” ओ क्रोधसँ बजलाह ।

हमरा भीतर जेना एक्के संग हजार चिनगी लहकि उठल । ‘हम मुदा अहाँकें बूझि गेल छी । अहाँ झुठा आ अयोग्य छी । चारि दिनसँ हमरा दौड़ा रहल छी । आइ ग्यारह बजे हमरा कागज देब’ लेल बजौने रही आ आब हमरा चीन्हैबामे संशय भ’ रहल अछि ।’

ओ सकपका गेलाह—‘ओ कागज ? आइ तँ नहि भ’ सकत ।’

हम कण्ठ फाड़िक’ चिचिया उठलहुँ—नै हैत ? कोना ने हैत ? आइ बिना ओ कागज लेने हम नहि जायब । नहि त’ आइ—आइ कार्यालयमे आगि लगा देब हम । अहाँ सन-सन भ्रष्ट आ अयोग्य लोककेँ कुर्सीसँ घिसिया क’ चौराहा पर ठाढ़ क’ देब । अइ सड़ल-गलल व्यवस्थाकेँ लतिया क’ ओधरा देब । हम आइ नै हटब एत’सँ बिना काज भेने ।

उत्तेजनासँ हहर देह थरथर काँपि रहल छल । आँखिसँ घघरा आ मुँहसँ फेन बाहर भ’ रहल छल । आलोक भीतर दौड़िक’ आयल आ हमरा भरि पाँज पकड़ि कुर्सी पर बैसा देलक । चारु कातसँ आरो बहुत रास लोक काँठलीमे आवि गेलाह । ओ अधिकारी सकपकायल अपन कुर्सीमे गड़ल छलाह ।

लोक सभक भीड़ बढ़ैत देखि ओ उठलाह आ भीतर कार्यालयमे जाइत बजलाह—‘अपने अनेरो बिगड़ि गेलहुँ ! बैसू अपने, हम कागज लेने अबैत छी ।

हमरा आब अपन स्थितिक ज्ञान भेल । आलोक अविश्वासपूर्वक हमरा दिस देखि रहल छल जेना हम कोनो अनचीन्हार व्यक्त होइ । बाँकी जमा लोक सभ हमरा प्रशंसात्मक दृष्टि देखि रहल छलाह जेना हम कोनो बड़का भारी काज कयने होइ । हमरा अपन देहमे हजार-हजार चिनगीक लहकि अखनो लागि रहल छल आ हम ओहि घाहीसँ छटपटा रहल छलहुँ । ओकर विपरीत आलोकक आँखिमे जत’ सदिखन एकटा चिनगी लहकैत रहैत छलैक एकटा विस्मय आ

आश्चर्यक भाव छलैक । ओ हमरा पकड़ने हमरा लग ठाढ़ छल जेना हम कोनो नेना होइ आ ओ हमर अभिभावक रहय । ओकरा आँखिमे हमरा लेल चिन्ता छलैक ।

किछुए कालमे ओ अधिकारी कागज लेने बाहर अदलाह । आलोक ओकरा दस्तखत क’ ल’ लेलक । हम ओकरा संग उठि क’ कोठलीसँ बाहर आवि गेलहुँ । ओइ अधिकारीकेँ औपचारिक धन्यवादो नहि देलियनि ।

पोर्टिकोमे अपन मोटर दिस जाइत काल हमरा ई देखि क’ आश्चर्य भेल जे हमर आ आलोकक आँखिक भावमे अदला बदली भ’ गेल छल । हमरा आँखिमे ओकर आँखिवला चिनगी लपलपा रहल छल आ ओकर आँखिमे हमरा लेल चिन्ता आ भयक ओहने भाव आवि गेल छैक जे हमर आँखिमे सदिखन ओकरा लेल रहैत छल ।

चारु कात ठाढ़ लोक हमरा तेना देखि रहल छलाह जेना हम कोनो बिजेता होइ मुदा हमरा लागि रहल छल जेना हम एकटा पैघ आ बहुत दिनसँ लड़ि रहल युद्धमे पराजित भ’ गेल होइ ।

आलोक हमरासँ जीति गेल छल मुदा ओकर आँखिमे बिजयक उत्सासक बदला एहन गहन चिन्ता किएक छलैक ?

□

सितम्बर १९८७

बाढ़ि

ओ सभ तेना डेरायल छल जेना कयो पछोड़ घयने होइ जे मोका भेटिते हि नरेटी चाँपि देतैक। आशंकित आ आतंकित रहि रहि क' चारकात तकैत जेना सभदिस पसरल अन्हारकेँ चिरैत कयो बहरेतैक आ ओकरा सभकेँ गीड़ि जयतैक।

अन्हार नीक जकाँ पसरि गेलाक बाद मानसक मैक्सी टैक्सी गामक सिमान लग ठाढ़ भेल छलैक। बिदा सबेरे भेल छल, लगैत छलैक जेना दू तीन बजेसँ पहिन्हि गाम पहुँचि जायत। बाट-घाटक ठेकान नाह छलैक, बाढ़ि नीक जकाँ घटलो नहि छलैक—सँह सुनने छल समसँ। मुदा बाटमे एहन किछु नहि अभरलैक—खाली रोडक दुनू कात पानि रहैक जे सटकि रहल छलैक। बेनीवाद पहुँच' लागल तँ लगलैक जेना आब गाम पहुँचबामे बेसी समय नहि लगतैक। तकर बाद मुदा सभटा गणना गड़बड़ा गेलैक।

तैयो गामक सिमानपर साँझ झुकलापर पहुँचिये गेल। सभ साल जकाँ ओ सभ अहूँ बेर, ओही चौबटियापर सलहेसक मंदिर लग ठाढ़ छलक—ठीक ओही चौबटियापर जत' उत्तरे दछिने पिचरोड कमतौल-दरभंगा जाइत छैक आ पूबे-पछिममे कच्ची सड़क निकलैत छैक। पछबारी कातबला बाट हाइस्कूल होइत रेलवे लाइन धरि जाइत छैक जत' गामक सिमान खतम होइत छैक आ पुवारी कात बला मटिआह बाट हरिजन टोल होइत भुतही गाछीक कात दने ब्रह्म बाबाक स्थानसँ सटैत, वनुकटोली पार करैत, शिव मंदिर आ राधा कृष्णक मंदिरक उत्तरबारी कात दने बीच गाम धरि चल जाइत छैक।

ओही चौबटियापर आब लोककेँ सवारी छोड़ि देब' पड़ैत छैक। बस वा मिनीयो बसकेँ जयबाक बाट नहि छैक। अपन कार जीप वा टैक्सी रहय वा रिक्सा-टमटम होइ, त' कहना गाम धरि चल जा सकैत छैक। पहिने एना नहि छलैक, बस वा मैक्सी-टैक्सी ओकर दरबज्जा धरि चल जाइत छलक। मुदा

जहियासँ रातिक' चोराक' फनैत झा सड़कक सभटा माटि काटिब' अपन देवालक लेल गिलेवा बनवा लेलथिन तहियासँ झंझट भ' गेल छैक। तकर बादो माटि ताँटि द' मैक्सी टैक्सी दरबज्जा धरि चल जाइत छलैक। मुदा जहियासँ फनैत झाक देखाउसमे बुधियार मिसर सेहो अपन बाड़ीक टाट घुसकाक' आधा बाट धरि ल' अनलथिन, ई बाट एकदम शिकस्त भ' गेल छैक आ फियेट आ एम्बेसेडर-केँ गाम धरि लांब'मे चारि टा मजूरकेँ बोदारि ल' क' आगू-आगू चल' पड़ैत छैक। पहिने ओ सभ 'माटि काटिक' बाट भरैत छैक, तखन सवारी आगू बढ़ैत छैक।

तैयो मानस सभ बेर मैक्सी टैक्सी लैये क' अबैत छल गाम। सभ साल एक बेर दुर्गापूजामे। दोसर कोनो उपाइयो नहि छैक। परिवारक सभ लोककेँ मिलाक' तीस पैंतीससँ बेसिये भ' जाइत छैक, ओतबे संख्यामे मोटरी चोटी। पछिला दू सालसँ मैक्सी टैक्सीबला हँसी कर' लागल छैक—आब मैक्सी टैक्सीसँ नहि हैत। पूरा बसे रिजर्व करा लिय'।

मानस बस रिजर्व नहि करबैत अछि, मुदा ओकर मैक्सी टैक्सी हरिजन टोलक लोकक लेल रिजर्व छैक। पहिनेसँ सभ पता लगाने रहैत छैक आ सलहेसक थान लग ठाढ़ रहैत छैक—बूढ़-स्त्रीगण, बच्चा सहित। हाथे हाथ सभटा मोटरी-चोटी उठा लैत छैक। मजुरीक लोभमे नहि, वर्ष भरि पावनिमे इनामक लोभ। मेला देख' लेल दू चारि टा रुपैया। आ से देबामे मानस कीहयो कंजूसी नहि करैत छैक।

अहूँ बेर सभ ओहिना ठाढ़ छलक। मोटा-पेटी-बक्ससँ सूटकेस सभ हाथो-हाथ उठा लेलकै। जकरा किछु नहि हाथ लगलैक से कोनो बच्चाकेँ कोरामे उठा लेलकै। जकरा बच्चो नहि हाथ लगलैक, से किछु चेतनो भेल नेनाकेँ टाङ्गि लेलकै। लालटेन आ टार्च माय चरवाहक हाथे पठवा देने रहैक। झटपट सभ बिदा भ' गेल।

बिदा आनोबेर एहिना होइ छल मुदा अहूँ बेर मानसकेँ लगलैक जेना सभकेँ हड़बड़ी होइ—पुरुष, जमीजाति सभकेँ। अन्हारोमे बेराबेरी ओकर सभक चेहरा देखैत मानसकेँ लगलैक जेना सभ डेरायल आ संशंकित होइ। आंगनमे पहुँचैत देरी, अपन अपन माथक मोटा ओसारा पर रखैत देरी सभ बिदा हैवा लेल उद्यत भ' गेलैक। 'सभसँ' आगू डेग उठौलकै ननकू—'सभटा वस्तु जाँतिक

जिज्ञान क' लू मालिक। हमरा आर जाइ छी आब ! बड़ी देरी हो गेल,
नै जानि की होत आइ राति।'

मानसकेँ जे आशंका गामक सिमाने पर भेल छलैक से आब मजगूत भ'
गेलैक मुदा कोनो अर्थ नहि लगलैक ननकूक बातक। राति बेसी भ' गेलैक तँ
एना डेरायल किएक छैक ई सभ। राति विराति खेत-खरिहान, गाछी-विरछी
आ बाट-वाट बीआइते त' रहैत अछि ई सभ ? आइ कथीक डर पैसि गेल छैक ?

सभकेँ पाइ दैत मानस ननकूसँ पुछलकै—'एना डेरायल किएक छै'
ननकू ? कोन बात छैक आखिर ...

कनेक भरोस भेइतहि ननकू लग चल अयलैक आ फुसफुसा क' बजलैक—
“वाते तेहने हइ मालिक ! वारण्ट हय हमरा आरक नाम। बंदा, कैलू,
बौकू आ रीझनक संग हमरो नाम वारंट। हय। 'बितली-बितली रातिमे पुलिस
घरपसी करै हय डांडमे रस्सा लगव' खातिर। अपन-अपन घर छोड़ि भरि-
भरि राति गाछी-विरछी, बाध बोनमे नुकायल रहै छी “साँप कीड़ाक संग राति
बितबै छी मालिक”

मानस आर अवाक भेल जाइत रह्य। ओकरा कोनो अर्थ नहि लागि
रहल छलैक। फेर पुछलकै—“वारण्ट किएक छौक तोरा सभक नाम ? कोनो
चोरि कयने छहिक तो सभ ...

अइ बेर ननकूक बड़का भाइ बौका बाजल—“चोरियोसँ बड़ि क'
मालिक ! लूटि मारि कयने छियैक हमरा आर ! सरकारी गहूम लूटने
छियैक। रिलीफ बाँट' लेल जे गहूम आयल छलैक से लूटने छियैक हमरा
आर...”

मानसकेँ किछु मोन पड़लैक—“सत्ते लूटने छहिक रिलीफक गहूम तो
सभ ! अखबारमे देखने रहियैक किछु दिन पहिने। अपने ब्लाकक समाचार
रहैक मुदा गामक आ तोरा सभक नाम नै रही।

रीझन जे एतेक काल चुप्प ठाढ़ छल, एकाएक कने तीव्रतासँ बाजल—
“अखबारो तँ अहीं आरकेँ हय मालिक। गरीब गुरबाक गप्प के छापत ?
ओकरा जे मोन हेतैक छापि देत आ हमर आर दोषी कराए ...”

बाढ़ि

ननकू ओकरा बीचमे डंटलकै— बेसी लुब लुब नै कर रीझना ! मालिक
केँ सभटा बात नीक जकाँ कहन।

मानस सेहो आग्रह कयलकै— “कह ने हमरा सभटा असल बात ! की
कयलहिक तोरा सभ ? किएक निकललौ वारण्ट...”

रीझना खूब संयत स्वरमे कह' लगलैक—“सभटा बात सत्ते कहब
मालिक। हम गेल रही ओइ हँसेड़ीमे। मुदा ई ननकू नै गेल छल' कैला
नहि गेल छल। बौका आ बंदा त' गामोमे नहि छल। तँयो एकारो सभक नाम
वारण्ट हइ—हमरो नाम हय। हमहू की एकसरे गेल रही,—आगू-आगू गेल
रहथि किसनपुरक बाभन सभ—अहू गामक बाबू भैया सभ रहथि। टोल देने
जाइत रहथि त' हमरो आरकेँ हाँक देलनि—गहूम लुटाइत छैक, चलत चल सभ
कयो।” हमरो आर हुनका सभक जोरे विदा भ' गेली। हम रही ! संगमे
दू चारि टा मर्दाना आ किछु जनी जाति सेहो गेल। सभ पंचायतमे रिलीफक
गहूम बाँटा गलैक मुदा अपना पंचायतमे डीलर-मुखिया नै जानि कोन जोगारमे
लागल छल। लोक भुक्खे मरैत छल, मुँहमे दाता गला कतना रोज हो गेल
रहै सभके। ने घरमे अन्न पानि, ने काज। बाहर जा क' रिक्शा ठेला चलायब,
सेहो बाट बन्न। वस्तु जात निवृत्ता। बिना दामकेँ किच्छो मिले बला नहि
आ दामो केहन। मटिया तेल आ नीमक दस टके किलो। दियासलाई एक
रुपैयामे आ चाउर गहूम आलू दस रुपये किलो। सेहो एगो दूगो दोकान
गोलापर खूजल। मूड़ी पर मूड़ी वजरैत। हमरा आर कहाँ ओइ भीड़मे जयती।
भूखल पेटे दिन कटैत रही। गहूम अयलैक तँ उम्मेद लगलैक मुदा पाँच दिन
ओहिना बोरामे बन्ने रहलै मालिक। तखनी बाबू सभ हँसेड़ीमे गेला, जोरे
हमरो आर गेली। जहिया बाढ़ि अयलै, माल जाल समेत भागिकेँ अहींक
ड्योढ़ीमे गेली सभ कयो। सभकेँ ओसारापर जगह देलनि बूढ़ी मलकाइन माल
जालके पोरा सेहो। दू दिन खाइ लेल अन्न आ भानस लेल जरनी देली। तकरा
बाद सभ अन्हार। कयो ककरो पुछे वाला नहि। माल जाल मरलै, मनुख
मर' लगलै—तँयो हमरा आर पेट बन्हने पड़ल रही। तखनी बाबू भैया लूटि
कयलनि—हमरो आर किच्छो पैली। जतना गमछामे अँटल, बाहि लेली,
जनी जातकेँ लूआ खोइछमे जतना अँटल उठा लेलकै। बाबू भैया सभ बोरा
उठा उठाकेँ ल' गेला। बेसी तँ जिआन हो गेलै। लूआ लूझीमे बोरा सभक मुँह
खुजि गेलै आ गहूम पानिमे गिर पड़लै। घटलो पर डाँड़ से ऊपर पानि रहैक।

बाढ़ि

एतवा कहैत कहैत रीझना हाँक लागल, किछु काल दम लेब' रुकल रहल। फेर कह' लगलैक—“अहीं निसाँफ क' मालिक। रिलीफक गहूम ककरा लेल आलय रहल? हमरे आर वास्ते ने। मदनपुर आ अहाँ गामक बाबू भैया लेल त' ने आयल रहलै। ओ सभ त' ओही बाढ़िमे काँच पाकल खाइते छलाह। सँझियाके सँझिया त' हमरे आरके बितैत छल। हमरे आर लेल आयल गहूममे से दू चारि सेर उठा अली—से हमरा आर चोर डाकू हो गेली आ जे सभ बोराक बोरा उठौलनि से सभ हो गेला साधु-महात्मा। आ काज केहन कयलनि ई साधु महात्मा सभ, सेहो सुनिए लू मालिक। विहाने भेले जब हल्ला होलैक जे पुलिस दरोगा अबै छै, साधु-महात्मा सभकेँ हथकड़ी लगतनि, त' ई फेकन बाबू पानि हेलि क' दरभंगा गेला आ हमरा आउरक नाम लिखा अयला। पुलिस दरोगा घर पैसि गेल। हम सभ जनीजातिकेँ घरमे छोड़िक' किम्हरो पड़ा गेली। जेहो दू चारि सेर गहूम अतो रही, सभ पानी फेकि देली। तहिया से पुलिस पछोड़ धयने हय। अपनी लुटिहारा सभ जेनमँ घरमे बैसल हय आ हमरा आउर राति बिराति बने बने बौआ रहल छी मालिक।

रीझनकेँ रोकैत बौका बजलैक—पकड़ल जायके डर नै हय मालिक। जहलमे खायके त' निजिये जायत। ओही लेल त' एतेक हक्कर पेलैत छी। मुदा बच्चा बुतरू आ जनी जातिके की होत? कोनो बाजो ने मिल' हइ ओकरा आरके जे कमाइयो क' खा लेत। ओना हमहुँ की करैत छियै। नुकायल फिरैत छी। साँझक साँझ उपास त' जारिये हय। सभक लेल बाढ़ि अयलक आ गेलैक। हमरा आर त' अखनो बाढ़ियेमे डूबल छी मालिक, एकदम अथाहमे...

बैदा निहोरा करैत बजलैक—हमरा आरकेँ अइ बाढ़ि से बचा लू मालिक। सभटा विरजू बाबूक हाथमे छनि, कोरट-कचहरीमे काज करैत छथि। मदनपुरक सभ वभनाक नाम रहै, अहू गामक दू चारि जनक नाम रहनि... सभक कटवा देलखिन सूरजू बाबू। खाली हमही पाँच गोटे फँसल छी। पाँचोस पाँच-पाँच सय मंगैत छथि... कहाँतँ लाउ अढ़ाइ हजार हमरा आर? देही बेचिके नै मिलत। पाँच टाका लेल देह तोड़ैत छी सभ दिन... अढ़ाइ हजारक मुँह त' खानदानोमे नै देखलक कहियो कयो... घर-घराड़ी बेचियो देव तँयो नै होत मालिक... हमरा आरकेँ बचा लू।

मानस कोनो स्पष्ट आश्वासन नहि देलक। ओ सभ नेहोरा बिनती करैत चल गेलैक। जनी जाति सभ सेहो जाइत जाइत नेहोरा कयलक—“एगो अहींकेँ आस हय मालिक। बचा लू हमरा आरके

ओकरा सभकेँ जाइत देरी निरसू काका ससरि क' लग अयलथिन। बड़ी कालसँ आँगनमेठाढ़ ननकू-रीझनाक गप्प ओ सुनि रहल छलाह। ओकरा सभक जाइते ओ अपन भाषण शुरू कयलनि—“अहाँ एकरा सभक बातमे नहि बाउ मानस। अहाँ त' गाममे रहिते ने छी। गामक हाल की जाने' गेलियैक? एकर सभक माथ उनटल छैक। सरकार पिछड़ा वर्गक नामपर सभटा सुविधा एकरे सभकेँ दैत छैक। पिसाइत त' छी हमरा लोकनि। कहबा लेल त' सभसँ पंच जाति मुदा हालत सभसँ बदतर। एहि बाढ़िमे त' साँझक साँझ उपासे बितल। पचास सालने एहन बाढ़ि नहि देखल। आँगनमे भरि डोढ़ पानि पँसल छल-सभ घरमे पानि। खाली अहींक घर बाँचल छल।

निरसू काकाकेँ मोड़ लगैत मानस कहलकनि—“हमरा लोकनि त' अपने डरे त्रस्त रही। कोनो खबरि नै भेटैत छल' माय गाममे एकसरि छल।

—“सभटा भगवानक इच्छा।” कहैत निरसू काका चलि गेलथिन। मानस अतन इलातमे आबि क' बैसि गेल। कनेक कालक बाद आरो लोक सभ जुमलैक। किमुन काका सेहो अयलथिन। हुनकर खिस्सा सुनि मानस स्तब्ध रहि गेल। एहन वयस आ एतेक अदम्य साहस। किमुन काका कहलथिन—“तोरा त' विश्वासो ते हेत' जे ई बूढ़, पचहत्तरि वर्षक ई बूढ़ छाती भरि पानिमे दिनक दस बजेसँ राति बारह बजे धरि चौदह घण्टा लगातार चलत रहल। सेहो खाकी हाथ नहि। दुनू हाथमे दू टा झोरा “कान्हसँ उपर उठौने भूख-पियाससँ येहाल। तौ सुनि क' हँसब': मुदा एको पाइ मिथ्या नहि कहैत छिय'। एक दिन पहिने तोहर काकीसँ लड़ि क' लहेरियासराय चल गेल रही। एको पाइ द' क' नहि गेल छलथिन। भोरे सुनलियैक जे बाढ़िक पानि बढ़ि रहल छैक। पक्की सड़क डूबि गेलैक, ट्रेन बन्द, सवारी बन्द। मोनमे बड़ चिन्ता भ' गेल... बाट बन्द भ' गेलैक पाँचो दिन त' बेचारी गाममे भूखे मरि जयतीह। एकसरि गाममे छलीह। ऐइ बाढ़ि-विपत्तिमे के देखतनि? भूखे मुड़ल पड़नि रहि जयतीह घरमे। संगमे जे पाइ छल ताहिँ चार-आँटा, नून-सलाइ, आलू कीनिक' दू टा झोरामे भरि लेलहुँ आ

बाढ़ि

[२७३]

विदा भ' गेलहुँ पयरे। दस बजे दिनमे बिदा भेल रही लहेरियासरायसँ। मठवी मोड़ तक अबैत अबैत साँझ होब' लागल। समयक पतो न चलत छलक। झमझम पानि बरसैत। सूर्यक कतहुँ पता नहि। ओइ मोड़सँ बिदा भेलहुँ त' किछु गोटे अपन घरसँ चिचिया क' मना कयलक मुदा हम नै मानलियक। दू गोटे आगू-आगू जा रहल छलाह। साहस बढ़ल, हमहुँ आगू बढ़लहुँ। आगू जाइत दुनू व्यक्ति कखन निपत्ता भेला, पतो नै लागल। प्रायः नौजवान छलाह—जल्दी-जल्दी आगू बढ़ि गेलाह। हम बूढ़ थाहि-थाहि क' आगू बढ़ैत रही। मूसलाधार वर्षा, छातीभरि पानि—“खूब तेज करेण्ट आ धुप्प अन्हार। लागल जेना ओइ अन्हारकेँ देखबाक लेल औंठांमे आँखि निकलि गेल हो। औंठासँ पानिमे दूबल पिच स्पर्श करैत आगू बढ़ैत गेलहुँ। कतहुँ मनुक्खक नामो निशान नहि। चारूकात पसरल पानि आ चतरल अन्हार। कात करोट घर सभ पानिमे डूबल। एकटा डूबल घरक मुहथरि पर चौकी पर चौकी गेटि क' एकटा स्त्री बैसलि छलि। किछु भरोस भेल। पानि मंगलियेक—कण्ठ एकदम सुखा गेल छल। एकटा बाटीमे ओही बाढ़िक पानि देलक पिब' लेल। पिअल नहि गेल। आगू बढ़ैत गेलहुँ। एकटा डेग एम्हर ओम्हर होइत त' दहा क' कत' चल जयतहुँ पतो नहि लगैत। कहुना आँगन पहुँचलहुँ आ पहुँचितहि बेहोश भ गेलहुँ। आब त' कतेक दिन भेल मुदा अखनो अंग अंग दर्द करैत अछि आ स्मरण मात्रसँ देह सिहरि जाइत अछि।

किसुन काकाक गप्प सुनि क' मानस सिहरि गेल छल। मुदा ओ पूर्णतः स्वस्थ छलाह। ई आतंक-कथा आब हुनका लेल उपलब्धि-कथा भ' गेल छलनि—ई स्पष्ट लगलैक मानसकेँ। एकरा दोहरबैत काल आब ओ सिहरैत नहि हैताह गौरवान्वित होइत हैताह।

मानसकेँ विचारमे पड़ल देखि किसुन काका हँसैत कह' लगलथिन “अइ बाढ़िमे खाली नोकसाने आ भयेक कथा नहि भेलैक। किछु कथा त' बेस मनोरंजक। तो' सुनि क' हँसबह। पलटू बाबू एकटा मोट सन सिल गाछीमे छोड़ने छलाह। बाढ़िमे ओ दहाक' श्याम बाबूक आँगनमे आबि गेलनि। श्याम बाबू ओकरा चीरि क' बाढ़िमे पन्द्रह दिन अपन काज चलौलनि। बाढ़िक बाद पलटू बाबू अपन सिलक पता लगौलनि तावत आधा सिलक जारनि जरि चुकल छलनि। कहुना आधा जारनि घर अलनि मुदा चिराइक पाइ पलटूये बाबूकेँ देब' पड़लनि श्याम बाबूकेँ।

किसुन कका हँस' लगलाह मुदा पारस लोहछिक' बाजल—“बाढ़िक एहन एहन हृदय विदारक कथाकेँ छोड़ि क' अहाँकेँ जारनि आ सिलक कथा सुनैत अछि किसुन कका। हँसीक कोनो गप्प नहि छलैक अइ बाढ़िमे मानस भाइ। छलैक खाली तबाही आ बरबादी, दुख आ दूजेड़ी, बिमारी आ मृत्यु। बितलाहा एक मास आइयो एकटा दुस्वप्न जकाँ झकझोरि जाइत अछि। माल जाल आ मनुक्खक कतेक जान गलैक, तकर हिसाब राखब मस्किल। दुसध टोलीमे कम-सँ-कम पांच टा मुइल। कयो भूखसँ, तँ कयो बिमारीसँ। भीखूक बाप मरलैक आ बंकूक बेटा। एकटा खिस्सा तँ रोइयाँ भूलकाब' वला अछि। दू टा भाइ हेलि क' टूटल बान्ह पार कर' लागल। धारमे बहि गेल। बहैत-बहैत दू कोस धरि चल गेल। साँझ भ' गेलैक, पानिक कतहुँ अन्त नहि—” अथाहमे बहैत रहल दुनू। किछु कालक बाद आगू-आगू बहि रहल छल दुनू भाइ आ पाछू-पाछू एकटा गहमन साँप। साँप बहैत-बहैत बडका माइक पीठपर आबि गलैक। किछु काल ओ दम सघने रहल। मुदा पीठपर साँप—“देह सिहरैत रहैक। हाथ बढ़ाक' ओकरा अपन पीठ परमँ फेंक' चाहलक, हाथमे हबकि लेलकै। तँयो ओकरा पकड़ि क' जोरसँ आगू फेकलक। साँप जा' क' आगू-आगू हेलैत छोटका भाइक पीठपर खसलैक आ ओकरो हबकि लेलकै। दुनू भाइ समाप्त। दुनूक लाश ओइ अन्तर्हीन पानिमे भसिआइत रहलैक।

किसुन कका पारसक बात सँ कुड़बुड़ाइत बजलाह—“आ एकरा देखबाक लेल ओही अथाह पानिमे तो' उपस्थित छलाह—प्रत्यक्षदर्शी, आ कि नहि।

पारस बिगड़िक' उठिक' चल गेल। किसुन काका बजलाह—“उड़ती पसार'बला विपत्ति-कालमे सेही आनन्द लैत रहैत अछि मुदा हम ई कहबह मानस जे एहन बाढ़िमे अपन पचहत्तरि वर्षक जिनगीमे देखलहुँ, ने अपन बाप दादासँ सुनलहुँ। गाममे आघासँ बेसी घर ढहल। १९३४क भूकम्पोमे एहन तबाही नहि भेल छलैक। बाढ़ि कहियाने उतरि गेलैक मुदा ओकर विभीषिका अखनो व्याप्त छैक। परसू सुकना मरि गेल। डवराक सड़ल पानिसँ छोट-छोट माछ छानि क' अने छल। ओकरे झड़का क' दुनू बाप-बेटा खयलक। अपने गेल आ बेटाक हालति अब-तबमे छैक।

सबहक गेलाक बादो मानस अपन दलानमे बैसल रहल। बाढ़िक एहन बहुत कथा सुनने छल पटनासँ बिदा हेबासँ पहिनहुँ। बाढ़िक जखन हल्ला भेल रहैक ओ बम्बई मे छल। रोज दूरदर्शनपर समाचार दैक जे पटनाकेँ खतरा छैक—गंगा, सोन आ पुनपुनमे पानि बढ़ि रहल छैक। बाढ़िक एतबा समाचार कहि उद्धोषक गुजरात आ उत्तरप्रदेशमे रौदीक समाचार कह' लगैक आ लकर बाद खेल समाचार। ओहि प्रशिक्षण-केन्द्रमे सभ प्रान्तसँ आयल प्रशिक्षु सभ विहारक बाढ़ि आ गुजरात, उत्तर प्रदेशक-रौदीकेँ बिसरि क्रिकेटक स्कोर सुन' लगैत छल।

मानसकेँ लगैत छैक जे बाढ़ि रौदी-हत्या-लूटि-बलात्कार आ नरसंहार आब कौतूहलक वस्तु बनल जा रहल छैक। सभ दिन अखबार आ टेलीविजन लोक अही उत्सुकताक संग खोलैत अछि जे आइ कत' एहन घटना भेल हेलैक आ जहिया एहन समाचार नहि भेटैत छैक—निराश जकाँ भ' जाइत अछि—आइ एक्कोटा उत्तजक समाचार नहि—नरसंहारक कोनो घटना नहि। जहिया एहन घटनाक समाचार भेटैत छैक कोनो दहशत आ त्रासदीक अनुभव नहि ए जकाँ करैत अछि बेसी लोक। एकटा क्षणिक उत्तेजना। आ फेर ओकस बिसरि क्रिकेटक स्कोर वा पाँप म्यूजिक सुन' लगैत अछि। विहारक बाढ़ि, गुजरात आ उत्तर प्रदेशक रौदीक समाचार ओ एकदम तटस्थ भावसँ सुनैत अछि।

मानस मुदा तटस्थ नहि रहि पवैत अछि। ओकर चिन्ता बढ़ले जाइत छैक। अपने पन्द्रह दिन लेल बम्बईमे छल आ पटना पर खतरा छलैक जत' सौंसे परिवार छलैक। एकोटा चिट्ठियोने भेटि रहल छलैक।

पटना घुरिक' आयल तँ जानमे जान अयलैक। पटना पर कोनो खतरा नहि छलैक मुदा सौंसे उत्तर बिहार बाढ़िमे डूबल छलैक आ बाढ़ि पीड़ितक उद्धारक लेल पटनामे जोर शोरसँ प्रयास भ' रहल छलैक—बाटे घाटे, मोहल्ले-मोहल्ले। सभ चौराहापर बाढ़ि पीड़ितक सहायता-कोषक झण्डा गाड़ल छलैक। चन्दा असूल करय बला दल सभ चौराहापर बैसि क' ताश खेला रहल छल। वड़ उत्साह छलैक ओकरा सभमे। एकटा उत्साही दलसँ ओकरो भेट भेल छलैक। घुरबामे देरी भ' गेल छलैक, एकटा दोसर मोहल्ला गेल रहय। रातुक बारह बाजि गेल छलैक तँयो कोनो चिन्ता नहि छलैक। निश्चिन्त भेल अबैत रहय,

ठीक कोतवाली लग सड़क घेरल छलैक बाँस ल' क' आ किछु उत्साही लोक ठाढ़ छलाह—“बाढ़ि पीड़ितक लेल चन्दा दियौक, तखन रिक्सा आगू बढ़त।”

बजनिहार लड़खड़ा रहल छल। मुँह भभकि रहल छलैक। ओ कतबो कहलक जे ओ द' चुवल छैक अपन कार्यालय आ मोहल्लेमे मुदा ओ सभ नहि मानलक। मानस जेबीसँ पँचटकही निकालि कहलक—यैह टा हमरा संगमे अछि—रिक्सावलाकेँ भाड़ा देबैक।”

ओ निशामे बुत युवक कूदि क' पँचटकही छीनि लेलक—“भाड़ा डेरापर द' देबैक। पँचटकही जमा क' दिऔक।” फेर तलाशी सेहो लेलक जे झूठ तँ नहि बाजि रहल अछि। रिक्सा जखन कहूना आगू बढ़लैक तँ जोरसँ सुना क' गारि देलक—सार, भिखमंगा। पँचटकही ल' क' मटरगश्ती करैत अछि—सार रण्डीवाज”””

मानस चुपचाप डेरा चल आयल। ककरो किछु कहबो ने कयलक। एहन घटना आब सभ ठाम होइत छैक, एकर चर्चा कोनो अर्थ नहि रखैत छैक। अहूँ केँ साहस आ ताकति होअय तँ देखाउ अपन पराक्रम।

पटनासँ अबैतकाल ओइ टूटल पुल लग एहने पराक्रमी लोक सभसँ भेंट भेल छलैक। पुल लग डाइभरसन छलैक जाहिपर नीचाँ जा क' एकटा ट्रक उनटि गेल छलैक भोरे। सात घंटासँ जाम छलैक आ आगुओ सात घंटा तक लाइन साफ हैबाक कोनो आस नहि छलैक। मानस हताश होइत पटना घुरि जयबाक बात साँच' लागल छल।

तखने आसक एकटा छोर पकड़लैक। बहुत रास प्राइवेट कार आ रिक्शा, मोटरसाइकिल सभ मेनरोड छोड़ि गाम बाटे एकटा दोसर सड़कपर जा रहल छलैक। डाइवर कहलक जे ओकरो मैक्सी-टैक्सी ओहि बाटे निकलि सकैत छैक। सभ क्यो प्रसन्न होइत ओही बाटे बिदा भेल।

बीच गाममे अबैत-अबैत एकटा भीड़ बाट छेकि लेलक। ककरो हाथमे लाठी, ककरो हाथमे बाँसक छिपाठी। ओकर नेता आगू अयलैक—‘दुर्गापूजाक चन्दा दिय' त' गाड़ी आगू बढ़य देब।’ मानस एकटा दू टकही निकालि क' देलक। ओ दू टकही ओकरा मुँहपर फेकैत एकटा छोड़ा बजलैक—‘भीख द' रहल छी? सय टाका निकालू।’ मानसकेँ तामस उठलैक—‘कोनो जबरदस्ती

छक, नहि देव एक सय टाका। लेबाक हो त लिय' दू टाका। ओ छौड़ा अकड़ि क' बजलैक— 'त' नहि दिय'। रहु राति भरि एतहि।

पाछाँसँ ओकर चेला सभ गाड़ीपर वाँस-डटा बजारय लगलैक। गाड़ीमे स्त्रीगण एवं धीया-पूता त्रस्त भ' गेलैक। पिंड छोड़ब' लेल एक सय टाका देलकें। ओ सभ ठिठिआइत हटि गेली। ओ जान छोड़ा आगू बढ़ल। लगले दोसर आफत।

ओ सड़क पुरना छलैक जाहिपर नवका रोड बनयसँ पहिने सवारी चलैत छलैक। एहि सड़कपर गामक बीच एकटा पूल छलैक जाहिपर एखनो हल्लुक सवारी निकलि सकैत छलैक। ओहि पुलक आगू लकड़ी, चौकी, आदि अड़ा क' बाट घेरने किछु छौड़ा ठाढ़ छलैक— 'गाड़ी आगू नहि जैत, पूल टूटि जैत। हमरा सभक अयबाक-जयबाक यह बाट अछि। अहाँ सभ गाड़ी घुमाक' मेनरोड पर ल' जाउ।

मानस कतबो बुझयबाक चेष्टा कयलकें, मानवे नहि कयलकें। किछु स्त्रीगण सभ सेहो जमा भ' गेलैक। हाथ नचा-नचा चिचिया क' बाज' लगलैक। ओकरा मोन भेलै जे पटना घुरि चली।

तखने एकटा शुभ्रशास्त्र नेतानुमा लोक औत' उपस्थित भेलैक। मानस लग आबि कहलकें— "अपने चिन्ता नहि कर, सभकेँ एखने शान्त करैत छी।" ओ छौड़ा सभक बीच पहुँचि गेलैक आ सभक चौकी लकड़ी उठा क' फेंकि देलकें। ककरो रोकबाक सहस नहि भेलैक। स्वयंम झाइवरकेँ निर्देश दैत ओ गाड़ीकेँ पुल पार करा देलकें। मानस ओकरा आगाँ नतमस्तक भेल जाइत रहय कि ओ कहलकें— ई चारि टा बोरा अछि, एकरा उपर चढ़ा दैत छी। हमरा संगे दू टा छौड़ा सेहो अछि, हम सभ दरभंगा उतरि जायव। ओ साधिकार सामानक उपर अपन बोरा लदबा अपन दुनू लोकक संग तीन टा सीट दफानि बैसि गेलैक। मानसक तीनू छोट भाइकेँ ठाढ़े दरभंगा धरि आब' पड़लैक। भराठी कखन वाति गेलैक, ककरो ध्यानो नहि रहलैक। सभ सकदम्म बैसल रहल।

ओकर उतरलाक बाद सभक जानमे जान अयलैक। मानस ओकरा सादर नमस्कार कयलकें। ओ विपत्तिसँ निकालने छलैक ओइ भीड़मे। एहन-एहन परा-

कमी लोकक आइ बड़ आवश्यकता छैक, चाहे ओ पटनाक देली रोड हो वा गामक चौराहा। देशक मामूली जनता हिन्के लोब निव दले उचित अहि।

अही बातपर ओइ दिन एकटा भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री दुःखी होइत कहने रहथिन— "अहाँ लोकनिमे यह एकटा बड़ पैघ बीमारी अछि। सभटा दोष अहाँ लोकनिक' नेता, मन्त्री, एम० पी० आ एम० एल० ए० मे देखाइत अछि। अपन दोष अहाँ लोकनि देखबे नहि करैत छी? अही वाजू त', देशमे सभटा प्रान्तकेँ जोड़ि क' कतेक मन्त्री, विधायक आ सांसद छथि। एतबे किछु हजार लोक पूरा देशकेँ डूबा रहल छथि, आ बाँकी लोक, ई विशाल जनसंख्या। ई सत्तासी करोड़ लोक मात्र किछु हजार लोकक कारण गर्तमे जा रहल अछि। बाँकी सभ सदाचारी आ निष्ठावान। बड़मान खाली नेता? जनता दूधक घोल।

ओहू दिन बाढ़ि रहैक। पातपर पोलाब, माछ-मांस, दही मधुर सभ बहि रहल छलैक। एकटा वरिष्ठ अधिकारीक पिताक वर्षी रहनि। बहुत क्षेत्रक लोक, नेता, अफसर, पत्रकार, लेखक, ओकील, जज आदि आमंत्रित रहथि। ओइ बाढ़िमे, बाढ़िक गप्प शुरू भ' गेलैक। उत्तरी बिहारक जनताक तबाही आ सरकारी निष्क्रियताक गप्प होम' लगलैक।

विपक्ष आ विक्षुब्ध कांग्रेसक गप्प होब' लगलैक। बाढ़ि पीड़ित भूखल जनताक संग भ' रहल राजनीतिक गप्प होबय लगलैक। पातपर लागल पकवानक पयार पर लुधकल लोक सभ खाली पेट, भूख आ बिमारीसँ मरैत, बाढ़िमे घेरायल लोक सभक गप्प क' रहल छल— शासन आ नेताकेँ दोषी मानि रहल छल एहि स्थितिक हेतु। एकटा भूतपूर्व मुख्यमन्त्रीक समर्थक त' चिचिया क' बाजि उठलाह— "सभ जानि बूझि क' भ' रहल अछि। हमरा लोकानक क्षेत्र भूतपूर्व मुख्यमन्त्रीक समर्थक अछि तेँ हमर उपेक्षा भ' रहल अछि। रेलवे लाइन टूटल अछि, रेल बन्द अछि, सड़क टूटल अछि, बस बन्द अछि। ककरो कोनो थाह नहि लागि रहल अछि आ प्रशासन सुतल अछि। खाली अपन काज होइ त' बड़ मोस्तदी देखाओत।

ओ उत्साही विक्षुब्ध कांग्रेसी एकटा खिस्सा सुनौलथिन। एकटा वरिष्ठ अधिकारीक माय बाढ़िमे गाममे फँसल छलथिन। एकटा हेलीकाप्टर सँ पता लगबोलनि आ सूचना भेटलनि जे हुनकर गाम बाढ़ि मे निपत्ता छनि, एकोटा घरक

कोनो निशान नहि बाँचल छैक । चिन्तित अधिकारी स्वयम् हेलीकाप्टरसँ गेल ह आ अपन गाम आ घरकेँ चिन्हलनि आ आश्वस्त भ' किछु अन्नपानि रुसा अपरा भेलाह ।

ई खिस्सा सुनि मानसकेँ अपन माय मोन पडलैक । नहि जानि कोन हालतिमे हेतैक । आरो कतेक लोक हैत जकर माय, भाइ बहिन फँसल हेतैक । ओकरा लेल कोन हेलीकाप्टर जयतैक ? हजारो लाखो लोक गाममे रहैत अछि — ओकर कोना उद्धार हेतैक ?

“—उद्धार हेतैक” — भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री बाजय लगलाह— “विकल्प चाही, कांग्रेसक विकल्प । त्रिपाठीजी बुढ़ारीमे पत्रिकाक सम्पादन क' रहल छथि । हमरोसँ लेख मंगने छलाह । हम लिखि देलियनि— कांग्रेसक विकल्प मात्र कांग्रेस अछि । हमर त' ई अटूट विश्वास अछि । इतिहास देखि लिये— पुरान कांग्रेसक विकल्प इन्दिराजी, इन्दिरा कांग्रेस, इन्दिराजीक विकल्प जे० पी० पुरान कांग्रेसी आ एखन फेर राजीव गाँधीक कांग्रेसक विकल्प ।”

“बी० पी० सिंह” — “उत्साही विक्षुब्ध कांग्रेसी प्रसन्न होइत बजलाह— अपने त' खूब लेख देलियनि अछि, कहिया छपत ?” भूतपूर्व मन्त्री प्रसन्न होइत बजलाह—हम त' हरदम सही बात कहैत आयल छी । खाली अपन बेरमे गल्ती भ' गेल । पाँच वर्ष सांसद रही । सभ मास अपन क्षेत्र गेल रही । जनताक सेवा कयने रही । अगिला चुनावमे वैह क्षेत्र दूधक माछी जेकाँ निकालि क' फेंकि दैलक । बड़ आश्चर्य भेल जे कत' चूक गेलहुँ । एकटा पुरान सांसदसँ जे पाँचटा चुनाव लगातार जीतल छलाह, अपन प्रश्न कहलियनि । ओ छोट उत्तर देलनि—“तोरासँ एकेटा गल्ती भेलौक जे तौ सभ मास अपन क्षेत्रमे गेल । हम पाँच वर्षमे मात्र एक बेर अपन क्षेत्र जाइत छी । जनताकेँ सभ बेर एकेटा शिकाइत रहैत छैक जे अहाँ खाली चुनावे बेरमे अबैत छी । हम ले' द' क' ओकरा मना लैत छी । तौ सभ मास अपन क्षेत्रमे गेल, जनताक शिकाइत एकसँ अनेक भ' गेलैक आ तोरा पछाड़ि देलको ।

एतबा कहि ओ भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री हँसय लगलाह— दुःख सँ वा आनन्दसँ से नहि जानि । मुदा मानस मोने मन हुनकासँ सहमत भेल जाइत रहय जे कोनो देशकेँ सरकार ओहने भेटैत छक जेहन ओकर जनताक चरित्र रहैत

छैक । जत' किछु हजार विधायक सांसद आ मन्त्री करोड़ो जनताक जिन्गी आ भविष्यक संग खेलबाड़ करय आ जनता देखैत रहय, ओत' आर भैये की सकैत छैक ?

ई बात मानस अपन बगलमे बैसल सज्जनकेँ कहलकनि त' ओ दिगड़ि उठलथिन—“अहूँ केहन गप्प करैत छी ? ई सभ मात्र हजारो अछि । रस्तीबीजक सन्तान अछि ई सभ । एक नेताक संग हजार नेता फड़ैत छैक । मन्त्रीक चमचा नेता, विधायक—सांसदक चमचा नेता । चमचाकच मचा नेता, ऑफिसक कर्मचारी नेता, शिक्षक नेता, गामेक-मुखिया-ठीकेदार नेता, गाम आ शहरक सभ गुण्डा बन्तमाश नेता । नेतासँ कोन स्थान अबंच अछि यौ ।

मानस गुम्म भ' गेल । फेर हुनके लोकनिक गप्प सुन' लागल । एकटा प्रधान मन्त्री समर्थक कांग्रेसी ओहि भूतपूर्व कांग्रेसी मन्त्री पर बमक रहल छलाह—अहूँ लोकनि लगले अपन ओकातिपर आबि जाइत छी । राजीवक विकल्प बी० पी० सिंह ? गाछक विकल्प अण्डी ! बेस कहलहुँ अहूँ । एकटा प्रान्त त' सम्हरबे ने कयलनि आ देश सम्हारताह । एहन अनटोटल गप्प करैत छी, अहूँ सभ जे देहमे आगि लागि जाइत अछि ।

आस्ते आस्ते मानसकेँ देहमे आगि सुनगि रहल छलैक । की भेल जा रहल छैक अइ देशक लोककेँ । सभ ठाम सभ गप्पक अन्तमे वैह जगन्नाथ मिश्र, वह विन्देश्वरी दुवे, वह राजीव गांधी, वैह रामा राव, हैगड़ें, देवी लाल, चन्द्रशेखर बाजपेयी । गप्प बाढ़िक भ' रहल छलैक, बाढ़ि पीड़ित सहायताक भ' रहल छलैक आ सभकेँ ठेलि ठालि क' उपर आबि गेलैक कुर्सी-सत्ता-सांघर्ष । यैह देशक चरित्र भेल जा रहल छैक । सभ चौराहा, सभ घर, सभ कार्यालय, सभ स्कूल कालेजमे चर्चाक विषय भ' गेल छैक राजनीति, साहित्य-संस्कृति मानवताक गप्प आब बेर कुवेर लेल ठेकना क' राख'क वस्तु भ' गेल छैक । कोनो मंच, कोनो सभामे भजा लेबाक हेतु, अपनाकेँ जमा लेबाक हेतु । शक्ति वस्तु छैक राजनीति—“हिंसा—अप्रवाचार—ड्राइंग रूम ककरो होउक नेता वा शिक्षकक अभिनेताक वा कानून वेत्ताक व्यापारी वा नोकरिहाराक, चर्चाक विषय एके टा छक—राजनीति ।

भोजन खतम होइत होइत बाढ़ि आ बाढ़ि पीड़ितक गप्प सभ बिसरि गेल छल आ सुस्वादु भोजनक प्रशंसामे लागि गेल छल जकर उच्छ्वासेक पातपर पथार लागल छलैक । राजीव समर्थक वा राजीव विरोधी दुनूमे एहि बातमे मतभेद छलनि जे एहन भोजन बहुत दिनपर खयने छलाह । दुनू बाढ़ि आ बाढ़ि-पीड़ितक संग सरकारी निष्क्रियता आ सहायता सामग्रीक अभावक बात एकदम बिसरि गेल छलाह आ ढंकार लैत अपन घर विदा भेल छलाह ।

आइ गाममे एकसर बैसल मानसकेँ ओइ दिनुका गप्प सभ मोन पड़ि गेल छलैक । बाटमे कखन भराठी बितलैक आ कखन टूटल बान्ह पर कयलक, किछुअ ध्यान नहि रहलैक । लगलैक जेना बाढ़िक जे समाचार पढ़ने छल से झूठ छलैक, कतहु कोनो तवाही नहि छलैक । सम्पूर्ण इलाका पूर्ववत् छलैक आ दुर्गापूजाक तैयारीमे, बाट-बटोहीकेँ घेरि क' सभक चन्दा ओसूल करबामे व्यस्त छलैक ।

गाम अबैत अबैत मुदा लगलैक जेना बहुत किछु छलैक जे मास बितला पर आब देखार नहि छलैक । बहुत किछु आइयो छैक जे उपरसँ जगजियार नहि छैक । बाढ़िक बिभीषिका आइयो एम्हुरका लोककेँ घेरने छैक । एहि गाम आ इलाकाकेँ घेरने छैक । बैदा, कैला, बौकू आ रीक्षनकेँ घेरने छैक । ओ सभ आइयो डूबले अछि । ओकर उद्धार कोना हेतैक ?

सोचैत सोचैत मानस बड़ी राति धरि बैसले रहि गेल । खा-पीक' सूतय गेल तयो ओकरे सभक बात आ डेरायल आकृति ओकरा उद्विग्न आ चिन्तित कयने रहयैक । अढ़ाइ हजार टोका कहासँ अनतैक ई पाँचो मिलि क' ? भोर सूरजूकेँ कहतनि जे बचा लहक एकरा सभकेँ । ओहिना विपत्तिक मारल अछि, उपरसँ तेहन डाँग नहि मारहक जे खतमे भ' जाय ।

उठल त' मोन किछु भारी छलैक । भोर भेना किछु काल बीति गेल छलैक मुदा रौदमे कोनो घाही नहि छलैक । ओ टहलैत किछु दूर चल आयल ।

दुर्गापूजाक तैयारी भ' रहल छलैक—आने साल जकाँ । भगवतीक मूर्ति बनि गेल छनि; आइए बेछनौती छैक, कालिह डिम्हा पड़तनि ! स्टेज तैयार भ' रहल छैक ! भसिरक आने साल जकाँ तीनू राति नाटक हेतैक । दोकान सभ

खूजि गेल छैक एक पतियानीमे मधुर-चाह-पान तेल-पुल्ल आ खेलौना लमनकरकेँ दोकान सभक आगू किछु गोटे खूब जोर-जोरसँ चिचिया रहल छलैक ।

मानस उत्सुकतासँ आगू बढ़ल । किछु भीड़ लागल छलैक आ बहुत गोटे मिलि क' ककरो घेरि क' चिचिया रहल छलैक । मानस एकदम लग चलि गेल ।

बगलमे एकटा मोटर साइकिल ओँघरायल छलैक । मानसकेँ ओकरा चिन्हबामे कनियो समय नहि लगलैक । सूरजूक मोटर साइकिल छलैक !

किछु चिन्तित होइत मानस किछु गोटेकेँ टेलैत आगू बढ़ल । सामने विचित्र दृश्य छलैक ! सूरजूक गट्टा पकड़ने रीक्षना चिचिया रहल छल । ओकर पीठपर बौका, कैला तैनात छलैक आ घेरने छलैक हरिजन टोलीक बहुत रास स्त्रीगण-पुरुष ! बीचमे सूरजू सकपंज भेल ठाढ़ छलाह—चेहराक रंग एकदम उज्जल, थरथर करैत । हुनका लगपासमे कयो मदति कयनिहार नहि छलनि । सभ अनठा क' दोकान सभक दिस ठाढ़ तमासा देखि रहल छलनि आ रीक्षना गरजि रहल छल—“आइ हर्गिस ने जाय देव कोरट अहाँकेँ । पहिले कबूल करू जे हमरो आरके नाम कटबा देव—पाँचो गोटेक नाम, तखने जाय देव आइ । बाबू-भैया करैत जीह टूटि गेल ! एक मास पाँचो गोड़ खेतमे बेगारी क' देव सेहो गछली मुदा अहाँ नहि मानली ! अहाँकेँ चाही अढ़ाइ हजार । से आइ दैये देव अढ़ाइ हजार ! पाँचो अंगुरी काटिक', आ दुनू हाथ पयार तोड़िक' इहे लहीमे फेंकि देव । बैसनो जहल, ऐसनो जहल । मुदा अहाँकेँ लुल्ल नांगर बनाके तँसन बैठा देव जे फेर कोनो गरीबकेँ सतावेके नाम नहि लेब अहाँ ! बाजू, जबाब दू”” सूरजू सकदम्प, कण्ठमे वकार नहि । रीक्षना गट्टा एँठने जा रहल छलनि आ ओहिना गरजि रहल छल—“बाढ़िमे बड़का गोहि आ मगरमच्छ सभ आयल रहय ? बाढ़िसे बँचि गेली हमरा सभ मुदा ई मगरमच्छ त' गोड़ि लेत हमरा आरके...बड़की गो पेट हनि...हमरा आरकेँ भूखलो पेटसे बड़...बखारी हनि बड़का, रुपया पैसा से भरैत हनि” ।

सूरजू आब किकिआय लागल छलाह । रीक्षना बाँहिकेँ उनटा क' पीठपर चढ़ा देने छलनि । हुनकर कातर दृष्टि मानसपर पड़लनि । आसक रेखा हुनकर आकृति पर स्पष्ट उभरि अयलनि आ बकार फुटलनि—बचाउ मानस भाइ, “एकरा सभसँ हमरा बचाउ !”

मानसके रतुका गप्प मोन पड़लैक । ई पाँचो हुनकासाँ मेहोरा कयने रहनि जे हमरा सूरजू बाबूसाँ बचाउ । आ भोरे मुरजू मदति लेल घिघिया रहल छथि । राति भरिमे ई पाँचो अपन बँचबाक बाट ताकि लेने अछि । आब कोनो बाढ़ि एकरा सभकेँ डुबा नहि सकतैक, कोनो मगरमच्छ एकरा सभकेँ गीड़ि नै सकतैक । बाढ़िसँ बचबाक बाट ई सस अपने ताकि लेने अछि । एकरा ककरो मदति नहि चाहियैक ।

मदति सूरजूकेँ चाहियनि । ओ घिघिया रहल छलाह मुदा मानस ओइ बाढ़िक बात सोचि रहल छल जकर भय आब समाप्त भ' गेल छलैक ।

अक्टूबर १९८७

रक्षक

बूढ़ा बड़ी काल सँ प्लेटफार्म पर नुड़िया रहल छलाह ।

नहि, ओ बूढ़ नहि छलाह । बेशी सँ बेशी पैतालीसक वयस हेतनि मुदा ततेक दुब्वर छथि आ तेना झुके क' चलि रहल छथि जे हुनका कतेको बेर वयोवृद्ध बूझि लेबाक भ्रम होइत छैक । यद्यपि केश कारी छनि आ दाँते एक्कोटा टूटल नहि छनि ! मुदा चेहरा पर व्याप्त अतीम दुख आ क्षोभ । ओइ दुख आ क्षोभक कालिया सँ झम्पित गोर आकृति पर एकटा छटपटाहटि एकटा विकलता छनि । प्लेटफार्म पर कतहु एक्को ठाम स्थिर नहि होइत छथि । सदिखन चलिते रहैत छथि आ बेर-बेर बरि क' प्रथम श्रेणीक प्रतीक्षालय लग नुड़ियाइत छथि ।

नुड़ियाइत छथि आ क्रमशः हुनकर आकृति पर एकटा हताश भाव पसर' लगैत छनि । लगैत छैक जेना ककरो प्रतीक्षा रहल होनि आ से प्रतीक्षा निराशामे परिणत भेल जा रहल होनि ।

फाटल मेल घोती आ मैले सन ढीलढाल कुर्ता पहिरने नुड़ियाइत बूढ़ा ककरो लेल आकर्षणक केन्द्र नहि छथि । लगभग सभ दिससँ उपेक्षित मुदा अपन चेष्टामे स्वयं अपस्यांत, गुनधुनमे पड़ल । नहि जानि ककर प्रतीक्षा छनि ?

कान्ह पर एकटा क्षोरा लटकल छनि, खूब हल्लुक सन । आर दोसर कोनो समान नहि । दाढ़ी बेश बढ़ल छनि आ बेशी पाकलो नहि छनि ! मग्यक केश त' कारी छनिहे मुदा तैयो पहिरा दू फेसे एह लमैत छैक जेना एकटा खूब बूढ़ लोक मेल घोती कुर्ता पहिरने कान्हसँ क्षोरा लटकीने, डाँड़ लगसँ झुकल प्लेटफार्म पर चारुकात बीअ रहल होथि आ बेर-बेर प्रथम श्रेणीक प्रतीक्षालय लग पहुँचि डेग थकमका जाइत होनि ! वेष्टिंग रुमक दरबज्जा ठेलि ठेलि क' हुलकी द' फेर ओझिना चारुकात उद्विग्न बीआय लगैत छथि जेना ककरो ताकि रहल होथि ।

गाड़ी धड़धड़ाइत प्लेटफार्म पर आबि ठाढ़ भ' गेलैक आ यात्रीगणमे धक्कमधुक्की शुरू भ' गेलैक । ओही धक्कमधुक्कीमे कहना बहुत बूढ़ा प्रथमश्रेणीक डिब्बा लग पहुँचि गेलाह । पहिने निराश जकाँ भेलाह । फेर प्रसन्नतासँ आबि चपकि उठलनि ।

एकटा बड़का काफिलाक संग एकटा नेतानुमा लोक धोती कुर्ता टोपी पहिरने आ गरदनिक माला झकझवैत डिब्बा दिस बढ़लाह आ संग चलैत लोक आ सशस्त्र सैनिक बाँकी यात्रीकेँ धकियाव' लगलैक—“हटि जाउ, मंत्रीजीकेँ चढ़' दिअनु । संगमे आइ० जी साहब सेहो छथिन ।

ओहि धक्कामे बूढ़ा फेर दू लग्गा दूर फेका गेलाह मुदा हताश नहि भेलाह । मंत्रीजी आ आइ० जी साहब भीतर घुसि गेल छलाह । संग आयल बाँकी लोक सेहो डिब्बामे चढ़ि ओकर गेट जाम कयने छलाह आ हुलकि-हुलकि क' मंत्रीजीक दर्शन पाबि रहल छलाह आ हुनका अपन मुखारबिन्द सेहो देखा रहल छलथिन । जिनका उपर नहि चढ़ि भेलनि से प्लेटफार्म पर ओहि डिब्बा लग ठाढ़ छलाह आ आन मोस्तैरी देखबाक मौकाक तलाशमे छलाह ! बूढ़ा घुसकैत ओहि दरबज्जा लग पहुँचलाह आ आनन्दित होइत डेग उपर उठीलनि कि तखने कयो जोरसँ डँटनकनि—“एम्हर कत' घुसिआयल अबैत छी बूढ़ा ? ई फस्ट क्लासक डिब्बा थिकै ।

बूढ़ा सहमि गेला मुदा चेष्टा जारी रखलनि । बिगड़िक' एक गोटे जोरसँ धक्का देलकनि ! फेंका क' चालनाल चित खसलाह प्लेटफार्म पर । माथ झनझना उठलनि । डाँड़ पीठमे सेहो खूब चोट लगलनि । तावत गाड़ी ससर' लागल छलैक ! बूढ़ा अगन सभटा संचित शक्ति समेटि उठलाह आ एकबेर फेर डिब्बा दिस दौड़लाह । लोक जाबत पकड़नि आ धक्का दैनि ओ हैण्डल पकड़ि पौदान पर सटक गेलाह ।

तैयो आफत पिण्ड नहि छोड़लकनि । गेट पर ठाढ़ सशस्त्र पुलिस सभ नीचा खसा देवा छल उद्यत भ' गेलनि । बूढ़ा आर जोरसँ हैण्डल पकड़ि लेलनि । उपर चढ़बा लेल प्रयास कर' लगलाह मुदा सफल नहि भेलाह । एकटा पुलिस केँ दया आबि गेलैक—“आब दहुन बूढ़ा केँ । गाड़ीक स्पीड तेज भ' गेल छैक, आब बसताह त' प्राण जयति ।” दोसर पुलिस हाथ पकड़ि हुनका भीतर झीकि

लेलकनि । बूढ़ा ओधराइत ओधराइत बँचलाह । नाक थीआ होइत-होइत बँचलनि ।

बूढ़ा तखनो नुडिआइये रहल छलाह । गाड़ी अपन उच्चतम गतिसँ जा रहल छल । डिब्बाक लोक अपन-आन स्थान ध' लेने छल ।

छ टा केबिन छलैक ! एकटामे मंत्री महोदय आ आइ० जी० साहब छलाह । दोसरमे मंत्री जीक सम्पूर्ण सुरक्षा दल—छ'टा सशस्त्र सिपाही । तेसरमे पी० ए० आ चम्पच लोकनि आ बाँकी तीन टामे यात्री । सम्पूर्ण पैसेजमे मात्र तीन गोटे छल—मंत्री साहबक केबिनक बाहर पहरामे तैनात दूटा सशस्त्र पुलिस आ पैसेजमे नुडिआइत ओ बूढ़ा । एकबेर सुरक्षा सिपाही नरेटी दाबि लेलकनि—“की बात छैक ? एना की एम्हर ओम्हर क' रहल छी !

बूढ़ा निविआय लगलाह । ओ सिपाही हुनकर झोराक तवाशी लेतकनि । भोड़ल माड़ल एकटा कागजक बण्डल छलनि झोरामे । एकटा प्लास्टिकक गिलास, एकटा मैल गमछा आ एक खण्ड घोती । सिपाही सभटा बाहर छिड़िया झोरा भुँह पर फेकि देलकनि ! बूढ़ा सभटा सामान उठा फेर झोरामे रखलनि आ ओहिना नुडिआय लगलाह । सिपाही फेर डँटलकनि—चपचाप कोनामे जा क' बैसू ! एम्हर ओम्हर की क' रहल छी तखनसँ !” ओकर डाँट सुनि केबिनमे बैसल आर सिपाही सभ बाहर तकलक आ सहमल बूढ़ाकेँ एकसर पैसेजमे ठाढ़ देखि एक गोटे कहलकनि “आउ बूढ़ा बाबा, भीतरे आबि जाउ ।

भीतर केबिनमे तीन गोटे निचला सीट पर आ तीन गोटे उपरका सीट पर बैसल छल । जगह नहिये जकाँ छलैक मुदा जे सिपाही बजौने छलनि से कनेक घुसकि क' कहलकनि—“बैसू, बूढ़ा बाबा ।

बूढ़ा तैयो ठाढ़ रहलाह जेना बैसबामे डर भ' रहल होनि, जेना बैसवाने आपत्ति होनि । हुनकर आँखिमे ओइ पुलिसक सहृदय व्यवहारक बादो ओकरा लेल एकटा उपेक्षा आ घृणाक भाव छलनि । फेर टोकलापर ओ तेना सिकुड़िक' ओकर बगलमे बैसि गेलाह जेना स्पर्श सँ बाँचि रहल होथि, जेना स्पर्श होइते अपवित्र भ' जयताह । खाली घृणा टा नहि, घृणा आ डरक मिललजुलल भाव । जेना लगमे बैसितहि नरेटी दबा देतनि ओ ।

ओ सिपाही मुदा खूब सहृदय छल । तम्बाकू बनौलक त' बूढ़ा दिस सेहो बड़ा देलकनि । बूढ़ा हाथ नहि बढौलथिन त' हुनकर मुठी छोलि तरहथी पर तम्बाकू राखि देलकनि । तैयो हुनकर तरहथी पर ओ मलल तम्बाकू ओहिना पड़ल रहलनि बड़ी काल ! सिपाहीक ध्यान फेर ओम्हर गेलैक—“खाउ ने बूढ़ा बाबा ! खूब सनियल तम्बाकू अछि ।” बूढ़ा अनिच्छापूर्वक डेराइत ओ तम्बाकू ठोर तर रखलनि आ पीठ माथ पाछू सटा, ओठंगि गेलाह आ आँखि बन्न क' लेलनि ।

सिपाही सभ अपना मे गप्प क' रहल छल । बूढ़ाक आँखि बन्द छलनि मुदा सभटा बात कान मे जा रहल छलनि ।

—“घुरैत काल राति भ' जयतैक ! काल्हि भोरे वापस आवि सकब ! एकटा सिपाही बाजल ।

—“स्टेशने पर छुट्टी ल' लिहै ! डेरा पर जाय लगबै त' काल्हि भोरो वापस नहि भ' सकबै ।

—“पी० ए० ग्राहब तँ पटना पहुँच' स' पहिने लिखवाक लिहै ।” दोसर बुझौलकै ।

—“बख्शीश लेज सेहो लिखवा लिहै—नम लेल एक-एक सय ! मंत्रीजीक इसकोर्ट मे गेल छलै ।” तेसर कहलकै ।

—लिखौलासँ की हेतौ ? पछिलो सभ बेर जे लिखौलै, से भेटलो आइ घरि ! ई मंत्री सभ त' एहिना लिखि दे छइ ।” पहिला लोहछि क' बाजल ।

—कनिये दिनुका राजपाट रहै छै ! सभ सख पूरा क' लैत अछि । इसकोर्ट चाही, इनाम बख्शीश देवाक चाही । एही मंत्रीजी के देख ने । तीन महीना अयला भेलैक आ अइने हटवाक गप्प भ' रहल छैक ।”—चारिम उपरका सीटसँ बजलैक ।

—गप्प की भ' रहल छैक ? हटवै करतैक अही मास । ई आखरी लाट साहवी छैक ।” ऊपरसँ कोनो दोसर सिपाही बजलैक ।

—वांचियो ना सकैत छैक भाइ । ई जे काण्ड भेलैक अछि ताही सँ उम्मेद भ' गेल छैक । एकरे जातिक सभ मारल गेल छैक । एकरे फँदा उठौतौ । कोना दौड़के गेल छलौ । चुनव जितलाक बाद एको बेर गेल छलौ आइघरि ? हमहूँ त' ओही क्षेत्र के छौ ? मुदा अपन गद्दी डोललैक त' कोना दौगले गेल छलौ..... लाश सभक पुछारी में गेल छलौ.....

—“लाश ! बूढ़ा चेंहा क' उठलाह—“कहाँ छैक लाश ? कोम्हर छै.....”

बूढ़ा तेना छटपटा क' उठल छलाह जे सभ सिपाही चौंकि गेल । एकटा सिपाही हुनकर छटपटाइत देह के पकड़नक—की भेल बूढ़ा बाबा ? एना डरा कियैक गेलहुँ ? एत' कत' सँ लाश ओतेक ? लाश त' बिछल छलइ ओइ गाममे जत'सँ हमरा लोकनि घुरल अबैत छी । स्टेशनसँ बीस कोस दूर छलै । जाय के कोनो रस्ता नै ! चारू कात पानि । राति क' सभ बन्दूक ल' क' आयल छलैक नाव पर । घरसँ निकालि निकालि क मारलैक सभके । बूढ़ा जवान सिंगण बच्चा.....सभके भूनि देलकै ।

—“नै” बूढ़ा फेर जोरसँ चिचिया उठलाह जेना प्राण कण्ठ में आवि गेल होनि । सीसे देह छटपटाय लगलनि । ओ सिपाही ओहिना पाँज में समेटने छलनि ।

दोसर सिपाही बाजल—“अहाँ सुनिक' एना छटपटा रहल छी बूढ़ा बाबा । हम सभ देबि क' आवि रहल छी । आवि त' सभ दिसा एहिना देखैत रहैत छी—भाइ एत' त' काल्हि ओत' । भाइ एक जाति के, त' काल्हि दोसर जाति के.....”

एकटा आन सिपाही बुझनुक जकाँ बाजल—मार'वाला केँ त' एके जाति होइ छैक आर मारहोवालाक सेहो एके जाति होइत छैक । मारल जाइत अछि सभटा निरपराध आ आ मारैत छैक सभटा बन्धायी, हिंसक, मतिभ्रष्ट ।

दोसर टोकलकै—कखनो-कखनो दुनू एक्के रंगक रहैत छैक मुदा बेसी काल मारल जाइत छैक निरपराध । ई गुण्डवा सभ अपना मे लड़ै-मारै जाय, कोनो निरपराधके कियैक मारैत छैक ? आइये देखलहिक—एकटा सोलह वर्षक छौड़ा छलैक—केहन सुन्नर । बी० ए०क परीक्षा द' क' आयल छलैक..... —“नै” बूढ़ा फेर चीत्कार कयलनि । एकटा सिपाही ओहिना हुनकर शरीर के समेटने छलनि अपन बाहि मे । हुनका उठा क' सोझ क' बैसवैत कहललनि—उठू बूढ़ा बाबा, सोझ भ' क' बैसू । एना चिकरि कियैक रहल छी ? इ सभ त' होइते रहैत छैक ।

दोसरका पुलिस ओहिना अपन ज्ञान बध्धारि रहल छल—एहिना होइत रहैत छैक आ होइत रहतैक । ई भैतवा सभ बन्न होब' दैतैक ई सभ ? यैह मंत्रीजी आयल छलौ आइ, एकरे जातिक लोक मारल छै । देखि लिहै, मासो नहि

पुरतक । जे सभ मारने छैक—ओकरा जातिक निरपराध दस-बीस मारल जयतक । हिसाब बरोबर । जे मरल सँ मरल.....नेताजीक गद्दी सलामत ।

जे बूढ़ा केँ सम्हारने छलनि से बाजल—“आ बदनाम हमरा लोकनि । खराब पुलिस । बेइमान आ भ्रष्ट । दू रुपया—चारि रुपया लेल । दू जे लाख-करोड़ खाइत छथि—से साधू महात्मा । हरान भ’ चोर डाकू केँ पकड़ू आ फेर कोनो नेताजी ओकरा छोड़ा देथिन, माला पहिरोथिन । ओकर घर पर अतिथि बनथिन, अगिला चुनावक टिकटक इन्तजाम करथिन । चोर-डाकू गुण्डा-बदमाश सभ मस्त साँढ़ जकाँ बोझायत । नेता सभक बंगला मे मौज करत आ ओकरा सभ केँ पकड़वा लेल झुट्ठे हमरा लोकनि हान हँव ।

ताबत ओकर ध्यान अपन बाँहि मे सिकुड़ल बूढ़ा पर गेलैक । लगलैक जेना बूढ़ा बेहोश भ’ गेल होथि । फेर भेलैक जेना सूति रहल होथि । ओ हुनका फेर नीक जकाँ पाछू दिस बर्य पर बैसा देलकनि ।

बूढ़ाक आँखि बन्द छलनि । गाड़ी अपन द्रुत गतिसँ भागि रहल छल ।

बूढ़ाक आँखि बन्द छलनि मुदा ओ जागल छलाह । जागल छलाह आ जेना कोनो भयानक सपना देखि रहल छलाह—जागल आँखि सपना ।

बहुत रास सपना छलनि सुवीर बाबूक आँखि मे ।

पहिल सपना रहनि देश आ संसास्क श्रेष्ठ गायक बनबाक । भगवानक देल मधुर स्वर छलनि आ विख्यात गुरुक प्रारम्भिक शिक्षा । राज-घरानाक वातावरण मे, राजसी ठाठक बीच । गरीबी मे जन्म आ बादशाही मे बीतल नेनपन आ किशोरावस्था ।

ओ सपना चकनाचुर भ’ गेलनि । राजमहल छोड़ि कालेजक पढ़ाई आ तकर बाद नोकरीक तलाश मे ततेक बोधयलाह जे अपनी पता नहि चललनि जे देशक श्रेष्ठ गायक बनबाक सपना कत’ पाछाँ छूटि गेलि । बाकी कसर तहिया पूरा भ’ गेलनि जहिया मुँहसँ खून खसलनि आ डाक्टर जाँच क’ टी० बी०क घोषणा क’ देलकनि । आव स्कूल कालेज मे अखिल भारतीय स्तर पर जीतल कप आ शील्ड सभ ओइ स्वप्नक मखोल उड़बैत बदरंग भेल कोनो अलमारी आ बक्सा मे फेकल पड़ल रहैत छनि ।

दोसर सपना रहनि क्रिकेटक बढ़ियाँ खेलाड़ी बनबाक । संगीतक रेयाज छोड़ि क’ मैदान मे प्रविष्ट लेल पड़ा जाथि । कतेको बेर गुरुजी डैटबो करथिन मुदा ओ पढ़ाईये जाइत रहथिन । गुरुजी छोड़ि देलथिन बाद मे । ओ स्वयम् क्रिकेटक प्रेमी छलाह ।

इहो सपना मुदा बीचे मे दम तोड़ि देलकनि । तेना खसलाह एक बेर जे ठेहुन हमेशा लेज कगजी भ’ गेलनि । कमेन्टरी सुनि-सुनि क’ ओइ मुइल सपना केँ जियबैत रहैत छथि ।

तेसर सपना रहनि नीक निशानेबाज बनबाक । जाघरि राजमहल मे रहथि, खूब नीक निशाना रहनि । गुरुजी अपनी शिकारक खूब शौकीन रहथिन । हुनके राइफल साफ करै-करैत ओहो निशाना लगव’ लगलाह । मुदा राजमहल छोड़ि जहिये अपन खोपड़ी मे अयनाह, राइफल केँ छूअब स्वप्न भ’ गेलनि ।

फेर अपना पतो ने लगलनि जे जाहि आँखि मे खाली अपन स्वप्न भरल रहैत छलनि, कहिया घीयापुता सभक सपना जगह बना लेलकनि ।

प्रमोदसँ हुनका कोनो बेशी उम्मेद नहि रहनि । ओ रूप रंग, पढ़ा-लिखा, सभ मे साधारण रहनि । बी० ए० पास करैत देरी ओकरा अपने संग आफि मे मोहती लावा देलथिन । विवाहो-दान करवा देलथिन । ओकरा लेल ओइसँ बेशीक कहियो उम्मेद नहि रहनि ।

दोसरका बेटासँ मुदा बड़का-बड़का आस रहनि, पैघ-पैघ सपना रहनि । जहिया नीक नम्बरसँ पास क’ रमण कालेज मे आबि गेलनि, बी० ए० मे आबि गेलनि, टूटि क’ थोआ भेल सपना फेरसँ एनपिक’ जवान भ’ गेल रहनि । डाक्टरक मलाही रहलाक बादो ओ जखन लम्बा-लम्बा आलाप लेब’ लागल छलाह । पत्नी एक बेर दाबल स्वर मे मनो कयलथिन त’ ओ हँसि क’ उड़ा देलथिन—“आब चिन्ता नै करू । हम नहियो रहब त’ अहाँ केँ देखनिहार सभ ठाढ़ भ’ रहल छथि ।

अत्यधिक प्रसन्न रह’ लागल छलाह सुवीर बाबू । जागलो आँखि मे सपना रहैत छलनि । बेटा केँ आई० ए० एस० बनबाक सपना । सुखायल आकृति पर फेरसँ मासु आ चमक धुरि आयल छलनि । कपड़ा-लता फेर तेहने सीटल पहिर’ लागल छलाह जेना अपन किशोरावस्था मे राजमहल मे रहैत काल पहिरैत छलाह । लोक सभ जखन-तखन टोक’ लागल छलनि—की बात छैक सुवीर बाबू ? बड़ प्रसन्न रहैत छी आई-काल्हि ।

सुवीर बाबू मुस्किया क' रहि जाइत छलाह। कोनो जवाब नहि देन छलथिन। आंखियो दोसर दिस घूमा लैत छलाह जेना डर भ' रहल होनि जे आखिमे उधैआइत सपना के क्यो देखि ने लिय, ककरो नजरि ने लागि जाय।

नजरि मुदा लागिये गेलनि। ककर से नहि जानि। हुनका देखबाक फुरसतिये नहि रहनि। अपन धुन मे मगन छलाह। सदिवन सपने मे डूबल रहैत छलाह, आन दिस तकबाक फुरसतिये नहि छलनि।

चौकला ओइ दिन जहिया पत्नी कहलथिन—“रमण अखन घरि नहि घुरल अछि। काल्ह रातिये सँ घर नहि आयल अछि।

सुवीर बाबू आफिससँ घुरले छलाह। पत्नीकेँ जोरसँ डंठलथिन—“काल्ह रातिसँ घर नै अयलाह आ हमरा अखन कहैत छी। भोरे कियैक नै कहलहुँ?” पत्नीक भयभीत चिन्तित आकृति आर दयनीय भ' उठलनि—“भेल जे कोनो दोस्त-महिम लग रहि गेल हैत। भोरे चल आओत। मुदा भोरसँ साँझ भेलैक, कोनो पता नहि। डरे कौड़ काँपि रहल अछि।”

सुवीर बाबू चिन्तित भ' उठलाह। पत्नी फेर कहलथिन—“सभ ठाम पता लगबौलियैक मुदा क्यो किछु ने कहैत अछि। सभसँ बड़का दोस्त छैक राम, ओही किछु ने कहि रहल अछि। लगैत अछि जेना किछु नुका रहल होअय।”

सुवीर बाबू बिना किछु बजने घरसँ बहरयलाह आ रामक घर पहुँचलाह। हुनका लगलनि जेना राम हुनका देखैत देरी चौकल होअय। कहलकनि—“काल्ह साँझमे हमरा लग आयल छल। फेर मण्टू... लड्डू आ गोपाल ओकरा बजवा खेलकै। तकर बाद हमरा किछु ने बूझल अछि। काकियो के हम ई बात कहि देने रहियनि।”

सुवीर बाबूक चिन्ता आब आर बढ़ि गेलनि। मण्टू, लड्डू आ गोपाल मोहल्लेक छोड़ा छलैक मुदा रमण ओकरा सभसँ दूरे रहैत छल। भारी बदमाश छलैक तीनू।

राम डराइत कहलकनि—“परीक्षामे चोरी करैत छलैक मण्टू। चिट पकड़ाय लगलैक त' रमण दिस फेंकि देलकै। अपन बचाव लेल रमण सत्त बात कहि देलकै जे चिट रमण अनैने छलैक। परीक्षासँ निकालि देलकै ओकरा। तहियेसँ मण्टू रमण पर लागल छैक। घमकियो देने छलैक।

सुवीर बाबू आर चौकलाह। अपनो ओही ठाम छथि मुदा कोनो खबरि

नहि। आशंकासँ पैर थरथराय लगलनि, ओतहि बँसि गेलाह। राम जल आनि क' देलकनि। पानि पीलासँ सुखायल कंठ मे कहना प्राण अयलनि। निःप्राण स्वर मे रामकेँ कहलथिन—हमरा नै बूझल छल किछुओ। रमणो किछु नहि कहलक।

राम आरो विस्तारसँ कहलकनि—“रमण प्रिन्सिपल लग गेल रहैक मुदा ओ कोनो ध्यान नहि देलथिन। ई तीनू त' हुनके पोसुआ छनि, हुनके जातिक छनि। परसू कालेज मे रमण के दू थापर मारने रहैक आ जान लेबाक घमकी देने रहैक।

राम आरो किछु बजितैक, ताबत ओकर माय घरसँ बहरेलैक—“अनेरो तखनसँ बकर-बकर कयने छै। तौ की जाने गेलहिक ई सभ बात। तोरा कोन मतलब छीक?”

राम चुप्प भ' गेल। सुवीर बाबू कातर दृष्टिये रामक माय दिस ताक' लालाह। किछु क्षण बाद बकार फुटलनि—“रमण काल्हसँ घर नै आयल अछि। रामकेँ मना नै करियौक। हमरा लोकनि बड़ चिन्ता मे छी।

रामक माय कोनो जवाब नै देलथिन आ भीतर जाइत कहलथिन—“जल्दी आ राम, जरूरी काज अछि।

सुवार बाबू नेहोरा कयलथिन—“हमरा कहै राम, कत' अड्डा छैक तीनूक। घर मे त' नहिये भेटत। तोरा बूझल हेतौक। डेरो जुनि, सभटा कह हमरा।

राम डेराइत डेराइत बाजल—ओम्हर धारक कात मे एकटा कोठली छैक। ओहि मे अड्डा छैक तीनूक। शहरक आरो बदमाश सभ अबैत छैक।” —“कने चलि' देखा दे हमरा ओ कोठली।” सुवीर बाबू नेहोरा कयलथिन।

राम मुदा तैयार नहि भेलनि। हुनका एकसरे जाय पड़लनि। कोठली लग जाइते बहुत गोटेक बजबाक स्वर सुनाइ पड़लनि। ओ दरबज्जा ठेलि भीतर पेशि गेलाह। भीतर शराबक बोतल खूजल छलैक आ सभ पीबि क' मस्त छल। एना भीतर ठुकैत देखि मण्टू उठि क' ठाढ़ भेलैक।

—“एना भीतर कियैक अयलौं? कोनो सभ्यता नहि अछि अहाँके।

सुवीर बाबू गिड़गिड़ाय लगलाह—“एना अयबा लेल क्षमा कर हमरा मुदा कह जे रमण कत’ अछि ? तोहीं सभ बजौने रहिक काल्हि साँझ”.....

गोपाल जोरसँ गरजल— “के कहलक अहाँकेँ ? ओ चोट्टा राम ? ओकरा देखि लेबैक काल्हि । मुदा पहिने अहाँ निकलू एत’ सँ । हमरा सभ नै जनैत छी अहाँक रमण केँ !

सुवीर बाबू ओकर पयर घ’ लेलथिन — ‘निहोरा करै छियो बाउ । कहि दे जे कत’ अछि । बड़ चिन्तामे छी हम सभ ।

गोपाल जोर सँ ठोकर मारलकनि—“नाटक नै करू । हम सभ की जानै गेलौं जे अहाँक रमण कत’ अछि । निकलू एत’ सँ । सभ टा मूड खराब भ’ गेल । फेर दू गिलास चढ़ब’ पड़त । जाइ छी अहाँ, की लतिया क’ वाहर’ कर पड़त ।

अपमानित, क्षुब्ध सुवीर बाबू ओत’ सँ बहरा गेलाह । भारी डेगे डेरा अयलाह । पत्नी, पुतहु, बेटी आ प्रमोद सभ चिन्ता सँ अपस्यांत बाट तकैत रहनि । हुनकर उदास आ हारल आकृति देखि सभक मीन आर बैसि गेलैक !

सुवीर बाबू मुदा बैसल नै रहलाह । सभ ठाम गेलाह । पुलिस स्टेशन, डी०एस०पी०, एस०पी०, डी०एम०, प्रिन्सिपल, प्रोफेसर सभक कत’ दौड़लाह । तीनूक नामो लिखा देलथिन मुदा क्यो कोनो आश्वासन नहि देलकनि, नै तीनू केँ पकड़बै कयलकै । कतेको गोटे चुपचाप घरमे आबि मना कयलकनि— ओकर तीनूक नाम नहि दियोक । आफत मे पड़ि जायब । बड़का बड़काक संरक्षण प्राप्त छैक ओकरा । ओकर भाइ मुख्यमन्त्रीक खास आदमी छनि । अनेरो बिढ़नी केँ किर्यक खोचाईत छी ।”

सुवीर बाबू नहि मानलथिन । सभ ठाम दौड़िते रहलाह । थाना मे नित्य तगेदा कयलथिन डी० एस०पी०, एस०पी० केँ नित्य फोन कयलथिन, घरना द’ अपने भेटो कयलथिन । जिलाधीश लग लिखि क’ देलथिन मुदा रमणक कोनो पता नहि लगलनि । घर मे कन्नारोहटि मजल छलनि । भानस भात सभ बन्द । पत्नी पेटकान देने छलथिन । बाकी सभ डरे त्रस्त छल । खाली एकसर सुवीर बाबू सभ ठाम बौया रहल छलाह । सातम दिन क्यो समाचार देने छलैक !

पत्नी सुनिते बेहोश भ’ गेल छलथिन । घर मे कन्नारोहटि फेर मचि गेल छलनि । बड़का बेटा प्रमोद बेजान ओम्हरे दौड़ल छल । सुवीर बाबू कनैत बेटी

पुतहु केँ डँटलनि—एना किर्यक कनैत छी ? झट्टे हरला मचौलक अछि क्यो । हम अपने देखने अबैत छी ।

बेहाश पत्नी केँ ओहिना छोड़ि ओ दौड़ले बाहर आयल छलाह । मुदा व’हर अवितहि पयर लोथ भ’ गेल छलनि । डेग भागू ससरिये ने रहल छलनि । लोथ पयरकेँ घिसियबैत कहुना धारक कात मे पहुँचलाह ।

भीड़ ठस्सम-ठस्स छलैक । सभ केँ ठेलैत कहुना भीतर पँसलाह । एकटा सड़ल नोचल लाश बालू पर पड़ल छलैक जकरा लग प्रमोद कनैत बैसल छल । बालू मे गाड़ल लाश केँ गीदड़-कुकुर उखाड़ि केँ नोचि नाचि देने छलैक आ चील कौआ चोंच मारि क’ क्षतविक्षत क’ देने छलैक । मात्र देह परक कपड़ा चिन्हलथिन सुवीर बाबू आ ओहि सड़ल गलल लाश पर घड़ाम सँ खसि पड़लाह ।

होश भेलनि त’ चचरी तैयार छलैक । भीड़ निपत्ता भ’ गेल छलैक । प्रमोदक संग मात्र चारि टा लोक । आर ककरो पता नहि ।

सुवीर बाबू बहुत चेष्टाक बाद कहुना ठाढ़ भेलाह । आँखिक नोर सुखा गेल छलनि । ओइ मे एकटा विचित्र सन भाव आबि गेल छलनि—निराशा, संकल्प आ प्रतिहिंसाक मिलल जुलल भाव । अर्थात् एकटा अगिला बांस पकड़ि उठबैत कहलथिन—‘चल’ ।

लोक सभ मना कयलकनि । बेटी कहलकनि—अहाँ छोड़ि दियोक बाबू ।

सुवीर बाबू जेना किछु ने सुनलथिन । बांस पकड़ने ठाढ़ रहलाह । आगूक दोसर बांस प्रमोद पकड़ि लेलकनि । दू गोटे पांछू सँ छठीलनि । सभ विदा भेल—राम नाम सत्य है ।

सुवीर बाबू एकदम चुप्पु छलाह । डेग हुनकर उनटा दिस विदा भेलनि । बेटा टोकलकनि—ओम्हरे कत’ जाइत छी ।

सुवीर बाबू कोनो जबाब नहि देलथिन । डेग बढ़ैत रहलनि । किछु अनुमान करैत बेटा कहलकनि—ओकरा सभ लग जा क’ की हैत ? सात दिन सँ त’ दौड़ि रहल छी, की कयलक ओ सभ ? जान बचा सकलैक रमणक । वैह सभ त’ असली कसाइ अछि ।

सुवीर बाबू भागू बढ़िते गेलाह । मात्र छः गोटे रहथि । बाटमे क्यो संग नहि भेलनि । बाट चलैत लोक एक बेर ताकि अपन बाट चलैत रहल । एहि सँ बेसी छल ककरो फुरसति नहि छलैक ।

पुलिस स्टेशन पाछाँ छूटि गेलैक त' प्रमोद केँ चिन्ता भेलैक— किधर जाइ छी बाबू ?

सुवीर बाबू कोनो जबाब नहि देलथिन । एस० पी० क बंगलाक अहातामे सिपाहीक रोकितो रोकितो ओ पैसि गेलाह आ रुद्ध कण्ठसँ चीत्कर कयलनि ।

लाश बरण्डा पर राखि सुवीर बाबू बड़ी काल धरि चिचिआइत रहलाह । तखन एस० पी० साहब बाहर अयलथिन । ओ सुवीर बाबूकेँ चीन्हैत छलथिन । पाँच दिन पहिने ओ अपन शिकायति लिखा गेल रहथिन—सभक नाम सेहो लिखा गेल रहथिन ।

हुनकर आक्रुति पर संवेदनाक भाव उगलनि, भरिसक अन्तःकरणमे कोनो लज्जाक भाव सेहो । कयो देखलकनि नहि । उपरी तौर पर ओ रुद्धतासँ बजलाह—“लाश एत' कियैक अनलहु ?” पोस्टमार्टम लेल लाश ल' जयबाक आदेश दैत सुवीर बाबूक कान्ह पर हाथ रखैत कहलथिन—“अपने विश्वास राखू । अपनेक संग इन्साफ हैत ।

सुवीर बाबू शून्य आँखिये एस० पी० साहबक चेहरा देखैत रहि गेलाह । सामनेमे बेटाक लाश पड़ल छलनि, जीवनक अन्तिम सपनाक लाश आ एस० पी० साहब इन्साफ करबाक बात क' रहल छलथिन ।

प्रमोद एक गोटे केँ संग करैत कहलकै—बाबू केँ डेरापर ज' जाहुन नरेन । एहि सबमे आब समय लगतैक ।

सुवीर बाबू चिचिया उठलाह—नहि, अखन डेरा नहि जायब हम । पहिने बात हमर सुनू—अपन कान्ह पर बेटाक लाश ल' क' हम एना घुरि जाय लेल नहि आयल छी ।” हुनकर बयान लिखवा देलथिन एस० पी० साहब । किछुओ नहि नुकीलथिन ओ । परीक्षाक घटनासँ रामक घरक घटना धरि सभ सुना देखथिन ।

घुरि क' जखन डेरामे अयलाह, कन्चारोहटि शान्त भ' गेल छलनि । पत्नी ओहिना बेहोश पड़लि छलथिन—सुवीर बाबूकेँ नहि ज्ञात छलनि जे डाक्टर आबि सूई द' गेल छलनि आ दवाइक असरिसँ राति भरि ओहिना पड़ल रहती ओ—संज्ञाहीन ।

हुनकर बेहोश शरीर लग बैसि गेलाह ओ । मुदा किछुए काल बाद भहरिक' हुनके देह पर खसि कान' लगलाह, कनिते रहि गेलाह राति भरि !

भोरे सबकेँ खबरि भेटि गेलैक ।

रातिमे पुलिस मण्टू लड्डू गोपाल तीनू केँ पकड़ि क' ल' गेलैक । पुलिसक जीपमे एस० पी० साहब स्वयम् आयल छलथिन ।

तकर बाद लोको सभ आब' लगलनि । लाशक संग जाय लेल मात्र चारि गोटे रहनि, बाप बेटाकेँ छोड़ि क' । भोरसँ सैकड़ोका भीड़ लागि गेलनि । पड़ोसी-सम्बन्धी सहकर्मी आ पत्रकार कयो पाछाँ नहि रहलाह । सुवीर बाबू ककरो किछु नै कहलथिन । प्रमोद सभ केँ सभटा कहैत रहलैक, भोरसँ राति बितला धरि ।

तीनूक गिरफ्तारीक समाचार जखन प्रमोद हुनका कहलकनि हुनकर आँखिमे एकटा चमक आयल रहनि । प्रमोद नहि देखलकनि मुदा बड़ी काल तक हुनकर आँखि ओहिना चमकैत रहलनि जेना कोनो तरुआरिक धार चमकैत छैक ।

लोक सभक भय किछु कमल रहैक । बहुत रास बात कहि गेल रहनि । राम आरो बात कहने रहनि । रमणक नाँह घुरला पर ओ राति खन ओइ कोठली दिस गेल छल । रमणकेँ दू गोटे पकड़ने रहैक आ मण्टू आ गोपाल एकटा विजलीक तार ओकर गरदनिमे कसि रहल छलैक । ओ डरे पड़ा गेल छल । पोस्टमार्टम रिपोर्टक मोताबिक गला दाबिक' मारल गेल छलैक आ वादमे बालू मे गाड़ि देने छलैक ।

किछुए दिनक बाद मुदा प्रमोद संग घर भरिक लोको आर भयभीत भ' गेल रहनि । आतंकसँ सदै । बीसे दिनका वाद तीनू जमानति पर छूटि गेल रहैक आ तकर तेसरे दिन प्रमोद एकटा पुर्जी हाथमे देने रहनि । बरण्डा पर कयो फकि गेल रहनि ।

—दोसरो बेटाक बँह गति हैत । तैयार रहू ।

सुवीर बाबू पुर्जी लेने एस० पी० साहब लग दौड़ल गेलाह । पुलिसवा सभ उठाक' फेक' लागल रहनि मुदा एस० पी० साहबकेँ प्रायः दया आबि गेलनि । भीतर बजबा लेलथिन ।

पुर्जी हुनकर सामने राखि सुवीर बाबू कहलथिन—कोना छोड़ि देलियैक अपने लोकनि तीनू हत्याराकेँ । आब हमर सौंसे परिवारकेँ समाप्त करत । लोकक जान मालक एहिना रक्षा करैत छियैक अपने लोकनि ?” एस० पी० साहब नीक लोक छलाह । बुझबैत कहलथिन—“अपने शान्त होउ । हमरा लोकनि नौकरी करैत

छी। ककरो आदेश मान' पड़ैत अछि। देखक असली रक्षक वैह लोकनि छथि। ककरो जीवा मरबाक फैसला हुनके लोकनिक हाथ छनि। नै मानबनि त' हमरो आफत। अपने हमर बात मानू, जे भेल से भेल। जे बाँचल छथि तिनका बचबियनु।

सुवीर बाबू अवाक रहि गेलाह—“ई अपने कहि रहल छी! तखन अइ शहरक लोक ककरा लग जायत? के बचौतैक ओकरा अइ गुण्डवा सभसँ—”

एस० पी० साहब बुझौलथिन—क्यो नै बचा सकैत छैक। हम पकड़िके भीतर करबैक, ऊपरसँ आदेश आँत, छूटि जायत। मोकदमा हेतैक, डरे क्यो गवाही नहि देत। ओ आर अकड़िक' बाहर आँत। दू चारि टा आर खून करत। अपने कोन झंझटमे पड़ल छी। गेल बेटा त' वापस नहि आँत। हुनका लेल बचलाहाक जिनगी खतरामे नहि दियौक। हम अपनेक नीक लेल कहैत छी।”

सुवीर बाबूकेँ किछुओ नीक नहि लागल छलनि। एस० पी० साहब डरपोक आ सिद्धान्तहीन लागल छलथिन। ओ हुनकर कोठलीसँ उठिक' चल आयल छलाह।

डेरा पर सभक चेहरा तेहन रहैक जेना फेर क्यो मारल गेल हो। आतंकित सुवीर बाबूकेँ किछु पुछबासँ पहिने प्रमोद एकटा दोसर पुर्जा देलकनि—एस० पी० लग गेल रही। बेटी पुतहु दुनूकेँ तीन दिनक भीतर डेरासँ दिन-देखार उठा लेब! बजा लिय', जेकरा बजैवाक हो।

सुवीर बाबू फेर बाहर दौड़' लगलाह! पत्नी पयरसँ लपटि गेलथिन—नै जाउ कतहु, चुपचाप घरमे बैसू।

बेटा कान' लगलनि—घर भरिक नाश क' देत ओ सभ, जाय दियौक बाबू। रमण त' गेल।

बेटी पुतहु कनैत कातमे ठाढ़ि छलनि जेना सते क्यो जबरदस्ती छठब' लेल आवि गेल होइ।

सुवीर बाबू हताश बैसि गेलाह। ओइ दिन कतहु नहि गेलाह। दिन भरि लगैत रहलनि जे किम्हरोसँ एकटा बम खसतनि घरमे आ सपरिवार सुइडाह भ' जयताह। विन खयने पीने पड़ल रहलाह। बड़ी राति क' नीन्न भेलनि। तीन्नमे रमणकेँ देखलथिन—मुँह पर पट्टी बान्हल छलैक आ दुनु हाथ सेहो पाछाँ मोड़ि

क' बान्हल छलैक। एकटा तार भरदनिमे करल छलैक जकरा दू कातसँ मण्डू आ गोपाल झीकि रहल छलैक। जीभ बाहर लटकि गेल छलैक मुदा तैयो सुवीर बाबूकेँ लगलनि जे ओ किछु कहि रहल छनि हुनका सँ.....

ओ जेँहाक' उठि बैसलाह। घामे पसेने तर छलाह। कोठलीमे अन्हार रहनि। डेरामे मृत्युक निस्तब्धता रहनि। लगलनि जेना सरो,सभ मारल जयताह। रमण गेलनि, सभ क्यो जयताह! क्यो रक्षक नहि छनि। ककरा लग जयताह। सभ दिस अन्हारे अन्हार छनि।

भोरे फेर एक बेर प्रयास कयने छलाह। एस० पी० साहबक डेरा पर गेल रहथि। नहि छलथिन। पटना चल गेल छलाह। निराश सुवीर बाबू डी० एस० पी०क डेरा पर गेलाह। सिपाही दुकहे नै देलकनि। सामने बरण्डा पर दू चारि टा नेतानुमा लोक सभक संग डी० एस० पी० साहब बैसल छलाह। सुवीर बाबू जोर जोर सँ चिचिआय लगलाह। सिपाही बेर बेर धक्का देब' लगलनि, ठेहुन कपार शोणिते शोणिताम भ' गेलनि मुदा ओ उठि उठि क' चिचिआइत रहलाह। डी० एस० पी० साहब चौझायल अपने लपकल गेट धरि अवलाह आ गारि दैत कहलथिन—“को हल्ला क' रहल छी—जे कहवाक अछि थाना मे लिखा दियौक।” डी० एस० पी० साहब चल गेलथिन आ घमकीक पुर्जा लेने ओ अनिच्छापूर्वक थाना दिस बढ़लाह। ओकर सभक रबैया ओ देखने रहथिन। जखन रमण नै भेटैत रहनि, दिनमे तीन बेर दौड़ैत छलाह, हुनकर रिपोर्ट धरि नहि लिखैत छलनि। गारि द' भगा दैत छलनि। ओत' जयवाक कोनो इच्छा नहि रहनि। असहाय भ' ओम्हरे जाय पड़लनि। प्रभारी हुनका देखते फेर मुँह बिचका लेलकनि। ओ घमकीक दुनू पुर्जा देलथिन। ओ फाड़ि क' फेंकि देलकनि—अइ सँ की हैत? की पता के लिखने अछि? भ' सकैत अछि अहाँ अपने लिखि लेने होइ तीनू केँ फसब' लेल।

सुवीर बाबू तामसे थरथरा उठलाह। घमकीक सबूत मेटा देने रहनि। मण्डू लड्डू आ गोपालक संग शहरक सभ गुण्डा छैक। शहरक पुलिसो छैक—सेहो आव ओ बुझि गेल छलाह। मुदा तैयो आस नै छोड़ने छलाह।

बिगड़ि क' कहलथिन—हमर कागज कियैक फाड़लहुँ अहाँ?

प्रभारी आर तरंगि उठलनि—‘हमरा आँखि देखबैत छी? ठहरि जाउ, सभ बुधियारी घुतारि दैत छी। हनुमान सिंह, लगाउ अइ सार के दस बेंत आ

क' दियोक भीतर दफा लगा क' । राति भरि हवालातमे रहत त' अपने होश आबि जयतैक ।

सेवक हनुमान आज्ञापालन करैत दनादन बेंत चलब' लगलनि । सौंसे देह दालि उखड़ि गेलनि । हुनकर चीत्कार पर प्रभारी सहित आरोसभ हँसैत रहलनि । सेवक हनुमान हुनका छड़िपिटबैत धकियबैत हवालातक कोठलीमे पटक बाहर सँ ताला लगा चल गेलनि । भरि राति अन्हार कोठलीमे पड़ल दर्दमे कुहरैत रहलाह । मुदा ध्यान डेरे दिस रहलनि । नहि जानि की कयने हैत ?

भोरे लतिया क' बाहर क' देलकनि । लंगड़ाइत लंगड़ाइत डेरा पहुँचलाह । सभ अन्देसामे रहनि । सभकेँ सुरक्षित देखि रनुका सभ कष्ट बल्लेख बिसरि गेलाह ।

भोरे पुर्जाक बदला मण्डू अपने ठाढ़ रहनि डेराक सामने सड़क पर । सौंसे मोहल्लाकेँ सुनाक' कहलकनि—गेल रही ने थाना, बुझलियैक मजा । असली मजा आब बुझबै । ऐइ राति अइ डेराकेँ बम सँ उड़ा प्रमोद केँ ओइ जरैत आगि मे फेकि—बेटी पुतोहु के ल' जायब—बजा लिय' जकरा बजयबाक हो ।

अपन अपन डेरा सँ सभ सुनलक' मण्डूक घमकी ! मुदा लगले सभ अपन दरवज्जा बन्द क' लेलक' जेना किछु भेले ने होइ ! कतेको गोटे चोरा क' डेरामे आबि कतेको बेर कहि गेल रहनि—“ओकरा सँ दुश्मनी नहि करू ! जे बांचल अछि सेहो जायत !”

एस० पी० साहब सेहो यैह कहने रहथिन ! सब लोक सँह कहने छनि ! तीगटा बीस वर्षक छौंड़ाक डरे समस्त शहर आ समस्त प्रशासन भयभीत छैक ! एस० पी० साहब भयभीत छथिन ! कहैत छथिन—असली मार' जिआब'वला उपरमे बैसल छथि, सब हुनके आदेश सँ होइत छैक !

सुवीर बाबू केँ अर्थ नहि लगैत छनि जे ऊपरवला केँ एकटा अबोधक जानक कोन काज छैक ! रमणक प्राण सँ ओकर कोन हित सिद्धि भेल हैतैक ! ओ सभ कियैक वचा रहल छैक एकटा खूनी केँ—

हुनकर बात पर पड़ोसी कमला बाबू ओइ दिन हँस' लागल रहथिन—
“—अस्ने कोन दुनियामे रहैत छी सुवीर बाबू ! गुण्डा-खूनीक बिना राजनीति-प्रशासन आ पुलिसक काज चलतैक ? असली ताकत त' वैह सभ छैक । हमरा

अहाँक जिनगी त' साग मेथी छैक ओकरा सभ लेल । मोन हैतैक खा लेत, मोन हैतैक चाँगि देत । ओकरे सभक कृपा सँ जीबैत अछि सभ क्यो जाइ ।

सुवीर बाबू मुदा कोना जीताह ! कोना बचतनि हुनकर परिवार ? रक्षक सभ रुष्ट छनि—ककरा लग जयताह ?

पत्नी कहलथिन—गाम चलू सभ क्यो ! नै चाही ई नोकरी-बाकरी ! साग पात खा क' गुजर क' लेब गामे मे ।

प्रमोद कहलकनि—ठीके कहैत अछि माय । हमहूँ छुट्टी ल' लैत छी—दू मासक— ! दू-मास बाद देखल जयतैक ?

—“आ दू मास बाद ! दू मास मे ई शहर आ देश बदलि जयतैक ? समाज आ पुलिस बदलि जयतैक ! फेर सँ जीब' त' एतहि आब' पड़त ! तखन ? आ तोहर त' नव नौकरी छह, दू मासक छुट्टी कोना भेटतह ।” सुवीर बाबू रोकलथिन ।

प्रमोद मुदा अडल छल—“देखल जयतैक ! लीभ विदाउटप' सँह ने ! नै हैत त' नौकरी छूटत सँह ने ! एत' नहि रहब हमरा लोकनि ! गाम चलू !”

प्रमोदक बात सँ बेशी बेटा-बेटीक मोन डरा देने रहनि ! दुनूक आँखि मे एहन भयभीत आ निरीह भाव रहैक जेना अखने क्यो औतैक आ सभक सामने नोचि-नोचि क' छा जयतैक ! हुनकर आँखिक सोझें मे ।

बूढ़ा जोर सँ चीत्कार क' उठलाह । बगल बैसलमे सिपाही फेर हुनकर थरथराइत देह केँ पकड़ि क' सोझ कयलकनि—“बहुत डरा रहल छी बूढ़ा बाबा ? कोनो खराप सपना देखलहुँ ?

सपना ! बूढ़ा चारूकात तकलनि ! ओ गाड़ीक डिब्बा मे छलाह आ गाड़ी अपन बेग मे भागल जा रहल छल ! सपना ! सत्ते ओ सपना देखने छलाह । एकटा डेरीन सपना ! सत्त कतउ कतेक डेराओन होइ ! फेर लगले सोचलनि, सत्त त' सभ दिन सपना सँ बेसी डेराओन होइते छैक ।

अपन देह पर मिपाहीक हाथक स्पर्श दिस ध्यान गेलनि त' फेर डेरा गेलाह ! लगलनि जे वैह हाथ हुनकर नरेंटी चाँपि देतनि ! ओकर हाथ ओ कने जोर सँ हटा देलथिन ! ओ सहृदय सिपाही किछु चौंकल ! ओकरा बूढ़ाक व्यवहार शुक्र सँ अजीब लागि रहल छल ! पुछलकनि—“कत' जायब बूढ़ा बाबा ?

बूढ़ा जवाबक बदला ओकरे सँ प्रश्न कयलथिन—कत' आवि गेलहुँ !
ओ सिपाही कने आर चकित होइत कहलकनि—पटना आवि जायत
आधा घण्टा मे ।

आधा घण्टा मे ? बूढ़ा चौंकलाह ! एतेक जल्दी समय बीति गेलैक !
समय त' बहुत बीति गेल छलैक ! ओही दिन परिवार केँ गाम पठा देने
छलथिन ! सभ कनैत रहि गेलनि मुदा अपने नहि गेलाह ! तीन वर्ष भ' गेलनि ।
ककरो सँ भेंट नहि छनि, एको बेर गाम नहि गेल छथि ! घरक लोक फेर धूमि क'
एहि शहरमे आव' लेल तैयार नहि भेलनि ! प्रमोदनौकरी छोड़ि देलकनि । गामेमे
जे दू चारि कट्ठा खेत पयार छनि, ओही मे लागल रहैत छनि ! किछु टाका पठा दैत
छथिन ।

गाम मुदा नहि जाइत छथि जेना कोनो सनक सवार छनि । सद्विखन
लगैत छनि जेना रमणक आत्मा न्याय माँगे रहल छनि ! पिताक रूप मे
ओइ आत्माक शक्तिक जेन किछु करब जरूरी छनि ! सभठाम ठोकर खाइत बौआ
रहल छथि मुदा आस नहि छोड़ने छथि !

केस कोर्ट मे चलि गेल छनि मुदा एकदम कमजोर बना क' । एकोटा गवाही
नहि ! राम एकदम नकारि गेलैक ! कहलकै जे ओ किछु नहि जनैत अछि !
प्रिन्सिपल साहब कहलथिन जे मण्डू त' रस्टीकेट भेले नहि छल, ओ त' प्रथम श्रेणी
मे उत्तीर्ण भेल अछि ! रस्टीकेट त' रमण भेल छल, जोरियो करैत वैह पकड़ल
गेल छल ।

सुवीर बाबू ठाम-ठाम ओकर खाइत ठोकराहत रहलाह ! एस०पी० साहबक
बदलीक भ' गेल छलनि आ नव एस० पी० हुनकर बातो सुन' लेल तैयार नहि
छलनि ! पटना जा मंत्री मुख्यमंत्री, सभक दरबज्जा पर घरेना द' आयल छलाह !
कयो भेटो नहि कयलकनि । खाली चिट्ठी सभ लिखैत रहलाह अछि सभ दिन, गवर्नर
मंत्री मुख्यमंत्री, डी० आई० जी०, आई० जी० सभकेँ ! कतहुँ सँ कोनो जवाब
नहि आयल छनि !

झोरा मे लिखल विट्ठोक प्रतिलिपि सभ आ मोकदमाक कागज रहैत
छने आ एकटा गमछा आ गिलास ! एहिना बौआइत बौआइत तीनिये वर्षमे
बूढ़ भ' गेल छथि, डाँड़ झुकि गेल छनि आ मोन शोणिते शोणितान भ' गेल छनि !

रसक

काल्हिये पता लागल रहनि जे मंत्री आ आई० जी० साहब आयल छथि
शहरमे ! बड़ चेष्टा कयलनि मुदा सफल नहि भेलाह ! पता लगलनि जे आयल
छलाह प्लेनमे घुस्ताह ट्रेन से । प्लेटफार्म ओगरि लेलनि ! मारि घक्का खाइत
कहुना ट्रेनमे, चढ़ि गेलाह । पटना पहुँच' मे मात्र आधा घण्टा देरी छैक आ पटना
पहुँचि गेला पर फेर भेटो ने कर' देतनि !

सुवीर बाबू व्यग्र भ' उठलाह ! उठि क' ठाढ़ भ' गेलाह । सिपाही
सभ देखलकनि मुदा ध्यान नहि देलकनि । ओ बाहर पैसेजमे आवि गेलाह ।
पहरा दैत एकटा सिपाही कोनो केबिन मे चल गेल छल प्रायः । दोसर ओही
ठाम ठाढ़ ओंघा रहल छल । भरिसक ठाढ़-ठाढ़ सूति रहल छल । राइफल
ओंठगा क' राखल छलैक, ओकर पयर लग मे । एस०पी० साहबक बात फेर मोन
पड़लनिऊपर—सँ आदेश आयल छल । मंत्री, आईजी साहबक आदेश छल.....

सुवीर बाबूक आँखि चमक' लगलनि । झुकल डाँड़ जेना तनि गेलनि ।
लपकि क' राइफल उठौलनि आ केबिन मे घुसि गेलाह । राइफल दू बेर
गरजल ।

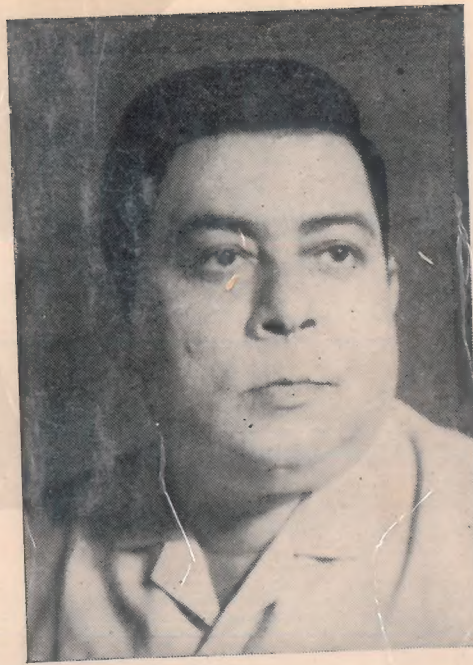
सुवीर बाबू हुलसि उठलाह । निशाना एकदम ठीक छलनि । नेनपनक
ट्रेनिंग बेकार नहि गेल छलनि । ओ राइफलकेँ घुमाक' दोसर दिससँ बैट
जकाँ पकड़ि लेलनि आ जोरसँ घुमौलनि...छक्का । एक बेर फेर घुमौलनि—छक्का ।
दूनु लाश उड़िक' नीचा आबि क' एक दोसर पर गँटा गेल रहनि । क्रिकेट मे
नेनपन मे खूब छक्का मारैत छलाह सुवीर बाबू । हुनकर टूटल सपना सभ
एक-एक क' जोड़ा रहल छलनि । तार मे कसल रमणक आकृति बेर-बेर हुनकर
आँखि आगाँ नाचि रहल छलनि आ लागि रहल छलनि जेना अपन बापक
पराक्रमकेँ देखि ओकरो आकृति पर हँसी पसरि गेल होइ ।

सुरक्षा सैनिक जखस केबिन मे पैसल दूनु गेटल लाश पर सुवीर बाबू
निश्चिन्त भ' बैसल छलाह आ आँखि मे आनन्दक अतिरेक छलकि रहल छलनि ।
कान्ह पर राइफल तेना राखल रहनि जेना तानपूरा होनि आ लगैत छलैक जेना
कोनो क्षण ओ आलाप लेब' लगताह ।

सम्पूर्ण सुरक्षा-दल सम्मोहित हतबुद्धि ठाढ़ छल । ट्रेनक गति मद्धिम भ'
रहल छलैक । भरिसक स्टेशन लग आवि गेल छलैक । ●

सितम्बर, १९८८

रसक



प्रभास मैथिली कथा साहित्यक समवेत युवा ऊर्जा एवं स्फूर्ति सँ भरल एहन कथाकार छथि जे कथा केँ व्यापक आधार, विराट परिवेश, बहुआयामी दृष्टि तथा विशिष्ट दृष्टि-भंगी प्रदान कयलनि अछि। अत्यन्त संवेदनशील हृदय, चिन्तनशील मस्तिष्क, सत्योन्मेषी दृष्टि तथा चोटगर-नोकगर व्यंग्यक वक्र-भंगीमा हिनक विशेषता छनि। शहर मे रहितो ई मोन-प्राणसँ गाम मे रहैत छथि। बाल्यकालक संस्मरण आ अतीतक बहुत रास मार्मिक अनुभूति हिनका मे तेना ने रसि-बसि गेल छनि जे कदाचित् नागर संस्कृतिक छलनामय वातावरण हिनका हठात् मिथिलाक अपन माटिपानि ओ गामघर मे आनि दैत छनि। कथाकार प्रभास मे यथार्थ ओ आदर्शक मणिकांचन संयोग भेटैत अछि। गामसँ नगर, नगर सँ राष्ट्र ओ राष्ट्र सँ अन्तर्राष्ट्रीयताक विराट क्षितिज हिनक समुर्वर मनोमस्तिष्ककेँ शिकझोरैत रहलनि अछि। अतएव बद्धमूल सामंती संस्कारकेँ तोड़ि-फोड़ि ई बेर-बेर अपन रचना मे यथार्थ जनवादी जमीन सेहो तकैत छथि। पूर्व मे मैथिली कथा जाहि संकीर्णताक कठघरा मे मूनल-बान्हल छल, तकरा ई व्यापकता ओ विविधताक उन्मुक्त भाव-भूमि पर उतारि देलनि। हिनक रचना-शिल्प मे मिथिला-क्षेत्रक सोना-माटिक सम्पूर्ण सुगंधि भेटैत अछि। संगहि हिनक कथा नाना रूपात्मक जगत ओ जिनगीक बहुरंगी कथा कहैत अछि। हिनका मे एक अपूर्व चित्रमयता, सजीवता, मनोवैज्ञानिकता, बाह्यान्तः संघर्षक उठापटक देखिते बनैत अछि। ई अतीतक ओ कथा कहैत छथि जे वर्तमानक रेखाचित्र गढ़ैत भविष्यक सपना सजवैत अछि। कदाचित् आजुक विभीषिका ओ विसंगति अथवा वर्ग-संघर्ष हिनका ततेक उद्वेलित कयलकनि अछि जाहिसँ क्रान्तिक कोनो दीपशिखा प्रज्वलित कयल जा सकय।